ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

उड़ान

प्रिलिम्स वाला (स्टैटिक)

प्रिलिम्स 2025

कला एवं संस्कृति

क्विक एवं कॉम्प्रिहेन्सिव रिवीजन सीरीज

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

INTERVIEW GUIDANCE PROGRAM 2024

English / हिन्दी

- Simulated Mock Interviews
- 1-to-1 Sessions with Bureaucrats
- 3rd Eye View
- Personalized Mentorship
- Personalized DAF Filling Session
- Interview Oriented Content & Discussion

Our Panellists

SUNIL OBEROI
Ex-IAS Officer,
Fr. UPSC Examiner

SANGEETA GUPTA
Ex-IRS Officer,
Fr. UPSC Board Member

SUNIL GULATI
Ex-IAS Officer,
Retd. Spl. C.S. (Delhi)

ANIL K. MEHRA
Ex-IRS Officer,
Fr. Comm'r (CBEC)

D.S. MALIK
Ex-IIS Officer

JALAJ SHRIVASTAVA
Ex-IAS Officer
Addl. C.S. (MoA & FW)

300+ Selections in UPSC CSE 2023

SCAN Here or at 9971899954

Online / Offline
REGISTRATION FREE
for CSM 2024 Qualifiers

IGP Centre : 2/3, West Patel Nagar, Near Pillar No. 195, New Delhi 110008

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

उड़ान

प्रिलिम्स वाला (स्टैटिक)

प्रिलिम्स-2025

कला एवं संस्कृति

These ebooks are free of cost, Join our telegram channel: @apna_pdf

Search On TG: @apna_pdf

क्विक एवं कॉम्प्रिहेन्सिव रिवीजन सीरीज

भूमिका

प्रिय अभ्यर्थियों,

यह सर्वज्ञात है कि UPSC सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी में प्रिलिम्स परीक्षा एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। यद्यपि अंतिम चयन में प्रिलिम्स के अंक नहीं जुड़ते परंतु प्रिलिम्स का दरवाजा पार किए बगैर आप मुख्य परीक्षा तक पहुँच भी नहीं सकते। ऐसा कहा जा सकता है कि सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में अर्ह होने के लिए स्नातक की शैक्षिक योग्यता के साथ-साथ प्रिलिम्स परीक्षा का पास करना भी आवश्यक है।

कहने के लिए तो यह परीक्षा आपकी आधारभूत समझ की परख करती है परंतु यह आधारभूत समझ बहुस्तरीय होती है। इसमें पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वरूप, उसकी गहनता तथा नियत समय सीमा में उसे हल करने की बाध्यता इसे और जटिल बनाती है। इस परीक्षा का कोई एक प्रतिरूप तय नहीं किया जा सकता है। अमूमन हर वर्ष आयोग अपने नवाचारी प्रयोगों से इसके स्वरूप को अद्यतित करता रहता है। फिर भी पिछले वर्षों के प्रश्न-पत्रों का आकलन करने से विषय संबंधी एक सामान्य निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है। यह पुस्तक उन्हीं सामान्य निष्कर्षों का निचोड़ है।

पिछले 10-15 वर्षों के प्रिलिम्स परीक्षा के प्रश्नों का आकलन करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सिविल सेवा के पाठ्यक्रम के कुछ टॉपिक्स ऐसे हैं जहाँ से प्रश्नों के पूछे जाने की बारंबारता अधिक है जबकि कुछ टॉपिक्स से बहुत कम या नहीं के बराबर प्रश्न पूछे जाते रहे हैं। इसके अलावा आयोग कई बार सीधे पाठ्यक्रम के टॉपिक से प्रश्न न पूछकर उसके पीछे की गहरी अवधारणाओं से संबंधित प्रश्न भी पूछता है। ऐसे टॉपिक्स, जो अक्सर न्यूज में रहे हैं उनसे जुड़े स्टैटिक हिस्सों को आधार बनाकर भी प्रश्न पूछता है। ऐसे में आवश्यक होता है कि प्रिलिम्स से पहले हर विषय से संबंधित ऐसे टॉपिक्स की बुनियादी समझ तैयार की जा सके जिनसे प्रिलिम्स के प्रश्नों को हल करना आसान हो सके। इसके अतिरिक्त प्रिलिम्स परीक्षा से पहले सभी विषयों के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स का एक साथ रिवीजन भी आसान नहीं होता। 2 घंटे की परीक्षा में सामान्य अध्ययन तथा करेंट अफेयर्स से संबंधित सभी टॉपिक्स को एक साथ स्मृति में रखना जटिल तो है ही।

इन सभी जटिलताओं को देखते हुए हमने 'उड़ान-प्रिलिम्स वाला स्टैटिक' के नाम से एक सीरीज तैयार की है। इस सीरीज में प्रिलिम्स से संबंधित स्टैटिक विषयों पर अलग-अलग बुकलेट्स प्रकाशित की जा रही है। यह सीरीज प्रिलिम्स के पाठ्यक्रम तथा पिछले वर्षों में पूछे गए प्रश्नों के गहन विश्लेषण के आधार पर तैयार की गई है। यह पूरी सीरीज योग्य तथा अनुभवी विशेषज्ञों की टीम द्वारा किए गए गहन शोध का निचोड़ है। इससे जुड़े सभी सदस्यों को कई प्रिलिम्स तथा मुख्य परीक्षा पास करने का अनुभव है तथा उन्होंने इस परीक्षा को निजी तौर पर गहराई से समझा है। यह पुस्तक बहुत बोझिल न हो और इसमें सभी महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स का समावेश भी हो सके, यह भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। इसमें शामिल एक एक टॉपिक का चयन उसकी महत्ता पर गहन चर्चाओं के बाद किया गया है। अब आपको पुस्तक सौंपते हुए हम आशा कर रहे हैं कि यह पुस्तक आपकी तैयारी को आसान करेगी।

उम्मीद है हमारी यह पहल आपकी प्रिलिम्स परीक्षा की तैयारी में सहयोगी साबित होगी। आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

शुभकामनाएँ

पुस्तक की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ

- प्रिलिम्स परीक्षा के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स का समावेश
- टॉपिक्स का बिंदुवार प्रस्तुतीकरण
- उपयोगी चित्र, ग्राफ, टेबल तथा माइंड मैप द्वारा विषयों की सरल स्वरूप में प्रस्तुति
- पिछले वर्षों में पूछे गए प्रश्नों पर आधारित टॉपिक्स का समावेश
- अत्यंत जरूरी की-वर्ड्स को विशेष रूप से दर्शाना

Search On TG: @apna_pdf

These ebooks are free of cost, Join our telegram channel: @apna_pdf

Click Here To Join our Telegram Channel

विषय सूची

1. भारतीय वास्तुकला 1

- सिंधु घाटी सभ्यता की वास्तुकला....1
- मौर्य वास्तुकला....1
- मौर्योत्तर वास्तुकला....3
- स्तूप और लोक परंपराएँ....5
- गुप्त वास्तुकला....5
- इंडो-इस्लामिक वास्तुकला....7
- आधुनिक वास्तुकला....10

2. मंदिर वास्तुकला 12

- प्रारंभिक मंदिर....12
- नागर (उत्तर भारतीय मंदिर शैली)....12
- द्रविड़ (दक्षिण भारतीय मंदिर शैली)....16
- वेसर और अन्य क्षेत्रीय शैलियाँ....17

3. भारतीय मूर्तिकला 22

- सिन्धु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ....22
- मौर्यकालीन मूर्तियाँ....23
- मौर्योत्तरकालीन मूर्तियाँ....23
- गुप्त कालीन मूर्तियाँ....26
- मध्यकालीन मूर्तियाँ....26

4. भारतीय चित्रकला 29

- प्रागैतिहासिक शैलचित्र....29
- भित्ति चित्र....30
- नायक चित्रकला....32
- केरल भित्तिचित्र....32
- लघु चित्रकारी....32
- क्षेत्रीय शैलियाँ (17वीं-19वीं शताब्दी)....34
- पहाड़ी शैली....36
- आधुनिक चित्रकला....37
- लोक चित्रकला....37

5. भारत में नृत्य शैलियाँ 40

- भारत की आठ शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ....40
- भरतनाट्यम (तमिलनाडु)....40
- कथकली (केरल)....41
- कथक (उत्तर प्रदेश)....42
- मणिपुरी शैली (मणिपुर)....43
- ओडिसी (ओडिशा)....43
- कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश)....44
- सत्रिया (असम)....45
- मोहिनीअट्टम (केरल)....45

6. भारतीय संगीत 48

- भारतीय संगीत का इतिहास....48
- शास्त्रीय संगीत....49
- हिंदुस्तानी संगीत....49
- हिंदुस्तानी संगीत की प्रमुख शैलियाँ....49
- कर्नाटक संगीत....50
- लोक संगीत....52
- संगीत वाद्ययंत्र....53

7. भारतीय धर्म एवं दर्शन 55

- हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदाय....53
- शैव धर्म....53
- भारतीय धर्म एवं दर्शन....53
- भारतीय दर्शन के संप्रदाय....54
- पारसी धर्म....57
- ईसाई धर्म....57
- यहूदी धर्म....57
- इस्लाम....57
- सिख धर्म....58

Search On TG: @apna_pdf

•

8. भारतीय साहित्य एवं भाषा 61

- भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि.....61
- द्रविड़ साहित्य.....64
- भारतीय भाषाएँ एवं उनका प्रभाव.....66

9. भारत के प्रमुख नाट्यरूप और कठपुतली कला 71

- रंगमंच के रूप.....71
- लोक नाट्य (FOLK THEATRE).....72
- भारत की कठपुतली कला.....73

10. भारतीय हस्तशिल्प 76

- काँच से निर्मित वस्तुएँ.....76
- कपड़े पर हस्तशिल्प.....76
- हाथी दाँत शिल्प (Ivory Crafting).....77
- टेराकोटा शिल्प.....77
- मिट्टी के बर्तनों की शिल्पकला.....77
- धातु शिल्प.....78
- चमड़े के उत्पाद.....78
- काष्ठ कला.....78
- विभिन्न प्रकार के खिलौने.....79
- पत्थर की वस्तुएँ (Stoneware).....79
- कढ़ाई शिल्प (Embroidery Crafts).....79
- भारत में ब्लॉक प्रिंटिंग.....81
- फर्श के डिजाइन.....81
- जीआई टैग (GI Tag) प्राप्त प्रमुख हथकरघा उत्पाद.....82

11. विभिन्न कालों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी 84

- खगोल विज्ञान (Astronomy).....84
- चिकित्सा (Medicine).....84
- धातुकर्म (Metallurgy).....85
- नौवहन (Navigation).....85
- जीव विज्ञान (Biology).....85
- रसायन विज्ञान (Chemistry).....85
- कृषि (Agriculture).....86

12. भारत में सांस्कृतिक संस्थान और पुरस्कार 88

- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण.....88
- भारतीय शिल्प परिषद.....88
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र.....88
- ऑल इंडिया रेडियो.....88
- सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र.....88
- भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार.....88
- भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद.....88
- राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम.....89
- भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद.....89
- राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन.....89
- कला और सांस्कृतिक विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट.....89
- साहित्य अकादमी.....89
- संगीत नाटक अकादमी.....90
- ललित कला अकादमी.....90
- पुरस्कार एवं सम्मान.....90

13. यूनेस्को की सूची में शामिल भारत के विश्व धरोहर स्थल 93

- मूर्त विश्व धरोहर स्थल.....93

14. विविध 99

- भारत में मार्शल आर्ट.....99
- भारत में त्योहार और मेले.....100
- प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय सिक्के.....102
- मध्यकालीन सिक्के.....103
- ब्रिटिश कालीन और आधुनिक सिक्के.....104

15. परिशिष्ट 106

- नवीन संग्रहालय.....106
- महत्त्वपूर्ण पुस्तकें एवं लेखक.....106
- विदेशी यात्री और उनके अवलोकन/विवरण.....107
- भारत में महत्त्वपूर्ण भक्ति आंदोलन.....109
- भारत के महत्त्वपूर्ण सूफी संप्रदाय.....110
- दिल्ली के सात शहर.....111
- महत्त्वपूर्ण GI Tags की सूची.....111

Search On TG: @apna_pdf

1 भारतीय वास्तुकला

परिचय

वास्तुकला का तात्पर्य संरचनाओं को डिजाइन करने की कला और विज्ञान से है। भारतीय वास्तुकला की कहानी प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक स्वतंत्र भारत तक के क्रमिक विकास की कहानी है

सिंधु घाटी सभ्यता की वास्तुकला

भारतीय वास्तुकला के सबसे पुराने अवशेष सिंधु घाटी सभ्यता स्थल- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, रोपड़, कालीबंगन, लोथल और रंगपुर में पाए गए हैं।

- इस सभ्यता के नगरों को एक आयताकार ग्रिड पैटर्न में बसाया गया था जिसमें सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
- **मानकीकरण:** मानकीकृत आयामों में **पकी हुई मिट्टी के ईंटों का उपयोग किया और जिप्सम, मोर्टार का** उपयोग करके ईंटों की परतों को एक साथ जोड़ा।
- **आवासीय इमारतें:** घरों को आमतौर पर आँगन, सपाट छतों और कई कमरों के साथ बनाया जाता था। बड़े घरों में सामान्यतः निजी कुएँ और स्नानगृह होते थे। दरवाज़े और खिड़कियाँ शायद ही कभी मुख्य सड़कों पर खुलती थीं, जिससे गोपनीयता बनी रहती थी।
- **रक्षात्मक संरचनाएँ:** बाढ़ और आक्रमणों से बचाने के लिए शहरों में ईंटों से बनी किलेबंद दीवारें होती थीं।
- **उठा हुआ मंच:** ऊपरी और निचले दोनों शहर ऊँचे मंचों पर बने थे, लेकिन ऊपरी शहर के मंच की ऊँचाई अधिक थी।
- धौलावीरा एक विशिष्ट जगह है, क्योंकि इसे तीन भागों में विभाजित किया गया था और निर्माण में जली हुई ईंटों की बजाय पत्थरों का उपयोग किया गया था।
- **उन्नत जल निकासी प्रणाली: शहर उन्नत जल निकासी प्रणाली से सुसज्जित थे** जिसमें प्रत्येक घर की छोटी नालियाँ, एक बड़े नाले से जुड़ी हुई थीं।
  - नियमित सफाई और रखरखाव के लिए नालियों को अस्थाई तौर पर ढका गया था।
  - **नियमित अंतराल पर मलकुण्ड की** उपस्थिति के अलावा कुओं की उपस्थिति भी देखी गई।
- शहरों को दो प्रभागों में विभाजित किया गया था:

गढ़/ उच्च शहर	निचला शहर
• **पश्चिमी भाग** में स्थित • निचले शहर से **छोटा** • इसमें बड़ी-बड़ी इमारतें जैसे **अन्न भंडार, प्रशासनिक भवन, स्तंभ वाले हॉल, शासकों और अभिजात वर्ग के निवास, प्रांगण आदि शामिल थे।**	• **पूर्वी भाग** में अवस्थित • गढ़ से **बड़ा** • **एक कमरे वाले छोटे घर संभवतः कार्यशील वर्ग के लिए बनाए गए।**

मौर्य वास्तुकला

मौर्य वास्तुकला बौद्ध धर्म और **जैन धर्म से प्रभावित थी।** राज्य संरक्षण की उपस्थिति या अनुपस्थिति के आधार पर इसे **दरबारी कला** और **लोक कला** में विभाजित किया गया है।

1. दरबारी कला

इसमें शासकों द्वारा बनवाए गए वास्तुशिल्प शामिल हैं। इसका उपयोग **राजनीतिक और धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था।**

महल

- **कुम्रहार में अशोक का** महल एक तीन मंजिला विशाल लकड़ी की संरचना थी जिसमें एक ऊँचा केंद्रीय स्तंभ था।
- चंद्रगुप्त मौर्य का महल, **ईरान** में पर्सेपोलिस के **एकेमेनिड महलों (Achaemenid palaces)** से प्रभावित था। मेगस्थनीज के अनुसार यह महल मानव जाति की महानतम कृतियों में से एक था।

चित्र: सारनाथ स्तंभ

स्तंभ

अशोक के स्तंभ शिलालेख **राज्य के प्रतीक के रूप में** और **युद्ध विजय की स्मृति में बनवाए गए थे।**

- स्तंभ आमतौर पर **चुनार के बलुआ पत्थर से बने थे।**
- स्तंभ को **चार भागों** से वर्गीकृत किया गया है:
  - **यष्टि (Shaft):** यष्टि एक पत्थर के टुकड़े या मोनोलिथ **(एकाश्म)** से बना होता है जिससे स्तंभ के आधार का निर्माण होता है।
  - **शिखर (Capital):** शिखर यष्टि के ऊपर स्थित होता है। यह कमल या घंटी के आकार का हो सकता है। ईरानी स्तंभों से प्रभावित घंटी के आकार वाले ये स्तंभ, अपने विशेष चमक और विशिष्ट परिमार्जन के लिए जाने जाते हैं।
  - **अबेकस (Abacus):** शिखर (Capital) के शीर्ष पर, एक गोलाकार या आयताकार आधार होता है जिसे अबेकस के नाम से जाना जाता है। अबेकस पर जानवरों की आकृतियों को स्थापित किया जाता है।
  - **शिखर आकृतियाँ (Capital Figure):** ये आमतौर पर **बैल, शेर, हाथी जैसे जानवरों की आकृतियाँ होती हैं।**
- शिखर आकृतियों वाले कुछ मौजूदा स्तंभ **बिहार के बसरा-बखिरा, लौरिया नंदनगढ़** और **रामपुरवा (वृषभ)** में तथा **उत्तर प्रदेश** में **संकिसा** और **सारनाथ (अशोक स्तंभ) में पाए गए हैं।**

Search On TG: @apna_pdf

राष्ट्रीय प्रतीक

- सारनाथ स्तंभ का अबेकस और शीर्ष भाग का सिंह, देश के आधिकारिक राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।
- सारनाथ स्तंभ के **अबेकस** में **चार जानवर** चार दिशाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं- **घोड़ा** (पश्चिम), **हाथी** (पूर्व), **वृषभ** (दक्षिण) और **शेर** (उत्तर)। अबेकस **में** चारों दिशाओं में **चौबीस तीलियों** वाले एक **चक्र** का चित्रण है।
- पशुओं की गति दाएँ से बाएँ होती है। राष्ट्रीय प्रतीक पर बैल को नीचे दाईं ओर तथा घोड़े को नीचे बाईं ओर देखा जा सकता है।
  - **हाथी, रानी मायादेवी के स्वप्न को** दर्शाता है, **वृषभ उस महीने की राशि (वृषभ) को** दर्शाता है जिसमें बुद्ध का जन्म हुआ था, **घोड़ा बुद्ध के घोड़े कंथक** का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका उपयोग उन्होंने राजसी जीवन से दूर जाने के लिए किया था और **सिंह, आत्मज्ञान की प्राप्ति को** दर्शाता है।
  - इस स्तंभ शिखर का निर्माण अशोक ने **धर्मचक्रप्रवर्तन** (बुद्ध द्वारा पहला उपदेश) की स्मृति में करवाया था।
  - चार **शेर के प्रतीक**, सभी दिशाओं में बुद्ध के धम्म को फैलाने के प्रतीक हैं।
- राष्ट्रीय प्रतीक में, **मुंडक उपनिषद** के शब्द **"सत्यमेव जयते"** जिसका अर्थ, **"सत्य की ही जीत होती है,"** अबेकस के नीचे **देवनागरी लिपि** में अंकित है।

अशोक और अकेमेनियन (हखामनी) स्तंभों के बीच अंतर

पहलू	अशोक स्तंभ	अकेमेनियन स्तंभ
अवधि	तीसरी शताब्दी ई.पू.	छठी-चौथी शताब्दी ई.पू.
उद्देश्य	अशोक के धम्म (नैतिक कानून) के संदेशों के विस्तार के लिए स्वतंत्र रूप से शिलालेखों के रूप में स्थापित।	बड़े महलनुमा या औपचारिक संरचनाओं, जैसे- दर्शक हॉल (अपादान) को सहारा देने आदि के लिए।
सामग्री	बलुआ पत्थर या अन्य स्थानीय पत्थर	चूना पत्थर, बलुआ पत्थर या अन्य स्थानीय पत्थर
संरचना	शिखर के साथ एकल अखंड यष्टि	ऊँचे, विस्तृत शिखर के साथ बाँसुरीदार यष्टि और एक साथ जोड़े गए कई पत्थर
धार्मिक प्रभाव	बौद्ध धर्म से संबद्ध	पारसी धर्म और फारसी संस्कृति से संबद्ध
शिखर (Capital)	शेर, हाथी और वृषभ की मूर्तियाँ	अधिकाशतः बड़े अक्षरों में जुड़वा बैलों के सिर, ग्रिफिन या अन्य पौराणिक जीव अंकित होते हैं।

स्तूप

स्तूप मूल रूप से शवाधान टीलों को कहा जाता है। स्तूप शवाधान टीले का पारंपरिक रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें मृतकों के अवशेष और राख रखी जाती है। बौद्ध-पूर्व होने के बावजूद, स्तूपों को बौद्धों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। **[UPSC 2023]**

स्तूप के संरक्षक

संरक्षकों में सामान्य लोगों से लेकर गहपति और राजा तक शामिल होते थे।

- कई स्थलों पर शिल्पीसंघों द्वारा दान का भी उल्लेख मिलता है। हालाँकि, बहुत कम शिलालेख हैं जिनमें कारीगरों के नामों का उल्लेख है, जैसे- पीतलखोरा (पश्चिमी घाट में सतमाला रेंज) में कान्हा और महाराष्ट्र में कोंडाने गुफाओं (लोनावाला के पास) में स्थित शिलालेख।
- शिलालेखों में कारीगरों की श्रेणियों जैसे पत्थर तराशने वाले, सुनार, पत्थर पॉलिश करने वाले, बढ़ई आदि का भी उल्लेख किया गया है।
- दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से, संरक्षण का पैटर्न बहुत सामूहिक रहा है और शाही संरक्षण के बहुत कम उदाहरण देखने को मिलते हैं।

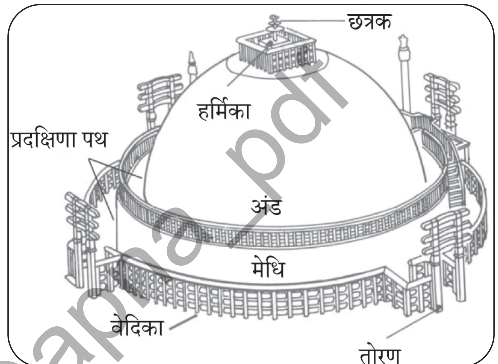

चित्र: स्तूप की संरचना

चित्र: साँची स्तूप

स्तूप की विशेषताएँ

बौद्ध स्तूप **एक ठोस संरचना वाला एक अर्द्ध-गोलाकार गुंबद है।**

- स्तूप का मुख्य भाग कच्ची ईंटों से बना हुआ है **जबकि बाहरी** सतह **पक्की ईंटों** से बनी हुई है।
- इसमें एक **बेलनाकार संरचना होती है** जिसके शीर्ष पर **हर्मिका** और **छतरी बनी होती है।**
- यह **प्रदक्षिणा पथ से घिरा होता है,** जहाँ भक्त परिक्रमा करते हैं।
- पूरी संरचना **लकड़ी की रेलिंग** और **तोरण नामक प्रवेश द्वारों से भी घिरी होती है।**
- बुद्ध के जीवन की घटनाओं, जैसे- जन्म, परित्याग, ज्ञानोदय, धर्मचक्रप्रवर्तन और महापरिनिर्वाण को कमल, हाथी, जातक कथाओं आदि प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है।

Search On TG: @apna_pdf

महत्त्वपूर्ण स्तूप

- **बुद्ध के अवशेषों** पर स्तूप का निर्माण:
  - बिहार में **राजगृह, वैशाली, वेथादीपा** और **पावा।**
  - नेपाल में **कपिलवस्तु, अल्लकप्पा** और **रामग्राम।**
  - उत्तर प्रदेश में **कुशीनगर** और **पिप्पलिवन।**
- **अवंती** और **गांधार** सहित कई स्थानों पर बुद्ध के अवशेषों पर कई अन्य स्तूपों के निर्माण का भी उल्लेख मिलता है, जो गंगा घाटी के बाहर हैं।
- **भरहुत, बोधगया, अमरावती** और **नागार्जुनकोंडा** अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल थे।

साँची का स्तूप

साँची स्तूप जो एक **विश्व धरोहर स्थल है, भोपाल** के पास रायसेन जिले में **बेतवा नदी** के पश्चिम में अवस्थित है। **[UPSC 2021]**

- अन्य अपेक्षाकृत छोटे स्तूपों के साथ, **साँची में तीन मुख्य स्तूप हैं।**
  - ऐसा माना जाता है कि **स्तूप-1 में बुद्ध के अवशेष हैं।**
  - **स्तूप-2** में तीन अलग-अलग पीढ़ियों से संबंधित दस कम प्रसिद्ध **अर्हतों (जिन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है) के अवशेष हैं।** उनके नाम अवशेष ताबूत पर पाए जाते हैं।
  - **स्तूप-3 में सारिपुत्त** और **महामौगलायन** (बुद्ध के दो प्रमुख शिष्य) के अवशेष हैं।
- मूल रूप से, स्तूप एक छोटी ईंट की संरचना थी जिसका समय के साथ विस्तार हुआ। बाद में, इसे पत्थर से ढक दिया गया और वेदिका तथा तोरण (प्रवेश द्वार) से घेर दिया गया।
- शिलालेख के साथ अशोक का सिंह-शीर्ष स्तंभ, स्तूप के दक्षिणी ओर पाया गया है।
- यहाँ **ऊपरी प्रदक्षिणा पथ भी है**,जो इस स्थल के लिए अद्वितीय है।
- चारों **प्रवेश द्वारों को** मूर्तियों द्वारा सजाया गया है। साँची की मूर्तियाँ, **आयाम में छोटी होने के बावजूद, बहुत प्राकृतिक हैं।**
- स्तंभों पर यक्षों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं और **शालभंजिका** (पेड़ की शाखा पकड़े हुए महिला) की मूर्तियाँ अपने आकर्षक आकार के लिए उल्लेखनीय हैं।
- **अशोक के काल में** स्तूप कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची थी।

2. लोक कला

शाही समर्थन के अलावा, स्थानीय समर्थन के माध्यम से मूर्तिकला, चीनी मिट्टी की वस्तुएँ और गुफा निर्माण सहित, कला के रूपों का विकास हुआ। इन्हें लोक कला के रूपों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

गुफा वास्तुकला

रॉक-कट गुफा वास्तुकला का विकास मौर्य काल के दौरान हुआ और आमतौर पर इन रॉक-कट गुफाओं का उपयोग **जैन** और **बौद्ध भिक्षुओं द्वारा विहार** (आवास स्थल) के रूप में किया जाता था।

- गुफाओं की मुख्य विशेषताओं में **अत्यधिक पॉलिशयुक्त आंतरिक भाग** और **सजावटी प्रवेश द्वार थे।**
- प्रारंभिक मौर्य गुफाओं का उपयोग आजीवक संप्रदायों द्वारा किया जाता था। बाद में, वे बौद्ध मठों के रूप में लोकप्रिय हो गईं।
- **बिहार** के **बराबर** और **नागार्जुनी गुफाओं का** निर्माण मौर्य काल के दौरान हुआ था।
  - मुख्य विशेषताओं में आयताकार और गोलाकार प्रवेश द्वार, चिकनी आंतरिक दीवारें और ध्यान हेतु न्यूनतम कक्ष शामिल हैं। लोमस ऋषि गुफा जैसी कुछ गुफाओं में मेहराब द्वार और सम्राट अशोक के शिलालेख हैं।
  - गुफाएँ ज्यामितीय नक्काशी और शिलालेखों के साथ प्राकृतिक परिवेश में रणनीतिक रूप से स्थित हैं, जो संप्रदाय की कठोर जीवन शैली और प्रकृति से जुड़ाव पर बल देती हैं।
  - बराबर पहाड़ियाँ चार गुफाओं के समूह को समाहित करती हैं, जिन्हें एक साथ 'बराबर गुफाएँ' कहा जाता है। इन्हें **'लोमस ऋषि'**, **'सुदामा'**, **'विश्वकर्मा'** और **'करण चौपड़'** गुफाओं के नाम से जाना जाता है।
  - **नागार्जुनी गुफाओं** में वादीथीका गुफा, वापियका गुफा और गोपिका गुफा शामिल हैं।

लोमस ऋषि गुफाएँ **[UPSC 2013]**

ये बिहार में गया के पास **बराबर पहाड़ियों पर चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ हैं।**

- ये गुफाएँ **अशोक ने आजीवक संप्रदाय** को दान में दी थीं।
- गुफा को प्रवेश द्वार पर **अर्द्ध-वृत्ताकार चैत्य मेहराब से सजाया गया है।**

- **नासिक की गुफाओं (महाराष्ट्र) को पांडव लेनी (लेणी) गुफाओं के** नाम से भी जाना जाता है। **[UPSC 2021]**

मूर्तियाँ

इसका उपयोग मुख्य रूप से स्तूपों में तोरण, मेधी की सजावट और धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता था।

- **मौर्यकाल की मूर्तियाँ जैन, हिंदू और बौद्ध तीनों धर्मों से संबंधित हैं।**
- ये अपनी यथार्थवादी, प्राकृतिक शैली, चिकनी सतह और पॉलिश पत्थर के लिए प्रसिद्ध हैं। मुख्य प्रतिमाओं में पशु प्रतीकरवाद (जैसे- शेर और हाथी), धर्मचक्र जैसी प्रारंभिक बौद्ध प्रतिमाएँ और दीदारगंज यक्षिणी (उर्वरता और प्रचुरता का प्रतीक एक विस्तृत और सुंदर महिला आकृति) शामिल हैं। उल्लेखनीय उदाहरणों में सारनाथ का सिंह स्तंभ और रामपुरवा स्तंभ शामिल हैं।

मृदभांड के बर्तन

- मौर्य काल के मिट्टी के बर्तनों को **उत्तरी काले परिमार्जित (पॉलिश्ड) मृदभांड (NBPW) के रूप में जाना जाता है।**
- उनकी विशेषता यह थी कि वे काले रंग के **अत्यधिक चमकदार मृदभांड थे** और उन्हें **मिट्टी के बर्तनों में विशिष्ट श्रेणी के बर्तन माना जाता है।**

मौर्योत्तर वास्तुकला

उस काल की कला बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को प्रतिबिंबित करती है जिसे उत्तर में **शुंगों, कण्वों, कुषाणों और शकों** तथा दक्षिणी और पश्चिमी भारत में **सातवाहनों, इक्ष्वाकुओं, आभीरों और वाकाटकों द्वारा आगे बढ़ाया गया था।**

Search On TG: @apna_pdf

रॉक-कट गुफाएँ

इस अवधि में दो प्रकार की गुफाओं का विकास हुआ:

- चैत्य और
- विहार **[UPSC 2013]**

गुफाओं को आमतौर पर मानव और जानवरों की आकृतियों से सजाया गया था। उनमें **आँगन** और **पत्थर की** दीवारें भी थीं।

चैत्य	विहार
• **चैत्य को प्रार्थना कक्ष** के रूप में उपयोग किया जाता था। • इनमें एक छोटा आयताकार द्वार होता था, जो एक मेहराबदार हॉल में खुलता था।	• विहार वस्तुतः बौद्ध और जैन भिक्षुओं के लिए **आवासीय स्थल होते थे।** • इनमें एक मुख्य गृह, सभागृह और भोजन कक्ष होता था। • चट्टानों की गहराई में बने कक्ष ध्यान के लिए होते थे।

पश्चिमी भारत में गुफा परंपरा

यहाँ ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी तक की कई बौद्ध गुफाएँ पाई गई हैं।

- पश्चिमी भारत में मुख्यतः वास्तुशिल्प के तीन प्रकार थे:
  - **मेहराबदार गुंबदनुमा छत चैत्य हॉल** (अजंता, पीतलखोरा, भाजा में)।
  - **मेहराबदार गुंबदनुमा छत स्तंभरहित हॉल** (महाराष्ट्र के **थाना-नादसूर में)।**
  - **सपाट छत वाला चतुर्भुज हॉल:** पीछे की ओर एक गोलाकार कक्ष के साथ **सपाट छत वाला चतुर्भुज हॉल** (महाराष्ट्र में **कोंडिवाइट में)।**
- चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं के महत्त्वपूर्ण स्थल: **नासिक में विहार गुफाएँ, जुन्नार (महाराष्ट्र) में गणेशलेणी** और **मुंबई में कन्हेरी गुफाएँ।**

चित्र: अधूरी चैत्य गुफा, कन्हेरी

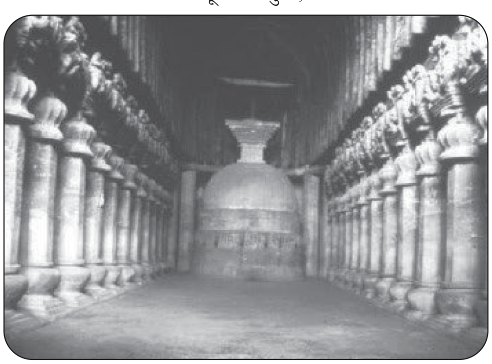

चित्र: चैत्य हॉल, कार्ले

चित्र: नासिक गुफा संख्या 3

- **कार्ले में,सबसे बड़े रॉक-कट चैत्य गृह की** खुदाई की गई थी। इस गुफा को मानव और जानवरों की आकृतियों से सजाया गया था।
- कुछ महत्त्वपूर्ण **विहार गुफाएँ अजंता** गुफाएँ, **बेडसा** गुफाएँ और **नासिक** गुफाएँ हैं।
- **नासिक** में विहार **गुफाओं की** खुदाई में सामने के स्तंभों पर **घाट-आधार** और **घाट-शीर्ष** पर **मानव आकृतियाँ उकेरी गई थीं।**
- **अन्य गुफा स्थल:** पुणे के पास भाजा गुफाओं में बौद्ध गुफाएँ हैं, मुंबई में **कन्हेरी। [UPSC 2023]**
- **जुन्नार सबसे बड़ा गुफा उत्खनन स्थल है।**
  - **जुन्नार में** विहार गुफा की भी खुदाई की गई थी जिसे **गणेशलेणी** के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इसमें बाद के काल की गणेश की एक छवि स्थापित की गई थी।

पूर्वी भारत में गुफा परंपरा

बौद्ध गुफाओं की खुदाई मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश और ओडिशा के तटीय क्षेत्रों में की गई है।

गुंटापल्ले गुफा (आंध्र प्रदेश)

गुफाओं की खुदाई **दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में की गई थी।** पश्चिमी भारत की गुफाओं की तुलना में यह गुफा **अपेक्षाकृत छोटी है।** यह उन प्रमुख स्थलों में से एक है, जहाँ एक ही स्थान पर **संरचित स्तूप, विहार** और **गुफाओं की खुदाई की गई है।** इसमें गोलाकार चैत्य गुफा और आयताकार विहार गुफाएँ हैं।

आंध्र में अन्य गुफा स्थल: रामपेरामपल्लम, अनकापल्ली और **धान्यकटक।**

- **विशाखापत्तनम** में **अनकापल्ली**: चौथी-पाँचवीं शताब्दी के दौरान पहाड़ी को काटकर एक विशाल चट्टानी स्तूप बनाया गया था। यह एक अद्वितीय स्थल है, क्योंकि यहाँ देश में **चट्टानों को काटकर बनाए गए सबसे बड़े स्तूप हैं।**
- **धान्यकटक (आंध्र प्रदेश):** महासांघिकों के अधीन प्रमुख बौद्ध केंद्र। **[UPSC 2023]**

उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ (ओडिशा)

इन गुफाओं में, **खारवेल जैन राजाओं के शिलालेख हैं।** शिलालेखों के अनुसार गुफाएँ **जैन भिक्षुओं के लिए थीं।**

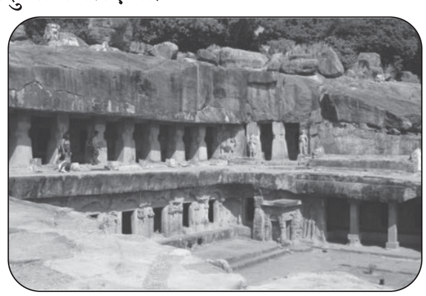

चित्र: उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ

Search On TG: @apna_pdf

- इस गुफा में **विशाल** आकृतियाँ पाई जाती **हैं**। इस परिसर में कुछ गुफाओं की खुदाई, 8वीं-9वीं शताब्दी ईस्वी में की गई थी।
- यहाँ अनेक **एकल-कक्ष खुदे हुए हैं।**

स्तूप

- मौर्योत्तर काल में स्तूप आकार में **बड़े** और **अधिक सजावटी हो गए।**
- लकड़ी और ईंट के स्थान पर **पत्थर का प्रयोग तेजी से होने लगा।**
- शुंग **राजवंश ने तोरण का विचार प्रस्तुत किया।**
- तोरणों पर आकृतियाँ और पैटर्न उकेरे गए थे। ये हेलेनिस्टिक प्रभाव के प्रमाण थे। **उदाहरण:** मध्य प्रदेश में **भरहुत स्तूप** और **साँची स्तूप।**

स्तूप और लोक परंपराएँ

1. लोक देवता

- प्राचीन बौद्ध स्तूपों में यक्ष और यक्षिणी (प्रकृति की आत्माएँ) जैसे लोक देवताओं के चित्रण हैं, जिनमें साँची स्तूप में प्रसिद्ध शालभंजिका यक्षिणी उर्वरता का प्रतीक है।
- जल और उर्वरता का प्रतिनिधित्व करने वाले नाग देवता अमरावती और नागार्जुनकोंडा में दिखाई देते हैं, जबकि द्वारपाल (संरक्षक देवता) स्तूप के प्रवेश द्वारों पर पाए जाते हैं, जैसे- भरहुत में।
- सूर्य और चंद्र जैसे दिव्य देवता भी शामिल हैं, जो ब्रह्मांडीय सद्भाव को दर्शाते हैं। मातृका जैसी उर्वरता आकृतियाँ, विशेष रूप से साँची और भरहुत जैसे स्थलों पर सहायक भूमिकाओं में दिखाई देती हैं, जो बौद्ध शिक्षाओं को स्थानीय कृषि परंपराओं से जोड़ती हैं।
- कई स्तूपों में बोधिवृक्ष या लोक देवताओं से जुड़े पवित्र वृक्षों की नक्काशी है। वृक्षों को स्थानीय देवताओं के निवास के रूप में पूजा जाता था, जो बौद्ध और स्थानीय आध्यात्मिक प्रथाओं को जोड़ते हैं।

2. दैनिक जीवन

- जटिल नक्काशीदार तोरण (द्वार) जातक कथाओं और दैनिक जीवन, जैसे- शिकार, नृत्य और कृषि के दृश्यों को दर्शाते हैं।
- अमरावती स्तूप (आंध्र प्रदेश, भारत), जो व्यापार, यात्रा और धार्मिक प्रथाओं को दर्शाने वाली अपनी विस्तृत कथात्मक मूर्तियों के लिए जाना जाता है। पट्टिका (पैनल) मानव और प्रकृति के बीच संबंधों को दर्शाती है, सद्भाव और सादगी पर बल देती है।

गुप्त वास्तुकला

गुप्त साम्राज्य को **"प्राचीन भारत का स्वर्ण युग" कहा जाता है।** प्रारंभिक गुप्त शासकों ने **बौद्ध वास्तुकला को प्रोत्साहित किया,** लेकिन बाद में उनके द्वारा **मंदिर वास्तुकला को** प्रोत्साहित किया गया।

गुफाएँ

गुप्त काल के दौरान, गुफाओं की दीवारों पर **भित्तिचित्र एक प्रमुख विशेषता है।**

अजंता गुफाएँ: [UPSC 2016, 2021]

अजंता की गुफाएँ चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं की एक श्रृंखला हैं, जो घोड़े की नाल के आकार में व्यवस्थित हैं। ये महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले के वाघोरा नदी के किनारे सह्याद्रि पहाड़ियों में स्थित हैं।

- इसमें **29 गुफाएँ हैं जिनमें से 25 विहार** और **4 चैत्य** के रूप में प्रयोग किए जाते थे।
- **ये वाकाटक राजाओं** के **संरक्षण** में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा उत्कीर्ण की गई थीं; इन राजाओं में **हरिसेन** प्रमुख थे।
- **अजंता की गुफाओं में गर्भ-गृह में स्थित बुद्ध की मूर्ति अपने** परंपरागत रूप में है। भारीपन मूर्तियों का सामान्य लक्षण है। बच्चों के साथ **यक्षी** और **हरीति** की मूर्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं। लोकप्रिय बोधिसत्व अवलोकितेश्वर को चित्रों और मूर्तियों में दर्शाया गया है।
- **इन गुफाओं में गुफा संख्या 26 सबसे बड़ी है** और इसमें विभिन्न प्रकार की बुद्ध प्रतिमाएँ उकेरी गई हैं जिनमें सबसे बड़ी महापरिनिर्वाण प्रतिमा है।

अजंता गुफाओं में चार चैत्य गुफाएँ हैं, जो **प्रारंभिक चरण** (**दूसरी** और **पहली** शताब्दी ईसा पूर्व) (गुफा संख्या 10 और 9) और बाद के चरण पाँचवीं शताब्दी ईस्वी (गुफा संख्या 19 और 26) से संबंधित हैं। इसमें बड़े **चैत्यविहार हैं** और इसे **मूर्तियों** और **चित्रों से सजाया गया है**। अजंता **पहली शताब्दी ईसा पूर्व** और **पाँचवीं शताब्दी ईस्वी** की **चित्रकला** का एकमात्र उदाहरण है।

एलोरा की गुफाएँ

यह अजंता से 100 किमी. दूर **औरंगाबाद जिले में स्थित है।** इसकी खुदाई **चरणनंद्री पहाड़ियों में** चट्टानों से की गई है।

- यह **34 गुफाओं का एक समूह है**-17 **ब्राह्मण,** 12 **बौद्ध** और 5 **जैन धर्म से संबंधित है।** **[UPSC 2013]**
- इन गुफाओं का विकास **5वीं** और **11वीं शताब्दी के मध्य हुआ था** (अजंता की गुफाओं की तुलना में ये नई हैं)।
- इनमें विषयवस्तु और **स्थापत्य शैली की दृष्टि से विविधता है।**
- इनके स्तंभ विशाल हैं। अजंता में भी **दो मंजिला गुफाओं की खुदाई की गई है,** लेकिन एलोरा में **तीन मंजिल वाली गुफाएँ** एक अनूठी उपलब्धि है।

बौद्ध गुफाएँ

- इन गुफाओं में बुद्ध की प्रतिमाएँ आकार में बड़ी हैं; वे आमतौर पर **पद्मपाणि** और **वज्रपाणि** की छवियों द्वारा संरक्षित होती हैं।
- बौद्ध गुफाओं में वज्रयान बौद्ध धर्म से संबंधित कई छवियाँ हैं, जैसे- **तारा, महामायुरी, अक्षोभ्या, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय, अमिताभ आदि।**
- केंद्रीय आकृति बुद्ध की है, जो तीन दिव्य मुद्राओं में पाई जाती है: ध्यान करना **(ध्यान मुद्रा)**, उपदेश देना **(व्याख्यान मुद्रा)** और दाहिने हाथ की तर्जनी से पृथ्वी को छूना **(भूमि-स्पर्श मुद्रा)।**
- बौद्ध गुफाओं में **तारा, खादिरवानी-तारा, चुंडा, वज्रदत-विश्वारी, महा-मयूरी, सुजाता, पंडारा** और **भृकुटी की नक्काशीदार छवियों** के माध्यम से **देवी का प्रतिनिधित्व किया गया था।**

जैन गुफाएँ

जैन गुफाओं के अंतर्गत यक्ष-मतंग, महावीर, पार्श्वनाथ और गोमतेश्वर की मूर्तियाँ प्रमुख हैं।

वैदिक धर्म की गुफाएँ

- इन समूहों की सबसे प्रारंभिक गुफाएँ छोटी और सरल हैं। कैलाशनाथ गुफा **(गुफा-16) को छोड़कर अधिकतर** गुफाएँ **चौकोर आकार की हैं।**

Search On TG: @apna_pdf

कैलाशनाथ मंदिर (गुफा-16)

चित्र: कैलाशनाथ मंदिर (गुफा सं. 16)

- यह एक **अखंड संरचना है, जो एक ही ठोस चट्टान** से बनाई गई है। ऐसा कहा जाता है कि यह मंदिर भगवान शिव के निवास स्थान कैलाश का प्रतिनिधित्व करता है।
- इस मंदिर का निर्माण **राष्ट्रकूट राजवंश** के **कृष्ण प्रथम (756-773 ई.) द्वारा करवाया गया था।**
- यह मंदिर **दो मंजिला है** और **पहली मंजिल पर कैलाश मंदिर है।**
- निचली **मंजिल पर आदमकद हाथियों की** नक्काशी उत्कीर्ण की गई है। देखने में ऐसा लगता है मानो हाथियों ने मंदिर को अपनी पीठ पर उठा रखा है।
- मंदिर के बाहरी हिस्से में **शैव और वैष्णव** देवताओं की छवियाँ हैं।
- प्रांगण में **ध्वजदंड** और एक **नंदी मंडप के साथ दो विशाल स्तंभ हैं।**
- **शिव-पार्वती का विवाह समारोह, रावण द्वारा कैलाश पर्वत को उठाने का** प्रयास और **देवी दुर्गा द्वारा महिषासुर का विनाश,** सुंदर मूर्तियाँ हैं।
- एक आकर्षक मूर्ति मगरमच्छ पर सवार **नदी देवी गंगा की** और कछुए पर सवार नदी देवी यमुना की है।
- शैव विषयों में, **रावण द्वारा कैलाश पर्वत को हिलाना, अंधकासुरवध** और **कल्याणसुंदर को** प्रचुरता से चित्रित किया गया है जबकि वैष्णव विषयों में विष्णु के विभिन्न अवतारों को दर्शाया गया है।

एलोरा की कुछ प्रमुख गुफाएँ

गुफा नं	विशेषताएँ
10	विश्वकर्मा गुफा या **बढ़ई की गुफा।** इस गुफा में महात्मा बुद्ध **धर्मचक्र मुद्रा में बैठे हैं** और उनके पीछे बोधि वृक्ष बना हुआ है।
12	एक हृष्ट-पुष्ट महिला को कोबरा का कमरबंद और सिर पर टोपी पहने हुए दर्शाया गया है। खदरीवानी-तारा ने भी उसी गुफा में अपने एक हाथ में एक कोबरा पकड़ रखा है।
गुफा 14-रावण की खाई गुफा 15-दशावतार मंदिर	
गुफा 29-धूमर लेना गुफा 30-छोटा कैलाश (जैन गुफा) गुफा 32-इंद्र सभा (जैन गुफा) गुफा 33-जगन्नाथ सभा (जैन गुफा)	

एलीफेंटा की गुफाएँ (5वीं शताब्दी के मध्य से 6वीं शताब्दी)

यह **मुंबई** के पास एलीफेंटा द्वीप (जिसे घारापुरी द्वीप के रूप में भी जाना जाता है) पर स्थित है। यह **मूल रूप से एक बौद्ध स्थल था जिस पर** बाद में **शैव धर्म का प्रभुत्व स्थापित हो गया।** यह एलोरा के समकालीन है और अपनी **मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।** यह एक **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।**

चित्र: महेशमूर्ति

- इसमें **पाँच हिंदू गुफाएँ** और **एक जोड़ी बौद्ध गुफाएँ स्थित हैं।**
- सबसे महत्त्वपूर्ण गुफा **महेशमूर्ति** गुफा है।

बाघ की गुफाएँ

यह मध्य प्रदेश के धार जिले में **बाघनी नदी** के तट पर स्थित है और **नौ बौद्ध गुफाओं का एक समूह है।** इसका विकास लगभग 5वीं-6वीं शताब्दी ईस्वी में मुख्यत: **सातवाहन काल के दौरान** हुआ था। सबसे महत्त्वपूर्ण गुफा, **रंग महल** है।

जूनागढ़ की गुफाएँ (गुजरात)

इसकी अनूठी विशेषता प्रार्थना कक्ष के सामने 30-50 फीट ऊँचे गढ़ का होना है जिसे **'ऊपर कोट' के नाम से जाना जाता है।**

मंडपेश्वर गुफाएँ (मुंबई के पास बोरिवल्ली)

मंडपेश्वर गुफाओं (मुंबई के पास बोरिवल्ली) को मोंटपेरिर गुफाओं के नाम से भी जाना जाता है। ये गुफाएँ गुप्त काल के अंत में ब्राह्मण गुफाओं के रूप में विकसित हुई थीं और बाद में इसे एक ईसाई गुफा में बदल दिया गया।

उदयगिरि की गुफाएँ (ओडिशा की उदयगिरि-खंडगिरि गुफाओं से भिन्न)

ये गुफाएँ विदिशा, मध्य प्रदेश में स्थित हैं और इन्हें 5वीं शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में **चंद्रगुप्त द्वितीय के संरक्षण में बनाया गया था।**

- **मूर्तियाँ: विष्णु का वराह या सूअर अवतार।** **[UPSC 2014, 2015]**

स्तूप

स्तूप स्थल-समत (उत्तर प्रदेश), **रत्नागिरी** (ओडिशा) और **मीरपुर खास** (सिंध) **धमेख स्तूप** (वाराणसी के निकट) का विकास इसी काल में हुआ था।

देवनी मोरी गंगा घाटी के बाहर एक महत्त्वपूर्ण स्तूप स्थल है। यह स्थल अस्पष्ट रूप से तीसरी शताब्दी या चौथी शताब्दी का प्रतीत है।

टेराकोटा और मृदभांड

मिट्टी की मूर्तियों का उपयोग धार्मिक और मृदभांड, दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता था। गुप्त काल के मृदभांडों के अवशेष अहिच्छत्र , राजगढ़, हस्तिनापुर और बशर में पाए गए हैं। इस काल के मृदभांडों का सबसे विशिष्ट वर्ग "लाल मृद्भांड" है।

Search On TG: @apna_pdf

मंदिर वास्तुकला

गुप्त काल के दौरान, प्रारंभिक चरण में सपाट छत वाले अखंड मंदिरों से लेकर बाद के वर्षों में मूर्तियों से युक्त शिखर वाले मंदिरों की क्रमिक प्रगति हुई। प्रगति को **5 चरणों में विभाजित किया जा सकता है**:

- **प्रथम चरण:** मंदिर **चपटी छत** वाले **चौकोर आकार के थे।** पूरी संरचना एक कम ऊँचाई वाले चबूतरे/मंच पर बनाई गई थी।
- **द्वितीय चरण:** मंच ऊँचे या ऊपर उठाए गए थे। **दो मंजिला मंदिर** पाए गए हैं। एक महत्त्वपूर्ण विकास गर्भगृह के चारों ओर एक ढका हुआ चलने योग्य मार्ग था जिसे **प्रदक्षिणापथ कहा जाता था**, जैसे-**नचनाकुठारा** में **पार्वती मंदिर** (मध्य प्रदेश)।
- **तृतीय चरण: तृतीय चरण में** समतल छत के स्थान पर **शिखरों** का उद्भव हुआ। मंदिरों की **पंचायतन शैली की शुरुआत की गई।**
- **चतुर्थ चरण: सामान्यत:** तीसरे चरण के समान ही था, सिवाय इसके कि **मुख्य मंदिर अब अधिक आयताकार हो गया,** जैसे- महाराष्ट्र में टेर मंदिर।
- **पंचम चरण:** उथले आयताकार प्रक्षेपण वाले **वृत्ताकार मंदिर का निर्माण।** जैसे- राजगीर में मनियार मठ।

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की शुरुआत 12वीं शताब्दी ईस्वी के अंत में भारत पर **मुहम्मद गौरी के कब्जे के साथ हुई।**

- मुसलमानों ने **सासैनियन** और **बीजान्टिन साम्राज्यों की विभिन्न डिजाइनों को**, जो उन्हें विरासत में मिली थीं, स्थानीय संस्कृति के साथ जोड़ दिया, जिससे **इंडो-सारसेनिक** या **इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की उत्पत्ति हुई।**
- उन्होंने नए तत्त्वों जैसे **सुलेख, जड़ाउ कार्य का उपयोग करके अलंकरण, शहतीर, ब्रैकेट, गुंबद** आदि की शुरुआत की।

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ:

- **धनुषाकार शैली** (Arcuate Style) **ने** वास्तुकला की पारंपरिक **ट्रैबीट शैली** (Trabeate Style) **का स्थान ले लिया।**
- मस्जिदों के आस-पास **मीनारों का निर्माण** शुरू किया गया।
- **मोर्टार का** उपयोग जोड़ने की सामग्री के रूप में किया गया।
- मुसलमानों को किसी भी सतह पर जीवित आकृतियों को उकेरने की मनाही थी। उन्होंने अपनी धार्मिक कला और वास्तुकला विकसित की जिसमें अरबी कला (अरबस्क शैली), **ज्यामितीय पैटर्न** तथा प्लास्टर और पत्थर पर **सुलेख शामिल थे।**
    - **अरबस्क:** एक सजावटी डिजाइन जिसमें रेखाएँ, पत्तियाँ और फूल आपस में गुंथे होते हैं।
- इमारतों में उत्कृष्ट **जाली का कार्य किया गया था,** जो इस्लामी क्षेत्र में **प्रकाश के महत्त्व को दर्शाता है।**
- आँगन में उपस्थित तालाबों, फव्वारों और छोटी नालियों के माध्यम से **जल के उपयोग को** महत्त्व मिला।
    - जल का उपयोग मुख्य रूप से तीन उद्देश्यों के लिए किया जाता था, अर्थात् **धार्मिक, सजावटी** और **परिसर को ठंडा रखने के लिए।**
- **बगीचे की** 'चारबाग शैली' की शुरुआत की गई जिसमें एक वर्गाकार ब्लॉक को चार समान उद्यानों में विभाजित किया गया था।

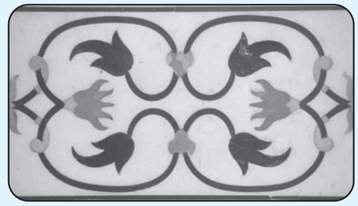

चित्र: चारबाग शैली

- **पितरा-ड्यूरा तकनीक अर्द्ध-कीमती पत्थरों का** उपयोग कर किए गए **सचित्र मोजेक कार्य** को संदर्भित करती है।
- **टाइलिंग (Tessellation):** दीवारों और फर्शों को टाइल से सजाने की एक तकनीक।
- **अग्रसंक्षेपण (Foreshortening) तकनीक,** जो शिलालेखों को वास्तव में जितना करीब है उससे अधिक करीब दिखाती है।

धनुषाकार शैली और ट्रैबीट शैली के बीच अंतर

धनुषाकार शैली	ट्रैबीट शैली
• मेहराबों एवं गुंबदों का प्रयोग। • **मेहराबों का निर्माण वूसोइर (इंटर लॉकिंग ब्लॉकों की शृंखला) के साथ किया जाना आवश्यक था जिसमें कीस्टोन लगे हुए थे।** • मस्जिदों के शीर्ष पर अर्द्ध-गोलाकार **गुंबदों** का प्रयोग। • मस्जिदों के चारों कोनों पर मीनारें मौजूद थीं। • निर्माण के लिए चूने के प्लास्टर, ईंट और मोर्टार का उपयोग किया गया था।	• **ब्रैकेट, स्तंभ लिंटल्स** का उपयोग। • मंदिरों के शीर्ष पर **शंक्वाकार** या **वक्ररेखीय शिखर** का प्रयोग। • मीनारें अनुपस्थित होती हैं। • पत्थर सभी निर्माणों का प्राथमिक घटक था।

शैलियों की श्रेणियाँ

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के अध्ययन को पारंपरिक रूप से वर्गीकृत किया गया है:

- शाही शैली (दिल्ली सल्तनत)
- प्रांतीय शैली (मांडू, गुजरात, बंगाल और जौनपुर)
- मुगल शैली (दिल्ली, आगरा और लाहौर)
- दक्कनी शैली (बीजापुर, गोलकुंडा)

1. शाही शैली

यह सल्तनत काल के दौरान शासन करने वाले विभिन्न राजवंशों के तहत फला-फूला और प्रत्येक शासक ने अपनी कुछ विशेषताएँ प्रदान कीं।

गुलाम राजवंश

- इस काल की वास्तुकला की शैली को **वास्तुकला की मामलुक शैली** के रूप में जाना जाता है।
- इस अवधि के दौरान अधिकांश निर्माण **मौजूदा धार्मिक संरचनाओं के पुनर्निर्माण थे।**
- **बलबन की कब्र को** पहले **वास्तविक मेहराब** से सजाया गया था।
- **कुतुब मीनार, दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद**, अजमेर में **अढ़ाई दिन का झोपड़ा** आदि इस काल की अन्य संरचनाएँ थीं।

Search On TG: @apna_pdf

कुतुब मीनार

इसे पाँच मंजिला इमारतों में विभाजित किया गया है जिसके निर्माण की शुरुआत कुतुब-उद-दीन ऐबक द्वारा शुरू की गई और बाद में इल्तुतमिश और फिरोज शाह तुगलक द्वारा इसे पूरा किया गया। संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में इसका निर्माण किया गया था।

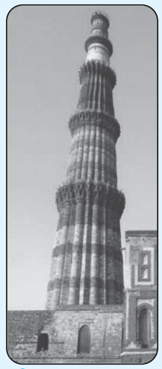

चित्र: कुतुब मीनार

- फिरोज शाह तुगलक (1351-88 ई.) ने इसकी दो मंजिलों का पुनर्निर्माण कराया।
- यह भारत की सबसे ऊँची पत्थर की मीनार है।
- मीनार **बहुभुज** और **गोलाकार** आकृतियों का मिश्रण है।
- यह मुख्य रूप से **लाल** और **भूरे बलुआ पत्थर से बनी है और** ऊपरी मंजिलों में कुछ हद तक **संगमरमर का उपयोग किया गया है।**
- इसकी विशेषता अत्यधिक **सजी हुई बालकनियाँ** और पत्तों वाले डिजाइनों से जुड़े **शिलालेखों की पट्टियाँ हैं।**

मीनारों का उपयोग प्रतिदिन अजान या नमाज के बुलावा हेतु होता था। अधिक ऊँचाई शासक की ताकत और शक्ति का प्रतीक थी।

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद: कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1197 ईस्वी के आस-पास इस मस्जिद का निर्माण कराया था।

खिलजी वंश

उन्होंने 1290 ई. से 1320 ई. तक शासन किया और **वास्तुकला की सेल्जुक शैली की स्थापना की।**

- मोर्टार का उपयोग पत्थरों को जोड़ने के लिए प्रमुखता से किया जाने लगा।
- खिलजी वास्तुकला की विशेषता **लाल बलुआ पत्थर का उपयोग और** संगमरमर से उभरी धनुषाकार शैली, गुंबद के नीचे धँसी हुई मेहराबें, छिद्रित खिड़कियाँ, एक बड़ा गुंबद और एक नुकीले घोड़े की नाल के आकार में एक वास्तविक मेहराब है।
- उदाहरण: **अलाउद्दीन खिलजी द्वारा अलाई दरवाजा, सीरी किला आदि।**

अलाई दरवाजा: इसे अलाउद्दीन खिलजी ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में बनवाया था और यह **पहले वास्तविक गुंबद से सुशोभित है।**

तुगलक वंश:

- भवन की **मजबूती पर अधिक** तथा **साज-सज्जा पर कम जोर दिया गया।** इसने निर्माण की एक शैली पेश की जिसे **'बैटर' के नाम से जाना जाता है।** इसे अधिक मजबूती देने के लिए **ढलान वाली दीवारों का उपयोग किया गया, जो इसकी विशेषता थी** जैसा कि गियासुद्दीन तुगलक के मकबरे में देखा गया है।
- उनकी **विशेषताओं में** प्रमुख निर्माण सामग्री के रूप में **पत्थर** के मलबे का उपयोग,**चार केंद्रित मेहराब का प्रयोगात्मक उपयोग** (मेहराब-बीम संयोजन तुगलक शैली की एक पहचान है), शामिल हैं। कब्रों में एक **नुकीले गुंबद और अष्टकोणीय योजना का उद्भव,** इमारतों के पैनलों में **सजावट के** एक तत्त्व के रूप में **मटमैली टाइलों की शुरूआत।**
- **तुगलकाबाद, जहाँपनाह** और **फिरोजाबाद** शहर तुगलक काल के निर्माण के उदाहरण हैं।
- **लोदी राजवंश**: दिल्ली और उसके आस-पास **बिना** किसी **भव्य सजावट के** बड़ी संख्या में कब्रें बनाई गईं। इन मकबरों को **अष्टकोणीय योजना पर डिजाइन किया गया था।**
- **दोहरे गुंबदों की** शुरुआत की गई जिसमें **शीर्ष गुंबद के अंदर एक खोखला गुंबद शामिल था।**
- **सिकंदर लोदी का मकबरा (दिल्ली)** भारत में निर्मित **पहला उद्यान मकबरा** था।

सल्तनत काल की सार्वजनिक इमारतें इसमें सराय, पुल, बावली, बाँध, कचेहरी (प्रशासनिक भवन), कोतवाली (पुलिस स्टेशन), डाक-चौकी (पोस्ट-स्टेशन), हम्माम (सार्वजनिक स्नानघर) और कटरा (बाजार स्थान) शामिल हैं।

सराय: इसे 13वीं शताब्दी में **तुर्कों** द्वारा भारत में **लाया गया था।** सराय के अस्तित्व का सबसे पहला उल्लेख **बलबन के समय** (1266) में मिलता है।

- मुहम्मद तुगलक और फिरोज तुगलक को दिल्ली के साथ-साथ सल्तनत के प्रमुख भूमि मार्गों पर बड़ी संख्या में सरायों का निर्माण करने के लिए जाना जाता है।

कुएँ और बावड़ियाँ दिल्ली सल्तनत वास्तुकला का एक हिस्सा थे। **गंधक की बावली** महरौली (दिल्ली) में **इल्तुतमिश** द्वारा निर्मित बावड़ियों में से एक है।

2. प्रांतीय शैली

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला में बंगाल, गुजरात, जौनपुर, गोलकुंडा, मालवा और दक्कन के तात्कालिक राज्यों की स्थानीय वास्तुकला शैलियों को शामिल किया गया, जिससे प्रांतीय शैली को बढ़ावा मिला। इनमें से कुछ प्रांतीय विशेषताएँ थीं:

बंगाल: बाँस के निर्माण से उत्पन्न हुई ढलानदार कंगनी वाली बंगाल की छत को **मुसलमानों द्वारा** अपनाया गया।

- **ईंट मुख्य निर्माण सामग्री** थी और **पत्थर का उपयोग मुख्यतः स्तंभों** तक ही सीमित था।
- **सजावट के लिए ढकी हुई ईंटों** और **चमकदार टाइलों का उपयोग किया** जाता था।
- **उदाहरण**- गौर में **कदम रसूल मस्जिद** और **दखिल दरवाजा,** पांडुआ में **अदीना मस्जिद**, बंगाल में दर्सबारी मस्जिद और अहमदाबाद में सीदी **सैय्यद मस्जिद।**
- **जौनपुर: इसे शर्की शासकों का संरक्षण प्राप्त था।** इसने मीनारों के उपयोग से बचने का प्रयास किया। **उदाहरण**- जौनपुर की **अटाला मस्जिद** और **लाल दरवाजा मस्जिद।**
- **मालवा:** इसमें **पर्यावरणीय अनुकूलन शामिल है** जैसा कि बड़ी खिड़कियों, मेहराबों, कृत्रिम जलाशयों (बावली) आदि में देखा जा सकता है। एक प्रमुख विशेषता विभिन्न **रंग के पत्थरों** और **संगमरमर का उपयोग था।**
- उदाहरण- **हिंडोला महल**, **रानी रूपमती मंडप, जहाज महल, अशरफी महल** आदि।
- **दक्कन:** इसे **बीजापुर शैली के रूप में भी जाना जाता है।** इसे **आदिल शाह के संरक्षण में विकसित किया गया था। तीन धनुषाकार अग्रभाग, बल्बनुमा गुंबद** और **कॉर्निस का उपयोग** इस शैली के निर्माणों की विशेषताएँ हैं।

Search on TG: @apna_pdf

- इमारतों को मजबूत करने के लिए **लोहे के क्लैंप और मोर्टार के** मजबूत प्लास्टर का उपयोग किया गया था। छतें बिना किसी सहारे के थीं। दीवारों को भी समृद्ध नक्काशी से सजाया गया था। **बीजापुर (कर्नाटक)** में **गोल गुंबज** इसी शैली में बनाया गया था।

- **गोल गुंबद**: यह आदिल शाही राजवंश के सातवें सुल्तान **मुहम्मद आदिल शाह (1626-1656)** के **मकबरे** के रूप में बनाया गया था।
- **गुंबद कॉम्प्लेक्स** में **नक्कार खाना** (एक अनुष्ठानिक नगाड़ा कक्ष) एक मस्जिद और एक सराय है।
- इसे अलंकृत प्लास्टर वर्क के साथ **गहरे भूरे बेसाल्ट का उपयोग करके बनाया गया था।**
- इसके गुंबदों, मेहराबों और ज्यामितीय बनावट में **तिमुरिड** और **फारसी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।**
- इसका **गुंबद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा गुंबद है।**
- गुंबद के साथ एक प्रतिध्वनित **गैलरी** एक ध्वनिक आश्चर्य है जो ध्वनियों को बढ़ा सकती है और बार-बार प्रतिध्वनित कर सकती है। [**विक्टोरिया मेमोरियल** (कोलकाता) में भी एक प्रतिध्वनित गैलरी है।]

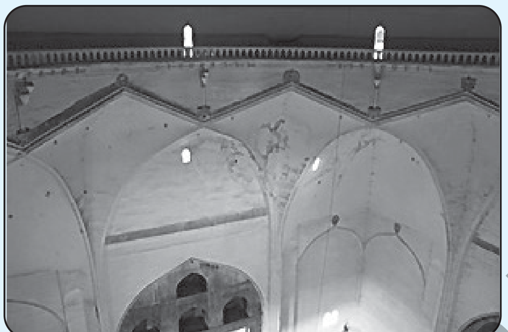

3. मुगल शैली

- मुगलों ने कला और वास्तुकला का संरक्षण किया
- **बाबर: उसने पानीपत** और **रोहिलखंड** में मस्जिदों का निर्माण कराया।
- **हुमायूँ: उसने दीनपनाह** नामक नगर की नींव रखी।

हुमायूँ का मकबरा (दिल्ली)

यह उनकी विधवा **बेगा बेगम** द्वारा निर्मित मुगल वास्तुकला का **पहला विशिष्ट उदाहरण है।**

- यह **फारसी वास्तुकला** और **भारतीय परंपराओं** का **संश्लेषण है।** इसमें एक ऊँचा **दोहरा गुंबद** है और साथ ही छतरियाँ भी हैं, जो दूर से इसे पिरामिडनुमा आकार देती हैं।
- इसमें **चारबाग** शैली का उद्यान है।
- मकबरे की लाल बलुआ पत्थर से निर्मित दो मंजिला संरचना, कक्षों की एक श्रृंखला के ऊपर खड़ी की गई है, जो एक **संगीत रचना की तरह है।**
- केंद्रीय कक्ष के अष्टकोणीय रूप में समाधि स्थल है।
- यह **पहली बार है** जब **लाल बलुआ पत्थर** और **सफेद संगमरमर का** उपयोग किया गया है।

शेरशाह:

- **उसका काल** वास्तुकला में **लोदी शैली से मुगल शैली** की ओर संक्रमण का चरण है।
- उसने दिल्ली में **पुराना किला** और **किला-ए-कुहना मस्जिद का निर्माण कराया।**
- **उसने पटना में शेरशाह सूफी मस्जिद**, पाकिस्तान में **रोहतास किला और सासाराम में अपना मकबरा** बनवाया।
- उसने एक पुराने मौर्य मार्ग का विस्तार और पुनर्निर्माण किया और इसका नाम बदलकर **'सड़क-ए-आजम' रखा।** इसे बाद में **ग्रैंड ट्रंक रोड कहा गया।**

अकबर:

- **यह मुगल कला और वास्तुकला के स्वर्णिम काल** की शुरुआत थी। यह काल हिंदू और इस्लामिक निर्माण शैली का मिश्रण था।
- **लाल बलुआ पत्थर** का उपयोग और **ट्रैबीट निर्माण का व्यापक उपयोग अकबर के निर्माण शैली की मुख्य विशेषताएँ थीं।**
  - मेहराबों **का उपयोग** संरचनात्मक रूप की बजाय मुख्यतः **सजावटी रूप में** किया गया।
  - गुंबद कभी-कभी खोखले होते थे, लेकिन तकनीकी रूप से कभी भी वास्तविक दोहरे क्रम के नहीं होते थे।
- अकबर की निर्माण परियोजनाओं को **दो मुख्य समूहों में विभाजित किया जा सकता है** जिनमें से प्रत्येक एक अलग चरण का प्रतिनिधित्व करता है।
  - **पहला समूह**- आगरा, इलाहाबाद और लाहौर में **एक किले की इमारतें** और कुछ महल।
  - **दूसरा समूह**- मूलतः **फ़तेहपुर सीकरी** में अकबर की **नई राजधानी का निर्माण।**

आगरा का किला

- आगरा किले का **दिल्ली गेट** और **जहाँगीरी महल,** अकबर के शासनकाल की एकमात्र प्रतिनिधि इमारतें हैं।

जहाँगीरी महल

- **इसकी संरचना लाल बलुआ पत्थर** से बनी एक मजबूत इमारत के रूप में की गई है। उद्यान **चारबाग शैली में बनाए गए हैं।**
- अंदर मौजूद अधिकांश संरचनाएँ शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान बनाई गई थीं। इसमें शाहजहाँ द्वारा निर्मित **दीवान-ए-आम** (सार्वजनिक दर्शकों का हॉल) और **दीवान-ए-खास (निजी दर्शकों का हॉल) शामिल थे।**

- **फतेहपुर सीकरी: इसकी स्थापना शेख सलीम चिश्ती** के प्रति कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में की गई थी।
- इसे **"इतिहास में एक ठहरे हुए क्षण"** के रूप में वर्णित किया गया है, क्योंकि यहाँ की इमारतें **हिंदू** और **फारसी शैलियों** के **अनूठे मिश्रण का प्रतिनिधित्व करती हैं।** यह अकबर की नई राजधानी थी।
- सभी इमारतें पारंपरिक **ट्रैबीट निर्माण शैली का उपयोग करते हुए विशिष्ट समृद्ध लाल बलुआ पत्थर से बनी हैं।**
- इमारतें स्थानीय चट्टानों से बनाई गई थीं और मोर्टार के उपयोग के बिना जोड़ी गई थीं।

Search On TG: @apna_pdf

फतेहपुर सीकरी शहर के अंदर महत्त्वपूर्ण इमारतें

- **बुलंद दरवाजा** (गुजरात पर अकबर की जीत की याद में 1576 ई. में बनाया गया) विश्व का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार है। **[UPSC 2018]**
- **सलीम चिश्ती का मकबरा- यह सफेद संगमरमर** से बनी फतेहपुर सीकरी की एकमात्र इमारत है।
- **इबादत खाना- अकबर** विभिन्न धर्मों के नेताओं के साथ विचार-विमर्श के लिए इसका इस्तेमाल करता था। **[UPSC 2014]**
- अन्य इमारतों में **पंच महल, पचीसी कोर्ट** (शतरंज खेलने के लिए), **जामा मस्जिद, हिरण मीनार, जोधाबाई का महल** आदि शामिल हैं।

- **वृन्दावन** में **गोविंद देव मंदिर का** निर्माण **राजा मान सिंह** ने **लाल पत्थर से करवाया था।** मंदिर के निर्माण के लिए पत्थर अकबर द्वारा दान में दिया गया था।
- **जहाँगीर:** उसने चित्रकला पर अधिक ध्यान केंद्रित किया और वास्तुकला को पीछे छोड़ दिया।
- उसके शासनकाल में हुए कुछ महत्त्वपूर्ण निर्माण **अकबर का मकबरा (सिकंदरा), मोती महल (लाहौर) तथा** कश्मीर में शालीमार बाग और **निशात बाग थे।**

अकबर का मकबरा: इसकी **डिजाइन स्वयं अकबर** ने की थी और इसका निर्माण उनके जीवनकाल में ही शुरू हुआ था। इसे बाद में **जहाँगीर ने पूरा करवाया।**

- **नूरजहाँ ने सफेद संगमरमर से एतमाद-उद-दौला** (आगरा) के मकबरे का निर्माण करवाया।

शाहजहाँ: शाहजहाँ के शासनकाल में मुगल वास्तुकला अपने **चरमोत्कर्ष पर पहुँची।**

- उस काल की इमारतें संगमरमर की नाजुक नक्काशी और पिएट्रा-ड्यूरा के काम से सुसज्जित है।
- मेहराब को पत्तियों की आकृति से सजाया गया, गुंबद पतली गर्दन के साथ बल्बनुमा हो गए और स्तंभ कोमल आकृतियों के साथ बनाए गए थे।
- उनके उल्लेखनीय निर्माण में शामिल हैं- **शाहजहाँनाबाद शहर** (वर्तमान पुरानी दिल्ली), **ताज महल, आगरा के किले में मोती मस्जिद** (संगमरमर से बनी), दिल्ली में **जामा मस्जिद, दिल्ली में लाल किला आदि।**

लाल किला

- यह यमुना नदी के पुराने मार्ग के निकट है।
- दो प्रवेश द्वार हैं- **दिल्ली गेट** और **लाहौर गेट।**
- किले के अंदर प्रमुख इमारतें हैं- **दीवान-ए-आम, दीवान-ए खास, मोती महल, हीरा महल** और **रंग महल।**
  - **दीवान-ए-खास:** यह भी कहा जाता है कि इसका संगमरमर का मंच कभी प्रसिद्ध मयूर सिंहासन का आधार था।
    - सुप्रसिद्ध कथन, **"यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है,यहीं है, यहीं है,"** इस संगमरमर के महल की दीवारों पर सुशोभित हैं।

ताज महल

- **यह अर्जुमंद बानो बेगम**, जिन्हें **मुमताज महल के** नाम से भी जाना जाता था, का मकबरा है।
- मुख्य वास्तुकार फारसी मूल के भारतीय **उस्ताद अहमद लाहौरी थे।**
- इसमें मुगल वास्तुकला की सभी विशेषताएँ विद्यमान हैं, जैसे- सुलेख, पिएट्रा-ड्यूरा और चारबाग शैली उद्यान।

- **औरंगज़ेब:** वह शुद्धतावादी था और वास्तुकला में सक्रिय रुचि नहीं लेता था।
- उसके शासनकाल की प्रमुख इमारतों में औरंगाबाद में **उसकी पत्नी राबिया-उद-दौरानी का मकबरा (बीबी का मकबरा),** लाहौर में **बादशाही मस्जिद** और दिल्ली के लाल किला में **मोती मस्जिद शामिल हैं।**
  - औरंगाबाद में निर्मित उनकी पत्नी के मकबरे में, ताज महल की नकल करने की कोशिश की गई है।

मुगल काल के दौरान सार्वजनिक उपयोगिता संबंधी नागरिक कार्य: जौनपुर में गोमती नदी पर बना पुल और पश्चिमी यमुना नहर।

लखनऊ में स्थित **बड़ा इमामबाड़ा का निर्माण 1784 ई. में आसफ-उद-दौला द्वारा किया गया था।** इसके निर्माण में मोर्टार के उपयोग के बिना ईंटों को जोड़ा गया है।

रूमी दरवाजा भी लखनऊ में स्थित है। इसे अवध के नवाब आसफ-उद-दौला ने बनवाया था। इसे चूने से लेपित ईंटों का उपयोग करके बनाया गया था। **[UPSC 2018]**

आधुनिक वास्तुकला

आधुनिक भवन निर्माण और योजना का परिचय भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद हुआ। इस वास्तुकला का मुख्य उद्देश्य उनके संगठनों, उनके लोगों और भारत जैसे बड़े साम्राज्य को नियंत्रित करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक था, उसे स्थान देना था।

पुर्तगाली प्रभाव

- भारत में वास्तुकला की **इबेरियन शैली की** शुरुआत की।
- विषम रंगों के उपयोग से युक्त **आँगन, घरों** और **बारोक शैली** की अवधारणा भी पेश की।
- पुर्तगाली निर्माण के उदाहरण- **गोवा में 'कैथेड्रल' और 'बेसिलिका ऑफ़ बॉम जीसस,' तथा दीव में दीव किला आदि।**

फ्रांसीसी प्रभाव

- **शहरी नगर नियोजन** की अवधारणा का आगमन हुआ।
- **पुदुचेरी, चंदननगर, माहे** (केरल), **कराईकल** (तमिलनाडु) और **यनम** (आंध्र प्रदेश) शहरों का विकास।
- फ्रांसीसी निर्माण के अन्य उदाहरण- **पुदुचेरी में चर्च ऑफ सेक्रेड हार्ट ऑफ जीसस और चंदननगर (पश्चिम बंगाल) का सेक्रेड हार्ट चर्च।**

Search On TG: @apna_pdf

ब्रिटिश प्रभाव

- **गोथिक शैली** का आगमन हुआ और इसे भारतीय वास्तुकला के साथ मिला दिया गया जिसके परिणामस्वरूप, वास्तुकला की **इंडो-गोथिक शैली का विकास हुआ।**
- 1911 ई. के बाद **नव-रोमन वास्तुकला का उदय हुआ।**

इंडो-गोथिक शैली

- यह वास्तुकला की भारतीय, फारसी और गोथिक शैलियों का एक अनूठा मिश्रण है और इसे **विक्टोरियन शैली के रूप में भी जाना जाता है।**
- इमारतें बड़ी और विस्तृत हैं, जिनकी **दीवारें** इंडो-इस्लामिक युग की तुलना में पतली हैं।
- इंडो-इस्लामिक युग के घुमावदार मेहराबों के विपरीत, मेहराब **नुकीले थे।**
- **बड़ी खिड़कियाँ** विक्टोरियन शैली की अनूठी विशेषता हैं।
- उदाहरण: **कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल, मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया** आदि।

नव-रोमन शैली

- **एडविन लुटियंस** और **हर्बर्ट बेकर** की कृतियाँ इस शैली का बेहतरीन उदाहरण थीं, **उदाहरण:** नई दिल्ली का परिसर।
- यह वास्तुकला की सभी शैलियों का संगम था जिसने इस शैली को वैविध्यपूर्ण बना दिया।
- निर्माण की **मिश्रित प्रकृति** के परिणामस्वरूप **सादगी, आधुनिकता और उपयोगिता से अत्यधिक समझौता किया गया।**
- **गोलाकार इमारतों पर अधिक ध्यान दिया गया** और पश्चिमी वास्तुशिल्प डिजाइनों को साकार करने के लिए प्राच्य रूपांकनों (Oriental Motifs) का अत्यधिक उपयोग किया गया था।

आजादी के बाद वास्तुकला

आजादी के बाद वास्तुकला के दो दृष्टिकोण उभरे- **पुनरुद्धारवादी** और **आधुनिकतावादी,** लेकिन दोनों ही औपनिवेशिक प्रभाव से छुटकारा नहीं पा सके परिणामस्वरूप, भारत की वास्तुकला परंपराओं के **मानक में गिरावट आई।**

- स्वतंत्रता पश्चात् की भारतीय वास्तुकला आधुनिकता, स्थिरता और पारंपरिक तत्त्वों के मिश्रण द्वारा चिह्नित है।
- प्रमुख विकासों में ली-कार्बूजियर द्वारा चंडीगढ़ का आधुनिकतावादी डिजाइन, लोटस टेंपल और विधान सौधा जैसी प्रतिष्ठित संरचनाएँ और सीआईआई-सोहराबजी गोदरेज ग्रीन बिजनेस सेंटर जैसी ग्रीन इमारतों पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है।
- स्थानीय वास्तुकला का पुनरुद्धार और स्थानीय सामग्रियों का एकीकरण भी महत्त्वपूर्ण हो गया। उल्लेखनीय उपलब्धियों में विश्व स्तरीय सरकारी भवन, धार्मिक मंदिर तथा मेट्रो और हवाई अड्डे जैसे आधुनिक परिवहन बुनियादी ढाँचे शामिल हैं, जो भारत के विकास और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं।
- चार्ल्स कोरेया, बालकृष्ण दोशी, पियरे जेनेरेट और साहिब सिंह जैसे वास्तुकारों ने भारतीय परंपरा के साथ आधुनिकता का मिश्रण करते हुए भारतीय स्वतंत्रता पश्चात् के वास्तुशिल्प परिदृश्य को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।
- बालकृष्ण दोशी का IIM अहमदाबाद और चार्ल्स कोरेया का कंचनजंगा अपार्टमेंट आधुनिक भारतीय वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

❖ ❖ ❖

Search on TG: @apna_pdf

2 मंदिर वास्तुकला

प्रारंभिक मंदिर

- स्तूपों के निरंतर निर्माण के साथ-साथ ब्राह्मणवादी (Brahmanical)/हिन्दू मंदिर एवं मूर्तियाँ अधिक लोकप्रिय हो गईं।
- प्रत्येक मंदिर में एक प्रमुख देवता की मूर्ति स्थापित की गई थी।
- मंदिर के पूजा गृह के तीन प्रकार हैं:
  1. **संधार** (प्रदक्षिणा पथ के साथ)
  2. **निरंधरा** (प्रदक्षिणा पथ के बिना)
  3. **सर्वतोभद्र** (सभी दिशाओं से प्रवेश किया जा सकता है)

उल्लेखनीय मंदिर:
- उत्तर प्रदेश में **देवगढ़।**
- मध्य प्रदेश में विदिशा के पास **उदयगिरि, एरण, नचना-कुठार।**
- इन मंदिरों में आमतौर पर एक बरामदा, एक हॉल और पीछे की ओर एक पूजा स्थल होता था।

हिन्दू मंदिर की संरचना

- **गर्भगृह:** गर्भगृह, शुरू में एक ही प्रवेश द्वार वाला एक छोटा कक्ष था, जो समय के साथ एक बड़े कक्ष में विकसित हुआ। इसे मुख्यमूर्ति को रखने के लिए डिजाइन किया गया है।
- **प्रवेशद्वार (मंडप):** मंदिर का प्रवेश द्वार, जैसे कि बरामदा अथवा द्वार मंडप बड़ी संख्या में उपासकों को समायोजित करने के लिए एक स्थान के रूप में कार्य करता है।
- **वास्तु शिल्प तत्व:** स्वतंत्र खड़े मंदिरों में एक पहाड़ जैसा शिखर चित्रित है, जो उत्तर भारत में एक घुमावदार **शिखर का रूप लेता है और दक्षिण भारत में एक पिरामिड नुमा टॉवर** के रूप में होता है।
- **वाहन और ध्वज:** गर्भगृह के सामने अक्षीय रूप से स्थित, वाहन मुख्य देवता के वाहन के रूप में होता है जिसके साथ एक मानक स्तंभ या ध्वज लगा हुआ होता है।

मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ:

- **मंदिरों की दो अलग-अलग शैलियाँ प्रचलित हैं-**
  - **उत्तर में नागर शैली।**
  - **दक्षिण में द्रविड़ शैली।**
  - दोनों ही शैलियाँ वास्तुशिल्प विशेषताओं और शिखर के आकार में भिन्न हैं।
  - कुछ विद्वान **वेसर शैली** को **नागर और द्रविड़ तत्वों के मिश्रित रूप** को एक स्वतंत्र वास्तुकला शैली के रूप में देखते हैं।

नागर (उत्तर भारतीय मंदिर शैली)

उत्तर भारत में मंदिर वास्तुकला की प्रचलित शैली को **नागर शैली** के रूप में जाना जाता है, जो **5वीं शताब्दी ईस्वी** के आस-पास विकसित हुई थी।

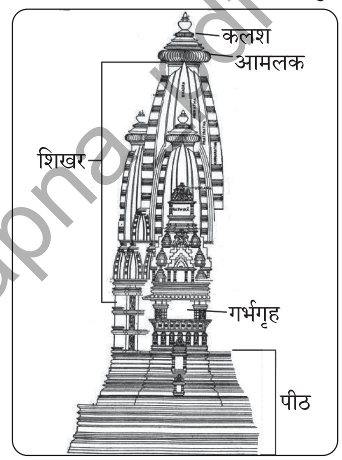

चित्र: नागर मंदिर

विशेषताएँ

- उत्तर के मंदिर प्रायः **ऊँचे पत्थर के चबूतरे पर बनाए जाते हैं।**
- दक्षिण भारत के विपरीत, यहाँ आमतौर पर **विस्तृत सीमा-दीवारों** या **प्रवेश द्वारों का अभाव है।**
- मंदिरों में आमतौर पर मंदिर निर्माण की **पंचायतन शैली का पालन किया जाता है।**
- गर्भ गृह के बाहर **गंगा** और **यमुना की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं।**
- मंदिर परिसर में कोई **जल की टंकी या जलाशय नहीं थे।**
- शिखर का ऊर्ध्वाधर सिरा एक क्षैतिज बाँसुरीदार चक्र में समाप्त होता है जिसे **आमलक के नाम से जाना जाता है।**
- आमलक के शीर्ष पर एक गोलाकार आकार की संरचना होती है जिसे **कलश कहा जाता है।**

पंचायतन शैली **[UPSC 2014]**
- इसमें प्रमुख देवता के मंदिर सहित **चार सहायक मंदिर** होते हैं।
- मुख्य मंदिर वर्गाकार और **मंडप लम्बा होता है।**
- क्रॉस का आकार देने के लिये सहायक मंदिरों को मंडप के दोनों ओर एक-दूसरे के विपरीत स्थापित किया गया है।
- **उदाहरण:** देवगढ़ (उत्तर प्रदेश) में **दशावतार मंदिर,** ऐहोल (कर्नाटक) में **दुर्गा मंदिर।**

Search On TG: @apna_pdf

नागर शैली के मंदिरों को निम्नलिखित प्रकार से उप-विभाजित किया गया है

- **शिखर के आकार** में भिन्नता के आधार पर नागर मंदिरों का **उप-विभाजन:**

विभिन्न प्रकार के मंदिर दुर्ग (शिखर)

- आरंभिक मंदिरों में **एक ही दुर्ग** (शिखर) बनाए जाते थे।
- लेकिन बाद के मंदिरों में **कई दुर्ग निर्मित किए जाने लगे।**
- गर्भगृह हमेशा सबसे ऊँचे शिखर के ठीक नीचे स्थित होता है।
- समय के साथ कई प्रकार के शिखर विकसित किए जाने लगे, जो निम्नलिखित हैं:
- **लैटिना शिखर:**
  - **यह 'लैटिना'** या **'रेखा-प्रसाद' शिखर के** प्रकार के रूप में प्रसिद्ध है।
  - इसका **आधार वर्गाकार** है और **दीवारें अंदर की ओर मुड़ी हुई या ढलान वाली होती हैं,** जो शीर्ष पर एक बिंदु पर समाप्त होती हैं।
  - लैटिना इमारतें कई छोटे शिखर को सहारा देने के लिए विकसित की गई थीं, जो उभरती हुई पर्वत चोटियों की तरह एक साथ एकत्रित थीं।
- **फामसाणा शिखर:**
  - ये **लैटिना शिखर की तुलना में अधिक चौड़े** और छोटे होते हैं।
  - इनकी छतें **कई स्लैबों से बनी होती हैं, जो धीरे-धीरे एक बिंदु तक उठती हैं।**
  - कई उत्तर भारतीय मंदिरों में, मंडपों (हॉलों) पर फमसाणा डिज़ाइन का उपयोग किया जाता है जबकि मुख्य गर्भगृह एक लैटिना इमारत में रखा जाता है।

वल्लभी प्रकार की इमारत:

  - इसकी विशेषता **आयताकार इमारतें हैं जिनकी छत एक गुंबददार कक्ष में उठी हुई होती है, जिसकी वजह से इसे 'वैगन-वॉल्टेड इमारतें'** कहा जाता है।
  - **इसमें और बौद्ध रॉक-कट चैत्य गुफाओं की जमीनी योजना में समानताएँ होती हैं।**
  - गुंबददार कक्ष का किनारा **गोल है,** जो **प्राचीन बाँस या लकड़ी के वैगन जैसा दिखाई देता है।**

मध्य भारत

- **उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश** और **राजस्थान के** प्राचीन मंदिरों की विशेषताएँ लगभग समान हैं।
- **प्रारंभिक गुप्तकाल के** मंदिर अपेक्षाकृत साधारण होते हैं जिनमें **एक मंडप** और **गर्भ गृह को सहारा देने वाले चार स्तंभ होते हैं।**
- मध्य प्रदेश में **विशेष रूप से उदयगिरि** और **साँची में गुप्तकाल के मंदिर बलुआ पत्थर** से बनाए गए हैं।
- साँची का मंदिर 17 सपाट छत वाला पहला मंदिर था।

देवगढ़ मंदिर वास्तुकला

- उत्तर प्रदेश का देवगढ़ (ललित पुर जिला) **छठी शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में गुप्तकाल के उत्तरार्ध के** मंदिर वास्तुकला का उदाहरण है।
- देवगढ़ मंदिरों का निर्माण **पंचायतन शैली में किया गया।**
- वक्र रेखीय **शिखर** (**घुमावदार लैटिना** या **रेखा-प्रसाद** प्रकार का शिखर) **नागर शैली का एक प्रमुख उदाहरण है।**
- यह **पश्चिममुखी मंदिर** (पश्चिममुखी कम आम है, क्योंकि अधिकांश मंदिर पूर्व या उत्तरमुखी हैं) में एक भव्य द्वार है जिसमें **गंगा** और **यमुना की प्रतिमाएँ स्थापित हैं।**

चित्र: (a) दशावतार विष्णु मंदिर, देवगढ़, पाँचवीं शताब्दी ईसवी
(b) शेषशायी विष्णु, दशावतार मंदिर, देवगढ़

- मंदिर में विष्णु के विभिन्न रूपों के चित्रण से यह गलत धारणा पैदा हुई कि यह एक **दशावतार** मंदिर था जिसमें चार सहायक मंदिर थे, जिनमें विष्णु के अवतार थे।
- हालाँकि, इन मंदिरों का मूल समर्पण अज्ञात है जबकि विष्णु के मुख्य रूप, जैसे- **शेषशयन, नर-नारायण और गजेंद्रमोक्ष** पश्चिम की ओर स्थित मंदिर की दीवारों को सुशोभित करती हैं।

खजुराहो मंदिर वास्तुकला

- **इनका** निर्माण **चंदेल राजाओं द्वारा दसवीं शताब्दी ई.** में करवाया गया था।
- **लक्ष्मण मंदिर** (विष्णु को समर्पित), 954 ईस्वी में चंदेल राजा **धनगा द्वारा निर्मित, शिखर** और प्रमुख **आमलक** (एक क्षैतिज बांसुरीदार डिस्क) और **कलश** (या फूलदान) में एक घुमावदार पिरामिड शैली को प्रदर्शित करता है।
- **सभी नागर मंदिरों में आमलक** और **कलश** मौजूद हैं और इन मंदिरों में **बालकनियों** और **बरामदों का निर्माण किया गया है।**

चित्र: विश्वनाथ मंदिर, खजुराहो

Search On TG: @apna_pdf

- **खजुराहो** में **कंदरिया महादेव मंदिर का** निर्माण **विद्याधर (1003-1035 ईस्वी)** के शासन काल के दौरान किया गया था।
- खजुराहो की मूर्तियों में **कामुक मूर्तियाँ और** इनमें आलिंगनबद्ध जोड़े की मूर्तियाँ भी शामिल हैं जिन्हें शुभ और मंदिर का अभिन्न अंग माना जाता है।
- खजुराहो में कई हिंदू मंदिर, जैन मंदिर और एक **चौसठ योगिनी मंदिर भी है।**
- **चौसठ योगिनी** मंदिर **दसवीं शताब्दी से पहले का है और तांत्रिक पूजा** से जुड़े देवी-देवताओं को समर्पित है।

चौसठ योगिनी मंदिर (मध्य प्रदेश) **[UPSC 2021]**

मुरैना जिले में 11 वीं सदी के इस मंदिर को बनाने का श्रेय कच्छप घाट राजा देवपाल को दिया जाता है।

- मंदिर के गोलाकार आकार के कारण यह धारणा बन गई है कि भारतीय संसद का डिजाइन इससे प्रभावित था।
- इसे **एकत्तारसो महादेव मंदिर (Ekattarso Mahadeva Temple) के नाम से भी जाना जाता है।**
- **सातवीं** और **दसवीं शताब्दी** के मध्य निर्मित योगिनियों के पंथ को समर्पित कई मंदिर मध्य प्रदेश, ओडिशा और दक्षिण में तमिलनाडु तक फैले हुए हैं।

पश्चिम भारत

- गुजरात, राजस्थान और पश्चिमी मध्य प्रदेश तक फैले पश्चिमी भारत के मंदिर **विभिन्न प्रकार के पत्थरों का उपयोग किया गया है**
- **बलुआ पत्थर** आम है जबकि **भूरा से काला बेसाल्ट** दसवीं से बारहवीं शताब्दी की मंदिर की मूर्तियों में दिखाई देता है।
- **माउंट आबू के जैन मंदिरों (दसवीं से बारहवीं शताब्दी ई.) और रणकपुर (राजस्थान)** में पंद्रहवीं शताब्दी ई. के मंदिर में **मुलायम सफेद संगमरमर** देखने को मिलता है।

मोढेरा का सूर्य मंदिर

मोढेरा के सूर्य मंदिर का निर्माण 1026 ईस्वी के दौरान **सोलंकी राजवंश** के **राजा भीमदेव प्रथम द्वारा किया गया था।**

- इसमें एक विशाल **आयताकार सीढ़ीदार टैंक और** सूर्य कुंड, जो वास्तुकला में **जल निकायों के प्रभाव को दर्शाता है।**
- इस मंदिर की सीढ़ियों के ऊपर **108 लघु मंदिरों की नक्काशी की गई है।**
- मंदिर की जटिल नक्काशी और मूर्तिकला का कार्य **गुजरात की लकड़ी पर नक्काशी** परंपरा के प्रभाव को प्रदर्शित करती है।
- केंद्रीय छोटा मंदिर पूर्व की ओर है ताकि विषुव के दौरान सूर्य उस पर सीधे चमक सके।

गुजरात में समलाजी (Samlaji) क्षेत्र:

- यह एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक मंदिर स्थल है।
- यह पूर्व क्षेत्रीय परंपराओं को गुप्तोत्तर शैली के साथ मिश्रित करता है।

पूर्वी भारत

- **उत्तर-पूर्व, बंगाल और ओडिशा** में मंदिर वास्तुकला के इतिहास से विशिष्ट शैलियों का पता चलता है।
- बंगाल में सातवीं शताब्दी तक **टेराकोटा एक प्रचलित माध्यम था।**

असम

असम मंदिर वास्तुकला गुप्तकाल के प्रभाव को दर्शाती है।

- गुप्तोत्तर शैली दसवीं शताब्दी तक कायम रही, इसके बाद बारहवीं से चौदहवीं शताब्दी तक एक **विशिष्ट असमिया शैली का उदय हुआ।**
- ऊपरी बर्मा की **ताई और बंगाल की पाल शैली** से प्रभावित **अहोम शैली का साक्ष्य** गुवाहाटी में सत्रहवीं शताब्दी के **कामाख्या मंदिर** (देवी कामाख्या को समर्पित एक शक्तिपीठ) में मिलता है।
- असम में नीलांचल शैली में निर्मित कामाख्या मंदिर, नागर और क्षेत्रीय स्थापत्य तत्त्वों का अनूठा मिश्रण है। इसका अर्द्ध-गोलाकार गुंबद, जो एक छत्ते जैसा दिखता है, इसे पारंपरिक घुमावदार शिखरों से अलग करता है। गर्भगृह में एक मूर्ति की बजाय एक योनि के आकार की दरार है, जो शक्ति का प्रतीक है।
- मंदिर में पंचरथ लेआउट, तांत्रिक देवताओं के साथ समृद्ध नक्काशीदार दीवारें और दस सहायक मंदिरों वाला एक परिसर है। स्थानीय ग्रेनाइट से निर्मित, यह तांत्रिक परंपराओं और क्षेत्रीय अनुकूलन दोनों को दर्शाता है, जो इसे एक विशिष्ट शक्ति पूजा स्थल बनाता है।

बंगाल

बंगाल की मंदिर शैलियाँ **पाल शैली** (नौवीं से 11वीं शताब्दी) से लेकर **सेन शैली** (11वीं से 13वीं शताब्दी) तक भिन्न हैं।

- बौद्ध मठ स्थलों के संरक्षक पाल शासकों ने **बराकर** में **सिद्धेश्वर महादेव मंदिर** जैसे मंदिरों में मौजूदा स्थानीय **वंगा शैली को उकेरा,** जो बाद की शताब्दियों में उन्नत रूपों में विकसित हुआ।
  - **एक बड़े आमलक से सुसज्जित तथा एक ऊँचा और घुमावदार शिखर** इसकी विशेषता है और यह ओडिशा के समकालीन मंदिरों के लगभग समान है।
- **टेराकोटा ईंट के मंदिरों का** प्रसार 17वीं शताब्दी के दौरान हुआ।
- **धनुषाकार ताकों** के साथ-साथ काले **से भूरे बेसाल्ट** और **क्लोराइट पत्थर के स्तंभों ने गौड़** और **पांडुआ** में बंगाल सल्तनत की शुरुआती इमारतों के निर्माण को प्रभावित किया।
- स्थानीय भवन निर्माण परंपराओं ने इसमें एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मंदिरों में विशिष्ट घुमावदार छतें हैं, जो पारंपरिक बंगाली फूस की झोपड़ियों जैसी दिखती हैं। इसके प्रकारों में शामिल हैं: एक-चला (एकल छत), दोई-चला (दोहरी छत), चार-चला (चार छत वाली), आचला (आठ छत वाली)।
- यह विशेषता, जिसे **बांग्ला छत के नाम से जाना जाता है,** बाद में **मुगल इमारतों में अपनाई गई,** जो पूरे उत्तर भारत में एक पहचानने योग्य वास्तुशिल्प बन गई।
- वास्तुशिल्प इस्लामी वास्तुकला से लिए गए मेहराबों और गुंबदों के रूपों से भी प्रभावित है
- इन मंदिरों के प्रमुख स्थानों में **विष्णुपुर, बांकुरा, वर्दवान (वर्तमान में वर्धमान)** और **वीरभूम शामिल हैं** जिनमें से अधिकांश 17वीं शताब्दी के हैं।

ओडिशा

ओडिशा के मंदिरों को **रेखापिडा, पिधादेउल** और **खाकरा** क्रम में वर्गीकृत किया गया है और ये नागर क्रम के भीतर एक विशिष्ट उप-शैली का निर्माण करते हैं।

Search On TG: @apna_pdf

चित्र: जगन्नाथ मंदिर, पुरी

- ओडिशा के मंदिरों में शिखर (जिन्हें **देउल कहा जाता है) शीर्ष** तक **लंबवत होते हैं और** तेजी से अंदर की ओर मुड़े हुए होते हैं जिनका पृष्ठ **वर्गाकार होता है।**
- हमेशा की तरह देउल्स के पहले मंडप होते हैं जिन्हें ओडिशा में **जगमोहन कहा जाता है।**
- ओडिशा के मंदिरों में अक्सर **चारदीवारी शामिल होती है,** जो उन्हें अन्य शैलियों से अलग करती है।
- अधिकांश मुख्य मंदिर स्थल प्राचीन **कलिंग** (आधुनिक **पुरी** जिले) सहित **भुवनेश्वर** या प्राचीन **त्रिभुवनेश्वर, पुरी** और **कोणार्क में स्थित हैं।**
  - **भुवनेश्वर** में **लिंगराज मंदिर भगवान शिव** को समर्पित है।
    - इसका उल्लेख ब्रह्म पुराण में मिलता है।
    - इसका निर्माण **11वीं शताब्दी ई.** में **सोमवंशी राजा जजाति केशरी द्वारा** किया गया था। **[UPSC 2015]**

सूर्य मंदिर (कोणार्क)

- इसका निर्माण **राजा नरसिम्हदेव प्रथम** (पूर्वी गंगा राजवंश) द्वारा 1240 ईस्वी के आसपास एक विशाल शिखर के साथ किया गया था, जो बाद में ढह गया।
- **इस मंदिर का जगमोहन** या **नृत्य-मंडप (मंडप)** सुरक्षित है।
- **रथ के समान दिखने वाले** इस मंदिर की दीवारें विस्तृत सजावटी नक्काशी से ढकी हुई हैं जिसमें **12 जोड़ी विशाल पहिये शामिल हैं, जो सूर्य देव के रथ के पहियों का** प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **हरे पत्थर** से बनाई गई सूर्य की एक विशाल मूर्ति और रणनीतिक रूप से रखी गई छवियों ने गर्भगृह में सूर्य की किरणों को कैद कर लिया।

पहाड़ी वास्तुकला

- **कुमाऊँ, गढ़वाल, हिमाचल और कश्मीर** के पहाड़ी क्षेत्रों ने वास्तुकला के एक विशिष्ट रूप को जन्म दिया।
- **तक्षशिला और पेशावर जैसे गांधार स्थलों की** निकटता ने कश्मीर को प्रभावित किया और वहाँ की कला में सारनाथ, मथुरा, गुजरात और बंगाल की **गुप्त** और **गुप्तोत्तर कालीन परंपराएँ जुड़ने लगीं।**
- **बौद्ध** और हिन्दु भिक्षुओं की लगातार यात्राओं की वजह से पहाड़ी क्षेत्रों में बौद्ध और हिन्दू परंपराओं के मिश्रण में योगदान दिया।

पहाड़ी क्षेत्रों में लकड़ी के उपयोग परंपरा

पहाड़ी क्षेत्रों में पक्की छतों वाली लकड़ी की इमारतों के निर्माण की परंपरा कायम रही।

- मंदिर अक्सर **शैलियों का मिश्रण प्रदर्शित करते हैं।**
  - इनमें मुख्य गर्भगृह और शिखर रेखा-प्रसाद या लैटिना शैली शामिल हैं।
  - **मंडप** लकड़ी की वास्तुकला के पुराने रूप को दर्शाता है।
- कुछ मंदिर का निर्माण **पगोडा (Pagoda) आकार में हैं,** जो पहाड़ी वास्तुकला की विशिष्टता को प्रदर्शित करते हैं।

कश्मीर में कर्कोटा काल

- कश्मीर में कर्कोटा काल विशेष रूप से **आठवीं और नौवीं शताब्दी के दौरान प्रसिद्द रहा।**
- यह काल मंदिर वास्तुकला के लिए महत्त्वपूर्ण है।
- इसमें स्थानीय कश्मीरी शैलियों का मिश्रण है, जिसमें गुप्त और गांधार परंपराओं का प्रभाव है। प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:
  - **पत्थर की चिनाई:** सटीक पत्थर-काटने और निर्माण के लिए ग्रे चूना पत्थर और एशलर चिनाई का उपयोग।
  - **पिरामिडनुमा छतें:** मार्तंड सूर्य मंदिर जैसे मंदिरों में सीढ़ीदार, पिरामिडनुमा छतें थीं, जो कार्कोटा शैली की विशेषता है।
  - **आयताकार/वर्गाकार प्रदर्शन:** एक बरामदा और खुले आँगन के साथ केंद्रीय गर्भगृह, अधिकांशतः सहायक मंदिरों के साथ।
  - **जटिल नक्काशी:** मंदिरों को हिंदू देवताओं और पौराणिक विषयों की मूर्तियों से सजाया गया था।
  - **विस्तृत स्तंभ:** विशाल, सुसज्जित स्तंभ, अधिकांशतः कमल की आकृति के साथ।
  - **प्राकृतिक एकीकरण:** मंदिरों को प्राकृतिक परिदृश्य के साथ एकीकृत करते हुए ऊँचे स्थानों पर बनाया गया था।
- मार्तंड सूर्य मंदिर इन स्थापत्य विशेषताओं को मूर्त रूप देने वाला सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है।
  - **पंड्रेथन मंदिर**, संभवतः शिव को समर्पित है।
  - **पंड्रेथन मंदिर, कश्मीर की लकड़ी की इमारत परंपरा का उदाहरण** है जिसमें एक **नुकीली छत बाहर की ओर झुकी हुई होती है।**

चंबा की मूर्तियाँ और परंपरा का मिश्रण

- चंबा उत्तर-गुप्त शैली के साथ स्थानीय परंपराओं के मिश्रण को प्रदर्शित करता है।
- इसके गुण **'लक्षणा-देवी मंदिर'** में **महिषासुरमर्दिनी** और **नरसिम्हा जैसी मूर्तियों में दिखाई देते हैं।**
  - कश्मीर की धातु मूर्तिकला परंपरा से प्रभावित, पीले रंग की इन मूर्तियों में संभवतः जस्ता और तांबे के मिश्रण का उपयोग किया गया है।
  - सातवीं शताब्दी में **मेरुवर्मन** के शासनकाल के दौरान निर्मित मंदिर का एक शिलालेख इसके ऐतिहासिक महत्त्व को दर्शाता है।
- हिमाचल प्रदेश के मनाली में हिडिम्बा मंदिर महाभारत के एक पात्र हिडिम्बा को समर्पित है। पैगोडा शैली में निर्मित, इसमें जटिल नक्काशी और स्तरीय छतों के साथ लकड़ी का निर्माण है। मंदिर का गोलाकार गर्भगृह और वन क्षेत्र में इसका स्थान इसके आध्यात्मिक महत्त्व को बढ़ाता है।

Search On TG: @apna_pdf

कुमाऊँ में नागर वास्तुकला:

- **कुमाऊँ में अल्मोडा** के पास **जागेश्वर** और **पिथोरागढ़** के पास **चंपावत के** मंदिर क्षेत्र में नागर वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण दिखाई देते हैं।

द्रविड़ (दक्षिण भारतीय मंदिर शैली)

विशेषताएँ

- नागर मंदिरों के विपरीत, द्रविड़ मंदिर एक **परिसर की दीवार के भीतर घिरे हुए होते हैं।**
- प्रवेश द्वार की दीवार **में एक केंद्रीय प्रवेश द्वार स्थापित किया गया है जिसे गोपुरम के** नाम से जाना जाता है।

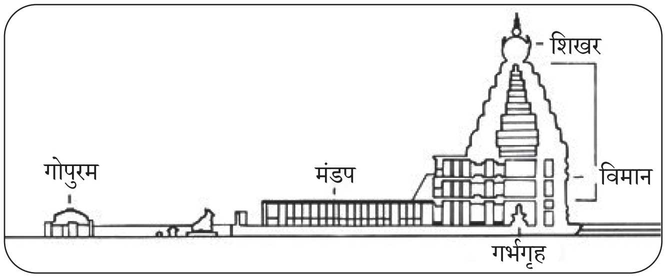

चित्र: द्रविड़ मंदिर

- प्रवेश मूर्तियाँ आमतौर पर मंदिर की रक्षा करने वाले बड़े **द्वारपालों** (द्वारपालों) को दर्शाती हैं।
- मंदिर परिसरों में **बड़े जलाशय** या मंदिर टैंक निर्मित किए गए होते हैं।
- द्रविड़ मंदिरों को **पाँच आकृतियों में वर्गीकृत किया गया है–**
  - **वर्गाकार** (कूट या चतुरस्र)
  - **आयताकार** (शाला या अयतास्र)
  - **अंडाकार** (गज-पृष्ट या वृत्तायत)
  - **वृत्ताकार** (वृत्त)
  - **अष्टकोणीय** (अष्टस्र)
- मंदिर की योजना और विमान के आकार का चुनाव प्रतिष्ठित देवता की प्रतीकात्मक प्रकृति से प्रभावित होता है।
- तमिलनाडु मे काँचीपुरम, तंजावुर, मदुरै और कुंभकोणम के मंदिर **शहरी वास्तुकला के केंद्र बिंदु बन गए।**
- आठवीं से 12वीं शताब्दी के दौरान व्यापक भूमि क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करते हुए मंदिर समृद्ध **प्रशासनिक केंद्रों में बदल गए।**

विशिष्ट विशेषताएँ

- तमिलनाडु का मुख्य मंदिर का 'विमान' एक **ज्यामितीय रूप से उभरते हुए सीढ़ीदार पिरामिड के रूप में है,** जो उत्तर भारत के घुमावदार शिखर से अलग है।
- **'शिखर'** शब्द केवल **मुकुट तत्व को संदर्भित करता है** जिसका आकार आमतौर पर एक **छोटे स्तूपिका** या **अष्टकोणीय गुंबद** (उत्तर भारतीय मंदिरों के **अमलक** और **कलश** के बराबर) जैसा होता है।
- शिखरों के समूह वाले उत्तर भारतीय मंदिरों के विपरीत दक्षिण भारतीय मंदिरों में **सामान्यत: सबसे छोटे मीनार में से एक मुख्य मंदिर होता है** जो इसके ऐतिहासिक महत्त्व को दर्शाता है।

पल्लव: दक्षिण भारतीय वास्तुकला के अग्रदूत

पल्लव (**दूसरी शताब्दी ई.पू.**, आंध्र क्षेत्र) एक महत्त्वपूर्ण वास्तुशिल्प विरासत छोड़कर दक्षिण से तमिलनाडु चले गए।

पल्लव वास्तुकला

दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला **पल्लव शासकों के अधीन शुरू हुई** और इसे 4 चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. महेंद्र समूह

- पल्लव वास्तुकला के पहले चरण के अंतर्गत **चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर शामिल थे।**
- **महेंद्रवर्मन ने** अपने **मंडागप्पट्टु शिलालेख में उल्लेख किया** है कि ब्रह्मा, ईश्वर और विष्णु को समर्पित उनका मंदिर ईंट, लकड़ी, धातु और मोर्टार जैसी पारंपरिक सामग्रियों का उपयोग किए बिना बनाया गया था।
- मंदिर आमतौर पर **मंडप** प्रकार के होते हैं जिनके सामने एक स्तंभयुक्त हॉल या मंडप होता है और पीछे या किनारों पर एक छोटा मंदिर होता है।

2. नरसिम्हा समूह

- चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिरों को जटिल मूर्तियों से सजाया गया था।
- **नरसिंहवर्मन प्रथम** के शासनकाल के दौरान **पंच पांडव रथ** बनाए गए जिनमें सबसे बड़ा **धर्मराज रथ था।**
- मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली धर्मराज रथ की क्रमानुयायी है।

3. राजसिम्हा समूह

- उनके अधीन वास्तविक **संरचनात्मक मंदिरों का विकास** हुआ।
- उदाहरण– **महाबलीपुरम** में **तटीय मंदिर नरसिंहवर्मन द्वितीय** के शासनकाल में बनाया गया था **जिसे राजसिम्हा** (आठवीं शताब्दी) और काँचीपुरम में **कैलाशनाथ मंदिर आदि** के नाम से भी जाना जाता है।

4. नंदिवर्मन समूह

- मंदिर आकार में छोटे थे।
- इसकी विशेषताएँ मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली के लगभग समान थीं।

महाबलीपुरम **[UPSC 2014, 2015, 2016]**

सातवीं शताब्दी के इस पल्लव स्थल को **यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।**

महाबलीपुरम में महत्त्वपूर्ण स्मारक:

- **पंच पांडव रथ: ये नरसिंहवर्मन प्रथम** (630-668 ईस्वी) के संरक्षण में निर्मित सबसे पुराने रॉक-कट मंदिर हैं और इसमें **धर्मराज** रथ, **भीम** रथ, **अर्जुन** रथ, **नकुल** और **सहदेव** रथ शामिल हैं।
- **चट्टानों को काटकर बनाए गए गुफा मंदिर:** वराह गुफा मंदिर, कृष्ण गुफा मंदिर, पंच पांडव गुफा मंदिर और **महिषासुरमर्दिनी** मंडप।
- **ओपन एयर रॉक रिलीफ:** इसमें गंगा का अवतरण शामिल है जिसे **अर्जुन की तपस्या** या भागीरथ की तपस्या के फल के रूप में भी जाना जाता है।
- **तटीय मंदिर परिसर:** इसमें **दो छोटा** और **एक बड़ा मंदिर है।** यह मंदिर मुख्य रूप से **भगवान शिव को समर्पित है,** तीन मंदिरों में से एक में **अनंतशयन (विष्णु)** की मूर्ति है।

Search On TG: @apna_pdf

परिसर में एक जल की टंकी, प्रारंभिक गोपुरम और **नंदी की मूर्तियों के साक्ष्य शामिल हैं।**

वराहमंडप गुफा: यह अर्जुन की तपस्या के पीछे निम्नलिखित विशेषताएँ रखती हैं –

- सामने के हॉल में **दो सिंह स्तंभ हैं।**
- पैनलों में से एक **वराह को** समुद्र से पृथ्वी को उठाते हुए दर्शाया गया है।
- एक उल्लेखनीय विशेषता **सूअर की थूथन है।**

चोल वास्तुकला

प्रारंभिक चोल मंदिर:

- चोल वंशीय मंदिर में **बड़े नहीं होते थे और** मंदिर की दीवारों पर **'गण'** कहलाने वाली कई छोटी आकृतियाँ चित्रित की गई हैं।
- **तमिलनाडु में मंदिर:** नार्थमलाई में **विजयालय चोलिसवारा मंदिर, ब्रह्मपुरीश्वर मंदिर, मूवरकोविल** आदि शामिल हैं।

बाद के चोल मंदिर:

ये शाही संरक्षण में निर्मित बड़े मंदिर थे।

- **राजराजा चोल ने** वर्ष 1010 ई. में **बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कार्य पूरा कराया,** जो अपनी भव्यता और विशालता के लिए जाना जाता है।

बृहदेश्वर मंदिर

चित्र: (a) बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर; (b) नंदी, बृहदेश्वर मंदिर

- यह मंदिर **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का एक हिस्सा है जिसे** चोल-युग के **गंगईकोंड चोलपुरम** मंदिर और **ऐरावतेश्वर** मंदिर, साथ-साथ **'महान जीवित चोल मंदिर'** के रूप में जाना जाता है।
- इस मंदिर के **पिरामिडनुमा विमान** के शीर्ष पर एक शिखर स्थापित है जो एक **अष्टकोणीय गुंबद के आकार की स्तूपिका है।**

मंदिर के मुख्य देवता **शिव हैं।**

- अन्य उदाहरण– दारासुरम में **ऐरावतेश्वर मंदिर** (भगवान शिव को समर्पित) जिसका निर्माण **राजराजा चोल द्वितीय द्वारा किया गया था, दूसरा उदाहरण राजेंद्र प्रथम** द्वारा निर्मित गंगईकोंडचोलपुरम मंदिर है।

वेसर और अन्य क्षेत्रीय शैलियाँ

कर्नाटक में, मंदिर वास्तुकला को **वेसर शैली** के रूप में जाना जाता है।

विशेषताएँ:

- यह **उत्तर और दक्षिण भारतीय प्रभावों के मिश्रण को दर्शाता है।**
- जटिल नक्काशी से सजाए गए खंभों, दरवाजों और छतों वाला **खुला चलने योग्य मार्ग।**
- **जटिल नक्काशी और मूर्तियों में द्रविड़ियन प्रभाव देखा जाता है।**
- **घुमावदार शिखर** और मंदिरों के **वर्गाकार आधार** में **नागर प्रभाव** दिखाई देता है।

चालुक्यकालीन मंदिर

पुलकेशिन प्रथम ने 543 ई. में बादामी के आसपास पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य की स्थापना की।

- **कर्नाटक** में, पश्चिमी चालुक्यों ने विभिन्न शैलियों को मिश्रित किया जिससे संकर **वेसर वास्तुकला का निर्माण** हुआ।
- **नरम बलुआ पत्थरों** को माध्यम बनाकर मंदिर निर्माण की तकनीक शुरू की गई।
- इनके मंदिरों को दो भागों में बाँटा गया है–
    - खुदाई से प्राप्त गुफा मंदिर
    - संरचनात्मक मंदिर
- बादामी को संरचनात्मक और उत्खनन दोनों प्रकार के गुफा मंदिरों के लिए जाना जाता है।
- पट्टडकल और ऐहोल संरचनात्मक मंदिरों के लिए लोकप्रिय हैं।

ऐहोल

- रावण **फाड़ी गुफा** एक विशिष्ट मूर्तिकला शैली का प्रदर्शन करती है जिसमें जीवन से भी बड़ी सप्तमातृकाओं से घिरे **नटराज का चित्रण है।**

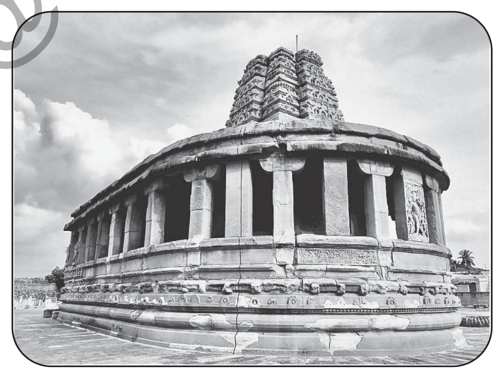

चित्र: दुर्गा मंदिर, ऐहोल

- कर्नाटक का लाड **खान मंदिर** लकड़ी की छत वाले पहाड़ी मंदिरों से प्रेरित है, लेकिन इसका निर्माण पूरी तरह से पत्थर से किया गया है।
- **ऐहोल** में दुर्गा **मंदिर स्थापित किया गया है जो कि** अद्वितीय है और इसमें एक प्रारंभिक अर्धवृत्ताकार मंदिर भी है, जो एक शैलीगत नागर शिखर के साथ बौद्ध चैत्य हॉल की याद दिलाता है।
- **हुच्चिमल्लीगुडी मंदिर** आकार में **आयताकार** है।
- **मेगुडी जैन मंदिर का** निर्माण चालुक्यों के अधीन किया गया था।
    - इसमें कवि **रविकृति द्वारा रचित संस्कृत शिलालेख (634-635 ई.) है, जो** चालुक्यों विशेषकर शासक राजा **पुलिकेशिन द्वितीय की प्रशस्ति है, जिन्हें सत्याश्रय** (सत्य का निवास) कहा जाता है।
- यह राजवंश के इतिहास, उसके सभी शत्रुओं, विशेषकर **हर्षवर्द्धन की पराजय पर प्रकाश डालता है।**
- मंडप-प्रकार की गुफाएँ ऐहोल में संरक्षित हैं।

Search On TG: @apna_pdf

बादामी (वातापी)

- बादामी में **चार गुफा मंदिर स्थापित किए गए** हैं।
- इसमें दो मंदिर **विष्णु को** और एक-एक **शिव** और **जैन तीर्थंकरों को समर्पित हैं।**
- **मंगलेसा** द्वारा निर्मित सबसे बड़ा गुफा मंदिर **विष्णु** को समर्पित है।
- साँप की शैय्या पर **विष्णु की लेटी हुई मुद्रा, नरसिम्ह** चालुक्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

पट्टकल

- पट्टदकल शाही अनुष्ठानों को करने का एक केंद्र था।
- विरुपाक्ष **मंदिर का निर्माण रानी लोहामहादेवी** के आदेश पर उनके पति **विक्रमादित्य द्वितीय द्वारा काँचीपुरम के विजय के** उपलक्ष्य में किया गया था।
    - यहाँ के चालुक्यों ने मामल्लापुरम में राजसिम्ह द्वारा निर्मित मंदिर की विशिष्ट विशेषता को अपनाया।
    - विरूपाक्ष मंदिर के पूर्वी बारामदे में एक कन्नड़ शिलालेख स्थापित किया गया है, इस शिलालेख के अंतर्गत मंदिर को डिजाइन करने वाले वास्तुकार की प्रशंसा की गई है, इन वास्तुकार को त्रिभुवाचार्य (तीनों लोकों के निर्माता) की उपाधि दी गई थी।
- पट्टडकल में पापनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और यह **द्रविड़ परंपरा** का उदाहरण है।
- पूर्वी चालुक्य मंदिर, जैसे-**महाकूट** और **स्वर्ग ब्रह्मा मंदिर,** ओडिशा और राजस्थान की उत्तरी शैलियों के समावेश को दर्शाते हैं।

राष्ट्रकूट

- **सातवीं सदी के अंत या आठवीं सदी की शुरुआत** में राष्ट्रकूटों ने **एलोरा में भव्य वास्तुकला का प्रदर्शन करते हुए दक्कन पर कब्जा कर लिया।**

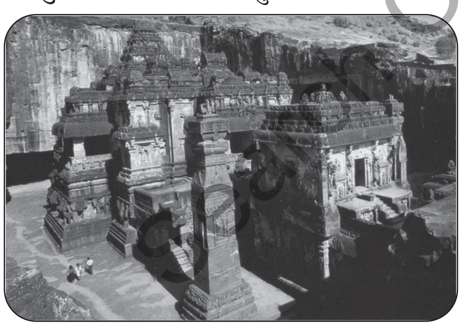

चित्र: कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा

- **एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर**, जो **शिव** को समर्पित है (एक नंदी मंदिर और एक गोपुरम जैसे प्रवेश द्वार के साथ), एक पूर्ण **द्रविड़** इमारत है जो पूरी तरह से जीवित चट्टान से बनाई गई है।
    - आठवीं शताब्दी में **कृष्ण प्रथम** के समय **एक ही चट्टान** से बनाया गया था।
    - यह कर्नाटक के पट्टदकल में **लोकेश्वर मंदिर** के **समान है जिसे चालुक्य** राजा **विक्रमादित्य द्वितीय ने** पल्लवों पर अपनी जीत के उपलक्ष्य में बनवाया था।

होयसल

- होयसल वास्तुकला को इंडो-आर्यन शैली और द्रविड़ शैली के मंदिरों के बीच मध्यवर्ती माना जाता है।
- **1050-1300 ईस्वी** के मध्य **होयसल शासकों** के अधीन कर्नाटक क्षेत्र में मंदिरों का विकास किया गया।
- इस कला के प्रमुख केंद्र **बेलूर, हलेबिडु** और **श्रृंगेरी थे।**

होयसल मंदिरों की विशेषताएँ:

- उभरे हुए मंच (**जगती** के नाम से जाना जाता है) और आंतरिक एवं बाहरी दीवारों पर जटिल मूर्तिकला नक्काशी वाले तारे **के आकार के मंदिर।**
- ये बलुआ पत्थरों की बजाय सेलखड़ी से निर्मित किए गए हैं, जो **जटिल** शिल्प कौशल को प्रदर्शित करता है।
- एक केंद्रीय स्तंभ वाले हॉल के चारों ओर **कई मंदिर निर्मित किए गए थे।**
- **हलेबिड में होयसलेश्वर मंदिर (1150 ई., कर्नाटक): डार्क शिस्ट स्टोन (परतदार पत्थर) का** उपयोग कर राजा **विष्णुवर्धन द्वारा निर्मित है।**
- **बेलूर, हैलेबिड** और **सोमनाथपुर** के मंदिरों की विशेषता सेलखड़ी नक्काशी के साथ **तारकीय-योजना (तारे के जैसी)** और वेसर शैली का उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- **हैलेबिड मंदिर नटराज के रूप में शिव को समर्पित है।**
- **अन्य मंदिर:**
    - **बेलुर में चेन्नाकेशव मंदिर:** यह हिंदू भगवान विष्णु को समर्पित है।
    - **सोमनाथपुर में चेन्नाकेशव मंदिर: कावेरी** नदी के तट पर वैष्णव हिंदू मंदिर, भगवान **कृष्ण के** तीन रूपों- क्रमशः जनार्दन, केशव और वेणुगोपाल को समर्पित है।

विजयनगर वास्तुकला

विजयनगर शासकों (1335-1565 ई.) ने **चोल, होयसल, पांड्य** और **चालुक्य स्थापत्य कला की विशेषताओं को संयोजित किया। ये बीजापुर की इंडो-इस्लामिक शैली** से भी प्रभावित थे।

- हालाँकि इसे सामान्यरूप से द्रविड़ शैली के रूप में जाना जाता है, लेकिन इसकी अपनी विशिष्ट विशेषताएँ थीं।
- वास्तुकला की इस नई शैली को **प्रोविडा शैली कहा जाता है।**
- मंदिरों की दीवारों को **नक्काशी और ज्यामितीय विधि से सजाया गया था।**
- **गोपुरम** सभी तरफ बनाए गए थे और कई मंजिला पिरामिडनुमा संरचनाओं में थे।
- बड़े और ऊँचे गोपुरम को **राया गोपुरम के नाम से जाना जाता है।**
- **इस वास्तुकला के अंतर्गत अम्मान श्राइन** के नाम से जानी जाने वाली एक नई संरचना दिखाई देती है। यहाँ **मुख्य देवता की पत्नी की मूर्ति को स्थापित किया** गया था, उदाहरण– **हजारा मंदिर का अम्मान मंदिर (हम्पी, कर्नाटक)।**

हजारा मंदिर (हम्पी):

- इसका प्रयोग संभवतः राजा और उसके परिवार के लिए ही किया जाता था।
- इस मंदिर को रजा का निजी मंदिर के रूप में जाना जाता था।
- दीवारों पर लगे नक्काशीदार पैनलों में रामायण के दृश्यों को उकेरा गया है।

विरुपाक्ष मंदिर (हम्पी):

- शिलालेखों से पता चलता है कि सबसे पुराना मंदिर, नौवीं से दसवीं शताब्दी के मध्य निर्मित किए गए थे।
- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के साथ-साथ इसका भी विस्तार हुआ।
- इस मंदिर के मुख्य मंदिर के सामने के हॉल का निर्माण **कृष्णदेव राय द्वारा** अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में किया गया था।
    - इसे बारीक नक्काशीदार खंभों के माध्यम से सजाया गया है।
    - कृष्णदेव राय को पूर्वी गोपुरम के निर्माण का भी श्रेय दिया जाता है।

विट्ठल मंदिर (हम्पी):

- प्रमुख देवता विट्ठल, जो विष्णु का एक रूप हैं।
- इन्हें आम तौर पर महाराष्ट्र में पूजा जाता है।
- मंदिर परिसरों की एक विशिष्ट विशेषता रथ सड़कें हैं जो मंदिर गोपुरम से एक सीधी रेखा में स्थापित की गई हैं।

- विजयनगर वास्तुकला के अंतर्गत मंदिर विविध **चट्टानी स्तंभों से सुसज्जित थे।**
- कुछ मंडप अस्तित्व में आए और **केंद्रीय मंडप को कल्याण मंडप (दिव्य विवाह का जश्न मनाने के लिए)** के रूप में जाना जाने लगा।

[UPSC 2019]

- मंदिर परिसर के अंदर **धर्मनिरपेक्ष इमारतों** की अवधारणा भी इसी अवधि के दौरान पेश की गई थी।
    - उदाहरण– **विट्ठलस्वामी मंदिर परिसर** (इसके स्तंभ को छूने पर संगीतमय ध्वनियाँ सुनाई देती हैं**), लोटस महल** (यह एक परिषद कक्ष रहा होगा, वह स्थान जहाँ राजा अपने सलाहकारों से मिलते थे), **विरूपाक्ष मंदिर** और हम्पी (कर्नाटक) में **रघुनाथ मंदिर।**

[UPSC 2009]

नायक वास्तुकला

यह **16वीं** और **18वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य नायक शासकों के अधीन विकसित हुआ।**

- वास्तुकला की दृष्टि से **यह द्रविड़ शैली के समान है,** लेकिन इसमें **इस्लाम के प्रभाव भी दिखाई देते थे।**
- मंदिरों की विशेषता गर्भगृह के चारों ओर स्थापित **विशाल प्राकारम या गलियारे हैं।**
- मंदिर **जटिल नक्काशी से भरे हुए थे।**
- **गोपुरम** की कला नायक शासकों के अधीन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
    - उदाहरण– मदुरै में **मीनाक्षी मंदिर का गोपुरम** (वैगई नदी के दक्षिणी तट पर स्थित)।

जैन स्थापत्य विरासत

- हिंदुओं की भाँति ही जैन भी विपुल मंदिर निर्माता थे, जिनके पवित्र स्थल पूरे भारत में पाए जाते थे।
- दक्कन में **एलोरा** और **एहोल में वास्तुकला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण जैन स्थल हैं।**
- **देवगढ़, खजुराहो, चंदेरी और ग्वालियर** जैसे मध्य भारतीय शहरों में दर्शनीय जैन मंदिर हैं
- कर्नाटक एक समृद्ध जैन विरासत का साक्षी है।
- **श्रवण बेलगोला में** विश्व की सबसे ऊँची अखंड स्वतंत्र संरचना **गोमतेश्वर की मूर्ति स्थित है।**
- **माउंट आबू** में **विमल शाह** द्वारा निर्मित **जैन मंदिर**, समृद्ध मूर्तिकला सजावट के साथ एक सरल बाहरी भाग का प्रदर्शन करते हैं।
- **पलिताना** के पास **शत्रुंजय पहाड़ियों** में जैन मंदिरों का एक भव्य समूह है।
- मुख्य मंदिर प्रथम तीर्थंकर **ऋषभनाथ को समर्पित है; यह** श्वेतांबर मूर्तिपूजक संप्रदाय के लिए सबसे पवित्र मंदिर है।

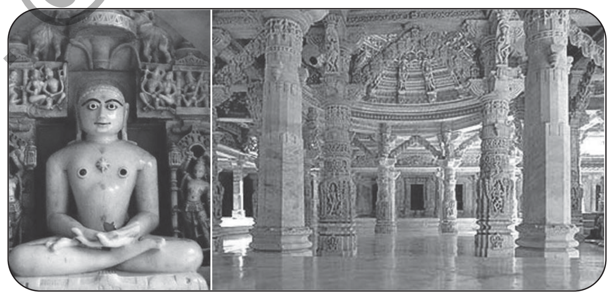

चित्र: (a) जैन मूर्ति, माउंट आबू; (b) दिलवाड़ा मंदिर, माउंट आबू

- **पारसनाथ** पहाड़ी (छोटा नागपुर पठार, झारखंड) का नाम 23वें जैन तीर्थंकर **पार्श्वनाथ के नाम पर रखा गया है।** उन्हें यहीं मोक्ष की प्राप्ति हुई थी-
    - इस पहाड़ी पर **सम्मेद शिखरजी को दिगंबर** और **श्वेतांबर** दोनों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थल माना जाता है।
    - ऐसा माना जाता है कि यह वह स्थान है जहाँ **24 जैन तीर्थंकरों में से 20 ने 'मोक्ष'** प्राप्त किया था।
- संथालों द्वारा इस पहाड़ी को **मारंग बुरु** ('महान पर्वत', सर्वोच्च देवता) के रूप में भी जाना जाता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण मंदिर

मंदिर का नाम - (समर्पित) - निर्माता (नाम, राजवंश और काल)
वेंकटेश्वर मंदिर (सात पहाड़ियों के मंदिर के रूप में भी जाना जाता है) **[आंध्र प्रदेश]:** भगवान श्री वेंकटेश्वर (विष्णु के अवतार); तमिल शासक राजा **थोंडाईमन** द्वारा निर्मित, बाद में **चोल राजवंश के** राजाओं द्वारा इसे विकसित किया गया।

Search on TG: @apna_pdf

वराह लक्ष्मी नरसिम्हा मंदिर (सिम्हाचलम मंदिर के रूप में भी जाना जाता है), **[आंध्र प्रदेश]:** भगवान वराह नरसिम्हा (भगवान विष्णु का अवतार); वर्तमान मंदिर पूर्वी गंगा राजा नरसिंह देव प्रथम द्वारा 13वीं शताब्दी में बनवाया गया था **और 1268 ई. में उनके पुत्र भानुदेव प्रथम द्वारा इसे प्रतिष्ठित किया गया।**	
श्री ब्रह्मराम्भ मल्लिकार्जुन मंदिर [आंध्र प्रदेश]: भगवान शिव और पार्वती; **सातवाहन वंश** के शिलालेखीय साक्ष्य। विजयनगर साम्राज्य के राजा हरिहर के समय में इसमें कुछ परिवर्धन किए गए।	
सूर्यनारायण मंदिर (इसे अरासवल्ली सूर्य मंदिर भी कहा जाता है) **[आंध्र प्रदेश]:** सूर्य देवता को समर्पित। सातवीं शताब्दी ई. में शासक देवेंद्र सरमा द्वारा निर्मित। **[UPSC 2017]**	
श्री रंगनाथस्वामी मंदिर [नेल्लोर, आंध्र प्रदेश]: भगवान रंगनाथ (भगवान विष्णु का विश्राम रूप); पेन्ना नदी के तट पर स्थित है। 12वीं शताब्दी में निर्मित।	
वीरभद्र मंदिर [आंध्र प्रदेश]: भगवान शिव; **1530 ई. में** विजयनगर साम्राज्य के तहत निर्मित।	
कामाख्या मंदिर (कामरूप कामाख्या के नाम से भी जाना जाता है) **[नीलांचल हिल, गुवाहाटी, असम]:** देवी कामाख्या; **आठवीं-17वीं** शताब्दी के दौरान निर्मित।	
द्वारकाधीश मंदिर [गुजरात]: भगवान कृष्ण; यह चार धाम के स्थलों में से एक है।	
मोढ़ेरा सूर्य मंदिर [मेहसाणा जिला, गुजरात]: सूर्य देव; इसका निर्माण 1026-27 ईस्वी में **चालुक्य राजा भीम प्रथम** के शासनकाल के दौरान किया गया था।	
विरुपाक्ष मंदिर [कर्नाटक]: भगवान शिव का एक रूप; शासक देव राय द्वितीय के अधीन एक नायक द्वारा निर्मित।	
विट्ठल मंदिर [कर्नाटक]: भगवान विष्णु के अवतार भगवान विट्ठल को समर्पित; इसका निर्माण हम्पी में राजा देवराय द्वितीय (1422-1446 ईस्वी) के शासनकाल के दौरान किया गया था। कृष्णदेवराय (1509-1529 ई.) के शासनकाल के दौरान मंदिर के कई हिस्सों का विस्तार और संवर्द्धन किया गया।	
पद्मनाभस्वामी मंदिर [केरल]: भगवान विष्णु; हालाँकि मंदिर आठवीं शताब्दी ईस्वी का है, वर्तमान संरचना 18वीं शताब्दी में तत्कालीन त्रावणकोर महाराजा मार्तंड वर्मा द्वारा बनाई गई थी।	
सबरीमाला मंदिर [केरल]: भगवान अय्यप्पन; 12वीं शताब्दी ईस्वी पूर्व निर्मित; **पंबा नदी** के पास स्थित और पेरियार टाइगर रिजर्व में 18 पहाड़ियों से घिरा हुआ है।	
ओंकारेश्वर मंदिर [मध्य प्रदेश]: भगवान शिव; **खंडवा** जिले में **नर्मदा** नदी में मांधाता नामक द्वीप पर स्थित एक **ज्योतिर्लिंग।**	
महाकालेश्वर मंदिर [मध्य प्रदेश]: भगवान शिव; **शिप्रा** नदी के पास स्थित **ज्योतिर्लिंग।**	
विट्ठल रुक्मिणी मंदिर या विठोबा मंदिर **[महाराष्ट्र]:** भगवान विट्ठल को विष्णु और उनकी पत्नी रखुमाई का रूप माना जाता है; 13वीं शताब्दी ईस्वी में **होयसल साम्राज्य के शासकों** द्वारा निर्मित।	
त्र्यंबकेश्वर मंदिर [महाराष्ट्र]: भगवान शिव; **ज्योतिर्लिंग**, तीन पहाड़ियों, **ब्रह्मगिरि**, **नीलगिरि** और **कालागिरि के मध्य स्थित है।** इसका निर्माण **बालाजी बाजीराव द्वारा करवाया गया था।**	
कोणार्क का सूर्य मंदिर [ओडिशा]: सूर्य देव; **13वीं शताब्दी** में **पूर्वी गंगा राजवंश** द्वारा निर्मित।	
लिंगराज मंदिर [ओडिशा]: हरिहर, शिव और विष्णु का रूप; 11वीं शताब्दी में **सोमावंसी राजवंश** के शासकों द्वारा निर्मित। यह **भुवनेश्वर में स्थित है।**	
हजार स्तंभों वाला मंदिर [तेलंगाना]: भगवान विष्णु, शिव और सूर्य को समर्पित; **12वीं-14वीं शताब्दी** में **काकतीय राजवंश** के शासकों द्वारा निर्मित।	
रामप्पा [तेलंगाना]: रामलिंगेश्वर; **11वीं शताब्दी** में **काकतीय राजवंश** के शासकों द्वारा निर्मित।	
रंगनाथस्वामी मंदिर [तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु]: भगवान विष्णु; कावेरी नदी और कोल्लिडम नदी से घिरे एक बड़े द्वीप पर स्थित है।	
उनाकोटि गुफा मंदिर [त्रिपुरा]: भगवान शिव; इसे 'उत्तर-पूर्व का अंगकोर वाट' भी कहा जाता है। 600-700 ई. में निर्मित।	
बारह ज्योतिर्लिंग: सोमनाथ (गुजरात), नागेश्वर (गुजरात), मल्लिकार्जुन श्रीशैलम (आंध्र प्रदेश), महाकालेश्वर, उज्जैन (मध्य प्रदेश), ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश), केदारनाथ (उत्तराखंड), काशी विश्वनाथ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), देवघर (झारखंड) में बैद्यनाथ, रामेश्वरम (तमिलनाडु) में रामेश्वर, सवाई माधोपुर जिले (राजस्थान) के शिवार में घुश्मेश्वर, औरंगाबाद जिले (महाराष्ट्र) के एलोरा में घृष्णेश्वर, त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट्र) और भीमाशंकर (महाराष्ट्र)।	
सोमनाथ मंदिर [गुजरात] • कहा जाता है कि पहला मंदिर 2000 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया था। **649 ई.** में **वल्लभिनी** के **राजा मैत्रे ने एक और मंदिर का** निर्माण और जीर्णोद्धार कराया। • मंदिर का वर्णन एक अरब यात्री **अल-बरूनी द्वारा किया गया था और इसने 1024 ईस्वी में गजनी के महमूद को** यहाँ आने के लिए प्रेरित किया। • समकालीन सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का कार्य **भारत के पहले गृह मंत्री वल्लभभाई पटेल के आदेश के अनुसार शुरू किया गया था।** भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति **डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने** मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा की। **[UPSC 2022]**	

Search On TG: @apna_pdf

भारत में विश्व धरोहर स्थलों के अंतर्गत मंदिरों की सूची

मंदिर/समूह	स्थान	निर्माता/वंश	प्रमुख विशेषताएँ
खजुराहो मंदिर समूह	मध्य प्रदेश	चंदेल वंश (950–1050 ई.)	जटिल कामुक मूर्तियाँ, नागर शैली, आध्यात्मिकता, जीवन और मानव भावनाओं का चित्रण
सूर्य मंदिर, कोणार्क	ओडिशा	राजा नरसिंहदेव प्रथम (1244 ई.)	इसे सूर्यदेव के रथ के रूप में निर्मित किया गया है, जिसमें 24 नक्काशीदार पहिये और सात घोड़े हैं।
महाबलीपुरम के स्मारकों का समूह	तमिलनाडु	पल्लव वंश (7वीं–8वीं सदी ई.)	रॉक-कट वास्तुकला, एकल रथ, शोर मंदिर, तथा गंगा अवतरण जैसी उभरी हुई आकृतियाँ।
बृहदेश्वर मंदिर	तमिलनाडु (तंजावुर)	चोल वंश (राजराज चोल प्रथम, 1010 ई.)	विशाल विमान (टॉवर), चोल भित्ति-चित्र और नंदी प्रतिमा; अपने समय का सबसे बड़ा मंदिर
गंगईकोंडचोलपुरम मंदिर	तमिलनाडु	चोल वंश (राजेंद्र चोल प्रथम, 1035 ई.)	उत्कृष्ट नक्काशी, विशाल शिवलिंग और चोल शक्ति को दर्शाने वाली अनूठी वास्तुकला
ऐरावतेश्वर मंदिर	तमिलनाडु (दारासुरम)	चोल वंश (राजराज चोल द्वितीय, 12वीं सदी ई.)	जटिल पत्थर की नक्काशी, संगीतमय सीढ़ियाँ और द्रविड़ तथा चोल शैलियों का संयोजन
पट्टदकल मंदिर समूह	कर्नाटक	चालुक्य वंश (7वीं–8वीं सदी ई.)	नागर और द्रविड़ शैलियों का मिश्रण; प्रमुख मंदिरों में विरुपाक्ष और मल्लिकार्जुन
विट्ठल मंदिर, हम्पी	कर्नाटक	विजयनगर साम्राज्य (15वीं सदी ई.)	प्रतीकात्मक पत्थर का रथ, संगीतमय स्तंभ और विस्तृत नक्काशी के साथ खुला मंडप
विरुपाक्ष मंदिर, हम्पी	कर्नाटक	विजयनगर साम्राज्य (7वीं सदी ई.; 15वीं सदी में विस्तार)	हम्पी में सबसे पुराना कार्यरत मंदिर; विशाल गोपुरम के साथ द्रविड़ वास्तुकला
कैलाश मंदिर, एलोरा	महाराष्ट्र	राष्ट्रकूट वंश (8वीं सदी ई.)	भगवान शिव को समर्पित सबसे बड़ा एकल-शिला रॉक-कट मंदिर; हिंदू महाकाव्यों की विस्तृत नक्काशी
तटीय (शोर) मंदिर	तमिलनाडु (महाबलीपुरम)	पल्लव वंश (8वीं सदी ई.)	द्रविड़ वास्तुकला, समुद्र के किनारे की पृष्ठभूमि के साथ खड़ा; सबसे प्रारंभिक पत्थर निर्मित मंदिर
लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर मंदिर समूह का भाग)	ओडिशा	सोमवंशी राजवंश (11वीं सदी ई.)	कलिंग वास्तुकला; ऊँचा विमान और समीप में पवित्र बिंदुसागर झील
चेन्नकेशव मंदिर, बेलूर	कर्नाटक	होयसल राजवंश (12वीं सदी ई.)	उत्कृष्ट तारे के आकार की योजना, जटिल मूर्तियाँ और हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्यों का चित्रण
होयसलेश्वर मंदिर, हलेबिडु	कर्नाटक	होयसल राजवंश (12वीं सदी ई.)	सोपस्टोन नक्काशी, अद्वितीय सितारा आकार मंच
केशव मंदिर, सोमनाथपुर	कर्नाटक	होयसल राजवंश (13वीं सदी ई.)	संक्षिप्त किन्तु समृद्ध अलंकरण; होयसल मंदिर शिल्पकला का प्रतीक
मोढ़ेरा सूर्य मंदिर	गुजरात	सोलंकी राजवंश (1026 ई.)	अद्वितीय सौर संरेखण, सूर्य कुंड (सीढ़ीदार टैंक) और देवताओं की जटिल नक्काशी
असम के मोइदम	असम	ताई-अहोम	अहोम राजवंश की टीला-दफनाने की व्यवस्था (यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, 2024)। धार्मिक समारोहों और त्योहारों के लिए उपयोग किए जाने वाले पवित्र खुले स्थान; स्तंभों वाले बरामदों और सरल मंदिरों के साथ गोलाकार, खुली वायु वाली डिज़ाइन; परिदृश्य में एकीकृत संरचनाएँ; पत्थर और लकड़ी जैसी प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग; वन, पहाड़ियों और नदी के किनारों जैसे सुंदर स्थानों में प्राकृतिक परिवेश के साथ एकीकरण।

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

3 भारतीय मूर्तिकला

सिन्धु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ

भारतीय उपमहाद्वीप **की पहली** ज्ञात मूर्तियाँ सिंधु घाटी सभ्यता की थीं, जो पत्थर, कांस्य अथवा मिट्टी से बनाई जाती थीं।

पत्थर की मूर्तियाँ

- **दाढ़ी** वाले पुरुष **की प्रतिमा (मोहनजोदड़ो): यह मूर्ति स्टीटाइट** से बनी है और इसकी व्याख्या एक **पुजारी के रूप में की गई है।** यह **उर** और **सुसा** के **सुमेरियन स्थलों** में खोजी गई एक समान आकृति से काफी मिलती-जुलती है।

चित्र: दाढ़ी वाले पुजारी की प्रतिमा

- **लाल बलुआ पत्थर (हड़प्पा) से बना पुरूष का धड़।**
- **पुरुष नर्तक:** इसकी खोज **हड़प्पा में हुई थी,** जो संगीत और नृत्य के महत्त्व को दर्शाता है।

कांस्य आकृतियाँ

मानव और **पशु आकृतियों** की कांस्य मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जो **"लॉस्ट वैक्स तकनीक" या "साइर पर्ड्यू" का उपयोग करके बनाई गई थीं।**

चित्र: कांस्य नर्तकी की मूर्ति

- **त्रिभंग मुद्रा** में चार इंच ऊँची **तांबे की नृत्य करने वाली लड़की मोहनजोदड़ो** से प्राप्त हुई थी।
- प्राप्त **मूर्तियों में** पशु आकृतियों में एक **भैंस, तांबे का कुत्ता, लोथल से पक्षी** और **कालीबंगन से एक बैल की कांस्य मूर्ति शामिल है।**
- **दैमाबाद (महाराष्ट्र)** की **कांस्य मूर्तियाँ** अनूठे प्रकार की हैं जैसे हृष्ट-पुष्ट बैल जुते हुए रथ को संचालित करता मनुष्य।

लॉस्ट वैक्स तकनीक

मोम की मूर्तियों को पहले मिट्टी की परत से ढक कर सूखने दिया जाता है। फिर मोम को गर्म किया जाता है और पिघला हुआ मोम मिट्टी के आवरण में बने एक छोटे छेद के माध्यम से बाहर निकाल जाता है। इस प्रकार बनाए गए खोखले साँचे को पिघली हुई धातु से भर दिया जाता है। एक बार जब धातु ठंडी हो जाती है तो मिट्टी का आवरण पूरी तरह से हटा दिया जाता है।

टेराकोटा

इन मूर्तियों को बनाने के लिए **आग में पकी हुई मिट्टी का उपयोग किया जाता है।** वे **पंचिंग विधि का उपयोग करके बनाए गए थे और ज्यादातर गुजरात** और **राजस्थान (कालीबंगा)** के स्थानों में पाए गए थे।

- **मोहनजोदड़ो में देवी माँ की मूर्ति** की पूजा **उर्वरता और समृद्धि** के लिए की जाती थी।
- अन्य आकृतियाँ जैसे बैल, गिलहरियों का एक जोड़ा, खिलौना जानवर (**मोहनजोदड़ो**), दाढ़ी वाला पुरुष जिसके घुंघराले बाल थे और पहियों वाली खिलौना गाड़ियाँ भी मिलीं।

मुहरें

मानक हड़प्पा मुहर एक **चौकोर पट्टिका थी,** जो आमतौर पर **स्टीटाइट** से बनी होती थी और एक **चित्रात्मक लिपि के साथ उत्कीर्ण होती थी** जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।

- जबकि अधिकांश मुहरें **वर्गाकार हैं** और यह भी पाया गया कि **त्रिकोणीय, आयताकार, गोलाकार** और **बेलनाकार मुहरों** का भी उपयोग किया जा रहा था।
- मुहरें बनाने में प्रयुक्त अन्य सामग्रियाँ **गोमेद, चर्ट, फ़ाइनेस, टेराकोटा, सोना, हाथी दांत** और **तांबा थीं।**
- **मुहरों पर आकृतियाँ: आमतौर पर उनके एक तरफ** जानवर या मानव आकृति होती थी **और** विपरीत तरफ एक अभिलेख या दोनों तरफ अभिलेख होते थे।
- जानवरों की आकृतियों में एक सिंघ वाला बैल, **गैंडा, बाघ, हाथी, बाइसन, बकरी, भैंस** आदि शामिल हैं। हालाँकि मुहरों पर **गायों का कोई** साक्ष्य **नहीं** प्राप्त हुआ।

Search On TG- @apna_pdf

मुहरों का उपयोग

- इनका उपयोग विभिन्न व्यापारिक संघों या व्यापारियों द्वारा मुद्रांकन प्रयोजनों के लिए किया जाता था।
- ऐसा प्रतीत होता है कि मुहरों का उपयोग ताबीज़ **के रूप में भी किया जाता था** उनके मालिक इसे वैसे ही लिए रहते थे जैसे **आधुनिक समय** में **पहचान पत्र** को लिया जाता है।

चित्र: पशुपति की मुहर

पशुपति मुहर

- यह **मोहनजोदड़ो** में खोजी गई एक **स्टीटाइट मुहर** है। इसमें एक मानव आकृति या एक देवता को पालथी मारकर बैठे हुए (योगी की बैठी हुई आकृति) दर्शाया गया है।
- एक **हाथी** और एक **बाघ को** दर्शाया गया है, जबकि बाईं ओर एक **गैंडा** और एक **भैंसा** देखा जा सकता है। आसन के नीचे **दो मृग** दिखाए गए हैं।
- यह मुहर हड़प्पा युग के धर्म पर प्रकाश डालती है।

मिट्टी के बर्तन

सिंधु घाटी के मिट्टी के बर्तन में मुख्य रूप से **चाक निर्मित** हैं, इनमें बहुत कम ही **हस्त निर्मित** हैं।

- सादे मिट्टी के बर्तन आमतौर पर **लाल मिट्टी** के होते हैं जिनके साथ बारीक लाल या भूरे रंग की परत होती है या नहीं होती है।
- काले रंग से रंगे हुए बर्तनों पर लाल रंग की बारीक परत होती है जिस पर चमकदार काले रंग से ज्यामितीय और जानवरों के डिज़ाइन बनाए जाते हैं।
- **पॉलीक्रोम मिट्टी के बर्तन** दुर्लभ थे और इनमें मुख्य रूप से **छोटे फूलदान लाल, काले, हरे, शायद ही कभी सफेद** और **पीले रंग के ज्यामितीय पैटर्न से सजाए गए थे।**
- **उकेरे हुए बर्तन** भी दुर्लभ थे। उकेरे गए सजावटी बर्तनों के आधारों तक ही सीमित थे।

मिट्टी के बर्तनों का उपयोग

- तल पर बड़े छेद और पूरी दीवार पर छोटे छेद वाले **छिद्रित मिट्टी के बर्तनों का उपयोग संभवत:** शराब को **छानने के लिए किया जाता था।**
- **छोटे बर्तन** आमतौर पर आकार में आधे इंच से कम **सजावटी उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते थे।**
- **घरेलू प्रयोजनों** के लिए मिट्टी के बर्तन सभी आकृतियों और आकारों में पाए जाते थे। सुंदर वक्रों का प्रयोग किया गया जबकि सीधी और कोणीय आकृतियाँ अपवाद थीं।

मनका और आभूषण

जैसा कि **चन्हुदड़ो** और **लोथल** में खोजे गए **कारखानों से स्पष्ट है** कि **मनका उद्योग इस काल में,** अच्छी तरह से विकसित था।

- मनका(मोती) बनाने के लिए **बहुमूल्य धातुओं, रत्नों, हड्डियों** और **पकी हुई मिट्टी का** उपयोग किया जाता था। कारेलियन, नीलम, जैस्पर, क्रिस्टल, क्वार्ट्ज, स्टीटाइट, फ़िरोज़ा, लापीस लाजुली, तांबा, कांस्य, सोना, शंख, फ़ाइनेस, टेराकोटा आदि सामग्री का उपयोग किया गया था।
- **हार, पट्टियाँ, बाजूबंद** और **अंगुलियाँ** आमतौर पर पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा पहनी जाती थीं लेकिन **करधनी, झुमके** और **पायल** केवल महिलाओं द्वारा पहने जाते थे।
- उस समय के लोग **फैशन के प्रति सचेत थे। सिनेबार** का उपयोग **सौंदर्य प्रसाधन** के रूप में किया जाता था। **फेस पैक, लिपस्टिक और कोलिरियम** (आईलाइनर) भी उन्हें ज्ञात थे।
- **फरमाणा (हरियाणा)** में एक कब्रिस्तान मिला है जहां शवों को आभूषणों के साथ दफनाया जाता था।

मौर्यकालीन मूर्तियाँ

मौर्य काल के दौरान भारतीय मूर्तिकला में काफी प्रगति हुई और यह काफी हद तक **बौद्ध धर्म** से प्रभावित थी। हालाँकि मूर्तिकला प्रस्तुतियों में कुछ **ब्राह्मण देवताओं** के उदाहरण भी हैं।

- मूर्तियों का उपयोग **धार्मिक अभिव्यक्ति और स्तूपों की सजावट (तोरण** और **मेधी** में) के लिए किया जाता था।
- मौर्यकालीन स्तंभ **सिंह कैपिटल (सारनाथ)** और **बुल कैपिटल (रामपुरवा**, बिहार) अशोक द्वारा बनवाए गए थे।
- **धौली (उड़ीसा)** में एक चट्टान को काटकर बनाई गई **हाथी की मूर्ति** है। इसका निर्माण अशोक के शासन काल में हुआ था। यह पहली बार था कि एक विशाल पशु आकृति को किसी शिलाखंड या चट्टान से उकेरा गया था और इसमें अशोक (268-232 ईसा पूर्व) के शिलालेख शामिल थे। **[UPSC 2022]**
- **लोहानीपुर (बिहार)** में एक **पुरुष आकृति** का धड़ मिला जो संभवतः किसी **जैन तीर्थंकर** का प्रतिनिधित्व करती है।
- **पटना, विदिशा और मथुरा जैसे कई स्थानों पर यक्ष और यक्षिणियों** की बड़ी मूर्तियाँ मिलीं।

यक्ष और यक्षिणियाँ

ये **तीनों धर्मों से संबंधित थे: जैन धर्म, हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म।**

- ये छवियाँ ज्यादातर **अच्छी तरह से पॉलिश की गई सतहों** के साथ **खड़ी स्थिति में हैं।**
- आधुनिक पटना के पास **दीदारगंज में एक यक्षिणी** (बलुआ पत्थर से बनी) की खड़ी मूर्ति मिली थी।

मौर्योत्तरकालीन मूर्तियाँ

मूर्तिकला की परंपरा का विकास

ग्वालियर और **मथुरा** से खोजी गई **यक्ष** और **यक्षिणियों** की अखंड मुक्त-खड़ी मूर्तियाँ, **भरहुत** में **बौद्ध स्तूप** के सुंदर नक्काशीदार द्वार और कटघरे के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

Search On TG: @apna_pdf

भरहुत मूर्तिकला (मध्य प्रदेश)

- मूर्तियों को तराशने के लिए **ग्रीन शिस्ट** का उपयोग किया गया था।
- ये मौर्य काल में **यक्ष** और **यक्षिणी** की मूर्तियों की तरह **लम्बे हैं।** यहाँ मूर्तिकलाओं के बनावट हल्के उभरे हुए नक्काशी में है, जो रैखिकता बनाए रखती है।
- इसमें **शरीर** और **भुजाओं** में एक **सामान्य अकड़न** होती है। चित्र की सतह की उथली नक्काशी के कारण हाथों और पैरों का प्रक्षेपण संभव नहीं था इसलिए **हाथ मुड़े हुए थे** और **पैरें भी मुड़ी हुई थी।**

चित्र: भरहुत मूर्तिकला

- पहली और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की सभी पुरुष छवियों में एक मुख्य विशेषता **गाँठदार टोपी है।**
- **रानी मायादेवी के सपने, रुरु जातक का चित्रण** (जहाँ बोधिसत्व हिरण अपनी पीठ पर एक आदमी को बचा रहा है) **आदि** जैसी कहानियों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए भरहुत में **कथात्मक नाक्काशियों** का उपयोग **सचित्र भाषा** के रूप में किया गया था।

- शैलीगत विकास के संदर्भ में **सांची स्तूप -1, मथुरा** और आंध्र प्रदेश (गुंटूर जिला) में **वेंगी में** मूर्तिकला विकास का अगला चरण उल्लेखनीय है।

साँची की मूर्तियाँ

साँची में वर्तमान स्तूप पहली बार अशोक के शासनकाल के दौरान बनाया गया था लेकिन इसका विस्तार पहली शताब्दी में बाहरी रेलिंग और परिक्रमा घेरा जोड़ कर किया गया था।

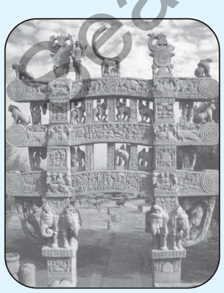

चित्र: तोरण द्वार (साँची स्तूप)

सांची के स्तूप-1 में ऊपरी और निचला प्रदक्षिणापथ या परिक्रमा पथ है। इसमें **चार** खूबसूरती से सजाए गए **तोरण** हैं जो बुद्ध और जातक के जीवन की विभिन्न घटनाओं को दर्शाते हैं। कुछ कहानियों में **कुशीनारा की घेराबंदी, बुद्ध की कपिलवस्तु की यात्रा और अशोक की रामग्राम स्तूप (नेपाल) की यात्रा** शामिल है।

- नक्काशी तकनीकें **भरहुत** से अधिक आधुनिक दिखाई पड़ती है।
- सिर को मूर्ति वाले स्थान पर आगे की ओर निकाला जाता है।
- **त्रिभंग** मुद्रा में **वृक्षिका (वृक्ष देवी)** या **लकड़ी की अप्सरा** की ब्रैकेट आकृति को दर्शाया गया है।
- आकृतिक रचनाओं में अधिक उभार होता है, मुद्रा का चित्रण स्वाभाविक हो जाता है तथा शरीर में कठोरता नहीं रहती, छवियों को गतिशीलता दी जाती है, सिर को मूर्ति वाले स्थान पर आगे की ओर निकाला जाता है।
- साँची स्तूप-1 में, आख्यान अधिक विस्तृत हो जाते हैं हालाँकि स्वप्न प्रकरण का चित्रण बहुत सरल रहता है।

- बेहतरीन मूर्तिकला के कुछ प्रमुख उदाहरण **विदिशा, भरहुत** (मध्य प्रदेश), **बोधगया** (बिहार), **जग्गय्यापेटा** (आंध्र प्रदेश), **मथुरा** (उत्तर प्रदेश), **खंडगिरि-उदयगिरि** (ओडिशा), पुणे के पास **भाजा और** नागपुर (महाराष्ट्र) के पास **पावनी** से प्राप्त हुए हैं।
- पहली शताब्दी ईस्वी के बाद, **गांधार** (अब पाकिस्तान में), उत्तर भारत में **मथुरा** और **आंध्र प्रदेश में वेंगी** कला उत्पादन के महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरे। प्रतीकात्मक रूप में बुद्ध को मथुरा और गांधार में **मानव रूप** मिला।

गांधार शैली

- **गांधार** में मूर्तिकला परंपरा में **बैक्ट्रिया, पार्थिया** और **स्थानीय गांधार परंपरा का संगम** था।
- इस कला का मुख्य विषय **भगवान बुद्ध** और **बोधिसत्व (महायान बौद्ध धर्म)** था।

मथुरा शैली

- **वैष्णव** (मुख्य रूप से विष्णु और उनके विभिन्न रूप) और **शैव** (मुख्य रूप से लिंग और मुखलिंग) **संप्रदायों की** मूर्तियाँ मिलीं लेकिन **बौद्ध** की मूर्तियाँ भी बड़ी संख्या में मिलीं।
  - विष्णु और शिव की मूर्तियाँ की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि उन्हें **उनके आयुधों** (हथियारों) द्वारा दर्शाया जाता है।
- प्रारंभिक **जैन तीर्थंकर की** मूर्तियाँ और राजाओं की मूर्तियाँ विशेषकर **बिना सिर वाले कनिष्क की मूर्ति** भी मथुरा में पाई गई हैं।
- मथुरा में स्थानीय मूर्तिकला परंपरा पंजाब के संघोल में पाई गई स्तूप मूर्तियों की तरह उत्तर भारत में भी फैली।

कला की विभिन्न शैलियों की तुलना

आयाम	गांधार शैली	मथुरा शैली	अमरावती शैली
बाह्य प्रभाव	**ग्रीको-रोमन** प्रभाव	पूर्णतः **स्वदेशी;** मौर्य काल के दौरान पाए गए पहले यक्ष प्रतिमाओं की तर्ज पर बनाया गया।	विशुद्ध **स्वदेशी**

Search On TG: @apna_pdf

धार्मिक प्रभाव	**बौद्ध धर्म** और हेलेनिस्टिक यथार्थवाद।	**हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म** और **जैन धर्म;** वैष्णव और शैव मतों की मूर्तियाँ भी मिलती हैं।	धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष मूर्तियाँ, लेकिन मुख्य विषय में **बुद्ध और जातक की जीवन कहानियाँ शामिल हैं।**
उपयोग की गई सामग्री	**नीला-धूसर बलुआ पत्थर** और **धूसर** बलुआ पत्थर।	**चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर**	**सफेद संगमरमर**
संरक्षण	**कुषाण**	**कुषाण**	**सातवाहन**
विकास का क्षेत्र	उत्तर पश्चिम सीमा जिसमें **तक्षशिला, पेशावर और बामियान जैसे स्थान शामिल हैं।**	यमुना नदी के तट पर फला-फूला।	कृष्णा-गोदावरी घाटी में विकसित। **[UPSC 2021]** **उल्लेखनीय स्थल: अमरावती, गोली, वेंगी, नागार्जुनीकोंडा और घंटासला।**
बुद्ध मूर्तिकला की विशेषताएँ	• **आध्यात्मिक** बुद्ध • लहराते बाल • कम अलंकरण • लंबे कान और चौड़ा माथा • **योगी मुद्रा में बुद्ध,** आँखें आधी बंद। • सिर पर उभार बुद्ध की सर्वज्ञता को दर्शाता है। • भगवान बुद्ध के सिर के चारों ओर प्रभामंडल	• **मुस्कुराते हुए** बुद्ध • चेहरा मांसल और ऊर्जावान। • **बुद्ध पद्मासन में बैठे हैं और दो बोधिसत्वों - पद्मपाणि और वज्रपाणि से घिरे हुए हैं।** • गांधार छवि के समान उभार। • बुद्ध के सिर के चारों ओर प्रभामंडल को ज्यामितीय पैटर्न से सजाया गया है।	• बुद्ध की व्यक्तिगत विशेषताओं पर कम जोर। • मूर्तियाँ **आमतौर पर बुद्ध की जीवन कहानियों और जातक कथाओं को दर्शाती हैं।** • अन्य मूर्तियाँ: **नलगिरि** (पागल हाथी) को वश में करना और राजकुमार राहुल की अपने पिता बुद्ध को भेंट करना।
	 चित्र: गांधार शैली	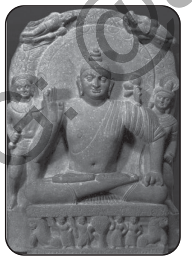 **चित्र:** मथुरा शैली	 **चित्र:** अमरावती शैली

अमरावती स्तूप

- साँची स्तूप की तरह, अमरावती स्तूप में भी एक वेदिका के भीतर एक प्रदक्षिणापथ संलग्न है।
- गुंबददार स्तूप संरचना उभरी नक्काशीदार स्तूप मूर्तिकला स्लैब से ढकी हुई है, जो एक अनूठी विशेषता है।
- यद्यपि अमरावती स्तूप में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्माण गतिविधि के प्रमाण मिलते हैं लेकिन इसका सबसे अच्छा विकास पहली और दूसरी शताब्दी ईस्वी में हुआ था।

दक्षिण भारत के बौद्ध स्मारक

- **वेंगी** में कई स्तूप स्थल हैं, जैसे- **जगय्यपेट्टा, अमरावती, भट्टीप्रोलू, नागार्जुनकोंडा, गोली** आदि। अमरावती में एक **महाचैत्य है।**
- बुद्ध की मूर्तियाँ आंध्र प्रदेश के **अमरावती, नागार्जुनकोंडा** और **गुंटापल्ले में पाई जाती हैं।** (गुंटापल्ले एलुरु के पास एक चट्टान को काटकर बनाया गया गुफा स्थल है)।
- विशाखापत्तनम के निकट **अनाकापल्ले** में चट्टानों को काटकर बनाए गए स्तूपों की खुदाई की गई है।
- कर्नाटक के गुलबर्गा जिले में **सन्नति** अब तक उत्खनन किया गया सबसे बड़ा स्तूप स्थल है।

अन्य मौर्यकालीन मूर्तियाँ

- महाराष्ट्र में पिथलखोरा गुफाओं (पश्चिमी घाट की सतमाला श्रृंखला) से **बौना यक्ष।**
- **नागार्जुनकोंडा** में **इक्ष्वाकुओं** द्वारा निर्मित स्तूप।
- **गोली** (पहली शताब्दी ईस्वी) के वेसंतरा जातक में बुद्ध को उनके पिछले जन्म में राजकुमार वेसंतरा के रूप में दर्शाया गया है, **जो** दान में अपना सब कुछ देने से कभी नहीं थकते थे।
- **कार्ले** की नक्काशी जो कि पहली शताब्दी ई.पू. की है।

Search On TG: @apna_pdf

गुप्तकालीन मूर्तियाँ

- भारत में **मूर्तिकला का शास्त्रीय युग** गुप्त काल के दौरान शुरू हुआ।
- **अमरावती** और **मथुरा** की प्रारंभिक शास्त्रीय मूर्तिकला का तार्किक परिणाम गुप्त मूर्तिकला है।
    - गुप्तकालीन मूर्तियों ने अपनी **प्लास्टिसिटी मथुरा से** और **लालित्य अमरावती से प्राप्त की।**
    - भरहुत, अमरावती, सांची और मथुरा की कला और अधिक एकीकृत हो गई।
- पारंपरिक केंद्र मथुरा, मुख्य कला उत्पादन स्थल बना रहा, जबकि **सारनाथ** और **कौशाम्बी** भी 5वीं और 6ठी शताब्दी ईस्वी में कला उत्पादन के महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरे।

सारनाथ मूर्तिकला विद्यालय

- मानव **मूर्ति** गुप्तकालीन मूर्तिकला की धुरी थी।
- इसने अपनी मूर्तियों में **क्रीम रंग के बलुआ पत्थर** और **धातु का उपयोग किया।**
- **सारनाथ** में बुद्ध की प्रतिमाओं में **सादा पारदर्शी आवरण** है जबकि मथुरा की बुद्ध प्रतिमाओं में चुन्नट वाले आवरण का चित्रण है।
- बुद्ध के सिर के चारों ओर के प्रभामंडल में बहुत कम अलंकरण है।

मूर्तियाँ

- **मथुरा से बुद्ध की लाल बलुआ पत्थर की** एक छवि जिसमें उनका दाहिना हाथ **अभयमुद्रा में है।**
- धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा (उपदेश देने का भाव) में **विज्रपर्यंका** में बैठे दिखाया गया था।
- **धातु मूर्तिकला में साढ़े सात फीट ऊंचे सुल्तानगंज बुद्ध (बिहार)** शामिल हैं।

मंदिर मूर्तिकला

इस काल में भारतीय मंदिर के विशिष्ट तत्व उभर कर सामने आये।

- **देवगढ़ (उत्तर प्रदेश) के मंदिरों से शेषशायी विष्णु** के बड़े पैनल और **उदयगिरि (मध्य प्रदेश)** और **अजंता** के मंदिरों के प्रवेश द्वार पर **वराह** मूर्तियों के उत्कृष्ट नमूने हैं।
- **अहिच्छत्र** (उत्तर प्रदेश) में एक **शिव मंदिर में मगरमच्छ और** कछुए पर क्रमशः खड़ी **गंगा** और **यमुना की** यथार्थ आकार की टेराकोटा मूर्तियाँ हैं, जो भगवान शिव की सेविकाएँ हैं।

मध्यकालीन मूर्तियाँ

मध्यकालीन युग में **विशाल अलंकरण** के साथ **मूर्तियाँ और अधिक जटिल** हो गईं।

पल्लव

- **काँची** के पल्लव शासकों के संरक्षण में एक कलात्मक आंदोलन सफल हुआ जो बहुत महत्त्वपूर्ण था।
- कुछ मूर्तियों में **महाबलीपुरम** में **सात अखंड रथ,** उभरी हुई नक्काशी में **महिषासुरमर्दिनी, गिरिगोवर्धन** पैनल, **अर्जुन की तपस्या** या गंगा का अवतरण, **त्रिविक्रम विष्णु, गजलक्ष्मी, अनातसयनम** और भैंस के सिर वाले राक्षस के साथ भीषण युद्ध में लगी महान **देवी दुर्गा** शामिल हैं।
- पल्लव काल में भी एक समृद्ध **कांस्य मूर्तिकला** परंपरा है, जैसे अर्धपर्यंका आसन (एक पैर लटका हुआ) **में शिव की कांस्य मूर्ति।**

चोल

- ये पल्लवों के उत्तराधिकारी बने और 9वीं से 13वीं शताब्दी ईस्वी तक दक्षिण भारत पर शासन किया।
- चोलों की मूर्तियाँ **तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर** में मौजूद थीं।
- **अन्य मूर्तियाँ: 11**वीं शताब्दी में शिव की **गजसुरसामहामूर्ति** के रूप में नक्काशी और 13वीं सदी की मूर्ति जिसमें **भूदेवी या पृथ्वी देवी को** विष्णु की छोटी पत्नी के रूप में दर्शाया गया है।
- चोलों के पास **कांस्य मूर्तियों की एक समृद्ध परंपरा है** और चोल रानी सेम्बियान महादेवी एक प्रतिष्ठित संरक्षक थीं।

नटराज मूर्ति

- यह चोल काल की एक कांस्य मूर्ति है जिसमें **भगवान शिव** अपने दाहिने पैर पर संतुलन बनाए हुए हैं और उसी पैर से अज्ञान के राक्षस **अपस्मार को दबा रहे हैं।**

- वह अपने बाएं पैर को **भुजंगासन सीता मुद्रा** में उठाते हैं, जो **तिरोभाव** का प्रतिनिधित्व करता है, यह भक्त के मन/हृदय से **माया** या **भ्रम के पर्दे को** हटा रहा है।
- उनकी चार भुजाएँ फैली हुई हैं और मुख्य दाहिना हाथ **अभय हस्त मुद्रा** में है जबकि ऊपरी दाहिने हाथ में **डमरू** है।
- ऊपरी बाएँ हाथ में **ज्वाला है** जबकि मुख्य बायाँ हाथ **डोला हस्त में है** और जो दाहिने हाथ के **अभय हस्त** के साथ जुड़ता है।
- उनके बाल दोनों तरफ उड़ते हुए गोलाकार **ज्वाला माला** या **आग की माला** को स्पर्श करते हैं।

राष्ट्रकूट

8वीं शताब्दी के मध्य में राष्ट्रकूटों ने चालुक्यों से सत्ता छीन ली।

- **एलोरा** के **कैलाश मंदिर** (मंदिर का निर्माण राजा **कृष्ण प्रथम ने करवाया था**) में **शिव की पार्वती से विवाह, रावण द्वारा कैलाश पर्वत को हिलाना, दशावतार भैरव, नृत्य करते शिव** और विष्णु की मूर्तियाँ शामिल हैं।
- **एलीफेंटा गुफाएँ:** मूर्तियों में **नटराज, सदाशिव, अर्धनारीश्वर** और **महेशमूर्ति शामिल हैं।**
    - **महेशमूर्ति के तीन सिर** हैं जो एक ही धड़ से निकलते हैं - केंद्रीय सिर में मुख्य **शिव** आकृति है और अन्य दो **भैरव** और **उमा हैं, जो भगवान शिव** के तीन अलग-अलग स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चंदेल

- उन्होंने 950 से 1100 ईस्वी तक शासन किया और मध्य भारत में विशाल मंदिरों का निर्माण किया।
- उन्होंने **खजुराहो में कंदरिया महादेव मंदिर जैसे मंदिरों का निर्माण कराया।**
- मानवीय बनावट को पतले लम्बे आकृतियों और रैखिक विवरणों पर काफी जोर देते हुए गढ़ा गया था।

Search On TG: @apna_pdf

पाल और सेन

- बिहार और बंगाल में पाल शासक आस्था से बौद्ध थे और उन्होंने **नालंदा** और **विक्रमशिला जैसे शिक्षा केंद्रों को बहुत प्रोत्साहित किया** जहां स्तूपों और मठों ने मूर्तिकला के विकास के लिए पर्याप्त अवसर दिए।
  - कांस्य मूर्तिकला में मनोहारी **त्रिभंग मुद्रा में चार भुजाओं वाला अवलोकितेश्वर है।**
  - **पश्चिम बंगाल** में **महानद** से **नदी** की **देवी गंगा** की प्रतिमा मिली है।
- पाल परंपरा 12वीं शताब्दी में **सेना शासकों के अधीन तब तक जारी रही** जब तक कि इस्लामी शासकों ने देश पर कब्ज़ा नहीं कर लिया।

पूर्वी गंगा राजवंश

उन्होंने 7वीं से 13वीं शताब्दी तक ओडिशा पर शासन किया। उनकी मूर्तियों ने शालीनता और शक्ति की परंपराओं को बरकरार रखा।

- उड़ीसा के मंदिरों में कई **खूबसूरत** महिलाओं के चित्र हैं जिन्हें **नायिकाएँ** कहा जाता था।
- मूर्तियाँ **भुवनेश्वर, पुरी** और **कोणार्क** के मंदिरों की दीवारों पर पाई जा सकती हैं।

कोणार्क का सूर्य मंदिर

इसे 12वीं सदी के मध्य में **नरसिंहवर्मन** ने बनवाया था और यह सूर्य देवता को समर्पित था। इसकी कल्पना **सात घोड़ों** द्वारा खींचे जाने वाले, विशाल पहियों वाले ,एक विशाल **पत्थर के रथ** के रूप में की गई है।

- मंदिर के जगमोहन के चबूतरे पर विभिन्न संगीत वाद्ययंत्र बजाते हुए सभी दिशाओं की ओर मुख करके **दैवीय संगीतकार** स्थापित किये गए हैं।

होयसल

उन्होंने 12वीं शताब्दी की शुरुआत में मैसूर क्षेत्र में शासन किया।

- सजावट सूक्ष्म विवरणों से युक्त थी। मानव शरीर की संचलन या लालित्य की अपेक्षा अलंकरण पर अधिक जोर दिया गया।
- मूर्तियाँ फूहड़, छोटी और अत्यधिक अलंकृत थीं।
- **हेलेबिड** और **बेलूर** के मंदिरों में उदाहरण देखे जा सकते हैं जहां मूर्ति **पत्थर में लेसवर्क** की तरह दिखती है। **गोवर्धन** पर्वत को उठाए हुए **भगवान कृष्ण** की नक्काशी इसका एक और उदाहरण है।

विजयनगर

विजयनगर के शासकों ने 1336 से 1565 ई. तक शासन किया और चोल और चालुक्य कला परंपराओं को जारी रखा।

- **ताड़पत्री, हम्पी, काँचीपुरम आदि** स्थानों पर मंदिर बनवाए और इन मंदिरों में नक्काशी उनके मूर्तिकला कौशल को दर्शाती है।
- **रामायण** और **कृष्ण बाल लीला** के कथात्मक रूप उनके पसंदीदा विषय थे।
- विजयनगर शासकों ने मूर्तिकारों से अपने उत्कृष्ट मूर्तियाँ भी बनवाए, जैसे **चिदंबरम मंदिर में कृष्णदेवराय की प्रतिमा** और **तिरुपति** में **कृष्णदेवराय और उनकी रानियों की आदमकद कांस्य मूर्तियाँ।**
- **कृष्णदेवराय के** शासनकाल के दौरान गोपुरा और मदुरै के **मीनाक्षी मंदिर के दरबार में** कई मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई।

- **मदुरै और तंजावुर के नायक:** पशु रूपांकनों को महत्त्व प्राप्त हुआ और उन्हें सूक्ष्म विवरण के साथ उकेरा गया है। उदाहरणों में **त्रिचिनापल्ली** में **श्रीरंगम मंदिर की मूर्तियाँ** शामिल हैं।
- हालाँकि पत्थर की मूर्तियों की परंपराएँ जारी रहीं लेकिन **मुगल** काल के दौरान इसमें कोई खास प्रगति नहीं देखी गई। **ब्रिटिश शासन** के दौरान मूर्तिकारों को कोई उचित संरक्षण नहीं दिया गया और भारतीय कला की पूरी परंपरा में लगभग ठहराव की स्थिति आ गई।

लोक परंपरा और मूर्तिकला

भारतीय मूर्तिकला परंपरा पर प्रमुख लोक प्रभाव

- **प्रकृति पूजा और स्थानीय देवता:** भारत के कई हिस्सों में लोक परंपराओं में प्रकृति, उर्वरता और स्थानीय देवताओं के प्रति भक्ति एवं आराधना शामिल है। ये प्रभाव मूर्तियों में प्रकृति, देवी-देवताओं और उर्वरता के चित्रण में देखे जा सकते हैं। **उदाहरण:** यक्ष, यक्षिणी और शालभंजिका यक्षिणी (साँची स्तूप) जैसी प्रजनन आकृतियों का चित्रण।
- **पूर्वजों की पूजा और प्रतीकवाद:** लोक मूर्तियों में पूर्वजों से संबंधित रूपांकन या जीवन चक्र, प्रकृति और फसल के प्रतीकात्मक चित्रण शामिल होते थे। **उदाहरण:** स्थानीय मंदिरों की मूर्तियों में ग्राम देवताओं या पूर्वजों के विभिन्न चित्रणों में दिखाई देने वाली प्रतीकात्मकता।
- **क्षेत्रीय लोक कला शैलियाँ:** विभिन्न क्षेत्रों ने स्थानीय रीति-रिवाजों, विश्वासों और सामग्रियों से प्रभावित होकर मूर्तिकला में अपनी अनूठी कलात्मक शैलियों का योगदान दिया। **उदाहरण:** नटराज जैसी चोल कांस्य मूर्तियाँ नृत्य और संगीत की जीवंत परंपराओं को दर्शाती हैं, जो धार्मिक आराधना को स्थानीय कलात्मक प्रथाओं के साथ जोड़ती हैं।
- **एनिमिज्म और आइकॉनोग्राफी:** प्रारम्भिक समय मे एनिमिज्म ने एक केंद्रीय भूमिका निभाई थी, जिसमें पशुओं, देवताओं और प्राकृतिक रूपों की मूर्तियाँ पवित्र स्थानों में दिखाई देती थीं। **उदाहरण:** प्रारंभिक पत्थर की नक्काशी में अशोक के सिंह स्तंभ से शेर और पशुओं को दर्शाया जाता था।

अयोध्या के राम मंदिर में रामलला की मूर्ति कृष्ण शिला से बनाई गई है, जो काले ग्रेनाइट के पत्थर पर उत्कीर्ण है। और यह लगभग 2.5 अरब वर्ष पुराना है। मूर्ति 51 इंच लंबी है और इसका वजन 200 किलोग्राम है, जो भगवान राम को पाँच वर्ष के बच्चे के रूप में खड़ी मुद्रा में दर्शाती है। मूर्ति को मैसूर के प्रसिद्ध मूर्तिकार "अरुण योगीराज" ने बनाया है।

मुख्य विशेषताएँ:

- **सामग्री:** कृष्ण शिला, काला ग्रेनाइट, 2.5 अरब वर्ष से अधिक पुराना।
- **आसन:** खड़े हुए, बाल्यावस्था में राम का प्रतिनिधित्व करते हुए।
- **मूर्तिकार:** अरुण योगीराज द्वारा निर्मित।
- **विवरण:** आगम शास्त्र का पालन करते हुए, शांत भाव, विस्तृत हस्त और पारंपरिक पोशाक के साथ जटिल नक्काशी।

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

4 भारतीय चित्रकला

प्रारंभिक मानव, गुफाओं में रहने वालों की तरह, अपनी सौंदर्यपरक संवेदनशीलता, रचनात्मकता को व्यक्त करने तथा अपने आश्रय स्थलों को अधिक रंगीन और सुंदर बनाने अथवा अपने दैनिक जीवन का दृश्य रिकॉर्ड करने के लिए चित्रकला का उपयोग करते थे।

प्रागैतिहासिक शैलचित्र

भारत में **शैलचित्रों** की प्रारंभिक खोज **1867-68** में मिर्जापुर **जिले के सोहागीघाट** में पुरातत्त्ववेत्ता **आर्किबोल्ड कार्लाइल द्वारा की गई** थी।

- भारत में सबसे पुरानी पेंटिंग उच्च पुरापाषाण काल की **मानी जाती है।**
- प्रारंभिक प्रागैतिहासिक चित्र **मध्य प्रदेश** की **भीमबेटका गुफाओं में पाए गए थे।**
  - इन गुफाओं की खोज 1957-58 में प्रख्यात पुरातत्त्वविद् **वी.एस. वाकणकर द्वारा की गई थी।**
  - इसे 2003 में **यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।**
  - इन प्रागैतिहासिक चित्रों को निम्नलिखित **तीन** प्राथमिक चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

उत्तर पुरापाषाण काल (40,000-10,000 ईसा पूर्व)	• **शैलाश्रय (Rock shelter) गुफाओं में क्वॉर्टजाइट की दीवारों का** उपयोग प्रागैतिहासिक चित्रों के लिए किया गया था। चित्र: उत्तर पुरापाषाण काल में पशु आकृतियाँ • प्राथमिक रंजक (pigments): **गेरू** (हेमेटाइट से), चूने और पानी का मिश्रण; कैल्सेडोनी पत्थर से हरा रंग; चूना पत्थर से सफेद। • उत्तर पुरापाषाण युग के चित्र हरी और गहरी लाल रेखाओं से बनाए गए हैं, जिनमें विशाल पशु आकृतियों, जैसे बाइसन, हाथी, बाघ, गैंडा, वराह के अलावा छड़ी जैसी मानव आकृतियाँ शामिल हैं। • मानव आकृतियों में लाल रंग से शिकारियों को और हरे रंग से नर्तकों को **दर्शाया गया है।**

मध्यपाषाण काल (10,000-4000 ईसा पूर्व)	• इस युग में **लाल रंग** का प्रयोग प्रमुखता से हुआ। • उत्तर पुरापाषाण काल की तुलना में आम तौर पर **छोटे आकार के चित्र।** • इस काल के चित्रों में, प्रमुख रूप से समूह में **शिकार करना, चराई के दृश्य** और **घुड़सवारी गतिविधियों के चित्रण शामिल हैं। सामुदायिक नृत्य** एक सामान्य विषय प्रदान करते हैं। • **जानवरों को प्राकृतिक शैली** में जबकि **मनुष्यों को** केवल **शैलीगत तरीके से चित्रित किया गया** ।
ताम्रपाषाण काल	• **हरे** और **पीले** रंगों का उपयोग करते हुए चित्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। • प्रमुख विषय: **युद्ध के दृश्य;** घोड़ों और हाथियों पर सवार पुरुषों के असंख्य चित्रण, जिनमें से कुछ धनुष और तीर से सुसज्जित हैं, जो संघर्ष के लिए तत्परता का संकेत देते हैं।
आमतौर पर चट्टानों पर बनाई जाने वाली प्राचीन शैलकला को शैलोत्कीर्ण (Petroglyphs) कहा जाता है।	

- **अन्य आदिम चित्रकलाएँ-**
  - मध्य भारत की कैमूर रेंज, विंध्य पहाड़ियों में भीमबेटका, मिर्जापुर, पंचमढ़ी जैसे स्थानों पर गुफा की दीवारों पर।
  - **सिंधु घाटी के मिट्टी के बर्तन** (चित्रित मृद्भांड: **मोहनजोदड़ो** में खोजे गए, जो काले रंग से रंगे हुए थे और पौधों और ज्यामितीय पैटर्न के रूपांकनों से सुसज्जित थे) पाए गए हैं।
  - इन चित्रों में जंगली जानवरों, युद्ध जुलूसों और शिकार जैसे आदिम दृश्यों को दर्शाया गया है।
- **लाखोंउडियार शैलाश्रय कुमाऊँ की पहाड़ियों** (उत्तराखंड) में **सुयाल नदी के** किनारे स्थित हैं।

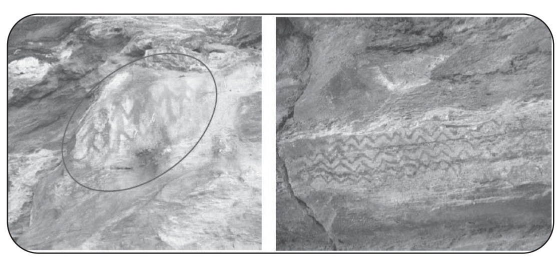

चित्र: (a) हाथों में हाथ डाले नृत्य करते हुए लोग (लखुडियार, उत्तराखंड);
(b) लहरदार लकीरें (लखुडियार, उत्तराखंड)

Search On TG: @apna_pdf

- **लाखोउडियार का** अर्थ है- 'एक लाख गुफाएँ'।
- इन आश्रयों में पेंटिंग को **तीन श्रेणियों में बाँटा गया है: मानव आकृतियाँ, जानवर** और **ज्यामितीय पैटर्न।**
- इस्तेमाल किए जाने वाले रंगों में **सफेद, काला** और **लाल गेरू शामिल हैं।**
- प्रधान दृश्य: **हाथ पकड़कर नृत्य करती मानव आकृतियाँ**, जो एक आवर्ती विषय है।
- इसमें सबसे पहले **काले रंग** , उसके बाद **लाल गेरू** और अंत में **सफेद रंग से** चित्रों का अधिरोपण किया जाता था।

- **नरसिंहगढ़ प्रागैतिहासिक चित्रकला**
  - **यह मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले** में स्थित है।
  - इन चित्रों में चितकबरे हिरणों की खालों को सूखता हुआ दिखाया गया है, जो इस बात को दर्शाता है कि प्रारंभिक मानव ने कपड़ों और आश्रय के लिए **चर्मशोधन की कला में महारत हासिल कर ली थी।**
  - कुछ चित्रों में हार्प जैसे **संगीत वाद्ययंत्रों का चित्रण किया गया है।**
  - **इसमें सर्पिल, असम समान्तर चतुर्भुज(rhomboids) और वृत्त जैसी जटिल ज्यामितीय आकृतियाँ** देखी जा सकती हैं।
- **जोगीमारा और सीताबेंगा गुफाएँ**
  - **यह छत्तीसगढ़ की** रामगढ़ **पहाड़ियों** में स्थित हैं और इनमें 1000 ईसा पूर्व की पेंटिंग शामिल हैं।
- **घोड़ासर और कोहबौर शैल कला स्थल**
  - **यह छत्तीसगढ़** में स्थित है।
  - **चितवा डोंगरी स्थल में** गधे पर सवार एक **चीनी व्यक्ति, ड्रैगन की तस्वीरें और कृषि चित्र हैं।**
- **छत्तीसगढ़ के अन्य स्थल: लिमदरिहा, ऊगड़ी** और **सीतालेखनी।**
- **ओडिशा में प्रारंभिक गुफा चित्र: गुडहांडी शैल आश्रय** और **योगिमाथा शैल आश्रय।**

अन्य स्रोत:

इसमें पाँचवीं सदी के ग्रंथ, **विष्णुधर्मोत्तर पुराण** के तीसरे खंड में **चित्रसूत्र अध्याय** शामिल है, जो भारतीय कला, विशेषकर चित्रकला का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

- यह ग्रंथ छवि-निर्माण की कला का परिचय देता है जिसे **'प्रतिमा लक्षण'** के नाम से जाना जाता है, जो चित्रकला के सिद्धांतों को रेखांकित करता है।

चित्रकला के प्रमुख तत्त्व:

- **वात्स्यायन ने अपनी पुस्तक कामसूत्र में चित्रकला के छह** आवश्यक घटकों को सूचीबद्ध किया है।
- **'मुद्राराक्षस' नामक** नाटक **में विशाखदत्त** द्वारा चित्रकला शैलियों और उनकी विशिष्ट विशेषताओं पर चर्चा की गई है।
- **काउका पिटक:** व्यक्तिगत फ्रेमयुक्त चित्रों के लिए उल्लेखनीय।
- **दिघला पिटक:** अपनी विस्तारित स्क्रॉल शैली की पेंटिंग के लिए प्रसिद्ध।
- **यम पिटक:** स्टैंडअलोन, पृथक कलाकृतियों पर जोर देता है।

भित्ति चित्र

भारत में दसवीं शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर दसवीं शताब्दी ईस्वी तक भित्तिचित्रों का एक समृद्ध इतिहास मिलता है। भित्ति चित्र मूल रूप से **ठोस संरचनाओं या दीवारों पर बनाई गई कलाकृतियाँ हैं।**

- भारतीय दीवार चित्र बनाने की प्रक्रिया का वर्णन पाँचवीं से छठी शताब्दी ईस्वी के संस्कृत ग्रंथ **विष्णुधर्मोतरम् के एक विशेष अध्याय में किया गया है।**
- एक बौद्ध ग्रंथ, **विनय पिटक** में चित्रित आकृतियों और सजावटी पैटर्न से सजे चित्र कक्षों के साथ आनंद गृहों का उल्लेख है। इसमें महाराष्ट्र की अजंता चित्रकला का भी उल्लेख है।

स्थान

- **प्रमुख स्थल:** अजंता, अरमामलाई गुफा व सित्तनवासल गुफाएँ (तमिलनाडु), रावण छाया रॉक शेल्टर (ओडिशा), बाघ गुफाएँ (मध्य प्रदेश) तथा एलोरा में कैलाश मंदिर।
- **अन्य स्थल**: कासरगोड में अनंत पद्मनाभ मंदिर में **अनंत; लेपाक्षी मंदिर** में किरातार्जुनिया के **एक दृश्य में शिव द्वारा सूअर का पीछा करना;** ग्यारहवीं शताब्दी में तंजावुर में चोल राजा राजराज और दरबारी कवि **करुवर डेवर;** तंजावुर में **शिव द्वारा त्रिपुरासुर का वध; मट्टनचेरी महल** में रामायण पैनल के एक दृश्य में **राम द्वारा रावण की पराजय** और थक्काला में पद्मनाभपुरम महल में आदि।

अजंता चित्रकला

अजंता की गुफाएँ लगभग **दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पाँचवीं शताब्दी ईस्वी तक बनाई गई थीं।**

प्रमुख विशेषताएँ:

- किन्नरों, विद्याधरों और गंधर्वों की दैवीय आकृतियों को चित्रों और मूर्तियों में दर्शाया गया है।
- **सामान्य विषय**: **जातक कथाएँ**, बुद्ध के जीवन की घटनाएँ, **अवदान,** और वनस्पतियों और जीवों से प्रेरित जटिल **सजावटी डिजाइन।**
  - कुछ पेंटिंग, जैसे- **सिंहला अवदान, महाजनका जातक** और **विधुरपुंडिता जातक,** गुफा की पूरी दीवार को कवर करती हैं।
- **सामान्य शैली:** गुफा की दीवारें **भित्तिचित्रों** और **फ्रेस्को पेंटिंग** (गीले प्लास्टर पर पेंटिंग) का मिश्रण दर्शाती हैं। ये कलाकृतियाँ **टेम्पेरा शैली का उपयोग करती हैं** अर्थात् यह रचना के लिए रंगद्रव्य का उपयोग करती हैं।
- **रंग: वनस्पति** और **खनिज रंगों को** पेंटिंग माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता है। आकृति की रूपरेखा के लिए **लाल गेरू** और आकृति के लिए **भूरा, काला** या **गहरा लाल।**
- **चित्रों की संरचनात्मकता:**
  - ये आकृतियाँ पश्चिमी भारत की मूर्तियों के समान भारी हैं।
  - इसमें हाथों के इशारों से भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।
  - प्रत्येक दृश्य में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को केंद्रीयता दी गई है।
  - चित्रों में प्रत्येक महिला का विशिष्ट केश विन्यास है।

Search on TG: @apna_pdf

महत्त्वपूर्ण गुफाएँ और उनकी चित्रकला

गुफा क्रमांक 1	• **महाजनक जातक** और **उमग जातक** के दृश्य छठी और सातवीं शताब्दी के मध्य से संबंधित हैं। • **वज्रपाणि** (रक्षक और मार्गदर्शक, बुद्ध की शक्ति का प्रतीक), जो अपने दाहिने हाथ में वज्र रखता है और मुकुट पहनता है। चित्र: बोधिसत्व पद्मपाणि-गुफा नं. 1 (अजंता, गुप्त काल) • **मंजुश्री** (बुद्ध के ज्ञान की अभिव्यक्ति) • **पद्मपाणि (अवलोकितेश्वर)** (बुद्ध की करुणा का प्रतीक) पाँचवीं शताब्दी के अंत का है। बोधिसत्व ने अपने दाहिने हाथ में पद्म (कमल) धारण किया हुआ है। **[UPSC 2017]**
गुफा क्रमांक 4	गुफा के संरक्षक: **मथुरादास।** • बरामदे की पिछली दीवार **अवलोकितेश्वर के लिटनी पैनल को प्रदर्शित करती है।** • गुफा में **धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में चित्रित एक विशाल बुद्ध प्रतिमा है।**
गुफा क्रमांक 9 और 10	• **शद्दंत जातक** की सबसे पुरानी अस्तित्वान चित्रकारी, **पहली शताब्दी ईस्वी** के आस-पास की है। • इन गुफाओं के भित्ति चित्र **शुंग** काल से संबंधित हैं। • **छद्दंत जातक का** चित्रण किया गया है।
गुफा क्रमांक 16	**गुफा के संरक्षक: वराहदेव** (गुफा संख्या 16 के संरक्षक), यह वाकाटक राजा **हरिषेण के प्रधानमंत्री थे।** • **द डाइंग प्रिंसेस (मरणासन्न राजकुमारी)** पाँचवीं शताब्दी ईस्वी की शुरुआत की पेंटिंग है।
गुफा क्रमांक 26	सबसे प्रमुख बुद्ध प्रतिमा **महापरिनिर्वाण प्रतिमा है।** • महापरिनिर्वाण छवि के पास **मार -विजय मूर्तिकला**– • यह मन की उस उथल-पुथल का प्रतीक है जिससे बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के समय गुजरे थे। • **बुद्ध, भूमिस्पर्श मुद्रा** में बैठे हैं।

अन्य गुफा चित्र

बाघ गुफाएँ

- इसमें **बौद्ध भित्ति चित्र** हैं और यह **मध्य प्रदेश** के **धार जिले के पास स्थित** हैं। ये डिजाइन, निष्पादन और सजावट के मामले में अजंता गुफाओं से काफी मिलते-जुलते हैं।
- **गुफा संख्या 4 को रंग महल** के नाम से जाना जाता है, और यहाँ भित्ति चित्र बौद्ध जातक कथाओं को दर्शाते हैं।

बादामी गुफाएँ

यह **कर्नाटक** में स्थित हैं। ये भित्ति चित्र **अजंता** और **बाघ** की परंपराओं के अनुसार **छठी-सातवीं शताब्दी ईस्वी के हैं।**

- चालुक्यों ने बादामी में चित्रकला में **वाकाटक शैली को** अपनाया। **बादामी में विष्णु** को समर्पित एक गुफा मंदिर में चित्र पाए गए हैं। इनमें कई चित्र **विष्णु के अवतारों** के हैं।
- इनके चित्रण में **चालुक्य राजाओं, जैन संतों द्वारा** सांसारिक जीवन त्यागने, **शिव** और **पार्वती, पौराणिक घटनाओं** और **विभिन्न देवताओं** के दृश्य शामिल हैं।
- **गुफा संख्या 3:** भित्तिचित्र में हंस पर बैठे चार भुजाओं वाले ब्रह्मा को दिखाया गया है।
- **गुफा संख्या 4:** चित्रकला में **पुलकेशी प्रथम के पुत्र** और **मंगलेश के बड़े भाई कीर्तिवर्मन** को अपनी पत्नी और सामंतों के साथ महल में बैठे हुए, एक नृत्य प्रदर्शन देखते हुए दर्शाया गया है।

सित्तनवासल:

यह **तमिलनाडु** में अवस्थित हैं। ये भित्ति चित्र **पहली शताब्दी ईसा पूर्व से दसवीं शताब्दी ईस्वी** के हैं। इन्हें 'अरिवारकोविल' अथवा 'अरहतों के मंदिर' के रूप में भी जाना जाता है।

- चट्टानों को काटकर बनाए गए ये गुफा मंदिर **जैन धर्म-विषयक** चित्रकला के लिए **प्रसिद्ध हैं।**
- **ये बाघ** और **अजंता** की चित्रकला से काफी **मिलते-जुलते हैं।**
- **इसका प्रधान विषय जैन समवसरण या समोशरण ('सभी के लिए शरण')** है, जो तीर्थंकर का एक दैवीय उपदेश कक्ष है।
- **प्रारंभ में इसे पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम** (580-630 ई.) द्वारा उत्खनित माना जाता था। हालाँकि, अब इस गुफा-मंदिर को **पांड्य राजाओं** मारन सेंडन (654-670 ई.) और अरिकेसरी मारवर्मन (670-700 ई.) के शासनकाल का माना जाता है।

एलोरा चित्रकला

हिंदू, बौद्ध और **जैन गुफा मंदिरों की** खुदाई **आठवीं और दसवीं शताब्दी के मध्य की गई थी।**

- भित्ति चित्र पाँच गुफाओं में मौजूद हैं, मुख्य रूप से **गुफा संख्या 16,** यानी **कैलाश मंदिर में।**
- यहाँ 12 बौद्ध गुफाएँ हैं जिनमें **वज्रयान बौद्ध धर्म से जुड़ी कई छवियाँ हैं, जिनमें तारा, महामयूरी, अक्षोभ्य, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय, अमिताभ** आदि मूर्तियाँ शामिल हैं।

Search On TG: @apna_pdf

प्रमुख विशेषताएँ:

- **संरचना**: यह **अजंता की अधिक खुली शैली के विपरीत थी।**
- **गुफा संख्या 14:** ब्राह्मण आस्था की एकमात्र दो मंजिला गुफा है।
- अन्य चित्रों में **देवी लक्ष्मी और भगवान विष्णु का चित्रण**, **भगवान शिव और उनके अनुचरों के दृश्य आदि शामिल हैं।**

भित्ति चित्रकला

चोल कला (तंजौर पेंटिंग)

चोलों ने **तंजौर, दारासुरम और गंगईकोंडचोलपुरम में मंदिर निर्माण करवाए।**

विषय-वस्तु:

- भगवान शिव से संबंधित चित्रकला, जिनमें कैलाश में शिव, त्रिपुरांतक के रूप में शिव, नटराज के रूप में शिव, आदि शामिल हैं।
- **इसमें संरक्षक राजराजा** और उनके **गुरु कुरुवर** (तंजावूर, ग्यारहवीं शताब्दी) का चित्रण है।

चोल चित्रकला:

- **नार्थमलाई और मलयादिपट्टी में प्रारंभिक चोल चित्रकला के अंश हैं।**
- **पेरियापुराणम** की घटनाओं को लघुचित्रों के रूप में **दारासुरम मंदिर के गर्भगृह** की दीवार के आधार पर चित्रित किया गया है।
- **तंजौर के बृहदीश्वर मंदिर** में **योग-दक्षिणामूर्ति** के रूप में **शिव** की समृद्ध चोल पेंटिंग है।
- **तंजौर के राजराजेश्वर मंदिरों** की नृत्यरत **आकृतियाँ** 11वीं शताब्दी की शुरुआत की हैं।

ये चित्रकला दक्षिण भारतीय परंपरा की शैली को प्रदर्शित करती है और पल्लव (चोलों से पहले) तथा विजयनगर (चोलों के बाद) काल के लिए एक कड़ी के रूप में मौजूद है।

पल्लव

चालुक्य राजाओं के बाद आए पल्लव राजा उल्लेखनीय तौर पर कला संरक्षक थे।

- **महेंद्रवर्मा प्रथम ने पनामलाई, मंडागपट्ट** और **काँचीपुरम** में मंदिर बनवाए।
- **मंडागपट्ट** के शिलालेख में महेंद्रवर्मन प्रथम का उल्लेख जिन उपाधियों के साथ किया गया है उनमें शामिल हैं– विचित्रचित्त (जिज्ञासु मस्तिष्क), चित्रकारपुली (कलाकारों के बीच बाघ), चैत्यकारी (मंदिर निर्माता), जो कला गतिविधियों में उसकी रुचि को दर्शाते हैं।
- **काँचीपुरम मंदिर** की चित्रकारी को पल्लव राजा **राजसिम्हा द्वारा संरक्षण दिया गया था।**
- **अरमामलाई गुफा चित्र (वेल्लोर के पास, तमिलनाडु):** इन गुफाओं को आठवीं शताब्दी ईस्वी के दौरान एक **जैन मंदिर** में **बदल दिया गया।** दीवारें और छतें **चित्रों से सज्जित हैं**, जो **अष्टथिक पालकों** (आठ कोनों की रक्षा करने वाले देवता) और **जैन धर्म** से संबंधित **कहानियों को दर्शाती हैं।**
- **रावण छाया शैलाश्रय सीताबिनजी, उड़ीसा): इस शैलाश्रय पर** फ्रेस्को **चित्र** पल्लव काल के हैं।

विजयनगर के भित्ति चित्र

विजयनगर चित्रकला पहले की चोल और पांड्य परंपराओं का ही विस्तार थी।

- इस शैली के **प्रारंभिक चरण को 14वीं शताब्दी** के त्रिची के निकट **तिरुपराकुंरम में चित्रों द्वारा दर्शाया गया है।**
- **हम्पी** में विरुपाक्ष **मंदिर के** मंडप की छत पर राजवंशीय इतिहास और रामायण तथा महाभारत की कहानियों को दर्शाने वाले चित्र हैं।
  - **भित्ति चित्र:** इसमें आध्यात्मिक गुरु ऋषि **विद्यारण्य** (जिन्होंने हरिहर और बुक्का को विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के लिए प्रेरित किया) **की शोभायात्रा; त्रिपुरांतक, नरसिम्हा के चित्र और गिरिजा कल्याण** का दृश्य है।
- **आंध्र प्रदेश के लेपाक्षी** में वीरभद्र **मंदिर में विष्णु के अवतारों** और **रामायण, महाभारत** के धार्मिक आख्यानों तथा अन्य धर्मनिरपेक्ष विषयों को दर्शाने वाली चित्रकला है।
  - उत्तर मध्ययुगीन कार्यों में **सूअर का शिकार** द्वि-आयामी चित्रकला की विशेषता है।

नायक चित्रकला

17वीं और **18वीं शताब्दी** में नायकों ने **थिरुपराकुंरम, श्रीरंगम** और **तमिलनाडु** के **तिरुवरूर** में कलात्मक परंपरा को जारी रखा।

- **नायक पेंटिंग की विषय-वस्तु: इसमें कृष्ण-लीला** के दृश्यों के साथ-साथ **महाभारत** और **रामायण** के प्रसंगों को दर्शाया गया है। **थिरुपराकुंरम में वर्धमान महावीर** के **जीवन** के दृश्यों को दर्शाने वाले चित्र (14वीं और 17वीं शताब्दी) हैं।
- नायक चित्रकला को विजयनगर शैली का विस्तार माना जाता है। यह छोटे क्षेत्रीय संशोधनों और समावेशन को प्रदर्शित करती है।

केरल भित्तिचित्र

16वीं से 18वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, केरल के चित्रकारों ने एक विशिष्ट चित्रात्मक भाषा और तकनीक विकसित की, जिसमें **नायक** और **विजयनगर** शैली के **तत्त्व** शामिल थे।

- **इन्होंने कथकली** और **कलाम एझुथु** (केरल की आनुष्ठानिक फर्श चित्रकला) जैसी स्थानीय परंपराओं से प्रेरणा ली।
- कलाकारों ने चित्रित कथाओं के लिए **मौखिक परंपराओं** और **रामायण** व **महाभारत** के **स्थानीय संस्करणों से प्रेरणा ली।**

लघु चित्रकारी

11वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, **ताड़ के पत्तों और कागज** पर लघु चित्रों के रूप में अभिव्यक्ति की एक नई पद्धति उभरी।

लघु चित्रकारी की विशेषताएँ

- पेंटिंग का आकार 25 वर्ग इंच से अधिक **नहीं होना चाहिए।**
- इन चित्रों के लिए पारंपरिक **टेम्पेरा तकनीक का उपयोग किया गया।**
- **मानव आकृतियों को** आमतौर पर एक **साइड प्रोफाइल में दर्शाया जाता है, जिसमें उभरी हुई आँखें, नुकीली नाक** और **पतली कमर** जैसी प्रमुख विशेषताएँ प्रदर्शित होती हैं।
- **उपयोग की गई वस्तुएँ**: ताड़ का पत्ता, कागज, लकड़ी और कपड़ा।

Search On TG: @apna_pdf

भारत में लघु चित्रकला के शुरुआती उदाहरण पूर्वी भारत के पालों के अधीन बौद्ध धर्म पर निष्पादित धार्मिक ग्रंथों और 11वीं-12वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान पश्चिमी भारत में निष्पादित जैन ग्रंथों के चित्रण के रूप में मौजूद हैं।

पाल शैली (पाल स्कूल)

11वीं और 12वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान **पूर्वी भारत** के **पालों** की सचित्र पांडुलिपियों में इस शैली की पेंटिंग के शुरुआती उदाहरण मिलते हैं।

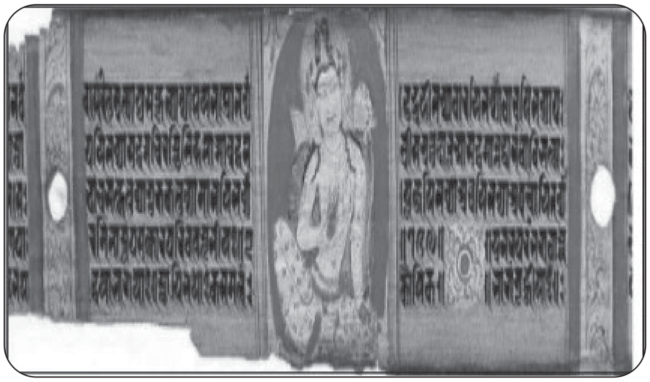

चित्र: लोकेश्वर, अष्टसहस्रिका प्रज्ञापारमिता (पाल शासन काल 1050 ई.)

- **750 ईस्वी से 1150 ईस्वी तक** पालों ने बौद्ध ग्रंथों को अधिकतर **ताड़ के पत्तों** या **चर्मपत्र कागज जैसी सामग्रियों पर चित्रित किया।**
- **उल्लेखनीय चित्रकार: धिम्मन** और **विटपाल।**

विशेषताएँ

- चित्रकला में **बौद्ध चित्रण का प्रभुत्व था।**
- **'अष्टसहस्रिका प्रज्ञापारमिता',** पाल बौद्ध ताड़पत्र पांडुलिपि का एक उदाहरण **है। इसे 'बुद्धि की पूर्णता' (Perfection of Wisdom) के रूप में भी जाना जाता है।**
  - इसका निर्माण ग्यारहवीं शताब्दी में राजा रामपाल के शासनकाल के दौरान नालंदा मठ में किया गया था।
- इन चित्रों में एकल आकृतियाँ दिखाई देती हैं, जबकि समूह-संयोजन की अपेक्षाकृत दुर्लभता मिलती है।

अपभ्रंश स्कूल ऑफ आर्ट

इसे **जैन स्कूल ऑफ आर्ट** तथा **पश्चिमी भारतीय चित्रकला शैली के रूप में भी जाना जाता है,** जो गुजरात, राजस्थान और मालवा के क्षेत्र में प्रचलित थी।

- पश्चिमी भारत में कलात्मक गतिविधि **जैन धर्म से प्रभावित थी** क्योंकि इसे **गुजरात के चालुक्यों या सोलंकियों द्वारा संरक्षण दिया गया था,** जिन्होंने गुजरात तथा राजस्थान और मालवा के कुछ हिस्सों पर शासन किया था।
- इन चित्रों पर **जैन छवि-चित्रण का प्रभुत्व था।**
- **जैन चित्रकला का विकास 'शास्त्रदान'** (किताबों का दान) की अवधारणा से हुआ। मठ के **पुस्तकालयों या 'भंडारों'** को सचित्र पेंटिंग दान करना दान के एक महान कार्य के रूप में देखा जाता था।
- **उदाहरण– कल्पसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, संग्रहणी सूत्र** और 15वीं शताब्दी की **कालकाचार्य कथा।**
- **पश्चिमी भारतीय चित्रकला पर फारसी प्रभाव:** 15वीं शताब्दी के दौरान फारसी चित्रकला शैली ने पश्चिम भारतीय चित्रकला शैली को प्रभावित करना शुरू किया।

लघु चित्रकला के अन्य उदाहरण

- **निमत नामा पांडुलिपि** (पाक कला पुस्तक) मालवा में चित्रकला की एक नई प्रवृत्ति को दर्शाती है। इसकी शुरुआत **मालवा के गयासुद्दीन खिलजी** (1469-1500 ई.) के **शासनकाल के दौरान हुई थी।**
- **'कुल्हादार समूह' (प्रारंभिक 16वीं शताब्दी): इस समूह में 'चौरपंचासिका', 'गीत गोविंद', 'भागवत पुराण',** और **'रागमाला'** जैसे विभिन्न ग्रंथों के चित्र शामिल हैं।
- **मुल्ला दाऊद** द्वारा रचित अवधी रोमांस **'लौर चंदा'** की दो पांडुलिपियाँ फारसी और भारतीय शैलियों का मिश्रण दर्शाती हैं। इनकी रचना 1530 से 1540 ईस्वी के बीच की गई थी।

मुगल शैली (1560-1800 ई.)

यह शैली **भारतीय** और **सफाविद फारसी चित्रकला** परंपराओं का मिश्रण है।

सामान्य विषय-वस्तु

- इसमें **ईश्वर को शासक का महिमागान करते हुए व धार्मिक विषयों को छोड़कर शासकों के जीवन को प्रदर्शित करते हुए दर्शाया गया है, जिसमें शिकार के दृश्य, ऐतिहासिक घटनाएँ तथा** दरबार से संबंधित पेंटिंग शामिल हैं।
- प्रकृति के विस्तृत अवलोकन के साथ **प्रकृतिवाद शामिल है।**

सामान्य तकनीक

- **फोरशॉर्टनिंग** की तकनीक प्रस्तुत की गई, जिससे वस्तुएँ वास्तव में जितनी थीं, उससे अधिक निकट और छोटी दिखाई देने लगीं।
- **यह छायांकन** और **परिप्रेक्ष्य** जैसी तकनीकों के साथ **यूरोपीय कला** से प्रभावित थी।
- **बाबर का प्रभाव:** बाबर के युद्धों ने चित्रकला के विकास को बाधित किया। उन्होंने फारसी कलाकार **बिहजाद का समर्थन किया।**

हुमायूँ कालीन चित्रकला

- वह सफविद कलाकार परंपराओं से प्रभावित थे, इसलिए उन्होंने **मीर सैयद अली और अब्द अस समद जैसे प्रखर कलाकारों को आमंत्रित किया।**
- **इन्होंने 'निगारखाना'** नामक एक चित्रकला कार्यशाला की नींव रखी और **'हमजानामा'** परियोजना की शुरुआत की। यह हमजा के साहसिक कार्यों की कहानी है।

अकबर कालीन चित्रकला

उन्होंने पेंटिंग और दस्तावेज लिखने के लिए **तस्वीरखाना** नाम से एक नए विभाग की स्थापना की।

- **दरबारी चित्रकार: दसवंत,** मिस्किना, नन्हा, कन्हा, **बसावन,** मनोहर, दौलत, मंसूर, केसू, भीम गुजराती, धर्मदास, मधु, सूरदास, लाल, शंकर गोवर्धन और इनायत।
- उन्होंने भारतीय कलाकारों को सम्मान दिया, जिसने **मुगल चित्रकला** में **'भारतीय प्रभाव' की शुरुआत की।**
- यूरोपीय चित्रकला को अकबर के दरबार में **पुर्तगाली पुजारी लेकर आए।**

Search On TG: @apna_pdf

चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ

- **3डी आकृतियों और फोरशॉर्टनिंग तकनीकों का अनुप्रयोग** तथा उनके चित्रों में **कैलीग्राफी का समावेश।**
- लोक कला (आम लोगों के जीवन) से दरबारी कला (दरबारी जीवन के दृश्य) में विस्थापन।

जहाँगीर का काल

- इस काल के चित्र **सचित्र पांडुलिपियों से एल्बमों** में परिवर्तित हो गए, जिसमें व्यक्तिगत चित्रों में **प्रकृतिवाद पर जोर दिया गया।** जहाँगीर **स्वयं एक कुशल कलाकार माने जाते थे।** **[UPSC 2019]**
- उनके समय में **पोर्ट्रेट पेंटिंग और जानवरों** की पेंटिंग का विकास हुआ।
- कलाकृतियों में **दरबार के दृश्य,व्यक्ति चित्र** और **पक्षियों, जानवरों तथा फूलों का अध्ययन शामिल है।**
- 1603-10 के बीच निर्मित पांडुलिपियाँ **अयार-ए-दानिश** (ज्ञान की कसौटी) और **अनवर-ए-सनावली थीं**, दोनों पशु आधारित नीति पुस्तकें थीं।
- **प्रमुख चित्रकार:** आका रिजा, अबुल हसन, **उस्ताद मंसूर**, बिशन दास, मनोहर, गोवर्धन, बालचंद, दौलत, मुखलिस, भीम और इनायत।
- लोकप्रिय मुगल चित्रों में **रज्म-नामा की एक शृंखला, रसिकप्रिया (1610-1615) की एक शृंखला** तथा **रामायण** (1610 ईस्वी) की एक **शृंखला** शामिल है।

शाहजहाँकालीन चित्रकला

- **इसमें कृत्रिम तत्त्वों को** शामिल किया गया और **यूरोपीय प्रभाव** से प्रेरित **अप्राकृतिक स्थिरता को प्रस्तुत किया गया।**
- **चित्रांकन** पर विशेष ध्यान दिया गया तथा विभिन्न पांडुलिपियों का चित्रण किया गया।
- चित्रांकन के लिए चारकोल के उपयोग को हतोत्साहित किया और **पेंसिल स्केचिंग को बढ़ावा मिला।**
- पूर्ववर्तियों की तुलना में चमकीले रंग पट्टिका को प्राथमिकता देने के साथ ही **चित्रों में सोने और चाँदी के उपयोग** में वृद्धि की।
- **प्रसिद्ध कलाकार:** बिचिटर, चैतरमन, अनूप चत्तर, समरकंद के मोहम्मद नादिर, इनायत और मकर।
- **पांडुलिपियाँ: सादी के गुलिस्तान** और बुस्तान की प्रतिलिपि तथा 1657 में **शाहजहाँनामा।**
- **औरंगजेब का काल** उसने चित्रकला की शैली को प्रोत्साहित नहीं किया, जिसके कारण **मुगल चित्रकला का ह्रास होने लगा।**
- कलात्मक गुणवत्ता में कमी आई तथा **दरबारी चित्रकारों का** प्रांतीय दरबारों में प्रवास

बहादुर शाह कालीन चित्रकला: इनके काल में पूर्व गौरव की वापसी का संकेत मिला और बेहतर कलात्मक गुणवत्ता प्रदर्शित हुई। **आगे चलकर** 1712 ई. के बाद एक बार फिर परवर्ती मुगलों के अधीन यह चित्रकला नष्ट होने लगी।

महत्त्वपूर्ण पांडुलिपियाँ

- **तूतीनामा** या **तोते की कहानियाँ:** अब्दुस समद खान और मीर सैयद अली ने इसके निर्माण में योगदान दिया।
- **हमजा-नामा चित्रण (1560 के दशक** में पूर्ण हुआ**):** मुगल चित्रकला की परिष्कृत और विकसित शैली।
- पांडुलिपियों में **सादी का गुलिस्तान (1567), अनवरी-सुहावली** (दंतकथाओं की एक पुस्तक, 1570) और एक अन्य **सादी का गुलिस्तान (1581), जिनकी नकल मुहम्मद हुसैन अल-कश्मीरी** ने फतेहपुर सीकरी में भी प्रयोग की है।
- अन्य उल्लेखनीय पांडुलिपियों में **रज्म-नामा** (अर्थात् 'युद्ध की पुस्तक'; महाभारत का फारसी अनुवाद), **जामी का बहरिस्तान** (1595), **दरब-नामा, अकबर-नामा** (1600), **तारीख-ए-अल्फी** (1596), 16वीं शताब्दी के अंतिम दशक में **बाबर-नामा, तवारीख-ए-खानदान-ए- तैमूरिया**, और **जोग वशिष्ठ** (1602) **शामिल हैं।**

क्षेत्रीय शैलियाँ (17वीं-19वीं शताब्दी)

राजस्थानी और **पहाड़ी चित्रकला शैली** सहित उप-शाही शैली ने अपनी भारतीय जड़ों को कायम रखा और अधिक प्राकृतिक मुगल शैली के विपरीत, रंगीन चित्रों को प्राथमिकता दी।

सामान्य क्षेत्रीय चित्रकला के प्रमुख विषय

- **रामायण, महाभारत** जैसे भारतीय महाकाव्यों से प्रेरणा; **भागवत, शिव पुराण** जैसे पुराण; **जयदेव** की **गीत गोविंद, भानुदत्त** की **रसमंजरी, अमरूशतक** और **रागमाला** जैसी संस्कृत प्रेम कविताएँ; लोकगीत व संगीत के विषय।

रागमाला चित्रकला

यह रागमाला अर्थात् 'रागों की माला' पर आधारित मध्ययुगीन भारत के चित्रों की **एक शृंखला** है, जो विभिन्न भारतीय संगीत रागों को चित्रित करती है। यह मध्यकालीन भारत में **कला, कविता** और **शास्त्रीय संगीत के मिश्रण का प्रतिनिधित्व करती है।** ये पेंटिंग **16वीं** और **17वीं** शताब्दी में शुरू हुई और अब इन्हें **पहाड़ी रागमाला, राजस्थान या राजपूत रागमाला, दक्कनी रागमाला** तथा **मुगल रागमाला के नाम से जाना जाता है।**

विशेषताएँ:

- रागमाला में छह प्रमुख राग हैं– **भैरव, दीपक, श्री, मालकौश, मेघ** और **हिंडोला।**
- इस **शृंखला** की कई पेंटिंग विशिष्ट हिंदू देवी-देवताओं को रागों के साथ जोड़ती हैं, जैसे **भैरव को शिव के साथ** और **श्री को देवी के साथ।**
- प्रत्येक पेंटिंग **रंग के माध्यम से एक राग को व्यक्त करती है** तथा **नायक** और **नायिका को** एक विशेष मनोदशा में दर्शाती है।

राजस्थानी चित्रकला शैली

यह रियासतों में, मुख्य रूप से आधुनिक राजस्थान और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में चित्रकला फली-फूली।

राजस्थानी कला का विकास

- **यह राजपूत चित्रकला शैली** से संबद्ध है।
- **सल्तनतकालीन दरबारों में 'गंगा-जमुनी'** सांस्कृतिक संगम ने राजस्थानी चित्रकला के विकास को प्रभावित किया।
- 16वीं सदी में **'पश्चिम भारतीय'** और **'चौरपंचाशिका'** शैलियों ने 17वीं सदी की चित्रकला शैलियों के लिए एक मंच तैयार किया।
- मुगल कलाकारों के राजस्थान पलायन करने से चित्रकला की उल्लेखनीय शैलियों का उद्भव हुआ, जैसे– **मालवा, मेवाड़, बूंदी-कोटा, आमेर-जयपुर, बीकानेर, मारवाड़** और **किशनगढ़।**

Search On TG: @apna_pdf

राजस्थानी शैली की विशेषताएँ

- **इसमें पेंटिंग्स 'वास्लिस'** पर तैयार की जाती थीं, जो हाथ से बने कागजों की परतदार, पतली शीट होती थी। इन्हें वांछित मोटाई के लिए एक साथ चिपकाया जाता था।
- **मुगल प्रभाव: बेहतर आरेखण तकनीक और आकृतियों तथा वृक्षों में प्रकृतिवाद के तत्त्वों का समावेश।**
- **मालवा: यह जैन पांडुलिपियों** और **चौरपंचाशिका पांडुलिपि** चित्रों की शैलियों का एक संयोजन प्रस्तुत करता है। इसकी विषय-वस्तु रामायण, **भागवत पुराण, अमरूशतक, रसिकप्रिया, रागमाला** और **बारामासा से ली गई है।**
- **मेवाड़:** मेवाड़ स्कूल की उत्पत्ति प्रायः **निसारदीन द्वारा 1605 के रागमाला चित्रों के एक सेट से जुड़ी हुई मानी जाती है।**
- उत्तरवर्ती काल के दौरान इसमें **'तमाशा' पेंटिंग प्रदर्शित की गई**, जो **दरबारी समारोहों** और **शहर के दृश्यों को प्रदर्शित करती थी।**

आमेर-जयपुर

प्रायः ऐसा माना जाता है कि चित्रकला के एक स्कूल की शुरुआत आमेर राज्य की पुरानी राजधानी **आमेर में हुई थी।** बाद में 18वीं शताब्दी में कलात्मक गतिविधियों का केंद्र नई राजधानी जयपुर स्थानांतरित हो गया।

सवाई राजा जय सिंह (1699-1743)

उन्होंने 1727 में आमेर से हटकर जयपुर शहर की स्थापना की। उनके शासनकाल के दौरान, जयपुर स्कूल ने काफी विकास किया और धीरे-धीरे यह एक एक विशिष्ट इकाई बन गया।

- उन्होंने **सुरतखाना (पेंटिंग विभाग) को पुनर्गठित किया,** जो पेंटिंग बनाने और संग्रहीत करने का स्थान था।
- **उन्होंने राधा** और **कृष्ण की थीम** पर कई पेंटिंग बनाई।
- **सवाई प्रताप सिंह (1779-1803):** इनके समय में प्रमुख मुगल प्रभाव कम होने लगा। उन्होंने मुगल और स्वदेशी सौंदर्यशास्त्र का मिश्रण करते हुए एक अनूठी जयपुर शैली की शुरुआत की।

मारवाड़

इस स्कूल में जोधपुर, बीकानेर (राठौड़) और **जैसलमेर** (भाटीस) जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

- बीकानेर की तरह, **जोधपुर भी** मुगलों के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों के कारण समृद्ध हुआ।
- मारवाड़ स्कूल की छत्रछाया में **किशनगढ़ स्कूल** और **बूंदी स्कूल** प्रमुख शैलियाँ **हैं।**

किशनगढ़

किशनगढ़ चित्रकला सबसे अधिक शैलीबद्ध राजस्थानी लघुचित्रों में से एक है।

- **मान सिंह (1658-1706) के संरक्षण** में, किशनगढ़ दरबार में एक विशिष्ट कलात्मक शैली का उद्भव हुआ।
- **इस शैली की विशेषता थी- मानव आकृतियों को लम्बा करने** की प्रवृत्ति; **हरे रंग** के प्रति लगाव; तथा **मनोरम परिदृश्यों** को प्राथमिकता देना।
- **कृष्ण लीला विषय किशनगढ़ कला** का प्राथमिक केंद्र बिंदु बन गया।

बणी ठणी

सावंत सिंह (उपनाम नागरी दास) की कृष्ण और राधा पर आधारित भक्ति कविता, **बिहारी जस चंद्रिका, निहाल चंद की बणी ठणी** चित्रकला का आधार बन गई। इस प्रकार, यह कविता और चित्रकला के मिश्रण का प्रतिनिधित्व करती है। यह लंबी **कमल जैसी आँखों, पतले होंठ** और **नुकीली ठुड्डी जैसी विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाती है।** **[UPSC 2018]**

बूंदी चित्रकला शैली

यह **बूंदी** और **कोटा की जुड़वाँ रियासतों से जुड़ी है,** जिन्हें सामूहिक रूप से **हडोती के नाम से जाना जाता है। 17वीं शताब्दी** में यह अपने चरम पर थी।

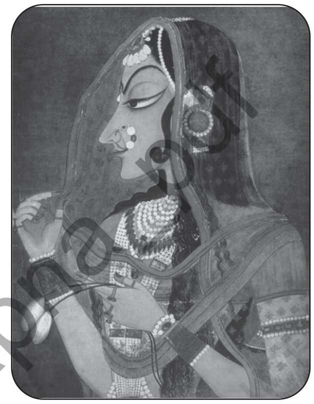

चित्र: बणी-ठणी

- बूंदी चित्रकला के प्रारंभिक चरण को 1591 की **'बूंदी रागमाला'** द्वारा दर्शाया गया है। इसमें फारसी शिलालेख थे।
- **विषय-वस्तु:** शिकार-थीम वाली कलाकृतियाँ, शाही जुलूस और कृष्ण की कहानियाँ।

बीकानेर

बीकानेर की चित्रकला शैली मुगल शैली से प्रभावित थी। बीकानेर की एक अनूठी प्रथा में कलाकारों के छायाचित्रों को शामिल किया जाता था, और शिलालेखों के साथ उनकी वंशावली का विवरण भी दिया जाता था। ऐसे कलाकारों को **'उस्तास'** या **'उस्ताद'** शीर्षक दिया जाता था।

पक्ष	राजपूत शैली (17वीं-18वीं शताब्दी)	मुगल शैली (16वीं-18वीं शताब्दी)
प्रकार	प्रारंभ में भित्तिचित्र और फ्रेस्को रूपों पर आधारित थी। बाद के काल में लघु चित्रकला शैली प्रमुख हो गई।	यह फारसी लघु चित्रकला शैली पर आधारित है।
विषय-वस्तु	आमतौर पर भक्तिपूर्ण या धार्मिक प्रकृति की होती है।	यह आमतौर पर मुगल सम्राट और उनके परिवार को दर्शाती है। शाही धूमधाम और प्रदर्शन, लड़ाई व शिकार के दृश्य भी बहुत लोकप्रिय हैं।
विशिष्टता	इसमें कमल, मोर और हंस जैसे हिंदू प्रतीकों का उपयोग किया जाता है।	इसके चित्रों में मौजूद व्यक्ति पर अथवा वृक्षों, ऊँटों व बाजों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

Search On TG: @apna_pdf

पहाड़ी शैली

परिचय

- 17वीं-18वीं शताब्दी के दौरान कश्मीर और पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के निकटवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में चित्रकला की एक उत्कृष्ट शैली का उद्भव हुआ। इन राज्यों की चित्रकला को सामूहिक रूप से **पहाड़ी पेंटिंग** कहा जाता है।
- **यह मुगल शैली** से भी **प्रभावित थी।** हालाँकि ये नज़रिया, विषय, रंग-चयन में **मुगल चित्रकला से भिन्न थी और जनसाधारण से सीधे जुड़ी थी।**

बसोहली शैली:

- **17वीं शताब्दी में जम्मू और कश्मीर** के बसोहली की पहाड़ी शैली की चित्रकला प्रकृति में लघु थी, जो प्रारंभिक चरण का प्रतिनिधित्व करती थी।
- **इसका विस्तार चंबा** और **कुल्लू** जैसे अन्य पहाड़ी राज्यों तक हुआ, जिससे स्थानीय विविधताएँ सामने आईं।
- 1690 से 1730 के दशक तक एक नई शैली उभरी जिसे **गुलेर-कांगड़ा चरण** के नाम से जाना जाता है।
- अंततः यह चरण कांगड़ा शैली के निर्माण का कारण बना।

रामायण का प्रभाव

- संस्कृत महाकाव्य, रामायण बशोली और कुल्लू में पहाड़ी कलाकारों का पसंदीदा ग्रंथ था। **'शांगरी'** के नाम पर चित्रों के एक विशिष्ट सेट ने बशोली और बिलासपुर शैलियों के प्रभाव को प्रदर्शित किया।
- **चित्रकला की गुलेर शैली:** यह बशोली शैली से एक महत्त्वपूर्ण बदलाव को दर्शाती है, जो पहाड़ी चित्रकला में **गुलेर-कांगड़ा चरण की शुरुआत का प्रतीक है।**

18वीं सदी का कांगड़ा स्कूल

- यह 18वीं शताब्दी की अंतिम तिमाही के दौरान उभरा, जो पहाड़ी चित्रकला के तीसरे चरण का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह गुलेर शैली से विकसित हुआ और इसने अपनी मुख्य विशेषताओं, जैसे- आरेखण में कुशलता और प्रकृतिवाद को बरकरार रखा।
- कांगड़ा शैली **कांगड़ा, गुलेर, बशोली, चंबा, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू, नूरपुर, कुल्लू, मंडी क्षेत्रों** और **गढ़वाल सहित विभिन्न स्थानों में फली-फूली।**
- 19वीं सदी की शुरुआत में इसे **महाराजा रणजीत सिंह** और **सिख अभिजात वर्ग का संरक्षण मिला।**

विषय-वस्तु

- इसमें **गीत गोविंद, भागवत पुराण, बिहारीलाल की सतसई** और **नल दमयंती शामिल थे।**
- **कृष्ण के प्रेम दृश्य एक प्रमुख विषय थे, विशेषकर रास पंचाध्यायी** का चित्रण, जो कृष्ण के प्रति गोपियों के गहन प्रेम को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।
- एक अन्य प्रसिद्ध शृंखला में **'बारह महीनों' को दर्शाया गया है,** जो मानवीय भावनाओं पर प्रत्येक महीने के प्रभाव को दिखाता है।

दक्कनी स्कूल (डेक्कन स्कूल)

- यह 16वीं और 17वीं शताब्दी में भारत के दक्षिणी पठारी क्षेत्र में चित्रकला के विशिष्ट स्कूलों के रूप में विकसित हुआ।
- अहमदनगर शैली और अन्य दक्कनी शैलियों पर फारसी प्रभाव था।

अहमदनगर

अहमदनगर स्कूल ऑफ पेंटिंग की उत्पत्ति **अहमदनगर** के **हुसैन निजाम शाह प्रथम (1553-1565) के शासनकाल का जश्न मनाने वाली कविताओं की एक शृंखला से मानी जाती है।** इस पांडुलिपि को **'तारीफ-इन-हुसैन शाही' के नाम से जाना जाता है।**

बीजापुर

इसे अली आदिल शाह प्रथम (1558-80 ई.) और उनके उत्तराधिकारी **इब्राहिम द्वितीय** (1580-1627 ई.) द्वारा संरक्षण दिया गया था।

- **'नजूम-अल-उलूम'** (विज्ञान के सितारे) नामक एक विश्वकोश को 1570 ई. में अली आदिल शाह प्रथम के शासनकाल में लघु चित्रों के साथ चित्रित किया गया था।
  - **लेपाक्षी भित्ति चित्रों** का प्रभाव महिला आकृतियों के चित्रण में स्पष्ट है।
  - सिंहासन पर सुनहरे रंग, फूल वाले पौधों और अरबी के उपयोग में **फारसी प्रभाव** लक्षित होता है।
- **इब्राहीम द्वितीय (1580-1627 ई.)** ने **रागमाला चित्रकला का निर्माण करवाया।**

गोलकुंडा

गोलकुंडा के **मुहम्मद कुली कुतुब शाह (1580-1611) के समय की पाँच आकर्षक कलाकृतियों का समूह** (1590 ई.) गोलकुंडा कृति के रूप में पहचानी जाने वाली सबसे प्रारंभिक पेंटिंग है।

- **अन्य उल्लेखनीय उदाहरण: 'मैना पक्षी के साथ महिला' कलाकार मुहम्मद अली** की एक सूफी कविता (1605-15 ईस्वी) की पांडुलिपि है।
- **हैदराबाद: इसकी उत्पत्ति** 1724 ई. में **मीर कमरुद्दीन खान** (चिन कुलिक खान) **निजाम-उल-मुल्क** द्वारा **आसफ जाही राजवंश** की स्थापना के साथ हुई। इस पर मुगल प्रभाव था।

तंजौर शैली

इसका उद्भव मराठों द्वारा **तंजावुर नायकों** की हार और 18वीं शताब्दी के अंत के समय और 19वीं शताब्दी में **विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद हुआ।** इसे भारत सरकार द्वारा भौगोलिक संकेतक (GI tag) प्राप्त है।

- 18वीं शताब्दी के दौरान, **मराठा शासकों ने इस स्कूल को** बहुत **समर्थन और संरक्षण दिया और मराठा राजवंश** के **महाराजा सर्फोजी द्वितीय** के संरक्षण में यह अपने चरम पर पहुँचा।

विशेषताएँ

- इसकी विषय-वस्तु में **पक्षी, जानवर, इमारतें** और विभिन्न मुद्राओं में **मुस्कुराते हुए कृष्ण के चित्र शामिल हैं।**
- इसमें प्रमुखता से **स्वर्ण-पत्र** और **शंक्वाकार मुकुटों का उपयोग किया गया है।**
- **पलागाई पदम** (काँच और लकड़ी) पर निर्मित, उत्तर भारतीय प्राथमिकताओं से हटकर कपड़े और चर्मपत्र के विपरीत, रत्नों और कटे हुए काँच से सजाया गया।
- **महत्त्वपूर्ण पेंटिंग: इसमें राम के राज्याभिषेक** का चित्रण किया गया है।

Search On TG: @apna_pdf

मैसूर चित्रकला

- यह मैसूर प्रांत के शासकों द्वारा प्रायोजित की गई चित्रकला शैली थी। और ब्रिटिश काल के दौरान भी इसको संरक्षण मिलता रहा।
- **तकनीक:** सफेद सीसा पाउडर, गैम्बोज और गोंद के मिश्रण **'गेसो पेस्ट' का प्रयोग,** जो चमकदार पृष्ठभूमि के साथ एक अनूठा आधार बनाता था।
- तंजौर और मैसूर दोनों चित्रकलाओं की उत्पत्ति एक समान मानी जाती है, जो प्रारंभ में विजयनगर चित्रकला से और बाद में नायक चित्रकला से उत्पन्न हुई।

आधुनिक चित्रकला

भारतीय कला में आधुनिक काल की शुरुआत प्रायः 1857 के आस-पास भारतीय चित्रकला (लघु चित्रकला के विस्तार) के रूप में मानी जाती है। जब कलाकार पश्चिमी प्रभावों और आधुनिकीकरण के संपर्क में आए, जिससे भारतीय कला में महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए।

कंपनी चित्रकला और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

यह उस शैली को संदर्भित करता है जो विभिन्न भारतीय शहरों में तब उभरी जब 18वीं शताब्दी के दौरान स्थानीय भारतीय कलाकारों ने ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों की अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए अपनी पारंपरिक तकनीकों को अपनाया।

विशेषताएँ

- राजपूत, मुगल और अन्य भारतीय शैलियों के तत्त्वों को यूरोपीय प्रभावों के साथ जोड़ना।
- पानी वाले रंगों, रैखिक परिप्रेक्ष्य और छायांकन तकनीकों का उपयोग।
- **विषय-वस्तु:** सामाजिक अशांति और मानवीय दुर्दशा; 'तांत्रिक' में भारतीय दर्शन और तत्त्वमीमांसा; अतियथार्थवाद और कल्पना में बढ़ती रुचि।
- **बाजार पेंटिंग्स:** यह भारत में यूरोपीय समागम से प्रभावित थी और इसने रोमन और ग्रीक प्रभावों को अपनाया। यह **बंगाल** और **बिहार क्षेत्रों** में प्रमुख थी, जिसमें यूरोपीय पृष्ठभूमि के विपरीत भारतीय बाजारों का चित्रण था।

बंगाल स्कूल ऑफ पेंटिंग

बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट एक कला आंदोलन और शैली थी। हालाँकि यह कलकत्ता (बंगाल) में शुरू हुई लेकिन इसने कला में राष्ट्रवादी भावनाओं को दर्शाते हुए पूरे भारत में अपना प्रभाव बढ़ाया। इसे **पुनर्जागरण स्कूल** या **पुनरुत्थानवादी स्कूल भी कहा जाता है।**

- इसका नेतृत्व **अबनींद्रनाथ टैगोर** (1871-1951) ने किया था तथा यह ब्रिटिश प्रशासक और कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट के प्रिंसिपल **ईबी हैवेल (1861-1934) द्वारा समर्थित था।**
- उन्होंने कंपनी स्कूल ऑफ पेंटिंग के प्रभाव और औपनिवेशिक कला स्कूलों में प्रचलित यूरोपीय शैक्षणिक शैली को खारिज करते हुए मुगल और पहाड़ी लघुचित्र जैसे पारंपरिक भारतीय कला रूपों को अपनाया।

महत्त्वपूर्ण चित्रकार और उनके कार्य

- **अबनींद्रनाथ टैगोर को उनकी 'अरेबियन नाइट' श्रृंखला** से वैश्विक पहचान मिली।
- उन्होंने पश्चिमी भौतिकवादी प्रभावों का मुकाबला करते हुए भारतीय कला में स्वदेशी मूल्यों को शामिल किया।
- उनकी प्रसिद्ध कृतियों में **'भारत माता'** और विभिन्न मुगल-थीम वाली पेंटिंग्स शामिल हैं।
- **नंदलाल बोस का** दांडी मार्च के दौरान **गांधीजी का** वाइट-ऑन-ब्लैक रेखाचित्र सुप्रसिद्ध है।
- भारत के **मूल संविधान दस्तावेज** पर प्रकाश डाला।

राजा रवि वर्मा (1848-1906)

- उनके आधुनिक चित्रकला स्कूल को पश्चिमी तकनीकों और विषयों को शामिल करने के कारण प्रसिद्धि मिली। केरल से संबद्ध राजा रवि वर्मा को प्रायः **'आधुनिक भारतीय कला का जनक'** कहा जाता है।
- उन्होंने दक्षिण भारतीय चित्रकला तत्त्वों को पश्चिमी शैलियों और रंगों के साथ जोड़ा।
- उनकी कुछ सबसे प्रसिद्ध कृतियों में **'लेडीज इन द मूनलाइट', 'शकुंतला', 'दमयंती',** और **'स्वान' शामिल हैं।** उनकी पेंटिंग्स में रामायण के दृश्य दिखाए गए हैं।

चित्रकला की क्यूबिस्ट शैली

इसे **यूरोपीय क्यूबिस्ट आंदोलन** से प्रेरणा मिली। इसकी विशेषता वस्तुओं को तोड़ना, विश्लेषण करना और पुनः जोड़ना था। **एम. एफ. हुसैन** भारत के प्रसिद्ध क्यूबिस्ट कलाकारों में से एक थे।

लोक चित्रकला

मधुबनी चित्रकला या मिथिला चित्रकला

- इसका नाम प्राचीन विदेह और राजकुमारी की जन्मस्थली, मिथिला से लिया गया है। लोककथाओं के अनुसार, इसकी उत्पत्ति उस समय से मानी जाती है जब राजकुमारी सीता का विवाह भगवान राम से हुआ था।
- यह पारंपरिक रूप से मिथिला (बिहार) के गाँवों में महिलाओं द्वारा की जाती थी।

विशेषताएँ

- इसकी विशेषता **चमकीले रंग** हैं। इन्हें गाय के गोबर और मिट्टी लेपित आधार पर चावल के लेप और वनस्पतियों के रंगों का उपयोग करके दीवारों पर चित्रित किया जाता था। लेकिन समय के साथ, यह आधार हस्तनिर्मित कागज, कपड़े और कैनवास पर भी किया जाने लगा है।
- **विषय-वस्तु:** भागवत पुराण और रामायण के प्रसंग, शिव-पार्वती की कहानियाँ तथा राधा और कृष्ण की रास-लीला।
- इस शैली में **रिक्त स्थान नहीं रखा जाता है अतः** वे पूरे स्थान को सजावटी रूप से प्रकृति के रंग से भर देते हैं।
- छाया प्रभाव न होने के कारण यह चित्रकला द्वि-आयामी है।
- यह दोहरी पंक्ति का किनारा, गहरे रंगों का प्रयोग, अलंकृत पुष्प प्रतिरूप और अतिरंजित मुख मुद्राओं को दर्शाती है।
- **मधुबनी चित्रकला को भौगोलिक संकेतक** (GI tag) प्राप्त है।
- **बिहार की टिकुली कला के डिजाइन में** अक्सर मधुबनी रूपांकन देखने को मिलता है।

ओडिशा के पट्टचित्र

पट्टचित्र 'नाम संस्कृत के शब्द **'पट्ट',** (कैनवास या कपड़ा), और **'चित्र',** (picture) से लिया गया है। **ओडिशा** का **रघुराजपुर** पट्टचित्र कला के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।

Search On TG: @apna_pdf

विशेषताएँ

- यह लोक कला के प्रमुख प्रभाव के साथ शास्त्रीय और लोक तत्त्वों का मिश्रण प्रदर्शित करता है।
- पट्टचित्र पेंटिंग के लिए आधार सामग्री **उपचारित कपड़ा है।** कलाकृति हेतु जीवंत रंग बनाने के लिए प्राकृतिक स्रोतों का उपयोग किया जाता है।
- इसमें लाल या पीले रंग में **रूपरेखा बनाने के लिए ब्रश का इस्तेमाल किया जाता है।** इसकी पृष्ठभूमि जटिल पर्णसमूह और पुष्प रूपांकनों से सजी होती है।
- अंतिम रेखाएँ खींचे जाने के बाद, इसे चमकदार फिनिश देने के लिए सतह पर लाह/लाख (lacquer) लगाया जाता है।
- **विषय-वस्तु:** जगन्नाथ और वैष्णव पंथों तथा शक्ति और शैव पंथों से प्रेरित।
- **ताड़ के पत्तों पर चित्रित पट्टचित्र को 'तालपट्टचित्र' कहा जाता है।**

बंगाल की पटुआ कला

इसका इतिहास लगभग एक हजार साल पुराना है। प्रारंभ में यह एक ग्रामीण परंपरा के रूप में उभरी। इसमें चित्रकारों ने **मंगल काव्य** या हिंदू देवताओं से संबंधित शुभ कहानियों को दर्शाया है।

- आम तौर पर **स्क्रॉल** या **'पट'** पर बनाए गए और स्क्रॉल पेंटर्स को **'पटुआ'** के रूप में जाना जाता है। इसमें कपड़े का उपयोग आधार सामग्री के रूप में किया जाता है।
- अधिकांश पटुआ **मुस्लिम हैं और** इनकी पारंपरिक कलाकृतियों में **हिंदू मिथकों** का चित्रण मिलता है।

पैतकर पेंटिंग या स्क्रॉल

यह झारखंड के एक छोटे से गाँव अमादुबी की पारंपरिक स्क्रॉल पेंटिंग है। यह अपनी **कथा** परंपरा और प्रदर्शन के लिए जानी जाती है।

संथाल पेंटिंग

ये पेंटिंग्स दीवारों पर कथात्मक स्क्रॉल के साथ-साथ आनुष्ठानिक छवियों के रूप में होती हैं। इन दीवार चित्रों में, संथाल महिलाओं द्वारा बनाए गए अधिकांश रूपांकन ज्यामितीय आकृतियाँ, जानवर और पक्षी हैं। इसके सभी उपकरण और रंग सामग्रियां **स्वदेशी** प्रक्रिया द्वारा बनाई जाती हैं।

आंध्र प्रदेश की कलमकारी पेंटिंग [UPSC 2015]

कलमकारी शब्द की उत्पत्ति फारसी शब्द कलम (Pen) और कारी (शिल्प कौशल) से हुई है।

विशेषताएँ

- इसमें कैनवास के रूप में सूती कपड़े और रंगों के रूप में वनस्पति रंगों के साथ कलम का उपयोग किया जाता है। छवियाँ मुक्तहस्त तरीके से खींची जाती हैं।
- **विषय-वस्तु:** मुख्यतः हिंदू पौराणिक कथाओं से प्रेरित।
- **प्राथमिक केंद्र:** आंध्र प्रदेश राज्य में **श्रीकलाहस्ति** और **मछलीपट्टनम।**
- इस कला को **2013 में भौगोलिक संकेतक (जीआई टैग) प्राप्त हुआ।**

महाराष्ट्र की वर्ली चित्रकला

इसका नाम **वर्ली** जनजाति के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने 2500-3000 ईसा पूर्व की प्राचीन कलात्मक परंपरा को बरकरार रखा। यह मध्य प्रदेश के भीमबेटका भित्तिचित्रों से मिलती-जुलती है।

विशेषताएँ

- इसमें मिट्टी, शाखाओं और गाय के गोबर के मिश्रण से पृष्ठभूमि का लाल गेरुआ रंग बनाया जाता है।
- पेंटिंग के लिए सफेद रंजक (गोंद और चावल पाउडर का मिश्रण) का इस्तेमाल किया जाता है।
- **तकनीक:** त्रिकोण, वृत्त और वर्ग जैसी सरल ज्यामितीय आकृतियों का उपयोग मनुष्यों या जानवरों को दर्शाने के लिए किया जाता है; दो त्रिभुज सिरे पर जुड़े हुए हैं, जिनमें वृत्त उनके सिरों को दर्शाते हैं।

विषय-वस्तु

- केंद्रीय रूपांकन में एक **'चौकट'** या **'चौक' है जो मछली पकड़ने, शिकार, खेती, नृत्य, जानवरों, पेड़ों** और **त्योहारों** से संबंधित दृश्यों के चित्रण से घिरा हुआ है।
- उर्वरता की देवी **पालाघाट और पुरुष देवताओं को** मानव रूप में दर्शाया गया है।
- इन्हें सफेद पोस्टर रंग का उपयोग करके **लाल या काले पृष्ठभूमि** वाले कपड़े पर चित्रित किया जाता है।
- दीवार पेंटिंग आमतौर पर फसल त्योहारों और शादियों जैसे शुभ अवसरों पर ही बनाई जाती हैं।

थांगका पेंटिंग

ये पेंटिंग बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बनाई गई हैं।

- इसे एक सफेद सूती कैनवास पर चित्रित किया जाता था, जो पृष्ठभूमि के रूप में काम करता था।
- इसमें इस्तेमाल किए जाने वाले रंग प्राकृतिक स्रोतों जैसे वनस्पति रंगों या खनिज रंगों से प्राप्त किए जाते थे।
- यह **सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, लद्दाख** और **अरुणाचल प्रदेश** जैसे क्षेत्रों में प्रचलित है।

बिहार की मंजूषा या अंगिका पेंटिंग

- इसकी उत्पत्ति **बिहार के भागलपुर** क्षेत्र से हुई है और इसे वैकल्पिक रूप से **अंगिका कला** के रूप में जाना जाता है। यहाँ **'अंग'** महाजनपद क्षेत्रों में से एक का प्रतीक है।
- इसमें **साँप का रूपांकन** किया जाता है, जिसके कारण इन्हें **'स्नेक पेंटिंग'** उपनाम दिया गया है।
- **प्राथमिक कैनवास: जूट के डब्बों** और **कागज** पर बनाया जाता है।

राजस्थान की फड़ स्क्रॉल पेंटिंग

- यह एक धार्मिक कला है, जो स्थानीय देवताओं को प्रदर्शित करती है।
- बड़ी आँखों और गोल चेहरे वाली आकृतियों, शोभायात्राओं और उत्सवों के दृश्यों को चित्रित करती है।
- **इसे लंबे कपड़े** पर वनस्पति रंगों का उपयोग करके तैयार किया जाता है, जिसे **'फड़'** के नाम से जाना जाता है।

तेलंगाना की चेरियाल स्क्रॉल पेंटिंग

- यह **नक्काशी कला परंपरा** से संबंधित है। 2007 में इस कला को **जीआई टैग प्रदान किया गया था।**

Search On TG: @apna_pdf

- यह आकार में विशाल हो सकती है और इनकी ऊँचाई 45 फीट तक हो सकती है।
- स्क्रॉल, बैलाडीर समुदाय द्वारा कॉमिक्स या गाथागीत की भांति एक सतत कहानी को दर्शाते हैं।
- यह हिंदू महाकाव्यों और पौराणिक कथाओं के इर्द-गिर्द घूमते हैं।

ओडिशा की सौरा पेंटिंग

- यह वर्ली पेंटिंग के समान है और सौरा जनजाति द्वारा निर्मित है।
- आनुष्ठानिक महत्त्व के साथ दीवार भित्तिचित्रों के रूप में है।
- मानव आकृतियाँ एक विशिष्ट ज्यामितीय और छड़ी जैसी हैं।
- **प्रयुक्त सामग्री:** प्राकृतिक स्रोतों (खनिज और पौधे) से बनाए गए रंग।

पिथौरा पेंटिंग

- यह पेंटिंग गुजरात के **पंचमहल क्षेत्र** और पड़ोसी राज्य **मध्य प्रदेश के झाबुआ के राठवा भीलों द्वारा बनाई जाती है।**
- यह घरों की दीवारों पर विशेष अवसरों को चिन्हित करने के लिए बनाई जाती है।
- ये बड़े दीवार चित्र हैं, जो **घुड़सवार के रूप में चित्रित देवताओं की पंक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।**

गुजरात की माता-नी-पचेड़ी

- **अहमदाबाद** में, **देवी माँ पंथ** से संबंधित कपड़े पर माता-नी-पचेड़ी पेंटिंग मन्नत के प्रसाद के रूप में बनाई जाती है।
- यह पेंटिंग नवरात्रों के दौरान बनाई जाती है।
- वाघारी समुदाय विशेष रूप से इन पचेड़ियों को चित्रित करने के लिए जाना जाता है। इनमें केवल पुरुष ही चित्रकारी करते हैं; महिलाओं को पवित्र अनुष्ठान करने की अनुमति नहीं है।

साँझी

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार और **उत्तर प्रदेश** के गाँवों में अविवाहित युवा लड़कियाँ नवरात्रि के दौरान पूजी जाने वाली देवी साँझी की प्रतिमा तैयार करती हैं।

- चूँकि ये चित्र शाम के समय बनाए जाते हैं, इसलिए इन्हें 'सांझी' या 'संझा' या 'चंद्र तरैया' नाम दिया जाता है।

चित्रकथी पेंटिंग

मध्यकालीन **महाराष्ट्र तथा आंध्र** और **कर्नाटक** के कुछ हिस्सों में लोगों का एक वर्ग चित्रकथी के नाम से जाना जाता था।

- ये एक गाँव से दूसरे गाँव की यात्रा करते थे और इन एकल कागज़ पर चित्रित चित्रों की मदद से लोगों को पौराणिक कहानियाँ सुनाते थे।
- चित्रकथी पट्ट की विषय-वस्तु रामायण और महाभारत या पौराणिक किंवदंतियों से प्रेरित थी।

कालीघाट पेंटिंग

ये पेंटिंग पटुआ के नाम से जाने जाने वाले विशेष स्क्रॉल चित्रकारों द्वारा बनाई जाती है, जिन्होंने **कोलकाता जाकर** मुख्य रूप से कालीघाट मंदिर के आस-पास अपनी दुकानें स्थापित कीं जहाँ देवी काली की पूजा की जाती है।

पिछवाई

पिछवाई पेंटिंग कपड़े पर बनाई जाती है। यह **राजस्थान** के नाथद्वारा में श्रीनाथजी की स्थापित प्रतिमाओं के लिए चित्रित पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करती है। **इसकी विषय-वस्तु** में कृष्ण का जीवन, ऋतुएँ आदि शामिल हैं।

गंजीफा कार्ड

'गंजीफा' शब्द का शाब्दिक अर्थ है धन-धान्य की संपदा है।

- **पश्चिम बंगाल** के बांकुरा जिले के बिष्णुपुर के कलाकारों ने 14वीं शताब्दी में ताश के पत्तों का एक विशेष सेट तैयार किया, जिसे गंजीफा कार्ड के नाम से जाना जाता है। यह वर्तमान समय के ताश के पत्तों का विकल्प है।
  - उन्होंने भगवान विष्णु के दस अवतारों का चित्रण किया।
- **हुमायूँनामा** और **अबुल फजल की आईने-अकबरी** जैसी पुस्तकों में इसके ऐतिहासिक संदर्भ मिलते हैं।
- ये कार्ड **ओडिशा**, **महाराष्ट्र** और **मैसूर में भी पाए जाते हैं।**

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH
RPP 2025 Rigorous Prelims Test-Series Program
English / हिन्दी | Online / Offline
Daily Practice & LIVE Video Solutions
G.S. & CSAT Tests (Sectional + Full Length)
Mentorship Webinar
Offline ₹ 12,999/- ₹ 4,999/-
Online ₹ 8,999/- ₹ 3,999/-

5 भारत में नृत्य शैलियाँ

भरतमुनि का नाट्य शास्त्र

- यह नृत्य पर ज्ञात सबसे प्रारंभिक ग्रंथ है जिसमें नाटक, नृत्य और संगीत शामिल हैं। इसकी रचना दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच हुई थी। इसे पाँचवाँ वेद (नाट्य वेद) भी माना जाता है। इसमें नृत्य शैलियों, मुद्राओं, भावनाओं, आभूषणों, मंच और दर्शकों का वर्णन है।
- यह विभिन्न वेदों के तत्त्वों को एकीकृत करता है जिसमें ऋग्वेद से पाठ्य (शब्द), यजुर्वेद से अभिनय (भाव-भंगिमा), सामवेद से गीत (संगीत) और अथर्ववेद से रस (भावनाएँ) शामिल हैं।

करण: 108 हस्त मुद्राएँ (जिन्हें करण के नाम से जाना जाता है) भारतीय शास्त्रीय नृत्य का अभिन्न अंग हैं और भरतमुनि द्वारा नाट्यशास्त्र में इनका विस्तृत विवरण दिया गया है। ये मुद्राएँ हस्त मुद्राओं (हाथों के इशारे), अंगिका (शारीरिक चेष्टाओं) और संचारी (संक्रमण) भावों का संयोजन हैं।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य में तांडव और लास्य:

- **तांडव:**
  - तीव्र, गतिशील और पुरुषत्व आधारित।
  - भगवान शिव के सृजन और विनाश के ब्रह्मांडीय नृत्य से संबंधित।
  - शक्तिवान गतियों तथा मजबूत पैरों की विशेषता।
  - ऊर्जा, वीरता और दिव्य शक्ति का प्रतीक।
- **लास्य:**
  - सुंदर, सरल और स्त्रैण।
  - देवी पार्वती के कोमल और भावपूर्ण नृत्य से संबंधित।
  - सरल, प्रवाहपूर्ण गतियों और अभिव्यंजक संकेतों की विशेषता।
  - सुंदरता, प्रेम और आध्यात्मिक भक्ति का प्रतीक।

तांडव और लास्य एक साथ ऊर्जा और सौंदर्य को संतुलित करते हैं, जीवन के द्वंद्व को मूर्त रूप प्रदान करते हैं, साथ ही भारतीय शास्त्रीय नृत्य को लय एवं भावना से समृद्ध करते हैं।

नृत्य के रूप

भरत और **नंदिकेश्वर,** नृत्य को अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में, मानव शरीर का उपयोग करने वाली एक कला के रूप में देखते हैं।

- नाट्य शास्त्र के अनुसार भारतीय शास्त्रीय नृत्य के दो प्राथमिक रूप हैं:
  - **तांडव:** यह नृत्य पुरुष पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है, जो लय और गति पर अधिक जोर देता है।
  - **लास्य:** यह नृत्य स्त्री की विभिन्न छवियों का प्रतिनिधित्व करता है, जो लावण्य, भाव, रस और अभिनय को दर्शाता है।

अभिनय में अंगिका (शरीर और अंग), **वाचिका** (गीत और भाषण), **आहार्य** (पोशाक और श्रृंगार) तथा **सात्विक** (चित्तवृत्ति और भावावेश) के माध्यम से अभिव्यक्ति शामिल है।

- अभिनय दर्पण (नंदिकेश्वर द्वारा नृत्य पर ग्रंथ) के अनुसार, नृत्य के तीन रूप माने जाते हैं:
  - नाट्य, नाटकीय तत्त्व पर जोर देता है।
  - नृत्य अभिव्यक्ति है, जो किसी विषय या विचार का अर्थ बताता है।
  - शुद्ध नृत्य है, जो मनोदशा या अर्थ से रहित है।

नृत्य और नाट्य को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए, नर्तकियों द्वारा **नवरस को प्रकट करना चाहिए।**

नवरस में शामिल हैं- प्रेम **(शृंगार),** आनंद **(हास्य),** करुणा **(करुण),** वीरता **(वीर),** क्रोध **(रौद्र),** भय **(भयानक),** घृणा **(वीभत्स),** आश्चर्य **(अद्भुत)** और शांति **(शांत)।**

भारत की आठ शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ

संगीत नाटक अकादमी के अनुसार भारत में **8 शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ पाई जाती** हैं। हालाँकि, **संस्कृति मंत्रालय ने 9 शास्त्रीय नृत्य** शैलियों **की** पहचान की है जिनमें पूर्वी भारत का **छऊ नृत्य भी शामिल है।**

भरतनाट्यम (तमिलनाडु)

- 19वीं सदी की शुरुआत में राजा सर्फोजी द्वारा समर्थित तंजौर चौकड़ी (पोन्नय्या, चिन्नय्या, शिवानंद, वडिवेलु) ने समकालीन भरतनाट्यम प्रदर्शनों की फेहरिस्त को आकार दिया। अतः इसे तंजौर नाट्यम के नाम से भी जाना जाता है।

- यह एक एकल नृत्य है जहाँ नर्तक, प्रवृति (Movement) और अभिनय के माध्यम से साहित्य को व्यक्त करता है।

Search On TG: @apna_pdf

- इसे एकहार्य शैली में भी प्रदर्शित किया जाता है जहाँ एक नर्तक एक ही प्रदर्शन में कई भूमिकाएँ निभाता है।

देवदासियों की विरासत: मंदिरों को उपहार में दी गई और **देवताओं से ब्याही गई लड़कियाँ,** जिन्हें देवदासियाँ कहा जाता था, वे मंदिर प्रांगणों में प्रसंग के साथ **भरतनाट्यम करती थीं।**

प्रदर्शन का ढंग:

भरतनाट्यम प्रदर्शन निम्नानुसार **एक संरचित** स्वरूप **का पालन करते हैं:**

- प्रदर्शन की शुरुआत देवताओं के आह्वान के साथ होती है।
- **अलारिप्पु (फूलों का खिलना):** यह प्रदर्शन का पहला अंश है जो ध्वनि अक्षरों के उच्चारण के साथ शुद्ध नृत्य का मिश्रण करता है।
- जतीस्वरम कर्नाटक संगीत के राग पर आधारित एक विशुद्ध लघु नृत्य कृति है। इसमें साहित्य (शब्दों) का अभाव है और इसमें अदावु शामिल हैं, जो विशुद्ध नृत्य अनुक्रम (नृत्त) हैं।
- शब्दम, जो जातीस्वरम का अनुसरण करता है, शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया गया नाटकीय अंश है।
- इसके बाद वर्णम का प्रदर्शन किया जाता है जिसमें नृत्त और नृत्य दोनों के अवयव शामिल होते हैं। नर्तक अपने तालबद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुए दो गतियों पर जटिल तालबद्ध स्वरूप को प्रस्तुत करता है।
- अभिनय का उपयोग साहित्य पद्धतियों को चित्रित करने के लिए किया जाता है, जो नर्तक के अभिनय कौशल और नृत्यकला की रचनात्मकता को प्रदर्शित करता है।
  - एक सामान्य रचना में कीर्तनम (जोर से पाठ करना), कृतिस (संगीत पर जोर), पदम और जावलिस शामिल हैं। कीर्तनम और कृतियों में भक्ति प्रसंग है जबकि पदम और जवालिस प्रेम के प्रसंगों के इर्द-गिर्द घूमते हैं।
- **तिल्लाना:** यह प्रदर्शन का समापन करता है। यह साहित्य की कुछ पंक्तियों के साथ एक संगीतमय शब्दांश के साथ एक जीवंत नृत्य है।
- प्रदर्शन दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करते हुए मंगलम के साथ समाप्त होता है।

विशेषताएँ

- भरतनाट्यम की अधिकांश गतिविधियाँ नाचती हुई लौ के समान होती हैं। अत: इसे 'अग्नि नृत्य' कहा जाता है।
- तांडव और लास्य पर समान जोर दिया गया है जिसमें 'मुद्रा' पर महत्त्वपूर्ण जोर दिया गया है।
  - प्रमुख मुद्राओं में से एक है 'कटका मुख हस्त' (तीन उंगलियाँ 'ओम' का प्रतीक बनने के लिए जुड़ी होती हैं)।
- इस नृत्य में, प्रदर्शन के दौरान घुटने अधिकतर मुड़े होते हैं और वजन पैरों पर समान रूप से वितरित होता है।
- संगत में एक गायक, मृदंगम वादक, वायलिन वादक या वीणा वादक, बांसुरी वादक और झांझ वादक शामिल होते हैं।
- नट्टुवनार प्रदर्शन का समन्वय करते हुए नृत्य पाठ का संचालन करता है।

भरतनाट्यम में **अरंगेत्रम** एक नर्तक के पहले प्रदर्शन को संदर्भित करता है, जो **उनके प्रशिक्षण के पूरा होने** और एक पेशेवर नर्तक के रूप में उनके करियर की शुरुआत का प्रतीक है।

भरतनाट्यम को प्रसिद्धि दिलाने वाले और बढ़ाने वाले: यामिनी कृष्णमूर्ति, लक्ष्मी विश्वनाथन, पद्मा सुब्रमण्यम, मृणालिनी साराभाई, मल्लिका साराभाई, रुक्मिणी देवी अरुंडेल आदि।

कथकली (केरल)

कथकली को **'पूर्व की गाथा'** भी कहा जाता है।

- गायन प्रस्तुति **अच्छाई** और **बुराई के बीच** अविनाशी **संघर्ष का** वर्णन **करती है।**
- कथकली गीतों के लिए प्रयुक्त भाषा **मणिप्रवलम है,** जो **मलयालम** और **संस्कृत का मिश्रण है।**

- इसका विकास प्राचीन केरल के विभिन्न समाजिक तथा धार्मिक नाट्य रूपों से हुआ है **जिनमें चकियारकुथु, कूडियाट्टम, कृष्णट्टम** और **रामनाट्टम शामिल हैं।**

कलात्मक एकीकरण

- कथकली **नृत्य, संगीत, अभिनय** और **कहानी कहने** की कला को संकलित **करता है,** जो प्राथमिक रूप से भारतीय महाकाव्यों के अनुरूप है और अभिनय के चार पक्षों को जोड़ती है।
- नर्तक **गाए गए छंदों** (पदम) का अनुसरण करते हुए तार्किक क्रम में व्यवस्थित रूप से हस्त मुद्राओं (हाथ के इशारों) और **चेहरे के भावों का उपयोग करके संवाद करते हैं।**
- कथकली के लिए शाब्दिक मार्गदर्शन **बलराम भारतम** और **हस्तलक्षण दीपिका में पाया जाता है।**
- कथकली कहानियाँ, जिन्हें **अट्टकथा के नाम से जाना जाता है** महाकाव्यों और काल्पनिक कथाओं से ली गई हैं।

दृश्य कला और शृंगार: पोशाक और शृंगार विस्तार रूप से किया जाता है और जिसका उद्देश्य नाट्य शास्त्र के दिशा-निर्देश का पालन करते हुए एक **अलौकिक प्रभाव पैदा करना है।**

- विभिन्न पात्रों के लिए मुकुट के साथ-साथ विस्तृत चेहरे का शृंगार किया जाता है। **चुट्टी** बनाने के लिए **चावल** का लेप **और नींबू** का मिश्रण लगाया जाता है, जो एक विशिष्ट **सफेद चेहरे का** शृंगार है।

हरा रंग कुलीनता, दिव्यता और सदाचार को दर्शाता है। नाक के पास **लाल धब्बे रॉयल्टी का संकेत देते हैं। काले** रंग का प्रयोग बुराई को दर्शाने के लिए किया जाता है। **पीला** रंग साधु-संतों और महिलाओं के लिए है। **सफेद दाढ़ी** उच्च चेतना और दिव्यता वाले प्राणियों को इंगित करती है। **पूरी तरह से लाल** चेहरा बुराई का संकेत देता है।

विशेषताएँ

- कथकली प्रदर्शन में पात्रों को मोटे तौर पर **सात्विक, राजसिक** और **तामसिक** प्रकारों में विभाजित किया जाता है। इनके अलावा **मिनुक्कू जैसे छोटे पात्र भी हैं** जो महिलाएँ और ऋषि हैं।

Search On TG: @apna_pdf

- सामने **तेल से भरे** एक **बड़े-से दीपक के साथ** एक **साधारण मंच** का उपयोग किया जाता है। मंच पर दो लोग **पर्दा पकड़ते हैं** जिन्हें तीरासीला कहा जाता है।
- कथकली **चेहरे की मांसपेशियों**, **अंगुलियों**, **आंखों**, **हाथों** और **कलाइयों** सहित **पूरे शरीर का बड़े पैमाने पर उपयोग करती है**। शरीर का भार पैरों के बाहरी किनारों पर पड़ता है, जो थोड़े झुके हुए और घुमावदार होते हैं।
    - किसी भी अन्य नृत्य शैली में **भौंहों**, **नेत्रगोलक (Eyeballs)** और **निचली पलकों** की **गति का उपयोग नहीं किया जाता** जैसा कि कथकली में किया जाता है।

> कथकली में **कलासम** (अष्ट कलासम) **शुद्ध नृत्य अनुक्रम है** जो अभिनेता को **उछलना,** फुर्ती से घूमना, कूदना और तालबद्ध **समन्वय की विशेषता के साथ अपने** कौशल **का प्रदर्शन करने की अनुमति** देता है।

प्रदर्शन का ढंग

- मूलतः यह पूर्ण-रूपेण **पुरुष मंडलियों का** एक प्रदर्शन है। यह आमतौर पर खुले रंगमंच (**आकाश के तत्त्वों को** प्रतीक द्वारा प्रस्तुत करना) में प्रदर्शित किया जाता है।
- यह **संध्या काल में ढोल, छेंड़ा** और **मद्दला** की निरंतर ध्वनि के साथ किया जाता है।
- प्रदर्शन की शुरुआत **केलिकोट्टु से होती है**, जो दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है। उसके बाद तोदियम **होता है**, जो भगवान का आशीर्वाद पाने के लिए एक भक्ति गीत है।
- इसके बाद पुरप्पाडु, एक शुद्ध नृत्त मुद्रा और संगीतकार और ढोल वादक अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए मेलाप्पाडा के साथ मनोरंजन करते हैं।
- मिनुक्कू के अतिरिक्त तिरानोक्कू मंच पर सभी पात्रों के प्रवेश का प्रतीक है।
- तदुपरांत इलाकियाट्टम किया जाता है, जहाँ नर्तक चरित्र-चित्रण के अभिनय में अपनी उत्कृष्टता प्रदर्शित करते हैं।
- पूरे प्रदर्शन के दौरान, नर्तक कूडियाट्टम में संलग्न रहते हैं। संगीतकारों द्वारा गाए गए पदमों का अनुसरण करते हुए अभिनय करना इसमें शामिल होता है।

संगीत और वादक मंडली

- कथकली संगीत केरल के पारंपरिक **सोपना संगीत का अनुसरण करता है, जो** गर्भगृह की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर **अष्टपदी** का आनुष्ठानिक गायन है।
- इसमें **कर्नाटक रागों** और **तालों को भी शामिल किया गया है**।
- वादक मंडली में **चेंडा, मद्दलम, चेंगिला, इलाथलम, इडक्का** और **शंखु जैसे वाद्ययंत्र शामिल हैं**।

> **प्राचीन चित्रण**-वर्णलेखन **(Ancient Depictions) और** युद्ध कलाएँ **(मार्शल** आर्ट्स) **का प्रभाव**
>
> - केरल में **मंदिर की मूर्तियाँ** और **16वीं शताब्दी के मट्टनचेरी मंदिर के भित्तिचित्र वर्गाकार** और **आयताकार मूल स्थितियों** वाले नृत्य दृश्यों को प्रदर्शित करते हैं।
> - नर्तकों की शारिरिक भंगिमाएँ और नृत्यकला के स्वरुप, जो **कलारीपयट्टु** (केरल की प्रारंभिक युद्ध कलाएँ) से प्रेरित है।

कथकली को 1930 के दशक में मुकुंद राजा के संरक्षण में प्रसिद्ध मलयाली कवि वी.एन. मेनन द्वारा पुनर्जीवित किया गया था। इसको **प्रसिद्धि दिलाने और लोकप्रियता देने वालों में** गुरु कुंचू कुरुप, गोपी नाथ, कोट्टाकल शिवरामन, रीता गांगुली आदि शामिल हैं।

कथक (उत्तर प्रदेश)

प्रारंभ में यह एक **मौखिक परंपरा के रूप में शुरू हुआ था** जहाँ **कथाकार** ने महाकाव्यों, मिथकों और किंवदंतियों पर आधारित **कहानियाँ सुनाईं**। बाद में कहानी कहने की क्षमता को बढ़ाने के लिए मूक-अभिनय और हाव-भाव करने को भी इसमें जोड़ा गया।

- **वैष्णव पंथ** और **भक्ति आंदोलन** के उदय ने इसमें गीत और संगीत रूपों की एक नई शृंखला जोड़ी।
- **रासलीला** (संगीत, नृत्य और कथा के संयुक्त अवयव) मुख्य रूप से **ब्रज क्षेत्र (पश्चिमी यूपी) में** कथाकारों के बुनियादी मूक-अभिनय और हाव-भाव करने को विस्तार प्रदान करती है।
- **मुगल प्रभाव:**
    - मुगलों के अधीन यह धीरे-धीरे **मंदिर प्रांगण से शाही दरबार** में स्थानांतरित हो गया।
    - इसे अत्यधिक शैलीबद्ध (Highly Stylized) किया गया और इसे मनोरंजन के एक रूप में देखा जाने लगा। इसने अपनी वर्तमान विशेषताएँ हासिल कर लीं और एक विशिष्ट शैली के साथ एक नृत्य शैली के रूप में विकसित हुई।
    - नृत्य (अभिव्यक्ति) और **भाव** (मनोदशा) **पर अधिक जोर दिया** गया जिससे नृत्य में शोभा, अभिव्यक्ति और **कामुकता जुड़ गई।**
    - **फारसी वेशभूषा** और नृत्य की **शैलियों ने भी इसे प्रभावित किया।**
- 19वीं सदी में **नवाब वाजिद अली शाह** (लखनऊ घराना) के संरक्षण की अवधि को कथक का स्वर्ण युग कहा जा सकता है।

प्रदर्शन के ढंग

- इस **तकनीक में क्षैतिज** और **ऊर्ध्वाधर अक्ष** के साथ शरीर के भार का समान **वितरण शामिल है।**
- मूल अवस्था में एक **सीधी मुद्रा शामिल होती है** जिसमें एक हाथ सिर से ऊँचा होता है और दूसरा कंधे के स्तर तक फैला होता है। शरीर में **कोई विक्षेप** या **तीव्र मोड़ या घुमाव का उपयोग नहीं होता** है।
- शुद्ध नृत्य (नृत्य) पर जोर देते हुए पैरों के प्रयोग से एक प्रभावशाली पद्धति का उपयोग किया जाता है।
    - **इसमें, पूरे पैर का संपर्क** सबसे महत्त्वपूर्ण है जहाँ केवल **पैर के अंगूठे** या गेंद का उपयोग किया जाता है उनका कार्य सीमित होता है।

Search On TG: @apna_pdf

- ○ शरीर के ऊपरी या निचले हिस्से में कोई विक्षेपण नहीं है और तेज मोड़ या घुमाव का कोई उपयोग नहीं है।
- इस नृत्य के प्रदर्शन की शुरुआत **"थाट"** से होती है जिसमें **गर्दन, भौंहों** और **कलाइयों की** सौम्य गतिविधियाँ शामिल **हैं।**
- इसके बाद एक औपचारिक प्रवेश होता है जिसे **"अमद"** (प्रवेश) और **"सलामी"** (अभिवादन) कहा जाता है।
- **लयबद्ध अक्षरों को** सुनाने के लिए नर्तक, संबंधित गतिविधियों को क्रियान्वित करने से पहले **रुकते हैं।**
- **लयबद्ध बनावट और संगीत:**
  - ○ कथक का नृत्य भाग **"नगमा"** पर प्रस्तुत किया जाता है।
  - ○ **जुगलबंदी नर्तक** और **ढोलवादक (पखावज** बजाने वाला) के बीच का एक प्रतिस्पर्धी खेल है।
- **मूक भाव-भंगिमा का भाग (नृत्य या अभिनय):** ये **छोटे कथात्मक अंश हैं जिनमें ध्रुपद** संगीत के साथ **कृष्ण के जीवन के प्रसंगों को** दर्शाया जाता है। अन्य गीतों में **ठुमरी**, **भजन** और **दादरा शामिल हैं** जिनमें संगीत पर आधारित और हाव-भाव से व्याख्या की गई काव्य पंक्तियाँ शामिल हैं।

कथक की अनूठी पहचान

- यह **मुस्लिम संस्कृति** से जुड़ा **एकमात्र शास्त्रीय नृत्य है** और इसकी जड़ें **हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय संगीत में गहराई से** जुड़ी **हुई हैं।**
- **कथक** और **हिंदुस्तानी संगीत** एक-दूसरे को प्रभावित करते हुए समानांतर रूप से विकसित हुए हैं।
- **प्रसिद्ध कथक कलाकार: कथक को प्रसिद्धि दिलाने वालों में** बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, सितारा देवी, दमयंती जोशी आदि शामिल हैं।

मणिपुरी शैली (मणिपुर)

इसकी जड़ें धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों और देवी-देवताओं की पौराणिक कहानियों से जुड़ी हुई हैं, जैसे **शिव** और **पार्वती के नृत्य।**

- राजा भाग्यचंद्र के शासनकाल में ही मणिपुर के लोकप्रिय रासलीला नृत्य की उत्पत्ति हुई थी।
- 15वीं शताब्दी में वैष्णववाद के आगमन के साथ मणिपुरी नृत्य को ख्याति मिली।
- **रवीन्द्रनाथ टैगोर ने** शांतिनिकेतन में इस नृत्य शैली की शुरुआत करके इसे पुनर्जीवित किया।

विशेषताएँ

- मणिपुरी नृत्य का विषय गोपियों, राधा और कृष्ण की कहानियों के इर्द-गिर्द घूमता है।
- **पोशाक:** मणिपुरी शैली में एक कढ़ाईदार अकड़न युक्त **स्कर्ट**, एक मुलायम **सफेद मलमल** की **स्कर्ट**, एक गहन **मखमली ब्लाउज** और एक पारंपरिक **सफेद घूंघट शामिल** है।
  - ○ कृष्ण की पोशाक में एक **पीली धोती,** एक गहरे रंग **की मखमली जैकेट** और एक **मोर पंख का मुकुट शामिल है।**
- इसमें पुरुषोचित एवं स्त्रीत्व पहलुओं का पाया जाता है। नृत्य का पुरुषोचित पहलू - चोलोम **संकीर्तन परंपरा का** एक हिस्सा है। संकीर्तन के दौरान पुरुष नर्तक **पुंग** और **करताल** वाद्ययंत्र बजाते हैं। **[UPSC 2017]**
- लयबद्ध **जटिलताओं को आमतौर पर नजरअंदाज कर दिया जाता है** क्योंकि नर्तक लय को बेहतर बनाने के लिए **घुंघरू नहीं** पहनते हैं।
- इसमें एक आवश्यक आसन **नाग बंध मुद्रा शामिल है** जिसमें शरीर **'8' के आकार में वक्रों के माध्यम से जुड़ा होता** है।
- प्राथमिक संगीत वाद्ययंत्र पुंग (या मादीपुरी शास्त्रीय ड्रम), पेना (एक तार वाला वाद्ययंत्र), झांझ और बांसुरी हैं जो स्वर गायन के साथ आते हैं।

रास, संकीर्तन और **थांग-ता** मणिपुरी नृत्य से प्रभावित हैं।

- रास नृत्य शैली को पाँच प्रमुख भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है। जिनमें से चार विशिष्ट मौसमों से जुड़े हैं जबकि पाँचवाँ वर्ष के किसी भी समय प्रस्तुत किया जा सकता है। मणिपुरी रास में मुख्य पात्र राधा, कृष्ण और गोपियाँ हैं।
- **संकीर्तन,** कीर्तन के रूप में किया जाने वाला सामूहिक गायन, नृत्य के साथ होता है।
- **थांग-ता** (मार्शल आर्ट नृत्य परंपरा): नर्तक वास्तविक लड़ाई के दृश्यों को चित्रित करने के लिए तलवारों, भालों और ढालों का उपयोग करते हैं।

प्रसिद्ध कलाकार: झावेरी बहनें- नयना, सुवर्णा, रंजना और दर्शना, गुरु बिपिन सिंघा, आदि।

ओडिसी (ओडिशा)

नाट्य शास्त्र में **ओधरा मगध शैली** का आधुनिक ओडिसी के एक अग्रदूत के रूप में **उल्लेख** किया गया **है।**

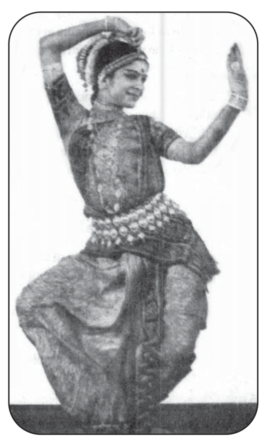

- ओडिसी अपनी **कामुक** और **गीतात्मक प्रकृति**, **प्रेम, जुनून** और **दिव्यता के मिश्रण के लिए जाना जाता** है।

Search On TG: @apna_pdf

- यह **जल** के **अवयवों का प्रतीक द्वारा प्रस्तुतीकरण है।**
- पहले **महरी** (मूल रूप से मंदिर नर्तक) ओडिसी के **संरक्षक थे लेकिन बाद में शाही दरबार में सेवायोजन** (Employment) के कारण यह नृत्य शैली ख़राब हो गई।
- **गोटीपुआ** (महिलाओं के वेश में युवा लड़के) को नृत्य शैली में प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने मंदिरों और सामान्य मनोरंजन के लिए भी नृत्य किया।

साक्ष्य और विकास

- **उदयगिरि** और **खंडगिरि** (भुवनेश्वर, ओडिशा के पास) की गुफाओं में पुरातात्विक साक्ष्य पाए गए।
- **कोणार्क** का **सूर्य मंदिर** अपने **नाट्य मंडप** (नृत्य कक्ष) में नृत्य की गतिविधियों को प्रदर्शित करता है।

प्रमुख गतिविधि और शैली

- भावनाओं को व्यक्त करने के लिए आसनों और मुद्राओं का उपयोग करने में यह **भरतनाट्यम** के **समान** है।
  - इसे **"गतिशील मूर्तिकला"** के रूप में जाना जाता है क्योंकि नर्तक अपने शरीर से जटिल **ज्यामितीय आकृतियाँ और** ढाँचा **बनाते हैं।**
  - **'त्रिभंग मुद्रा'** अर्थात् शरीर का त्रि-आयामी मुड़ा हुआ रूप इस नृत्य शैली में सहज है। **[UPSC 2013]**
- भाव-भंगिमा **चौक** (पुरुषत्व) और **त्रिभंगा** (स्त्रीत्व) मुद्राओं के आस-पास केंद्रित हैं।
  - संतुलित शरीर के वजन के साथ **चौक एक वर्ग जैसा दिखता है।**
  - **त्रिभंग** गर्दन, धड़ और घुटनों पर विक्षेपण प्रदर्शित करता है।
- **पैर की गति** हवा में या जमीन पर **सर्पिल या गोलाकार** प्रतिरुप **का** अनुसरण करती है, जो नृत्य की जटिलता और सटीकता को प्रदर्शित करती है।
- **हाथ के इशारे** दोहरी भूमिका निभाते हैं: **नृत्य में सजावटी अलंकरण** और **नृत्य में संचार का साधन**।

प्रदर्शन के विभिन्न ढंग

ओडिसी **प्रस्तुति के एक व्यवस्थित क्रम का पालन करता है** जिससे वांछित भावनात्मक अभिव्यक्ति (रस) सुनिश्चित होती है।

- **मंगलाचरण (आह्वान):** प्रदर्शन **मंगलाचरण** के साथ **शुरू होता है** जहाँ नर्तक फूलों के साथ प्रवेश करता है और उन्हें पृथ्वी पर अर्पित कर देता है। यह अंश भगवान, गुरु और दर्शकों को अभिवादन करने वाले एक **नृत्त अनुक्रम के साथ समाप्त होता है।**
- **बाटू (मूल नृत्य)**: यह **मौलिक नृत्य तकनीक का अनुसरण करता है**, जो पुरुषत्व और **स्त्रीत्व के द्वंद्व पर जोर देता है।** यह **बटुकेश्वर भैरव** या **शिव की स्तुति में किया जाता है।**
- **पल्लवी (अलंकरण):** यह संगीत और गतिविधियों का **पुष्पन** और **अलंकरण है।** नृत्य जटिल पैटर्न बनाता है, जो **ताल संरचना** के भीतर **लयबद्ध विविधताओं को** प्रकट **करता है।**
- **अभिनय (भावनात्मक कहानी): नर्तक जयदेव, उपेन्द्र भांजा** और **गोपाल कृष्ण** की रचनाओं पर भी प्रदर्शन करते हैं।

जयदेव के **गीत गोविंद की अष्टपदी** ओडिसी में प्रदर्शित की जाती है। यह **नायक-नायिका भाव** (नायक-नायिका भावना) और काव्यात्मक समृद्धि का उदाहरण है।

- **मोक्ष (मुक्ति):** यह एक **समापन** भाग **है** जिसमें कई **पल्लवी** खंड और **अभिनय-आधारित** एकांश उपस्थित होते हैं।
- **संगीत और पोशाक:**
  - ओडिसी वादक-समूह में एक **पखावज वादक** (अक्सर गुरु), एक **गायक**, एक **बांसुरी वादक**, एक **सितार** या **वायलिन** वादक और एक **मंजीरा** वादक शामिल होते हैं। इसके साथ ही **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के भी वादक** होते हैं।
  - **देवदासियों** या महरियों की परंपरा को आगे बढ़ाते हैं जिनका लक्ष्य नृत्य के माध्यम से मुक्ति (मोक्ष) है, जो कला के आध्यात्मिक संबंध की पुष्टि करता है।

प्रसिद्धि दिलाने वाले प्रमुख व्यक्तित्व: गुरु पंकज चरण दास, गुरु केलू चरण महापात्र, सोनल मानसिंह आदि।

कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश)

इस नृत्य शैली का नाम **आंध्र** के गाँव **कुसेलवपुरम से लिया गया है।** यह मूल रूप से कलाकारों के एक समूह द्वारा **गाँव-गाँव जाकर प्रस्तुत किया जाता था** जिन्हें **कुसेलवास के नाम से जाना जाता था।**

- यह **पृथ्वी** के अवयवों **का प्रतीक द्वारा प्रस्तुतीकरण है।**
- यह 19वीं सदी तक गाँवों तक ही सीमित रहा तब **बालासरस्वती** और **रागिनी देवी ने** इस नृत्य शैली को पुनर्जीवित किया।
- 17वीं शताब्दी में, एक **वैष्णव कवि सिद्धेंद्र योगी ने यक्षगान की कुचिपुड़ी शैली की** शुरुआत की और **भामाकलापम की रचना की।** उन्होंने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करने के लिए कुचिपुड़ी गाँव के युवा **ब्राह्मण लड़कों को प्रशिक्षित किया।**
- 1675 ई. में **अब्दुल हसन तनाशाह (गोलकुंडा के नवाब)** ने इस कला को अपनाने वाले ब्राह्मण परिवारों को **अग्रहारम** के रूप में कुचिपुड़ी का गाँव प्रदान किया।
- **20वीं सदी के मध्य** तक यह नृत्य एक **विशिष्ट एकल शास्त्रीय** नृत्य शैली के रूप में उभरा। इस प्रकार, अब कुचिपुड़ी के दो रूप हैं: **पारंपरिक संगीत नृत्य-नाटिका** और **एकल नृत्य**।
  - एकल नृत्य में **मंडुका शब्दम** (मेंढक की कहानी), **जल चित्र नृत्यम** (नृत्य करते समय नर्तक अपने पैर की उंगलियों से फर्श पर चित्र बनाता है) आदि शामिल हैं।

कुचिपुड़ी एकल गायन की संरचना

- इसके पाठ **भागवत पुराण की कहानियों पर आधारित हैं** लेकिन उनका **विषय धर्मनिरपेक्ष है।** इसमें **शृंगार रस** की प्रधानता है।

Search On TG: @apna_pdf

- प्रदर्शन में **सोल्लकथ या पटाक्षरा** (नृत्य भाग, जहाँ शरीर को हिलाया जाता है) और **कावुत्वम्स** (नृत्य भाग जिसमें व्यापक कलाबाजी है) किया जाता हैं।
- **प्रदर्शन के ढंग:**
  - नृत्य की शुरुआत देवताओं के आह्वान से होती है। उसके बाद **नृत्य होता है** जिसमें गैर-कथा और अमूर्त नृत्य शामिल होता है जिसमें **जतीस्वरम शामिल होता है।**
  - उसके बाद अगला **शब्दम है, जो "दशावतार"** जैसे इष्ट के साथ एक कथात्मक प्रदर्शन है।
  - "**भामाकलापम**" से **सत्यभामा** के प्रवेश तक कथा खंड को सफल बनाती है।
  - इसके बाद गायन शुद्ध **नृत्य-अभिनय में बदल जाता है जिसमें** साहित्यिक और संगीतमय रूप जैसे पदक, जाविल, श्लोकम उपस्थित होते हैं।
  - प्रदर्शन आमतौर पर **तरंगम के साथ समाप्त होता है** जहाँ **कृष्ण-लीला-तरंगिनी के अंश** गाए जाते हैं।
    - **पीतल की थाली** पर खड़े होकर नर्तक पैरों को **शकत-वदनम पद में बंद कर लेता है** और सिर पर **पानी का एक घड़ा रखकर कलाबाजी कौशल प्रदर्शित करता है।**
- **संगीत:**
  - कुचिपुड़ी नृत्य **शास्त्रीय कर्नाटक संगीत के साथ होता है।**
  - एक **मृदंग** वादक, एक **वायलिन** या **वीणा** वादक और एक झांझ वादक वाद्य समूह का संचालन करता है और "**सोलुकट्टस**" (लय शब्दांश) का पाठ करता है।

प्रसिद्ध कलाकार: राधा रेड्डी और राजा रेड्डी, यामिनी कृष्णमूर्ति, इंद्राणी रहमान आदि।

सत्रिया (असम)

इसकी उत्पत्ति **15वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान वैष्णव आस्था को** बढ़ावा देने के लिए **शंकरदेव** के प्रयासों से हुई थी। ये गीत **शंकरदेव** की रचनाएँ हैं जिन्हें **'बोरगीत'** के नाम से जाना जाता है।

- असमिया नृत्य और नाटक के नव-वैष्णव निधि को वैष्णव मठों द्वारा पोषित और संरक्षित किया गया है **जिन्हें सत्र के** नाम से भी जाना जाता है। **[UPSC 2014]**
  - इस नृत्य शैली को इसके **धार्मिक चरित्र** और सत्रों के साथ **जुड़ाव के कारण उपयुक्त रूप से सत्रिया नाम दिया गया है।**
- नव-वैष्णव आंदोलन से पहले असम में **दो नृत्य शैलियाँ प्रचलित** थीं - **ओजापाली** और **देवदासी।**
- **बिहू** और **बोडो** जैसे विभिन्न **असमिया लोक नृत्यों** से भी प्रेरणा ली गई जिसमें हाथों के साझे इशारे और लयबद्ध शब्दांश शामिल थे।

विशेषताएँ

- **यह संगीत, नृत्य और नाटक का मिश्रण है, जिसे 'भोकोट' नाम से जाने जाने वाले पुरुष भिक्षुओं द्वारा अपने दैनिक अनुष्ठानों या यहाँ तक कि त्योहारों पर समूहों में प्रस्तुत किया जाता है।**
- सत्रिया नृत्य गायन और नृत्य पर बहुत अधिक निर्भर करता है, जिसमें भाषण और संवाद पर न्यूनतम जोर दिया जाता है।
- **खोल** (ड्रम), **झांझ** (मंजीरा) और **बांसुरी** उपयोग किए जाने वाले प्राथमिक वाद्ययंत्र हैं।
- **वेशभूषा:**
  - **'धोती'** और **'पगुरी'** (पगड़ी) चादर पुरुष नर्तकों द्वारा पहनी जाती है।
  - महिलाएँ रेशम से बने पारंपरिक असमिया आभूषण, **'घुरी'** और **'चादर' काँची या कमर का कपड़ा पहनती हैं।**
- इसमें **लास्य** और **तांडव दोनों** तत्त्वों का समावेश है।
- यह नृत्य **हस्त मुद्रा**, पैरों का उपयोग, **आहार्य** (वेशभूषा) और **संगीत को** नियंत्रित करने वाले **सुपरिभाषित सिद्धांतों का पालन करता है।**
- परंपरा में दो अलग-अलग धाराएँ शामिल हैं:
  - **भाओना** - यह **गायन-भयानर नाच से शुरू होकर खरमनार नाच** तक प्रदर्शनों की सूची से संबंधित है।
  - **चाली**, **राजघरिया चाली**, **झुमुरा**, **नाडु भंगी** आदि, स्वतंत्र नृत्य समूह हैं। **चाली** की विशेषता शालीनता और लावण्य है, वहीं **झुमुरा** शक्ति और प्रभावशाली सौन्दर्य का परिचय देता है।

अंकिया नट

शंकरदेव के नाटकों के प्रदर्शन को लोकप्रिय रूप से अंकिया नट या **अंकिया भाओना के नाम से जाना जाता है।**

- अंकिया नट की रचना भक्ति के प्रचार-प्रसार के लिए की गई थी।
- यह नृत्त, नृत्य और नाट्य को मिलाकर बनाया गया एक नाट्य रूप है।

प्रसिद्ध कलाकार: जतिन गोस्वामी, घनकांत बोरा, कृष्णाक्षी कश्यप, आदि।

मोहिनीअट्टम (केरल)

यह एक शास्त्रीय **एकल नृत्य शैली है जिसका नाम** हिंदू पौराणिक कथाओं में दिव्य जादूगरनी **'मोहिनी'** के नाम पर रखा गया है।

यह **वायु के अवयवों का प्रतीक द्वारा प्रस्तुतीकरण** है।

Search On TG: @apna_pdf

इस नृत्य शैली की **उत्पत्ति** एक **पौराणिक कहानी से जुड़ी है जहाँ** समुद्र मंथन और **भस्मासुर के वध के दौरान भगवान विष्णु ने असुरों को लुभाने के लिए मोहिनी** का रूप धारण किया था।

- **ऐतिहासिक संदर्भ: व्यवहारमाला (मझमगलम नारायणन नाम्पुतिरी द्वारा)** और **घोषयात्रा** (कवि **कुंजन नांबियार द्वारा**)।
- **महाराजा कार्तिका तिरुनल** और **महाराजा स्वाति तिरुनल** (18वीं-19वीं शताब्दी ईस्वी) ने नृत्य को इसके वर्तमान शास्त्रीय प्रारूप में संरचित किया।
- नांगियार और **नांबियार समुदाय की महिलाएँ** अभी भी मंदिर परिसर के भीतर प्रदर्शन करके इस परंपरा को संरक्षित करती हैं।

विशेषताएँ

- यह कथकली की शक्ति के साथ भरतनाट्यम की शालीनता और लावण्य को प्रदर्शित करता है।
- अचानक झटके या छलांग के बिना **सुंदर, नाजुक शरीर की गतिविधियाँ** और **चेहरे के सूक्ष्म भाव ही इस नृत्य की विशेषता है।**
  - यह **लास्य शैली से संबंधित है**, जो **स्त्रीत्व**, कोमलता और शोभा पर जोर देती है।
  - पैरों का प्रयोग **धीरे-धीरे** और **बिना थपथपाए** किया जाता है।
- **हाथ के इशारों** और **मुखाभिनय** पर जोर दिया जाता है जिसमें चेहरे के सूक्ष्म भाव शामिल होते हैं।
  - हाव-भाव को **हस्तलक्षण दीपिका, नाट्य शास्त्र, अभिनय दर्पण** और **बलरामभारतम जैसे ग्रंथों से उधार लिया गया है।**
- **प्राकृतिक और यथार्थवादी अभिव्यक्तियों से निकटता:** हाव-भाव और चेहरे के भाव **नाटकीय** या कठोर पारंपरिक **(नाट्यधर्मी) के विपरीत, प्राकृतिक (ग्राम्य)** और यथार्थवादी **(लोकधर्मी)** शैलियों के साथ अधिक संरेखित होते हैं।
- **सुनहरे रंग के** बनावटी जरी **वस्त्र** के साथ **सफेद** और धूमिल सफेद साड़ी इसमे पहनी जाती है।
- **चेहरे** पर कोई विस्तृत शृंगार नहीं और नर्तकी अपने टखनों पर घंटियों (**घुंघरू**) **के साथ चमड़े का पट्टा पहनती है।**
- **'अटावाकुल या अटावुस'** चालीस बुनियादी नृत्य गतिविधियों का एक संग्रह है।
- **इस नृत्य में प्रयुक्त होने वाले संगीत वाद्ययंत्र** झांझ, वीणा, ढोल, बांसुरी आदि हैं।

प्रसिद्ध कलाकार: सुनंदा नायर, कलामंडलम क्षेमवती, माधुरी अम्मा, जयप्रभा मेनन आदि।

भारतीय नृत्य शैलियों का राज्यवार विवरण

आंध्र प्रदेश: ढिम्सा, कोलाट्टम, बुट्टा बोम्मलु।
अरुणाचल प्रदेश: पोनुंग (आदि जनजाति द्वारा किया जाने वाला फसल नृत्य), **टापू नृत्य** (अरन के त्योहार के दौरान केवल पुरुषों द्वारा किया जाने वाला युद्ध नृत्य), **पक्कू इतु** (अपातानी जनजाति; पौधों की रक्षा के लिए लगे पक्षियों और बच्चों के बीच खेले जाने वाले खेल को दर्शाता है), **रिखमपाड़ा** (नयिशी जनजाति)।
असम: ओजा-पाली, बिहू, बागुरुम्बा (बोडो लोगों का पारंपरिक नृत्य), झुमुरा होबजनाई।
बिहार: बिरहा, जाट-जाटिन, जोगीरा, चैती।
छत्तीसगढ़: सैला (फसल कटाई के बाद का नृत्य), सुवा या सूवा (तोता नृत्य), गौर मारिया (बस्तर)।
गोवा: तरंगामेल (दशहरा और होली के अवसरों पर किया जाने वाला प्रदर्शन), **घोडेमोदनी** (शिग्मो के त्योहारों के दौरान किया जाने वाला मार्शल आर्ट और घोड़ा नृत्य का मिश्रण), पेर्नी जागोर (प्राचीन मुखौटा नृत्य, गणतंत्र दिवस परेड 2016), रानामाले, रोम्टा मेल, फुगड़ी।
गुजरात: टिपपानी, रथवानी घेर, डांडिया रास, ढोलो राणो, सिद्धियों का धमाल, शिकार नृत्य, घेरिया नृत्य और आलेनी-हालेनी।
हरियाणा: फाग (किसानों का नृत्य), स्वांग, धमाल।
हिमाचल प्रदेश: दांदरास, छरबा, छम छनक।
झारखंड: मर्दानी झूमर, पाइका नृत्य, **सरायकेला छऊ** नृत्य।
कर्नाटक: यक्षगान (यक्ष का गीत), डोल्लू कुनिथा, वीरागसे, उम्मट-आट, बयालता, कामसले, **हुलिवेशा** (टाइगर नृत्य), बूटा कोला (कंतारा फिल्म), गारुडी गोम्बे, जूडु हलिगी। **[UPSC 2014]**
केरल: चक्यार कूथु, नांग्यार कूथु, **कुटियाट्टम** (यूनेस्को द्वारा मानवता की मौखिक और अमूर्त विरासत की उत्कृष्ट कृति के रूप में मान्यता प्राप्त), पंडयानी, और थुल्लल।
मध्य प्रदेश: स्वांग, जवारा, मटकी, बरेदी, नौरता, अहिराई, भगोरिया और परधौनी।
महाराष्ट्र: धनगरी गाजा, लावणी, पोवाड़ा नृत्य।
मणिपुर: थांग-ता, कार्तल चोलोम या सिम्बल नृत्य, जगोई, थाबल चोंगबा, टंडनन फीचक (फसल नृत्य) और लाई चिंगथोकपा। **लाई हराओबा** उत्सव/नृत्य का एक रूप है जो मणिपुर में सभी शैलीबद्ध नृत्यों का आधार बनता है। **[UPSC 2018]**
मेघालय: नोंगक्रेम, चाड लाहो, चाड सुकरा (बुवाई उत्सव), चाड प्लियांग या 'प्लेट डांस', अजेमा रोआ (गारो), चाम्बिल मोआ और नेप्सेपग्रिका।

Search On TG: @apna_pdf

मिजोरम: चेराव, छीह लाम, सो लाकिया, खुल्लम।
नागालैंड: आलुयट्टु, अगुर्शिकुकुला, बटरफ्लाई डांस, चांगाई डांस, लेशालाप्टु, मोडसे, मोन्योआशो, सदल केकाई, मोयाशाई, खुपीलीली, ज़ेलियांग डांस, चांग लो।
ओडिशा: दलखाई नृत्य, **मयूरभंज छऊ**, डंडा यात्रा, रानापा और घुमुरा नृत्य।
पंजाब: भांगड़ा, गिद्दा, लुड्डी, जुल्ली, गतका।
राजस्थान: भवई, घूमर, कालबेलिया और तेरह ताली।
सिक्किम: भूटिया नृत्य, लेप्चा नृत्य, सिंघी छम।
तमिलनाडु: कराकाट्टम, कुम्मी, कोलाट्टम, मयिल अट्टम, पोइक्कल कुदिराई अट्टम, थेरु कुथु, ओट्टन कुथुप, सेवई अट्टम।
तेलंगाना: पेरिनी शिवतांडवम और चिंदु भागवतम।
त्रिपुरा: होजा गिरी, धमैल, मैमाता, गरिया, लेबांग बोमानी, संगराईमोघ नृत्य, चॉन लैम, मोसाक सुमानी फीफिट लैम, वाइखोंग लैम, लैम-लैम और दार-लैम और खोंगिलाम नृत्य।
उत्तराखंड: लंगविर नृत्य, चंफुली, छोलिया नृत्य, चांचरी नृत्य, कुमाऊं का झोड़ा नृत्य और हुरकिया बौल।
पश्चिम बंगाल: पुरुलिया छऊ , गौड़ीय नृत्य, अलकप, रवीन्द्र नृत्य, ढली, रायबेंशे, ब्रताचारी, काली नाच, बाउल नृत्य।
लद्दाख: जाब्रो, तुखस्तान्मो, शोंडोल, शॉन और कोशन।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य संबंधी महत्त्वपूर्ण ग्रंथ

ग्रंथ	लेखक	समयावधि	विवरण
नाट्यशास्त्र	भरत मुनि	200 ईसा पूर्व – 200 ईस्वी	प्रदर्शन कलाओं पर आधारभूत ग्रंथ, जिसमें नृत्य, नाटक, और संगीत शामिल हैं। "रस" और "अभिनय" की अवधारणाओं का परिचय।
अभिनय दर्पण	नंदिकेश्वर	4वीं – 5वीं सदी ईस्वी	शास्त्रीय नृत्य में उपयोग होने वाले संकेतों, चेहरे के भावों और शारीरिक गतियों पर विस्तृत ग्रंथ।
कविराजमार्ग	राजा अमोघवर्ष	9वीं सदी ईस्वी	कर्नाटक में भारतीय नृत्य की प्रारंभिक परंपराओं के संदर्भ शामिल।
अभिनवभारती	अभिनवगुप्त	10वीं सदी ईस्वी	नाट्यशास्त्र पर टिप्पणी, रस सिद्धांत के दार्शनिक पहलुओं पर गहन चर्चा।
दशरूपक	धनंजय	10वीं सदी ईस्वी	नाटक सिद्धांत पर चर्चा, जिसमें नृत्य भी शामिल है और नाटकों एवं प्रदर्शन की संरचना पर ध्यान केंद्रित।
संगीत रत्नाकर	सारंगदेव	13वीं सदी ईस्वी	संगीत और नृत्य पर व्यापक ग्रंथ, जिसने कर्नाटक और हिंदुस्तानी परंपराओं को प्रभावित किया।
नाट्य दर्पण	श्री रामकृष्ण	16वीं सदी ईस्वी	नृत्य रूपों की बारीकियों को समझाने वाला ग्रंथ, जिसमें तकनीकी शब्दावली और प्रदर्शन पद्धतियाँ शामिल।
नृत्त रत्नावली	पंडरिक विठ्ठल	16वीं सदी ईस्वी	नृत्त (शुद्ध नृत्य) के तकनीकी पहलुओं पर विस्तृत जानकारी।
बलरामभरतम	राजा राम वर्मा	18वीं सदी ईस्वी	केरल का एक ग्रंथ, जो नाट्य और भक्ति (भक्ति) के बीच संबंध पर केंद्रित है।
नाट्य शास्त्र प्रकाशिका	तंजौर चतुष्टय	19वीं सदी ईस्वी	भरतनाट्यम की संरचना और प्रारूप को संहिताबद्ध किया, जिसने आधुनिक प्रदर्शन को प्रभावित किया।

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

6 भारतीय संगीत

भारतीय संगीत का इतिहास

- **सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों से सात छेद वाली बाँसुरी** और **रावणहत्था** (**एक तार वाद्ययंत्र**) सहित कई संगीत वाद्ययंत्र मिले हैं। जिससे ज्ञात होता है कि संगीत भारतीय उपमहाद्वीप में आध्यऐतिहासिक काल से ही रचा बसा है।
- संगीत कला का पहला वास्तविक उल्लेख 500 **ईसा पूर्व** में **पाणिनि** द्वारा किया गया था।
- **भरत के नाट्यशास्त्र** (200 ईसा पूर्व और 200 ईसवी) में संगीत सिद्धांत का **पहला संदर्भ मिलता है।**
  - इसमें 22 कुंजियों या **श्रुतियों का उल्लेख किया गया है।**
  - नाट्यशास्त्र में **सप्तक** (सात स्वरों का समूह), विभिन्न राग, ताल और संगीत वाद्ययंत्रों की जानकारी शामिल हैं।
  - दो मानक सप्तकों को मान्यता दी गई और उन्हें **ग्राम** कहा गया।
  - प्रत्येक ग्राम से सहायक स्वर प्राप्त होते हैं, जिन्हें **मूर्च्छना** कहा जाता है।
- **वैदिक साहित्य**
  - ऋग्वेद **के स्तोत्र को ऋचा** कहा जाता था।
  - **यजुर्वेद** में धार्मिक मंत्र मिलते हैं।
  - **सामवेद में राग खरहर प्रिया** के सभी सात स्वर शामिल हैं।
  - **गांधर्व वेद** या संगीत का विज्ञान, **सामवेद** का एक **उपवेद** है।
  - **ऐतरेय आरण्यक** में वाद्ययंत्र वीणा के भागों का उल्लेख मिलता है।
  - **जैमिनी ब्राह्मण में** नृत्य और संगीत का उल्लेख किया गया है। कौषीतकी **ब्राह्मण** में नृत्य, गायन और वाद्य संगीत के मिश्रण का एक कला के रूप में उल्लेख किया गया है।
- उत्तर वैदिक काल के दौरान, **संगम** एक प्रकार का अनुष्ठानिक संगीत था जिसमें स्तोत्रों का जाप शामिल होता था जिन्हें आमतौर पर संगीत में पिरोया जाता था। महाकाव्यों को एक कथात्मक प्रकार के संगीत में पिरोया जाता था जिसे **जातिगायन** (Jatigayan) कहा जाता था।
- **इलंगो आदिगल** (**दूसरी शताब्दी**) द्वारा लिखित **शिलप्पादिकारम** में भी संगीत के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है।
- **मतंग मुनि** (**छठी-आठवीं शताब्दी**) द्वारा रचित **बृहद्देशी** में नाद, श्रुति, स्वर, तान आदि जैसे पहलुओं की व्याख्या की गई है।
- 11**वीं सदी** में **संगीत मकरंद ग्रंथ की** रचना **नारद नंद** ने की थी, इसमें 93 रागों का उल्लेख मिलता है तथा उन्हें स्त्रीलिंग और पुल्लिंग रूपों में वर्गीकृत किया गया है।
- **सारंगदेव** द्वारा रचित **संगीत रत्नाकर** (13वीं शताब्दी) में लगभग 264 रागों का उल्लेख मिलता है। इसमें असंख्य **श्रुतियों** को पहचाना, चिह्नित और वर्गीकृत किया गया है।

भारतीय संगीत के तत्त्व

भारतीय संगीत तीन मुख्य स्तंभों: **राग**, **ताल** और **स्वर** पर आधारित है।

- **स्वर**: इसका तात्पर्य संगीत रचना में **'तान'** या **'स्वरों की तीव्रता'** से है। बाईस स्वरों में से **बारह स्वरों को स्वर-स्थान** कहा जाता है और शेष स्वर रागों में बजाए जाते हैं।
- **राग:** यह **धुन** (Melody) के आधार का प्रतीक है।
- **ताल:** यह **लय** (Rhythms) के आधार का प्रतीक है। ताल, संगीतमय लय में भारत के विशिष्ट योगदानों में से एक है। ताल चक्रीय रूप से व्यवस्थित समय इकाइयों की एक प्रणाली है। **लघु**, **गुरु** और **प्लुत** काल विभाजन की मूलभूत इकाइयाँ हैं।

अन्य तत्त्व

- **रस:** गायन और वादन से उत्पन्न होने वाले भाव, रस कहलाते हैं। जैसे: शृंगार रस।
- **थाट: यह रागों के विभिन्न समूहों में वर्गीकरण से जुड़ी प्रणाली है।** जैसे: **बिलावल**, **असावरी** आदि।
- **समय:** प्रत्येक राग के **गायन** का एक **निश्चित समय होता है।**

संगीत रूप

उन्हें दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया गया है: **अनिबद्ध** (खुला या मुक्त) और **निबद्ध** (बंद या बँधा हुआ) संगीत।

- **अनिबद्ध संगीत** वह है जो सार्थक शब्दों और ताल तक सीमित नहीं है। यह एक मुक्त संगीत है। इसका सर्वोत्तम रूप आलाप है।
- **निबद्ध संगीत**: सबसे पहला ज्ञात निबद्ध संगीत प्रबंध गीति है। **जयदेव का गीत गोविंद** सबसे प्रसिद्ध प्रबंध है।

राग	मौसम	समय	मनोदशा
भैरव	प्रत्येक मौसम में	भोर	शांति
हिंडोल	वसंत	सुबह	युवा रोमांस
दीपक	ग्रीष्म	रात	करुणा
मेघ	वर्षा	देर रात	साहस
श्री	शीत	शाम	खुशी
मालकोश	शीत	मध्यरात्रि	वीरता

Search On TG: @apna_pdf

शास्त्रीय संगीत

समय के साथ, भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो अलग-अलग संप्रदाय विकसित हुए हैं:

- **हिंदुस्तानी संगीत** (भारत के उत्तरी भाग में, बनारस, ग्वालियर, आगरा, किराना, जयपुर घराना आदि।)
- **कर्नाटक संगीत** (भारत के दक्षिणी भाग, अधिकांशतः कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल तक सीमित)

हिंदुस्तानी संगीत

- **हरिपाल के 'संगीत सुधाकर'** (14वीं शताब्दी ई.) में पहली बार **कर्नाटक** और **हिंदुस्तानी शब्दों का उल्लेख मिला है।**
- हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति **अमीर खुसरो के समय से मानी जा सकती है, उन्होंने विशिष्ट वाद्ययंत्रों पर संगीत प्रस्तुत करने** की प्रथा को बढ़ावा दिया। उन्होंने **नए रागों** की शुरुआत की और उन्हें **सितार** तथा **तबले का आविष्कारक माना जाता है।**

विशेषताएँ

- **इस संगीत पद्धति में शुद्ध स्वर सप्तक को** अपनाया गया, जिसे **प्राकृतिक स्वरों के सप्तक (अष्टक)** के रूप में भी जाना जाता है।
- प्राचीन समय में यह **गुरु-शिष्य परंपरा** के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक प्रसारित होता था।
- इसे **तबला, सारंगी, सितार, बाँसुरी, वीणा** और **संतूर पर बजाया जाता है।**
- इसकी **दस प्रमुख गायन शैलियाँ हैं - ध्रुपद, खयाल ,टप्पा, चतुरंग, तराना, सरगम, ठुमरी और रागसागर, होरी** और **धमार।**

हिंदुस्तानी संगीत की प्रमुख शैलियाँ

ध्रुपद

- ध्रुपद में राग का काव्यात्मक रूप के साथ **सटीक** और **व्यवस्थित विस्तार शामिल है।**
- यह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की **सबसे प्राचीन** और **सर्वश्रेष्ठ शैलियों में से एक है** तथा इसका संदर्भ **नाट्यशास्त्र में मिलता है। इसकी उत्पत्ति वैदिक स्तोत्रों और मंत्रों (सामवेद)** के जाप से मानी जाती है।
- ध्रुपद के दो भाग हैं, **अनिबद्ध** खंड और **संचारी ध्रुपद।**
- ग्वालियर के **राजा मान सिंह तोमर** ने ध्रुपद के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - सम्राट अकबर के दरबार में **तानसेन, बाबा गोपाल दास** और **हरिदास के अधीन** यह अपने चरम पर पहुँच गया।
  - ध्रुपद के अन्य प्रस्तावक **बैजू बावरा** और **स्वामी हरिदास थे।**
- **आलाप**, रचित छंदों से पहले प्रस्तुत किया जाता है, जो आमतौर पर **प्रदर्शन** का **सबसे लंबा भाग होता है।** ध्रुपद संस्कृत मंत्रों से लिए गए पवित्र संस्कृत अक्षरों का उपयोग करके आलाप की धीमी, ध्यानपूर्ण प्रस्तुति पर जोर देता है। **[UPSC 2012]**

संगीत घराने का तात्पर्य:

- घराना हिंदुस्तानी संगीत में सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है, जो संगीतकारों या नर्तकियों को एक विशिष्ट संगीत शैली का प्रशिक्षण देने, वंशावली और उसके प्रति समर्पण के माध्यम से एक साथ जोड़ता है। यह संगीत की एक व्यापक विचारधारा को भी दर्शाता है।
- **प्रमुख घराने: ग्वालियर घराना, आगरा घराना, जयपुर अतरौली घराना, रामपुर सहसवान घराना।**
- **वाणियों/बानियों** के आधार पर ध्रुपद गायन को चार रूपों में विभाजित किया जा सकता है: **डागर घराना, दरभंगा घराना, बेतिया घराना, तलवंडी घराना।**

खयाल

इसका श्रेय **अमीर खुसरो को दिया जाता है** और इसे **"बंदिश"** भी कहा जाता है। यह **दो से आठ पंक्तियों वाले संक्षिप्त गीतों** के संग्रह पर आधारित होता है। खयाल में एक संक्षिप्त पाठ होता है और यह **एक विशिष्ट राग और ताल में रचा जाता है।** हालाँकि, इसमें जरूरत के अनुसार बदलाव करने की गुंजाइश होती है।

- गीत के प्रमुख विषय राजाओं की स्तुति, ऋतुओं का वर्णन, भगवान कृष्ण की लीलाएँ, दिव्य प्रेम आदि होते हैं। यह ध्रुपद से भी अधिक गीतात्मक होता है।
- **खयाल के प्रमुख घराने**: किराना (अवध), ग्वालियर, आगरा, पटियाला और भिंडीबाजार घराने।
- **पंडित भीमसेन जोशी** किराना घराने के उन्नायक थे। उन्होंने **मियाँ की तोड़ी और भीमपलासी जैसे रागों का प्रयोग किया।** उन्हें वर्ष 2008 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। उन्हें प्रसिद्ध **वीडियो "मिले सुर मेरा तुम्हारा" के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है।**
- **ग्वालियर घराना सबसे पुराना** होने के कारण **सभी घरानों की जननी** माना जाता है।

तराना

- इसके लिए **लय अत्यंत आवश्यक है। धुन इसका आधार होती है।**
- इसे **तीव्र गति से गाया जाता है** और इसमें बहुत **सारे शब्द शामिल होते हैं।**

ठुमरी

- इसकी शुरुआत 18वीं शताब्दी में **पूर्वी उत्तर प्रदेश, मुख्य रूप से लखनऊ** और **बनारस** में हुई थी।
- यह संवेदनात्मक और रोमांटिक गायन शैली है, जिसे कभी-कभी **"भारतीय शास्त्रीय संगीत का गीत"** (The lyric of Indian classical music) कहा जाता है।
- अधिकांश संगीत रचनाएँ **प्रेम, विरह और भक्ति से संबंधित होती हैं** और **ब्रज भाषा में लिखी जाती हैं।**
- **अनूठी विशेषता: भगवान कृष्ण** और **राधा की कथाएँ।**
- खयाल संगीत कार्यक्रम आम तौर पर **ठुमरी** गायन के साथ **समाप्त होता है।**
- **तीन** प्रमुख ठुमरी घराने हैं: **बनारस, लखनऊ** और **पटियाला।**
- **बेगम अख्तर** ठुमरी शैली की सबसे प्रख्यात गायिकाओं में से एक थीं।

टप्पा

- इसके लिए **लय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।**
- **उत्तर-पश्चिम भारत में ऊँट सवारों** के लोक गीत, 18वीं शताब्दी के अंत में इसके विकास का स्रोत थे।

Search On TG: @apna_pdf

गजल

- **यह विरह या प्रिय की मौत के कारण होने वाली पीड़ा के** साथ-साथ **उस पीड़ा के बावजूद प्रिय के सौंदर्य की** एक काव्यात्मक प्रस्तुति है।
- 12 से अधिक **अशआर या शेर गजल में** नहीं होते हैं।
- **अमीर खुसरो** गजल लिखने की कला को समझाने वाले सबसे पहले लोगों में से थे।
- **गजल से जुड़ी प्रसिद्ध हस्तियाँ:** मिर्जा गालिब, मुहम्मद इकबाल, रूमी (13वीं शताब्दी), काजी नजरूल इस्लाम आदि।

कर्नाटक संगीत

कर्नाटक संगीत भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक रूप है जिसकी उत्पत्ति दक्षिण भारत में हुई थी।

कर्नाटक संगीत में विभिन्न रचनाएँ

गीतम: सबसे सरल प्रकार की संगीत रचना को गीतम कहा जाता है। इसमें बहुत ही सहज और मधुर संगीत प्रवाह तथा बहुत ही सरल संरचना होती है।

सुलादी: सुलादी, गीतम की तुलना में उच्च कोटि के होते हैं, लेकिन ये भक्ति विषयक होते हैं।

विलंबिता, **मध्य** और **द्रुपता** तीन गतियाँ हैं, जिनमें सुलादी की रचना की जाती है।

स्वराजति: वे वर्णम सीखने के लिए पूर्व संकेतक हैं। इसे तीन भागों में विभाजित किया गया है: **पल्लवी, अनुपल्लवी, और चरणम।**

वर्णम: यह उत्कृष्ट संगीत कौशल का एक उदाहरण है, जिसमें उस राग का प्रत्येक परिभाषित तत्त्व शामिल होता है जिस पर यह आधारित होता है।

जतिस्वरम: इसमें कोई गीत या शब्द नहीं होता है और यह संगीत संरचना में स्वराजति के समान है। यह नृत्य संगीत श्रेणी के अंतर्गत आता है।

कीर्तनम: कीर्तनम **भक्ति भाव** पूर्ण होता है। यह एकल गायन और समूह गायन दोनों के लिए उपयुक्त है। पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण वर्गों का उपयोग करने वाले पहले कीर्तन संगीतकार पंद्रहवीं शताब्दी के **तलपकम संगीतकार थे।**

कृति: यह **संगीत की एक बहुत ही उन्नत शैली है।** इस रूप में राग और भाव के समृद्ध और विविध रंग सामने आते हैं। **कृति के** तीन मूल और आवश्यक अंग **पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणम हैं।**

पद: पद तमिल और तेलुगु में लिखी गई अकादमिक रचनाएँ हैं। संगीत विषादपूर्ण और धीमी गति वाला होता है। गीत और संगीत के बीच सामंजस्य से संगीत स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होता है। अंतर भक्ति और बहिर शृंगार द्वारा प्रस्तुत **मधुरा भक्ति** इसका प्रमुख विषय होता है।

जावली: वह रचना जो हल्के शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में आती है, जावली कहलाती है।

तिल्लाना: तिल्लाना एक लघु और तीव्र रूप है। यह मुख्य रूप से एक नृत्य शैली है, लेकिन अपनी तीव्रता और आकर्षक संगीत के कारण, इसे कभी-कभी संगीत समारोहों में समापन संगीत के रूप में स्थान मिलता है।

पल्लवी: यह रचनात्मक संगीत रचना का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। पल्लवी शब्द के पहले तीन शब्द **पदम (शब्द)**; **लयम** (समय); और **विन्यासम** (भिन्नताएँ) हैं।

तानम: यह राग अलापना शाखा से संबंधित है जिसमें आकर्षक लय होती है। इसमें आकर्षक पैटर्न और लयबद्ध प्रवाह होता है। "अनंतम" शब्द को **कुशलतापूर्वक मधुर संगीत के पैटर्न में शामिल किया गया है।**

प्रमुख समर्थक (Proponents)

- **अन्नमाचार्य**, **जिन्हें अन्नमय्या** के नाम से जाना जाता है, 15**वीं सदी के** संगीतकार, संगीत रचनाकार और एक हिंदू संत थे। वह **संकीर्तन** नामक गीतों की रचना करने वाले **सबसे पहले ज्ञात भारतीय संगीतकार हैं।** उनके भक्तिपूर्ण संकीर्तन, विष्णु के एक रूप **वेंकटेश्वर की स्तुति में रचित थे।** उनकी रचनाओं को **अध्यात्म (आध्यात्मिक)** और **शृंगार (रोमांटिक) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।** वह अपने युग में अस्पृश्य जातियों के प्रति सामाजिक कलंक का विरोध करने वाले पहले कुछ लोगों में से एक थे। **[UPSC 2018]**
- **पुरंदर दास (16वीं शताब्दी)**: कर्नाटक संगीत के **पितामह** के रूप में जाने जाते हैं, उनकी रचनाएँ **भगवान कृष्ण की स्तुति में थीं।** उनकी प्रसिद्ध रचना **दास साहित्य है।**
- **क्षेत्रेय** (17**वीं शताब्दी**): भगवान कृष्ण की स्तुति में उनके **तेलुगु पदम** विशेषकर **भरतनाट्यम** और **कुचिपुड़ी** प्रदर्शनों में **आज भी गाए जाते हैं।**
- **भद्राचल रामदासु** (17**वीं शताब्दी**): तेलुगु कवि थे जो भगवान राम की स्तुति में लिखते थे। वह एक प्रसिद्ध **वाग्गेयकारा** (गीत रचने के साथ-साथ उन्हें संगीत में पिरोने वाले) थे।
- **वेंकटमाखिन** (17**वीं शताब्दी**): **उन्होंने चतुर्दंडीप्रकाशिका** की रचना की, जिसमें उन्होंने रागों को वर्गीकृत करने की **मेलाकर्ता प्रणाली की शुरुआत की।**
- कर्नाटक संगीत की रचनाओं का श्रेय **तीन** संगीतकारों को दिया जा सकता है जिन्होंने 1700 **से** 1850 **ईसवी तक अनेक रचनाएँ लिखीं।** वे थे **त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितर** और **श्याम शास्त्री।**
  - **त्यागराज ने** हजारों भक्ति रचनाएँ लिखीं, जिनमें से ज्यादातर **तेलुगु में** और **राम की स्तुति में थीं**, जिनमें सबसे लोकप्रिय **"नागुमोमु"**, पंचरत्न कृतियाँ और उत्सव संप्रदाय कृतियाँ थीं। **[UPSC 2018]**
  - **मुथुस्वामी दीक्षितर:** उन्होंने हिंदू देवताओं से संबंधित **संस्कृत** में रचनाएँ लिखी। उन्होंने वीणा वादन किया और अलंकारों के प्रयोग पर जोर दिया।
  - **श्याम शास्त्री:** त्रिमूर्ति में सबसे बुजुर्ग थे, उनकी **तेलुगु** रचनाएँ देवी कामाक्षी की स्तुति में हैं। उन्होंने **स्वरजाति** संगीत शैली की शुरुआत की।
- 19वीं सदी के कुछ उल्लेखनीय संगीतकार थे: **महा वैद्यनाथ अय्यर, पटनम सुब्रह्मण्य अय्यर** और **रामनाद श्रीनिवास आयंगर।**
- **सुब्बाराम दीक्षितार** द्वारा वर्ष 1904 में रचित **संगीत संप्रदाय प्रदर्शिनी** पिछली शताब्दियों के संगीत, संगीतकारों और संगीत रचनाकारों के बारे में जानकारी के लिए एक प्रमाण के रूप में कार्य करती है।

Search On TG: @apna_pdf

हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के बीच समानताएँ

- संगीत के दोनों रूपों का विकास सामान्य धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों के साथ वैदिक परंपरा के साथ-साथ संस्कृत भाषा लिपियों से प्रभावित था।
- **स्वर**, **राग** और **ताल** के मूल तत्त्व **दोनों के आधार** के रूप में काम करते हैं।
- दोनों **की केंद्रीय धारणा राग है**।
- मधुर संगीत दोनों शैलियों की **मुख्य विशेषता** है।

हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत की तुलना

पहलू/पक्ष	हिंदुस्तानी संगीत	कर्नाटक संगीत
भौगोलिक उत्पत्ति	उत्तर और मध्य भारत।	दक्षिणी भारत (तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल)।
ऐतिहासिक प्रभाव	फारसी, इस्लामी और मुगल परंपराओं से अत्यधिक प्रभावित।	इसकी जड़े प्राचीन हिंदू परंपराओं और संस्कृत ग्रंथों में निहित हैं। बाह्य प्रभाव न्यूनतम।
बल या केंद्रित	रागों के सुधार और उनके अन्वेषण या खोजों पर बल।	पूर्व-रचित खंडों (कृति) और जटिल कृति ।
प्रमुख ग्रंथ	संगीतरत्नाकर, राग दर्पण।	चतुर्दंडी प्रकाशिका, स्वरमेल कलानिधि।
प्रमुख शैलियाँ	खयाल, ध्रुपद, ठुमरी, टप्पा, तराना।	कृति, वर्णम, पदम, जावली, और तिल्लाना
प्रदर्शन शैली	धीमा और विस्तृत राग का विस्तार (अलाप)।	निर्धारित खंडों में सुधार के साथ उच्च संरचित रचनाएँ (जैसे, कल्पना स्वर, राग अलापना)।
अलंकरण का उपयोग	मींड (फिसलन) और गमक (दोलन) जैसे सूक्ष्म अलंकरण का उपयोग।	भारी और जटिल अलंकरण जैसे गमक (दोलन) और ब्रिघा (तीव्र स्वर)।
राग प्रणाली	व्याख्या में क्षेत्रीय विविधता वाले राग कम हैं।	72 मेलकर्ता रागों (Melakarta Ragas) और असंख्य जन्य रागों (Janya Ragas) की एक संरचित प्रणाली।
ताला प्रणाली	सरल लयबद्ध चक्र या क्रम,जिन्हें प्रायः आशु रचना अर्थात् तात्कालिकता के साथ प्रदर्शित किया जाता था।	जटिल लयबद्ध क्रम या पैटर्न और क्रमपरिवर्तन के साथ अत्यधिक जटिल ताल प्रणाली।
भाषा	हिंदी, ब्रज भाषा, उर्दू और फ़ारसी में गीत।	गीत मुख्यतः संस्कृत, तेलुगु, तमिल और कन्नड़ में हैं।
यंत्र और उपकरण	सितार, तबला, सरोद, सारंगी, शहनाई, हारमोनियम।	वीणा, मृदंगम, वायलिन, बांसुरी, घटम, कंजीरा।
आश्रय/संरक्षण	मुगल दरबारों और क्षेत्रीय राजाओं के अंतर्गत फला-फूला।	मंदिरों और भक्ति प्रसंगों में इसका प्रचलन बढ़ा, परवर्ती काल में इसे संगीत समारोहों के लिए अनुकूलित किया गया।
सांस्कृतिक विषय-वस्तु/थीम	प्रेम, प्रकृति और दार्शनिक विषयों के साथ धर्मनिरपेक्षता और भक्ति पर केंद्रित।	मुख्यतः भक्ति, पौराणिक कथाओं, देवताओं और आध्यात्मिकता पर केंद्रित।

Search On TG: @apna_pdf

हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के बीच अंतर

हिंदुस्तानी संगीत	कर्नाटक संगीत
• इसे **थाट** में विभाजित किया गया है। इसमें कुल 6 राग हैं। • संगीत प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न घराने हैं। • वाद्य और गायन पर समान जोर दिया जाता है। • जरूरत के अनुसार बदलाव करने की अधिक गुंजाइश होती है। • मुख्य फोकस रागों पर है। • अफगान, फारसी और अरबी तत्वों से प्रभावित है। • परंपरागत रूप से बाँसुरी, वायलिन, तबला, सारंगी, सितार और संतूर का उपयोग किया जाता था।	• **मेलाकर्ता** राग और **जन्य** राग में विभाजित किया गया है। • घराने जैसी कोई अवधारणा नहीं है। • स्वर संगीत पर अधिक जोर दिया जाता है। • बदलाव करने की कम गुंजाइश होती है। • मुख्य फोकस ताल पर है। • यह स्वदेशी तत्त्वों पर आधारित है। • परंपरागत रूप से बाँसुरी, वायलिन, वीणा, मृदंगम और मैंडोलिन का उपयोग किया जाता था।

लोक संगीत

लोक संगीत जनता की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है और **अद्वितीय संदेश देता है**। उनमें अक्सर महत्त्वपूर्ण अनुष्ठानों और ऐतिहासिक घटनाओं पर चर्चा शामिल की जाती है।

लोक संगीत	विशेष विवरण	लोक संगीत	विशेष विवरण
बाउल (पश्चिम बंगाल)	बाउल संप्रदाय द्वारा गाया जाता है, जिसमें भक्ति और सूफी दोनों प्रभाव हैं।	**रसिया गीत (उत्तर प्रदेश)**	भगवान कृष्ण की मनोहर लीलाओं पर आधारित ब्रज क्षेत्र के गीत।
वनावन (**जम्मू और कश्मीर**)	विवाह समारोहों के दौरान गाया जाता है।	**आल्हा (उत्तर प्रदेश)**	**बुंदेलखंड** की गाथा, जिसमें आल्हा और ऊदल की वीरता का वर्णन किया जाता है।
भाखा (**जम्मू और कश्मीर**)	फसल कटाई के समय ग्रामीणों द्वारा भाखा गाया जाता है।	**घसियारी गीत (उत्तराखंड)**	यह उन महिलाओं द्वारा गाया जाता है जिन्हें अपने मवेशियों के लिए घास लाने के लिए दूर-दराज के जंगलों में जाना पड़ता है।
पनिहारी (राजस्थान)	पानी की कमी के बारे में गीत गाए जाते हैं। रोमांटिक और घरेलू विषय।	**पै (Pai) (मध्य प्रदेश)**	**अच्छे मानसून** और **फसल** के लिए गीत। **सैरा नृत्य** प्रस्तुत किया जाता है।
डाँडिया (गुजरात)	वृंदावन की होली के दृश्यों तथा कृष्ण और राधा की लीला से जुड़ा है। यह नवरात्रि की शाम का एक विशेष नृत्य है।	**पंडवानी (छत्तीसगढ़)**	भीम को नायक मानकर महाभारत की कहानियाँ। **तीजन बाई** एक प्रसिद्ध उन्नायक हैं।
मांड (राजस्थान)	अर्द्ध-लोक, अर्द्ध-शास्त्रीय शैली। ये गीत राजपूत शासकों की महिमा गाने वाले भाटों के बारे में हैं। मशहूर गाना केसरिया बालम।	**दसकठिया (ओडिशा)**	इसका नाम "काठी" या "राम ताली" नामक एक अद्वितीय संगीत वाद्ययंत्र से लिया गया है, प्रस्तुति के दौरान लकड़ी के ताली का उपयोग किया जाता है।
लावणी (महाराष्ट्र)	**ढोलकी** पर **पारंपरिक नृत्य और गीत प्रस्तुत किया जाता है।**	**खुबक एशी (मणिपुर)**	एक गीत जिसके साथ तालियाँ बजती हैं।
पोवाड़ा (महाराष्ट्र)	इन गाथाओं में शिवाजी के गौरवशाली अतीत की घटनाओं और उनके वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन होता है।	**औगरी हेन्गेन, हेजिंग हिराओ (मणिपुर)**	वे क्रमशः सृजन का गीत और अनुष्ठानिक गीत हैं, जो लाई हरोबा उत्सव के अंतिम दिन गाए जाते हैं।
भावगीते (कर्नाटक और महाराष्ट्र)	विषयों में प्रकृति, प्रेम और दर्शन शामिल हैं। यह गजल के समान है।	**खोंगजोम पर्व (मणिपुर)**	इसमें वर्ष 1891 में ब्रिटिश सेना और मणिपुरी सेना के बीच लड़ी गई **खोंगजोम की लड़ाई** का संगीतमय वर्णन होता है।
मांडो (गोवा)	भारतीय और पश्चिमी संगीत परंपराओं का अनोखा मिश्रण।	**चाय हिया (मिजोरम)**	**चपचार कूट** उत्सव के दौरान गाया जाता है।
बिहू गीत (असम)	नव वर्ष और और बसंत ऋतु के आगमन से संबंधित हैं।	**हेरिलेउ (नागालैंड)**	युद्ध गीत
टिकिर (असम)	इस्लाम की शिक्षाओं का प्रतीक है।	**तीज गीत (राजस्थान)**	विषय-वस्तु शिव और पार्वती के मिलन, मानसून के जादू, हरियाली आदि के इर्द-गिर्द घूमती है।
अम्मानईवारी (तमिलनाडु)	चोल सम्राट की प्रशंसा में गाया गया।	**बुर्राकाठा (आंध्र प्रदेश)**	गाथागीत का अत्यधिक नाटकीय रूप।
विल्लू पट्टू (तमिलनाडु)	इसे **धनुष गीत भी कहा जाता है।**	**कोलनल्लू (आंध्र प्रदेश)**	**कोलाट्टम के नाम से भी जाना जाता है।** "डाँडिया" के समान है।
वीरगासे (कर्नाटक)	दशहरा जुलूस के दौरान गाया जाता है	**भूत गीत (केरल)**	मायावी आत्माओं, भूत-प्रेतों को दूर भगाने के लिए गाया जाता है।

- लामन (कुल्लू घाटी, हिमाचल प्रदेश); कजरी (उत्तर प्रदेश); नेउलेउ (नागालैंड); नियोगा (अरुणाचल प्रदेश); सैकुटी जाई (मिजोरम); सना लमोक (मणिपुर); बसंत गीत (उत्तराखंड); जा-जिन-जा
- (अरुणाचल प्रदेश); सोहर (उत्तर प्रदेश); पंखिड़ा (राजस्थान); लोटिया (राजस्थान); ओवी (महाराष्ट्र और गोवा); बारहामासा (उत्तराखंड); छकरी (कश्मीर)।

Search On TG: @apna_pdf

शास्त्रीय और लोक संगीत का मिश्रण

समय के साथ-साथ शास्त्रीय और लोक, दोनों तत्त्व एक साथ मिल गए, जिससे संगीत के नए-नए रूप विकसित हुए।

सुगम संगीत: इस शैली में शास्त्रीय और लोक तत्त्वों का मिश्रण होता है। इसमें निम्नलिखित शामिल है:

- **भजन**: यह उत्तर भारत में भक्ति गायन का सबसे लोकप्रिय रूप है, इसकी उत्पत्ति भक्ति आंदोलन से हुई है। देवी-देवताओं के जीवन की कथाएँ या महाभारत और रामायण की कथाएँ भजन के लिए लोकप्रिय विषय हैं। मध्यकाल में भजन के प्रमुख उन्नायक **मीराबाई**, **तुलसीदास**, **सूरदास**, **कबीर** आदि थे।
- **शबद**: शबद के विकास और लोकप्रियता में **गुरु नानक** और उनके शिष्य **मरदाना** ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **कव्वाली**: ये **अल्लाह** या **पैगंबर मुहम्मद** अथवा किसी अन्य सूफी या इस्लामी संत की प्रशंसा हेतु भक्ति गीत हैं। **कव्वाली एक ही राग से बनी होती है** और आम तौर पर उर्दू, पंजाबी या हिंदी में लिखी जाती हैं। इनका प्रदर्शन आमतौर पर सूफी दरगाहों में किया जाता है।
- **सुगम संगीत के अन्य प्रकार**:
  - **अभंग (महाराष्ट्र):** भगवान विठोबा की स्तुति में गाया जाता है।
  - **कीर्तन (पश्चिम बंगाल):** गीत गोविंद ने कीर्तन गायन और नृत्य को प्रेरित किया।
  - **भटियाली (पश्चिम बंगाल):** नाव चालकों द्वारा गाया जाता है, इसका मूल विषय प्रकृति है।
  - **तेवरम (तमिलनाडु):** आड्यार जैसे शैव समुदायों द्वारा गाया जाता है।
- **रबींद्र संगीत**: **यह शास्त्रीय तत्त्वों** और **बंगाली लोक शैलियों** का मिश्रण है जो **रबींद्रनाथ टैगोर** द्वारा निर्मित संगीत का पुनःसृजन करता है। इसके प्रमुख तत्त्वों में **देशभक्ति की भावना शामिल है।**
- **हवेली संगीत**: इसका विकास **राजस्थान** और **गुजरात** में हुआ। वर्तमान में **पुष्टिमार्ग संप्रदाय** या वह समुदाय जो पुष्टिमार्ग को मोक्ष का मार्ग मानता है, द्वारा गाया जाता है।
- **गण संगीत**: एक प्रकार का फ्यूजन संगीत, जो **समूह या कोरस में गाया जाता है**। इसके मुख्य विषयों में **देशभक्ति और** समाज में व्याप्त **कुरीतियों का** विरोध शामिल होता है। **वंदे मातरम्** एक गण संगीत है।

संगीत वाद्ययंत्र

विभिन्न वाद्ययंत्रों को ध्वनि उत्पत्ति के आधार पर, **नाट्य शास्त्र के अनुसार संगीत वाद्ययंत्रों को चार मुख्य समूहों में वर्गीकृत किया गया है:**

1. तत् वाद्य या कॉर्डोफोन- तार वाद्ययंत्र

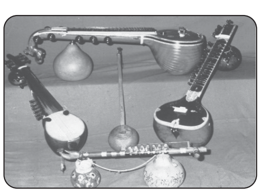

- वह वाद्ययंत्र जिसमें कोई तांत (तंत्री) या तार, ध्वनि उत्पन्न करने के लिए कंपन करता है, तत् वाद्य यंत्र कहलाता है। तनी हुई डोरी को दबाने या खींचने से ये कंपन उत्पन्न होते हैं।
- तत् वाद्य यंत्र को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया गया है– **उँगलियों से बजाए जाने वाले वाद्य यंत्र** (Plucked) (**सितार, वीणा और तंबूरा**) और धनुष (Bow) से बजाए जाने वाले (**सारंगी, इसराज और वायलिन**)।
- कमाइचा, पश्चिम राजस्थान के मंगनियारों द्वारा बजाया जाने वाला एक धनुषाकार वीणा है।

2. सुषिर वाद्य या एयरोफोन- पवन वाद्ययंत्र

- सुषिर वाद्य समूह में **खोखले स्तंभ में हवा फूँककर ध्वनि उत्पन्न की जाती है।** स्वर की तीव्रता **वायु मार्ग को नियंत्रित करके निर्धारित की जाती है** और वाद्ययंत्र में बने छिद्रों को खोलने और बंद करने के लिए उँगलियों का उपयोग करके राग बजाया जाता है।
- ध्वनि उत्पन्न होने के आधार पर पवन वाद्य को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है।
  - **बाँसुरी**: पंडित हरिप्रसाद चौरसिया भारत के प्रसिद्ध बाँसुरीवादक हैं।
  - **शहनाई और नादस्वरम** जैसे **रीड वाद्ययंत्र। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान** एक प्रसिद्ध शहनाई वादक थे।

3. अवनद्ध वाद्य या मेम्ब्रेनोफोन - ताल वाद्ययंत्र

- अवनद्ध वाद्य श्रेणी के वाद्ययंत्रों में, मिट्टी या धातु के बर्तन या लकड़ी के ढोल अथवा फ्रेम **पर खींची गई** जानवर **की खाल पर प्रहार करके ध्वनि उत्पन्न की जाती है।**

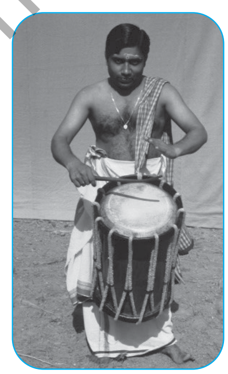

- सिंधु सभ्यता स्थलों से प्राप्त मुहरों में गर्दन से लटके हुए क्षैतिज नगाड़ा बजाते हुए पुरुषों की आकृतियाँ दिखाई देती हैं।
- नगाड़ों को उनके आकार और संरचना के साथ-साथ बजाने की स्थिति और स्थान के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है। इनमें **ऊर्ध्वका** (तबला और चेंदा), **अंक्य** (मृदंगम, पखावज), **अलिंग्य** (डफली) और **डमरू शामिल हैं।**

4. घन वाद्य या इडियोफोन - ठोस वाद्ययंत्र

- यह ठोस वाद्ययंत्रों से संबंधित शैली है, जिन्हें किसी ट्यूनिंग की आवश्यकता नहीं होती है।

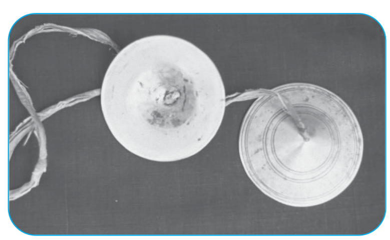

- इन्हें इडियोफोन वाद्ययंत्र भी कहा जाता है। घन वाद्य के सबसे लोकप्रिय उदाहरण **मंजीरा**, **जलतरंग**, **काँच-तरंग**, **झाँझ**, **खरताल** आदि हैं।

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

7 भारतीय धर्म एवं दर्शन

हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदाय

वैष्णव धर्म

वासुदेव-भागवत पंथ, जिसका उद्भव गुप्त काल के दौरान हुआ था, तेजी से बढ़ता गया और उसने विष्णु और **नारायण** जैसे अन्य वैदिक और ब्राह्मण देवताओं को अपने में समाहित कर लिया।

- **भागवतवाद**, जो मूल रूप से बौद्ध धर्म और जैन धर्म के समकालीन था, **की उत्पत्ति उस विचारधारा** से हुई जो **उपनिषदों से शुरू हुई थी**। यह गुप्त काल के दौरान अपने **चरम पर पहुँच गया** और सबसे लोकप्रिय संप्रदाय बन गया।
- उत्तर-गुप्त काल से इस भक्ति पंथ का नाम **वैष्णव हो गया**, जिसमें **अवतारों के सिद्धांत पर जोर दिया गया था।**
- यह आंदोलन ईश्वर के **साकार रूप**, मुख्य रूप से **राम** और **कृष्ण की** भक्ति पर आधारित था।
- **अलवार** के नाम से जाने जाने वाले वैष्णव कवि-संतों ने विष्णु के लिए एकनिष्ठ भक्ति **(एकात्मिका भक्ति)** का प्रचार किया। उनके गीतों को सामूहिक रूप से **'प्रबंध' के नाम से जाना जाता है।**

वैष्णव धर्म के अंतर्गत प्रमुख संप्रदाय

संप्रदाय	विशेषताएँ
वारकरी संप्रदाय	• **ये विठोबा** के रूप में भगवान विष्णु की पूजा करते हैं ये **महाराष्ट्र के पंढरपुर में** विठोबा के मंदिर के आस-पास ही केंद्रित रहे। • उनकी **वार्षिक तीर्थयात्रा को वारी** कहा जाता है। वारकरी अपने संतों की पादुकाओं को **समाधि से पंढरपुर तक** पालकी में **ले जाते हैं।** • तीर्थयात्रा के दौरान **रंगन** और **धावा** जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। रंगन में एक पवित्र घोड़ा तीर्थयात्रियों की पंक्तियों के बीच से दौड़ता है, तीर्थयात्री उससे निकलने वाले धूल के कणों को पकड़ने की कोशिश करते हैं और उन्हें अपने माथे पर लगाते हैं। • इस संप्रदाय के प्रमुख संतों में **ज्ञानेश्वर**, **नामदेव**, **एकनाथ** और **तुकाराम शामिल हैं।**
रामानंदी संप्रदाय	• यह हिंदू धर्म के अंतर्गत सबसे बड़ा वैरागियों का समूह है। इन वैष्णव भिक्षुओं को **रामानंदी, वैरागी** या **बैरागी के नाम से जाना जाता है।** • **वे अद्वैत** विद्वान **रामानंद** की शिक्षाओं का पालन करते हैं। • वे विष्णु के दस अवतारों में से एक, **राम की पूजा करते हैं।** • वे मुख्यतः **गंगा के मैदानों के आस-पास बसे हुए हैं।** • वे **ध्यान करते हैं** और **कठोर तपस्या करते हैं,** लेकिन वे यह भी मानते हैं कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए भगवान की कृपा जरूरी है।
ब्रह्म संप्रदाय	• यह संप्रदाय **भगवान विष्णु,** परम-ब्रह्म या ब्रह्मांड के सृजनकर्ता से जुड़ा हुआ है। • इसके संस्थापक **माधवाचार्य थे।** • **चैतन्य महाप्रभु** द्वारा प्रवर्तित **गौड़ीय वैष्णववाद,** ब्रह्म संप्रदाय से जुड़ा है। • **इस्कॉन मंदिर** इसी संप्रदाय से संबंधित है।
पुष्टि मार्ग संप्रदाय	• इस संप्रदाय की भक्ति, **भगवान कृष्ण के प्रति पवित्र प्रेम पर आधारित है।** उनका सिद्धांत है कि अंतिम सत्य केवल और केवल ब्रह्म है। • इसकी स्थापना **1500 ई.** के आस-पास **वल्लभाचार्य ने की थी।**
निंबार्क संप्रदाय	• **इसे हंस संप्रदाय** या **कुमार संप्रदाय या सनकादि संप्रदाय** के नाम से भी जाना जाता है। • इसके अनुयायी **राधा** और **कृष्ण की पूजा करते हैं।**

शैव धर्म

पाणिनि ने शिव-उपासकों के एक समूह को **शिव-भागवत कहा है।**

- दक्षिण में शैव आंदोलन 63 संतों की गतिविधियों के कारण फला-फूला, जिन्हें **नयनार** कहा जाता है।
- नयनार सभी जातियों से से संबंध रखते थे और उनके तमिल गीतों को **तेवरम** कहा जाता था, जिन्हें **द्रविड़ वेद** भी कहा जाता था।

Search On TG: @apna_pdf

शैव धर्म के अंतर्गत विभिन्न संप्रदाय

संप्रदाय	विशेषताएँ
नाथपंथी	• **ये गोरखनाथ** और **मत्स्येंद्रनाथ** की शिक्षाओं का पालन करते हैं और **शिव के एक रूप आदिनाथ** की पूजा करते हैं। • **ये हठ योग** साधना करते हैं; भिक्षु लंगोटी और धोती पहनते हैं और शरीर पर राख लगाते हैं। • नाथपंथी कभी भी एक ही स्थान पर लंबे समय तक नहीं रहते हैं अर्थात ये **यायावर समूह हैं।** जब वे चलना बंद कर देते हैं, तो वे एक **पवित्र अग्नि जलाते हैं जिसे धूनी** कहा जाता है। • इन्हें **सिद्ध सिद्धांत** के नाम से भी जाना जाता है।
लिंगायत संप्रदाय	• यह एक विशिष्ट शैव परंपरा है, लिंगायत **लिंग के रूप में** भगवान शिव की पूजा के माध्यम से **एकेश्वरवाद में विश्वास करते हैं।** • इसकी स्थापना **12वीं सदी में बसवन्ना** ने की थी। • यह संप्रदाय **वेदों** के अधिकार को नकारता है साथ ही **जाति व्यवस्था को भी अस्वीकार करता है।** • इसे **वीरशैववाद के नाम से भी जाना जाता है।** • इस संप्रदाय ने **पुनर्जन्म के सिद्धांत पर भी सवाल उठाया।** [UPSC 2016]
दशनामी संन्यासी	ये मुख्यतः **अद्वैत वेदांत परंपरा से जुड़े होते हैं और आदि शंकराचार्य** के शिष्य हैं। उन्हें **'दश नाम संन्यासी'** भी कहा जाता है क्योंकि उन्हें 10 समूहों में विभाजित किया गया है।
अघोरी	• **अघोरी, भैरव** के रूप में प्रकट **शिव** के अनन्य भक्त हैं। • **अघोरी अद्वैतवादी हैं जो** श्मशान घाट पर **साधना** के माध्यम से पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति पाने का प्रयास करते हैं। • **अघोरी** अपने जीवन से **बंधनों को हटाने में विश्वास करते हैं**, जो कामुक सुख, क्रोध, लालच, आसक्ति, भय और घृणा हैं। • वे **अत्यधिक तामसिक अनुष्ठानों में लिप्त रहते हैं।**
सिद्धर या सिद्ध	• सिद्ध में **तमिलनाडु के** सभी **संत, चिकित्सक, कीमियागर (Alchemists)** और **रहस्यवादी शामिल** होते हैं। • **वे प्राणायाम** के साथ-साथ विशेष **गुप्त रसायनों के माध्यम से आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। प्राणायाम** उनके द्वारा ली जाने वाली साँसों की संख्या को काफी कम कर देता है। • **सिद्धरों को वरम (Varmam) का संस्थापक भी माना जाता है। वरम आत्मरक्षा हेतु एक मार्शल आर्ट के साथ-साथ चिकित्सा उपचार भी है।** • सिद्ध **एकेश्वरवादी होते हैं** और **मूर्तिपूजा की निंदा करते हैं।** [UPSC 2016]

हिंदू धर्म के अन्य उप छोटे संप्रदाय

- **शाक्त:** यह स्त्रीत्व और **देवी को** सर्वोच्च मानता है। यह तंत्र की विभिन्न उप-परंपराओं के लिए जाना जाता है।
- **स्मार्त: यह पुराणों** की शिक्षाओं पर आधारित है। स्मार्त पाँच देवताओं की घरेलू पूजा में विश्वास करते हैं जिनमें शामिल **पाँच देवताओं– शिव, शक्ति, गणेश, विष्णु** और **सूर्य को** समान माना जाता है।
- **श्रौत:** यह केरल के **अति रूढ़िवादी नंबूदिरी ब्राह्मणों से संबंधित है।** वे दर्शन की **'पूर्व-मीमांसा'** विचारधारा का पालन करते हैं और यज्ञ करने को महत्त्व देते हैं।

भारतीय दर्शन के संप्रदाय

भारत में दर्शन का उदय जीवन और अस्तित्व के रहस्य की समीक्षा के रूप में हुआ था।

- **उत्तर वैदिक काल** के दौरान ही **आत्मा** की वास्तविक प्रकृति और ब्रह्मांडीय सिद्धांत या ब्रह्म (परम ब्रह्म/वास्तविक यथार्थ) के बारे में निश्चित विचार और सिद्धांत विकसित हुए थे।

दर्शन और धर्म

- दर्शन ने यर्थार्थ का सही दृष्टिकोण प्रदान किया, जबकि धर्म ने जीवन का मार्गदर्शन किया।
- **दर्शन सिद्धांत** था और **धर्म अभ्यास**। इस प्रकार प्राचीन भारत में दर्शन और धर्म, एक-दूसरे के पूरक थे।

दर्शन के रूढ़िवादी संप्रदाय

इस संप्रदाय का मानना था कि **वेद सर्वोच्च प्रकट धर्मग्रंथ** हैं जिनमें मोक्ष का रहस्य छिपा हुआ है।

- हालांकि इसके समर्थकों ने वेदों की प्रामाणिकता पर प्रश्न नहीं उठाया।
- उनके छह उप-संप्रदाय थे, जिन्हें **षड् दर्शन कहा जाता था।**

Search On TG: @apna_pdf

संप्रदाय	विशेषताएँ
सांख्य	**प्रतिपादक: कपिल** (उन्होंने **सांख्य सूत्र भी लिखा)।** • यह संप्रदाय मानता है कि **यथार्थ** दो सिद्धांतों से बना है– 1. **पुरुष** (पुरुष) मात्र चेतना है और इसे संशोधित या परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। 2. **प्रकृति** (स्त्री) तीन गुणों– सत्व, रजस और तमस से बनी है। प्रकृति इन तीन गुणों की संतुलन की स्थिति है। • यह संप्रदाय पुरुष और प्रकृति के माध्यम से **ब्रह्मांड के निर्माण की व्याख्या करता है।** • यह **द्वैतवाद** में विश्वास करता है, अर्थात् आत्मा और पदार्थ (तत्व) का अलग-अलग अस्तित्व है। • यह संप्रदाय **ईश्वर के अस्तित्व को** नकारता है। हालाँकि, **पुनर्जन्म** और **आत्मा का देहांतरण** इस संप्रदाय में अंतर्निहित हैं। • यह संप्रदाय मानता है कि **आत्म-ज्ञान मोक्ष की ओर ले जाता है।** **[UPSC 2013]**
योग	**प्रतिपादक: पतंजलि (उन्होंने** ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में **योगसूत्र** भी लिखा)। • योग का शाब्दिक अर्थ है **दो प्रमुख सत्वों का मिलन (Union of the two principal entities)।** • योग क्रियाएँ शरीर, मन और इंद्रियों को नियंत्रित करती हैं। योग दर्शन को मुक्ति प्राप्त करने का एक साधन माना जाता है।
	• यह मुक्ति निम्नलिखित माध्यमों से प्राप्त की जा सकती है– **यम**: आत्म नियंत्रण; **नियम:** नियमों का पालन; **आसन**: स्थिर मुद्राएँ; **प्राणायाम**: श्वास नियंत्रण; **प्रत्याहार**: सांसारिक वस्तुओं के प्रति आकर्षित न होने के लिए अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना; **धर्म**: मन को स्थिर करना; **ध्यान**: चुनी हुई वस्तु पर ध्यान केंद्रित करना; **समाधि**: मन और परमात्मा का विलय। • योग **एक गुरु** और **मार्गदर्शक के रूप में, ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है।**
न्याय	**प्रतिपादक: गौतम (वे न्याय सूत्र** के लेखक हैं)। • **यह संप्रदाय मोक्ष** प्राप्त करने के लिए **तार्किक चिंतन** में विश्वास करता है। • यह दर्शन ईश्वर को ब्रह्मांड का निर्माणकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता मानता है।
वैशेषिक	**प्रतिपादक: कणाद** • यह ब्रह्मांड के निर्माण की प्रक्रिया को समझाने के लिए **परमाणु सिद्धांत** अर्थात् पदार्थ में परमाणुओं और अणुओं के संयोजन का उपयोग करता है। • इसका मानना है कि ब्रह्मांड की **सभी वस्तुएँ पाँच तत्वों से मिलकर बनी हैं– पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि** और **आकाश।** • वैशेषिक संप्रदाय **ब्रह्मांड के यथार्थवादी** और वस्तुनिष्ठ दर्शन पर विचार करता है। • उनका मानना है कि **ईश्वर मार्गदर्शक सिद्धांत है** और ब्रह्मांड का निर्माण और विनाश एक चक्रीय प्रक्रिया है। • इस संप्रदाय का मानना है कि जीवों को **कर्म के नियम** के अनुसार पुरस्कार या दंड मिलता है। • वे यह भी मानते हैं कि **मुक्ति** ही मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है।
पूर्व मीमांसा	**प्रतिपादक: जैमिनी** • इस **दर्शन** का मानना है कि वेदों में जो लिखा है वह त्रुटिहीन है। • जैमिनी दो प्रकार के ज्ञान को स्वीकार करते हैं, अर्थात् प्रत्यक्ष (तत्काल ज्ञान) और परोक्ष (मध्यवर्ती ज्ञान)। परोक्ष ज्ञान के पाँच स्रोत हैं: अनुमान, उपमान (तुलना), शब्द (मौखिक साक्ष्य), अर्थापत्ति (धारणा) और अनुपलब्धि (अप्रत्यक्षण)। • मीमांसा ईश्वर के अस्तित्व के बारे में मौन है। • **कर्मकांड करने** से मोक्ष संभव है, लेकिन वैदिक कर्मकांडों के औचित्य और तर्क को समझना भी जरूरी है। • यह मुक्ति के साधन के रूप में **कर्म के सिद्धांत पर जोर देता है।**
उत्तर मीमांसा (वेदांत)	**मुख्य प्रस्तावक: इसके प्रमुख प्रवर्तक बादरायण हैं, अन्य शंकराचार्य** और **रामानुज।** • **वेदांत दो शब्दों** से बना है - **वेद** और **अंत,** जिसका अर्थ है वेदों का अंत। • यह संप्रदाय **उपनिषदों** में वर्णित **जीवन दर्शन का समर्थन करता** है। • इस दर्शन का आधार सबसे पुराना ग्रंथ **बादरायण** का **ब्रह्मसूत्र था।** • वेदांत का मूल **संदेश** यह है कि प्रत्येक क्रिया को बुद्धि द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए, जिसे विवेकशील क्षमता कहा जाता है। • वेदांत दर्शन ने **कर्म के सिद्धांत** को विश्वसनीयता प्रदान की और **पुनर्जन्म** के सिद्धांत में विश्वास किया।

Search On TG: @apna_pdf

वेदांत के उप-संप्रदाय

- **शंकराचार्य (अद्वैत वेदांत)/अद्वैतवाद– शंकराचार्य ने** ब्रह्म को निर्गुण माना है। अद्वैत का लक्ष्य आत्मज्ञान तथा **आत्मा** और **ब्रह्म की पूर्ण समझ प्राप्त करना है**। यह दर्शन मानता है कि आत्मा और ब्रह्म का **ज्ञान, मुक्ति की ओर ले जाता है।**
- **रामानुज (विशिष्टाद्वैत)**– यह दर्शन ब्रह्म को कुछ गुणों से युक्त मानता है। **विशिष्टाद्वैवाद दर्शन** ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति को मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग मानता है। रामानुज, शंकराचार्य से केवल इस अर्थ में भिन्न हैं कि वे जीव या व्यक्ति की आत्मा को शरीर से भिन्न इकाई मानते हैं और ये इकाइयाँ संख्या में अनंत हैं। जब तक यह एक शरीर में सीमित है, तब तक उसका ईश्वर के साथ एकाकार नहीं हो सकता।
- **माधवाचार्य (द्वैत)/द्वैतवाद– यह** शंकराचार्य के **अद्वैतवाद** के विपरीत है। माधवाचार्य का मानना था कि दुनिया एक भ्रम (माया) नहीं है बल्कि **भिन्नताओं से भरा यथार्थ है तथा आत्मा** और **ब्रह्म** के बीच अंतर है। **उनका कहना है कि जीव या आत्माएँ भक्ति और भगवान की कृपा से मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं।**
- **निंबार्क (द्वैताद्वैत)/विभेदक अद्वैतवाद या द्वैतवादी अद्वैतवाद**– उनका मानना है कि जगत और आत्मा परमात्मा के ही रूप हैं। ये जगत और आत्मा, परमात्मा (ब्रह्म) से भिन्न हैं। ये सभी परमात्मा के सहारे ही जीवित रह सकते हैं। अर्थात ये अलग-अलग हैं लेकिन परस्पर आश्रित हैं।
- **वल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैत)/शुद्ध अद्वैतवाद– उन्होंने वेदांत सूत्र** और **भगवद गीता** पर टिप्पणियाँ लिखीं। उनके लिए, ब्रह्म (परमात्मा) श्रीकृष्ण थे, जिन्होंने स्वयं को आत्मा और पदार्थ के रूप में प्रकट किया। **परमात्मा और आत्मा अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही हैं**। उन्होंने शुद्ध **अद्वैतवाद पर जोर दिया**। उनके दर्शन को **पुष्टिमार्ग (अनुग्रह का मार्ग)** के रूप में जाना जाता है और उनके संप्रदाय को **रुद्रसंप्रदाय** कहा जाता है।

दर्शन का नास्तिक संप्रदाय

नास्तिक दर्शन, **वेदों** की मौलिकता में **विश्वास नहीं करता है** साथ ही ईश्वर के अस्तित्व पर भी प्रश्न उठाता है। यह संप्रदाय तीन प्रमुख उप-संप्रदायों में विभाजित है– **बौद्ध धर्म, जैन धर्म** और **लोकायत।**

चार्वाक या लोकायत दर्शन

माना जाता है कि स्वयं **बृहस्पति ने** इस दर्शन की आधारशिला रखी थी।

- इस दर्शन का उल्लेख **वेदों** और **बृहदारण्यक उपनिषद में मिलता है।**
- इसने जीवन के प्रति **भौतिकवादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया और इसे जनता का दर्शन (Philosophy of the Masses)** भी कहा जाता है।
- **इस दर्शन ने मोक्ष** प्राप्त करने की आवश्यकता के विरुद्ध तर्क दिया तथा **ब्रह्म** और **ईश्वर के** अस्तित्व को भी **नकार दिया।**
- इस संप्रदाय ने **पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधियों**, पुरोहित वर्ग के खिलाफ भी तर्क दिया। इसके अनुसार ब्राह्मण अपने अनुयायियों से **उपहार (दक्षिणा)** प्राप्त करने के लिए **झूठे अनुष्ठानों का निर्माण करते हैं।**
- यह संप्रदाय **ईथर (आकाश) को पाँच आवश्यक तत्त्वों** में से एक **नहीं** मानता क्योंकि इसे अनुभूति (Perception) के माध्यम से अनुभव नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह दर्शन अन्य चार **तत्त्वों** (अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी) में विश्वास करता है।
- इस संप्रदाय का तर्क है कि इसके अलावा कोई **अन्य जगत नहीं है,** अतः मृत्यु ही मनुष्य का अंत है और सुख ही जीवन का अंतिम उद्देश्य होना चाहिए। उन्होंने **'खाओ, पियो और मौज करो'** का सिद्धांत प्रतिपादित किया।

श्रमण संप्रदाय

श्रमण शब्द का अर्थ है– वह जो तपस्या करता है अर्थात् तपस्वी। विभिन्न श्रमण संप्रदाय निम्नलिखित हैं:–

(1) जैन धर्म, (2) बौद्ध धर्म, (3) चार्वाक, (4) आजीवक, (5) अज्ञान।

आजीवक:

- इस संप्रदाय की स्थापना पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में **मक्खलि गोसाल द्वारा की गई थी।**
- **श्रावस्ती** को आजीवकों का केंद्र माना जाता था।
- यह संप्रदाय **पूर्ण नियतिवाद के नियति** (भाग्य) सिद्धांत के इर्द-गिर्द घूमता है। इसका मानना है कि कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है और सब कुछ **पूर्व निर्धारित है।**
- आजीवकों ने बिना कपड़ों और भौतिक संपत्ति के एक **साधारण तपस्वी जीवन व्यतीत किया।**
- **आजीवक संप्रदाय के समर्थक कर्म** में **विश्वास नहीं करते थे** तथापि वे **आत्मा के अस्तित्व** में **विश्वास करते थे।**
- उन्होंने **वेदों** के प्रमाण को **अस्वीकार कर दिया।**
- **बिंदुसार** इसके अनुयायियों में से एक था। **अशोक के सातवें स्तंभ शिलालेख** में आजीवकों का उल्लेख मिलता है।

अज्ञान

- वे **अति संशयवाद में विश्वास करते थे।**
- उनका मानना था कि **प्रकृति के बारे में ज्ञान प्राप्त करना असंभव है** और यदि यह संभव भी है, तो मोक्ष प्राप्ति के लिए यह अनुपयोगी है।
- इस संप्रदाय के अनुसार, **'अज्ञानता सर्वोत्तम है'।**

Search on TG: @apna_pdf

पारसी धर्म

पारसी धर्म की स्थापना **जरथुस्त्र** या **जोरोस्टर ने आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व** में फारस में की थी।

- इसके सिद्धांत **जेंद अवेस्ता** में निहित हैं।
- पारसी समुदाय के लोग **शवों को गिद्धों के भक्षण** के लिए खुले में रख देते हैं।
  - इन खुली जगहों को **ढाकमा (Dhakma)** या '**टावर्स ऑफ साइलेंस' (Towers of Silence) कहा जाता है** और इन्हें खाने वाले गिद्धों को **ढाकमा नाशिनी कहा जाता है।**
- उनके **अग्नि मंदिरों (Fire Temples) को आतश बेहराम (Atash Bahram)** कहा जाता है।
- वे आमतौर पर **पारसी** और **ईरानी के रूप में जाने जाते हैं** और ज्यादातर **मुंबई, गोवा** और **अहमदाबाद (पश्चिमी भारत) में रहते हैं।**

ईसाई धर्म

- ईसाई धर्म की स्थापना **ईसा मसीह ने यरूशलेम** में की थी। कालांतर में यह दुनिया का सबसे बड़ा धर्म बन गया।
- ईसाई धर्म का मूल दर्शन यह है कि **ईश्वर एक है** और उसी ने ब्रह्मांड का निर्माण किया है।
- **ईसाई धर्म की पवित्र त्रिमूर्ति:** ईसाई लोग **पवित्र त्रिमूर्ति** की पूजा करते हैं – **पिता** (ईश्वर), **पुत्र** (यीशु) और **पवित्र प्रेतात्मा अर्थात आत्मा के रूप में ईश्वर (Holy ghost)**।
- ईसाइयों की पवित्र पुस्तक **बाइबिल है** जिसके दो भाग हैं– '**द ओल्ड टेस्टामेंट'** और '**द न्यू टेस्टामेंट'**
- उनकी दो मुख्य प्रथाएँ हैं–
  - **ईसाई दीक्षा/बैप्टिज़्म (Baptism):** कोई बच्चा या व्यक्ति चर्च की सेवा में प्रवेश करता है।
  - **परम प्रसाद/यूहरिस्ट (Eucharist):** ईश्वर के साथ रोटी खाना और दाखमधु (शराब) पीना जो ईश्वर के साथ एकता का प्रतीक है।

यहूदी धर्म

यह विश्व के सबसे पुराने धर्मों में से एक है और इसके अनुयायियों को **यहूदी कहा जाता है।**

- यह धर्म, **ईसाई धर्म** और **इस्लाम से भी पहले का है,** इन दोनों धर्मों ने यहूदी दर्शन से बहुत कुछ उधार लिया है।
- यह एक **एकेश्वरवादी धर्म है।** उनके **धार्मिक ग्रंथ को तौरात (Torah)** कहा जाता है और वे **एलियाहु-हनवी (Eliyahu-Hanavi) नामक धार्मिक सेवाओं का पालन करते हैं जिसमें** एलिय्याह पैगंबर (Elijah the Prophet) का शुक्र अदा किया जाता है।

इस्लाम

इस्लाम की उत्पत्ति **सातवीं शताब्दी ईस्वी** में **अरब प्रायद्वीप में हुई थी।**

- अल्लाह द्वारा भेजे गए**, हजरत मूसा और इब्राहीम ईसा** आदि जैसे पैगंबरों की लंबी कतार में **पैगंबर मुहम्मद आखिरी पैगंबर** थे।

पैगंबर मुहम्मद

- पैगंबर मोहम्मद का जन्म **571 ईस्वी में अरब के कुरैश कबीले** में हुआ था। वह **622 ईस्वी** में **मक्का से मदीना चले गए** और यहीं से **हिजरी संवत् की शुरुआत हुई।**
- पैगंबर की मक्का वापसी की यात्रा वह पवित्र मार्ग है जो **हज बन गया** और प्रत्येक मुसलमान को अपने जीवनकाल में एक बार यह तीर्थयात्रा करनी होती है।

इस्लाम के सिद्धांत

- इस्लाम **समानता, भाईचारे** और **एक अल्लाह (ईश्वर) के अस्तित्व की बात पर बल देता है।**
- इसके पाँच **मूलभूत सिद्धांत** हैं– **तौहीद** (अल्लाह में विश्वास), **नमाज** (दिन में पाँच बार), **रोजा** (रमजान के महीने में उपवास), **जकात** (दान देना) और **हज** (मक्का की तीर्थयात्रा)।
- **इस्लाम के विभिन्न संप्रदाय:** यद्यपि इस्लाम में विभिन्न संप्रदाय हैं, लेकिन दो प्रमुख उप-विभाजन हैं–
  - **शिया**– उनका दावा है कि पैगंबर के दामाद अली उनके उत्तराधिकारी थे।
  - **सुन्नी**– उनका मानना है कि उत्तराधिकारी पैगंबर के करीबी लोगों में से होना चाहिए और जो अबू बक्र जैसे उनके शुरुआती अनुयायी ही थे।
- हालाँकि, भारत में अधिकांश मुसलमान सुन्नी हैं, कुछ स्थानों पर शिया मुसलमान भी मौजूद हैं।
- **इस्लाम की पवित्र पुस्तक:** कुरान, पैगंबर की मृत्यु से पहले संकलित की गई थी।

सूफ़ीवाद से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण शब्द

शब्द	विवरण
तारिका	सूफी संप्रदाय या आध्यात्मिक मार्ग; सूफी अनुयायियों द्वारा अपनाई जाने वाली शिक्षाओं, प्रक्रियाएँ और अनुष्ठानों की एक प्रणाली।
शेख़	सूफीवाद में एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक या गुरु जो शिष्यों को आध्यात्मिक ज्ञान की ओर ले जाता है।
दरवेश	सूफी संप्रदाय का एक सदस्य जो तप में संलग्न रहता है और आध्यात्मिक प्रक्रियाओं के माध्यम से ईश्वर के निकटता की खोज करता है।
ज़िक्र	ईश्वर के स्मरण का अभ्यास, जिसमें दिव्य नामों या प्रार्थनाओं की पुनरावृत्ति शामिल होती है।
फ़ना	ईश्वर के प्रति स्वयं का पूर्ण समर्पण; सूफीवाद में अंतिम आध्यात्मिक लक्ष्य, जहाँ व्यक्तिगत अहंकार विलीन हो जाता है।
बाटा	सूफियों द्वारा अनुभव की गई आध्यात्मिक आत्म-विभोर की स्थिति, जो ईश्वर के प्रति गहरी भक्ति और जुड़ाव के परिणामस्वरूप होती है।
समा	आध्यात्मिक परमानंद प्राप्त करने के लिए भक्ति की स्थिति में संगीत, कविता सुनने या जप करने की सूफी प्रथा।

Search On TG: @abhra_pdf

वली	"ईश्वर का मित्र"; सूफीवाद में एक संत जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने ईश्वर से उच्च स्तर की निकटता प्राप्त कर ली है।
मुराकाबा	सूफीवाद में ध्यान का एक रूप, जहां अभ्यासकर्ता ईश्वर के साथ अपने संबंध को गहरा करने के लिए आंतरिक रूप से ध्यान केंद्रित करते हैं।
सिलसिला	आध्यात्मिक वंश या उत्तराधिकार की एक शृंखला, जिसके माध्यम से सूफीवाद की शिक्षाएँ आगे बढ़ाई जाती हैं।
हिक्मा	दिव्य बुद्धि या ज्ञान, जो अक्सर सूफी शिक्षाओं से जुड़ा होता है।
कव्वाली	भक्तिपूर्ण सूफी संगीत और गायन का एक रूप, जो विशेष रूप से दक्षिण एशिया में लोकप्रिय है, जिसका उपयोग ईश्वर के प्रति प्रेम व्यक्त करने के लिए किया जाता है।
एहसान	सूफीवाद में आस्था और भक्ति का उच्चतम स्तर, जहां कोई इस तरह पूजा करता है मानो ईश्वर को देख रहा हो और ईश्वर उसे देख रहा है।
रुह	सूफ़ी शिक्षाओं में आत्मा या रूह को प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक दिव्य चिंगारी के रूप में देखा जाता है जो उन्हें ईश्वर से जोड़ती है।
जलाल	ईश्वर की "महिमा", सूफी विचारधारा में ईश्वर की अत्यधिक शक्ति और महानता को संदर्भित करता है।
जमाल	ईश्वर की "सुंदरता", सूफी रहस्यवादियों द्वारा अनुभव किए गए ईश्वर के प्रेम, सुंदरता और सौम्यता पर बल देती है।

सिख धर्म

सिक्खों का ऐसा मानना है कि ईश्वर ने गुरु नानक को उनके धर्म के बारे में बताया था। ईश्वर निराकार, निर्भय, और जन्म-मृत्यु से परे है। आमतौर पर सिखों के दस गुरु माने जाते हैं। माना जाता है कि गुरुनानक की आत्मा सभी गुरुओं में रची बसी हुई है। इस प्रकार, सभी गुरुओं में एक ही आत्मा का वास था।

सिख धर्म के सिद्धांत

- मानवीय अस्तित्व का अंतिम उद्देश्य **मोक्ष प्राप्त करना है** और इसे मूर्तियों या पुस्तकों की पूजा से नहीं, बल्कि **सम्यक विश्वास, सम्यक उपासना** और **सम्यक आचरण से प्राप्त किया जा सकता है।**
- **गुरु नानक ने सामूहिक उपासना** के माध्यम से अपने अनुयायियों के सामुदायिक जीवन को नियंत्रित किया। उन्होंने **सामुदायिक रसोई (लंगर)** जैसे उपासना के नए रूप भी विकसित किए।
- उन्होंने अपने अनुयायियों से संन्यासी जीवन जीने के लिए नहीं कहा, बल्कि एक **आदर्श व्यक्ति की तरह जीवन जीने के लिए कहा,** जो मेहनत करके **अपना घर चलाता है तथा संगत** और **कीर्तन में शामिल होता है।**
- **सिख धर्म का** मानना है कि व्यक्ति संगीत के माध्यम से समाधि प्राप्त कर सकता है।

सिख धर्म के गुरु

- **गुरु नानक** दस सिख गुरुओं में से **पहले गुरु** थे।
- दूसरे सिख गुरु, **गुरु अंगद ने गुरुमुखी लिपि** विकसित की थी।
- पाँचवें गुरु, **गुरु अर्जन देव ने सिखों** को तीन चीजें दीं–
  - **आदि ग्रंथ,** जिसमें पाँच गुरुओं और अन्य सहयोगी संतों की वाणी शामिल है।
  - **मानकीकृत गुरुमुखी लिपि,** जिसमें आदि ग्रंथ सबसे पहले लिखा गया था।
  - अमृतसर में **हरमंदिर साहब या स्वर्ण मंदिर** और **अकाल तख्त** का स्थान निर्धारित किया और उसकी नींव रखी।
- छठे गुरु, **गुरु हरगोबिंद,** आध्यात्मिक **(पीरी)** और लौकिक **(मीरी)** सत्ता की प्रतीक दो तलवारों को धारण करने वाले पहले **व्यक्ति थे।**
  - उन्होंने दैनिक व्यापार और रक्षा के लिए **अकाल तख्त** और **लोहगढ़ किले का निर्माण कराया।**
- दसवें गुरु, **गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा** (सिख योद्धा समुदाय) की **स्थापना** की।
  - उन्होंने सिखों को **पाँच प्रतिज्ञाएँ लेने के लिए भी कहा,** अर्थात् **केश** (लंबे बाल और दाढ़ी), **कंघा** (कंघी), **कड़ा** (एक धातु का कड़ा), **कृपाण** (एक तलवार) और **कच्छा** (घुटने से थोड़ा ऊपर तक फैला हुआ अधोवस्त्र) धारण करना।
  - उन्होंने आगे यह घोषणा की कि उनकी मृत्यु के बाद **गुरु ग्रंथ साहिब ही** सिखों के **गुरु** होंगे।
- **गुरु ग्रंथ साहिब में** सिख गुरुओं की शिक्षाओं के अलावा, **रामानंद, नामदेव, कबीर** और **शेख फरीद जैसे कई भक्ति कवियों और सूफी संतों के दोहे भी शामिल हैं।**

पंज प्यारे (Panj Pyare): यह शब्द **पाँच प्यारों के लिए प्रयोग किया जाता है, अर्थात्** वे लोग जिन्हें **गुरु गोबिंद सिंह के मार्गदर्शन में खालसा** (सिख धर्म का भाईचारा) में **दीक्षित किया गया था।**

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

8 भारतीय साहित्य एवं भाषा

भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

संस्कृत साहित्य

वैदिक साहित्य

वेद	संबद्ध ब्राह्मण	संबद्ध अरण्यक	संबद्ध उपनिषद
ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकि ब्राह्मण	ऐतरेय आरण्यक, कौषीतकि आरण्यक	ऐतरेय उपनिषद, कौषीतकि उपनिषद
यजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण	तैत्तिरीय आरण्यक, बृहदारण्यक आरण्यक	बृहदारण्यक उपनिषद, तैत्तिरीय उपनिषद
सामवेद	जैमिनीय ब्राह्मण, कौथुम ब्राह्मण	आरण्यक (सामवेद का)	छान्दोग्य उपनिषद, केन उपनिषद
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण	आरण्यक (अथर्ववेद का)	प्रश्नों उपनिषद, मुंडक उपनिषद, मांडूक्य उपनिषद

वेद: वेद चार हैं।

- **ऋग्वेद सबसे पुराना** वेद है, इसमें विभिन्न देवताओं और प्राकृतिक शक्तियों को समर्पित **स्तोत्र शामिल हैं।**
- **सामवेद मुख्य रूप से** धार्मिक अनुष्ठानों और यज्ञों के दौरान गाए जाने वाले मंत्रों और **धुनों** का संग्रह है। इसलिये इसे **'भारतीय संगीत का जनक'** भी कहा जाता है।
- **यजुर्वेद** अनुष्ठानों **और यज्ञों से संबंधित है।**
- **अथर्ववेद में** उपचार और सुरक्षा सहित दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़े कई **मंत्र, तंत्र और जादू-टोना शामिल हैं।** अथर्ववेद से जुड़े हुए **'मुंडकोपनिषद'** ग्रंथ में **'सत्यमेव जयते'** शब्द का उल्लेख मिलता है।

शास्त्रीय संस्कृत साहित्य

- **पुराण: पुराणों को वेदों के सत्य को स्पष्ट करने और समझाने** के लिए लिखा गया था। **18 प्रमुख पुराण** हैं जिनके नामों की खोज **तीसरी शताब्दी ई. के बाद हुई।** इन महापुराणों की लोकप्रियता ने एक अन्य उप-शैली, उपपुराण या लघु पुराण को जन्म दिया।
- **ब्राह्मण ग्रंथ:** यह वेदों की **कर्मकांडीय या अनुष्ठानिक** व्याख्या करते है।
- **आरण्यक:** यह वेदों की **गूढ़ एवं रहस्यपरक** व्याख्या करते है।
- **उपनिषद:** यह वेदों की **दार्शनिक** व्याख्या करते है। इन्हें **'वेदांत'** भी कहा जाता है।
- **महाकाव्य:** ये लंबे काव्य हैं जिनमें आम तौर पर वीर गाथाओं का वर्णन है, जो प्रायः **पौराणिक कथाओं** या ऐतिहासिक घटनाओं से ली गई हैं, जैसे- **रामायण** और **महाभारत।**

महाभारत: इसका संकलन **वेद व्यास ने संस्कृत** में किया था।
- प्रारंभ में, इसमें **8,800 छंद थे** और इसे **जय संहिता (विजय** की कहानी) कहा जाता था, और बाद में कुल छंद बढ़कर 24,000 हो गए तथा प्रारंभिक वैदिक कबीलों के नाम पर इसका नाम **'भारत' रखा गया।**
- वर्तमान संस्करण में 1,00,000 छंद हैं जो 10 अध्यायों में विभाजित हैं, जिन्हें **'पर्व'** के नाम से जाना जाता है।
- **इसमें भागवत गीता** नामक एक महत्त्वपूर्ण हिंदू ग्रंथ भी शामिल है।

रामायण: इसका पहला संस्करण ऋषि **वाल्मिकी ने** संकलित किया **जिसे प्रायः आदिकाव्य** कहा जाता है, जो दर्शाता है कि यह अपनी तरह का पहला काव्य है। इसे **सात खंडों में** विभाजित किया गया है।

संस्कृत नाटक

- **राजतरंगिणी: कल्हण ने** राजतरंगिणी की रचना **12वीं सदी के मध्य** में की थी जिसमें कश्मीर के राजाओं का एक सजीव चित्रण है। इस ग्रंथ में **कर्कोटा, वर्मन** और **यशस्कर** राजवंश का उल्लेख है।
- **कथासरित्सागर: इसकी रचना सोमदेव द्वारा 11वीं शताब्दी ई. में की गई थी। इसे 'कहानियों की धाराओं का महासागर (Ocean of the Streams of Stories)'** भी कहा जाता है। इस ग्रंथ में तत्कालीन कश्मीर के त्रासदीपूर्ण इतिहास को दर्शाया गया है।

कालिदास की रचनाएँ	
कालिदास (380-415 ई.) गुप्त काल (चंद्रगुप्त द्वितीय के समकालीन) के प्रसिद्ध संस्कृत कवि और नाटककार थे।	
अभिज्ञानशाकुंतलम्	इसमें **शकुंतला** और **राजा दुष्यंत** की कथा है।
विक्रमोर्वशीयम्	इसमें **उर्वशी** और **राजा विक्रम के प्रेम और मिलन** की कथा है।
मालविकाग्निमित्रम्	• शुंग राजा **अग्निमित्र** और दासी **मालविका की प्रेम कथा है।** • इसमें **पुष्यमित्र शुंग** द्वारा किए गए **राजसूय यज्ञ का विवरण है।**
रघुवंश	इसमें **भगवान राम के वंश अर्थात् रघु** वंश का वर्णन है।

Search On TG: @apna_pdf

कुमारसंभव	इसमें शिव और पार्वती के पुत्र **कार्तिकेय** के जन्म का चित्रण है।
मेघदूत	यह **दूत के रूप में बादल की** यात्रा पर केंद्रित है।

- **शूद्रक (पाँचवीं शताब्दी ईस्वी):** उन्होंने **मृच्छकटिकम्** (मिट्टी की छोटी गाड़ी), **वीणावासवदत्ता** और **भाण** (एक लघु एकांकी एकालाप) की रचना की है।

> **मृच्छकटिकम्** एक **संस्कृत सामाजिक नाटक है**। यह चारुदत्त नामक एक व्यापारी की कहानी है जो वसंतसेना नामक एक अमीर वेश्या के प्रेम में पड़ जाता है। **[UPSC 2003]**
>
> मृच्छकटिकम् के पहले चार अंक वस्तुतः भास के अधूरे नाटक चारुदत्तम के संबंधित अंकों की नकल हैं।

- **भास (दूसरी-तीसरी शताब्दी ईस्वी):** उन्होंने 13 नाटक लिखे जो 20वीं शताब्दी की शुरुआत में खोजे गए। इनमें सबसे लोकप्रिय नाटक **स्वप्नवासवदत्ता है** जिसमें कौशांबी के राजा **उदयन** और **वासवदत्ता** (अवंती की राजकुमारी) के प्रेमाख्यान का वर्णन है।
- **भास** द्वारा रचित **उरुभंग, भीम** के साथ युद्ध और उसके बाद की **दुर्योधन** की कहानी है।
- **उत्तर-रामचरितम्:** यह **भवभूति** द्वारा रचित **सात अंकों का संस्कृत नाटक है**। इसमें **भगवान राम** के वनवास से लौटने के बाद के जीवन का चित्रण है।
- **मुद्राराक्षस: विशाखदत्त (चौथी शताब्दी ईस्वी)** द्वारा रचित संस्कृत नाटक है, इसमें **चाणक्य** की सहायता से राजा **चंद्रगुप्त मौर्य के** सत्ता में आने का वर्णन है।
- **देवी चंद्रगुप्तम:** यह **विशाखदत्त** द्वारा रचित एक **राजनीतिक नाटक है**। यह नाटक **राजा रामगुप्त द्वारा** घेराबंदी के दौरान अपनी रानी **ध्रुवदेवी को** आक्रमणकारी शत्रु शक को सौंपने के निर्णय के बारे में है।

> देवी चंद्रगुप्तम से प्रत्यक्षतः लिया गया एक **फारसी नाटक** 11वीं शताब्दी की पांडुलिपि **मजमल-उत-तवारीख में पाया गया है।**

हर्ष की रचनाएँ

रत्नावली	**यह राजकुमारी रत्नावली** और **राजा उदयन** के चरित्र पर केंद्रित एक संस्कृत नाटक है। इस नाटक में **होली** उत्सव का **आरंभिक दस्तावेज़ी संदर्भ मिलता है।**
नागनंद	यह एक संस्कृत नाटक है जिसमें एक दैवीय जादूगर राजकुमार **जिमुतवाहन** और उनके द्वारा **नागाओं** की रक्षा के लिए किये गए निःस्वार्थ कार्य का वर्णन है। • इस पाठ में नंदी छंद के भीतर बुद्ध का आह्वान भी शामिल है।
प्रियदर्शिका	यह एक संस्कृत नाटक है जिसमें **राजा उदयन** और सम्राट दृधवर्मन की पुत्री **प्रियदर्शिनी** के मिलन का उल्लेख है।

गीत गोविंद (12वीं शताब्दी): इसकी रचना **जयदेव ने की थी और इसमें कृष्ण** और **राधा** के प्रेम का वर्णन है।

> **विष्णु शर्मा** की **पंचतंत्र** और **नारायण पंडित** की **हितोपदेश** जैसी उपदेशात्मक दंतकथाएँ शास्त्रीय संस्कृत साहित्य का हिस्सा हैं, जो व्यावहारिक ज्ञान और सलाह प्रदान करती हैं।

संस्कृत में बौद्ध धर्मग्रंथ

- **अश्वघोष** द्वारा रचित 'बुद्धचरित' **दूसरी शताब्दी के प्रारंभ** का है। यह **गौतम बुद्ध** के जीवन पर लिखा गया एक महाकाव्य है।
- **महाविभाष शास्त्र 150 ई.** में लिखा गया एक **महायान ग्रंथ है जिसमें अन्य गैर-बौद्ध दर्शनों की** भी चर्चा है।
- **कमल सूत्र को 'सद्धर्म पुंडरीक सूत्र'** के नाम से भी जाना जाता है। यह महायान बौद्ध धर्म का एक प्रमुख ग्रंथ है।
- **अभिधर्मकोश की रचना वसुबंधु** ने की थी। इसमें अभिधर्म पर चर्चा (कानून पर टीकाएँ) शामिल है।
- **उदानवर्ग में बुद्ध** और उनके शिष्यों के उपदेशों का संकलन है।

संस्कृत में जैन ग्रंथ

- **उपमितिभव प्रपंच कथा:** इसकी रचना **सिद्धरासी ने 906 ई. में की थी और इसे प्रायः 'उपमिति भव** की कथा' कहा जाता है।
- **तत्त्वार्थ-सूत्र की** रचना **उमास्वाति ने दूसरी से पाँचवीं शताब्दी ईस्वी** के दौरान की थी। इसमें तर्क, ज्ञानमीमांसा, नैतिकता और खगोल विज्ञान जैसे विषयों का वर्णन है। दिगंबर और श्वेतांबर दोनों संप्रदायों ने इस ग्रंथ को स्वीकार किया है।
- **शांतिनाथ चरित्र 16वें तीर्थंकर शांतिनाथ** से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण जैन ग्रंथ है, जो संस्कृत में लिखा गया है और **यूनेस्को के वैश्विक धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त है।**
- **आदिपुराण** की रचना दिगंबर भिक्षु **जिनसेन** ने की है। इसमें पहले बाईस तीर्थंकरों के जीवन का वर्णन है।
- **समंतभद्र (दिगंबर विद्वान) की कृतियाँ**
  - रत्नकरंड श्रावकाचार
  - **आप्तमीमांसा** एक ग्रंथ है, इसमें यथार्थ के जैन दृष्टिकोण की चर्चा है, जो सर्वज्ञानी की अवधारणा और उसके गुणों से संबंधित है।
- **आचार्य जिनसेन (दिगंबर साधु) की कृति-** महापुराण और हरिवंशपुराण।

पालि और प्राकृत साहित्य

उत्तर-वैदिक युग में साहित्य का विस्तार संस्कृत से आगे बढ़कर प्राकृत और **पालि** भाषाओं में भी लिखा जाने लगा। बौद्धों और जैनियों द्वारा रचित धार्मिक ग्रंथों की रचना में दोनों भाषाओं को प्रमुखता मिली।

बौद्ध साहित्य

बौद्ध साहित्य को मोटे तौर पर विहित/शास्त्रीय और गैर-विहित/अशास्त्रीय (Canonical and Non-canonical) साहित्य में वर्गीकृत किया गया है।

विहित साहित्य

बौद्ध साहित्य में **'त्रिपिटक/तिपिटक'** शामिल है, जो **पालि** में लिखे गए हैं। ये तीन भागों में विभाजित है–

- **विनय पिटक** में मठ संबंधी नियम और बौद्ध भिक्षुओं के आदेश शामिल हैं। इसकी रचना उपालि ने की थी।
- **सुत्त पिटक** बुद्ध की शिक्षाओं का संग्रह है। दीर्घ निकाय और खुद्दक निकाय इससे संबंधित महत्त्वपूर्ण निकाय है। इसे बुद्ध के शिष्य आनंद द्वारा संकलित किया गया है

Search On TG: @apna_pdf

- **अभिधम्म पिटक** में नैतिकता, मनोविज्ञान या ज्ञान के सिद्धांत से संबंधित विभिन्न विषयों को स्पष्ट किया गया है। मोगलिपुत्रतिस्स द्वारा रचित।
- **बौद्ध गैर-विहित साहित्य:** बौद्ध गैर-विहित साहित्य का एक प्रमुख उदाहरण **'जातक' है। जातक कथाओं में** बुद्ध के पिछले जन्मों का वर्णन है।

बौद्ध ग्रंथ	
दीपवंश	• यह **ईसा पूर्व तीसरी-चौथी शताब्दी में अनुराधापुर** (श्रीलंका) में लिखा गया था। • इसमें **श्रीलंका में बौद्ध धर्म** का ऐतिहासिक विवरण है और बुद्ध की श्रीलंका यात्रा व बुद्ध के अवशेषों का वर्णन है।
मिलिंद-पन्हो	इस पुस्तक में **मेंडर** (या मिलिंद) और बौद्ध भिक्षु **नागसेन** के बीच दार्शनिक संवाद का उल्लेख है।
महावंश	• यह तीसरी-चौथी शताब्दी ईसा पूर्व का एक श्रीलंकाई **पालि वृत्तांत** है। • इसमें **दक्षिण एशिया के** विभिन्न साम्राज्यों का ऐतिहासिक विवरण है।
महावस्तु	इसमें संस्कृत, **पालि** और प्राकृत में लिखी गई **जातक** और **अवदान कथाएँ** शामिल हैं।
ललितविस्तार सूत्र ('पूर्ण नाटक')	यह एक **महायान ग्रंथ है,** इसमें सारनाथ में बुद्ध के पहले उपदेश तक **उनके जीवन से** संबंधित विभिन्न कथाओं का वर्णन है।
उदान	यह सबसे पुराने **थेरवाद ग्रंथों में से एक है और इसमें 'अंधे आदमी** और **हाथी**' की कहानी शामिल है।
बोधि वंश	**यह दसवीं शताब्दी ईस्वी में** श्रीलंका में **पालि** में **उपतिस्स** द्वारा लिखा गया एक गद्य-काव्य है।
विशुद्धिमग्ग	यह पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में **श्रीलंका में बुद्धघोष** द्वारा लिखा गया एक **थेरवाद ग्रंथ है।** इसमें बुद्ध की विभिन्न शिक्षाओं पर चर्चा शामिल है।

- **सर्वास्तिवाद विनय:** यह संघभूति द्वारा रचित है जो, एक भारतीय बौद्ध भिक्षु जिन्होंने चौथी शताब्दी ईस्वी के अंत में चीन की यात्रा की थी।

[UPSC 2024]

जैन साहित्य

जैन साहित्य आम तौर पर **प्राकृत, अर्ध मागधी, संस्कृत आदि में लिखा गया है। उन्हें जैन आगम या अगम नामक विहित** या धार्मिक ग्रंथों और **गैर-विहित** साहित्यिक कृतियों में विभाजित किया गया है।

जैन आगम प्राकृत में लिखे गए विहित **धार्मिक ग्रंथ हैं** जिनमें **जैन तीर्थंकरों** की **शिक्षाएँ शामिल हैं।**

- प्रारंभ में, गणधरों-महावीर के प्रमुख अनुयायियों-ने उन्हें **संकलित किया था।**
- वर्तमान **अंग** (आगमों का एक उपसमूह) को **पाँचवीं शताब्दी के मध्य** में **गुजरात के वल्लभी** में आयोजित **श्वेतांबर संप्रदाय** के भिक्षुओं की एक **परिषद में पुन: संकलित किया गया।**
- दिगंबर **आगम को अस्वीकार करते हैं।**
- आगम में 46 ग्रंथ शामिल हैं– 12 **अंग**, 12 **उपांग**, 10 **प्रकीर्णकसूत्र**, 4 मूलसूत्र, 6 छेदसूत्र और 2 चूलिकासूत्र।
- 12 **अंग** हैं– आचारांग सूत्र; सूत्रकृतांग; स्थानांग सूत्र; समवायंग सूत्र; व्याख्याप्रज्ञाप्ति या भगवती सूत्र; उपासकदशांग; अंतकृत् दशा; अनुत्तरोपपातिक दशा; प्रश्नव्याकरणानि; विपाकाश्रुत; और दृष्टिवाद।

प्राकृत जैन कृतियाँ

गाथा सप्तशती	इसमें 700 छंद हैं, जिसमें राजा हाल द्वारा रचित 44 छंद भी शामिल हैं। अन्य छंदों की रचना महिला कवयित्रियों ने की। इसे प्राय: '**कामसूत्र**' के विपरीत माना जाता है।
उवसग्गहरं स्तोत्र	इसकी रचना **आचार्य भद्रबाहु ने की थी**। यह तेईसवें तीर्थंकर **पार्श्वनाथ की आराधना है।**
कल्पसूत्र	यह एक **श्वेतांबर धार्मिक** ग्रंथ है जो आंशिक रूप से **गद्य में** और आंशिक रूप से **पद्य में लिखा गया है।**
कालकाचार्य कथा	इसमें श्वेतांबर संप्रदाय के महान जैन मुनि कालकाचार्य और उनकी बहन की कथा है।

आचार्य कुंदकुंद की कृतियाँ

- **समयसार में** कर्म, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष जैसी जैन अवधारणाओं की व्याख्या की गई है।
- **नियमसार** में मोक्ष के मार्ग की चर्चा की गई है।

जैन ग्रंथ **भगवती सूत्र** को भगवान महावीर की जीवनी माना जाता है।

पारसी साहित्य

जेंदा-अवेस्ता धार्मिक मान्यताओं, प्रथाओं और मार्गदर्शन पर आधारित विविध लेखों का संकलन है। यह **अवेस्तान में लिखा गया था**, जो संस्कृत से संबंधित भाषा है और अब विलुप्त हो चुकी है।

डेनकार्ड (DENKARD): इसे **पारसी धर्म का विश्वकोश** माना जाता है और इसमें विभिन्न पुस्तकों का संकलन है। इसकी रचना **दसवीं शताब्दी ई. में हुई थी।**

बुंदाहिशं (BUNDAHISHN): यह ग्रंथ धार्मिक सृजनवाद सिद्धांत के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

सिख साहित्य

आदि ग्रंथ: इसे पाँचवें गुरु, **गुरु अर्जन देव** के तत्वावधान में **1604 इस्वी** में **भाई गुरदास** द्वारा **गुरुमुखी लिपि** में लिखा गया था। यह **गुरु ग्रंथ साहिब** का **पूर्ववर्ती है** और इसमें सिख गुरुओं तथा भक्ति और सूफी परंपराओं के पंद्रह भगतों की शिक्षाएँ शामिल हैं।

गुरु ग्रंथ साहिब: यह **आदि ग्रंथ का विस्तार है जिसका कार्य वर्ष 1678** में दसवें गुरु, **गुरु गोविंद सिंह के** तत्वावधान **में किया गया। इसे** सिखों का **11वाँ और अंतिम आध्यात्मिक गुरु** माना जाता है।

- यह **गुरुमुखी लिपि** और '**संत भाषा**' में लिखा गया है। संतभाषा में पंजाबी, अपभ्रंश, हिंदी, ब्रजभाषा, संस्कृत, खड़ीबोली और फारसी के शब्द शामिल हैं।
- इस ग्रंथ में रामानंद, नामदेव, रविदास, परमानंद, सैन, सूरदास, कबीर और बाबा फरीद जैसे **तेरह भक्ति संतों** की शिक्षाएँ शामिल हैं, जिन्हें **'भगत'** या भक्त कहा जाता है।

Search On TG: @apna_pdf

दशम ग्रंथ: यह गुरु गोबिंद सिंह द्वारा लिखित भजनों का संकलन है। इस संकलन में दंतकथाएँ और पौराणिक कहानियाँ शामिल हैं, जिनमें कुछ भजन दैनिक प्रार्थनाओं का हिस्सा हैं जिन्हें **'नितनेम'** के नाम से जाना जाता है।

जन्मसाखियाँ: इन पुस्तकों में **गुरु नानक** (प्रथम गुरु) के जीवन के बारे में **पौराणिक कहानियाँ हैं।**

अरदास गुरुद्वारों में दैनिक अनुष्ठानों के दौरान की जाने वाली प्रार्थना है। इन्हें गुरु ग्रंथ साहिब के खुलने और बंद होने के दौरान पढ़ा जाता है।

द्रविड़ साहित्य

द्रविड़ साहित्य में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषाएँ शामिल हैं, जो सभी संस्कृत से प्रभावित हैं।

तमिल साहित्य

प्रारंभिक शास्त्रीय तमिल साहित्य को **संगम साहित्य कहा जाता है।** संगम शास्त्रीय साहित्य (Sangam Classics) में 473 कवियों द्वारा लिखी गई 18 रचनाएँ (आठ गीत संग्रह और दस लंबी कविताएँ) शामिल हैं, इन कवियों में 30 महिलाएँ थीं। संगम साहित्य में मुख्य रूप से **दो कवि संप्रदाय हैं**–

- **अहम् व्यक्तिपरक प्रेमकाव्य** है जो प्रेमी की व्यक्तिपरक भावनाओं से संबंधित है।
- **पुरम वस्तुनिष्ठ और जनकाव्य** है जो सभी प्रकार की भावनाओं से संबंधित है, मुख्य रूप से राजाओं के पराक्रम और गौरव, तथा अच्छाई और बुराई के विषय से सम्बंधित है।

संगम साहित्य में वर्ण के सामाजिक वर्गीकरण का उल्लेख मिलता है। इसमें **अराशर** (राजा), **वैशियार** (व्यापारी) और **वेल्लार** (किसान) का उल्लेख किया गया है। **[UPSC 2022]**

संगम साहित्य को मोटे तौर पर **दो समूहों में वर्गीकृत किया गया है**– कथात्मक और उपदेशात्मक।

कथात्मक (आख्यान)	उपदेशात्मक
• इन ग्रंथों में **मेलकणक्कु,** या **अठारह प्रमुख रचनाएँ शामिल हैं,** जिनमें **एट्टुथोगई,** आठ लंबी कविताओं का संग्रह, और **पत्तुप्पातु,** दस छोटी कविताओं का संग्रह शामिल हैं। • ये कथात्मक ग्रंथ **वीरगाथा** पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसमें नायकों और युद्धों का महिमामंडन किया जाता है, साथ ही दक्षिण भारत में राज्य निर्माण की प्रक्रिया के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते है।	• इन ग्रंथों में **किल्लकणक्कु,** या **तिरुकुरल** और **नलदियार** सहित **अठारह लघु रचनाएँ शामिल हैं।** • इन रचनाओं में **राजाओं** और **समाज** के लिए **आचार संहिता निर्धारित की गई है** तथा ये विभिन्न सामाजिक वर्गों और व्यवसायों पर प्रकाश डालते हैं।

संगम साहित्यिक संग्रह में कई महत्त्वपूर्ण रचनाएँ शामिल हैं, जिनमें तोलकाप्पियम, एट्टुथोगई, पत्तुप्पातु, पाथिनेनकिलकणक्कु तथा **शिलप्पादिकारम** और मणिमेखलई महाकाव्य प्रमुख हैं।

तोलकाप्पियम्: यह **सबसे प्रारंभिक तमिल साहित्यिक कृति थी,** जिसकी रचना ऋषि **तोलकाप्पियार** या **तोल्कप्पियम पेरियाथर ने की थी।** यह प्रारंभिक तमिल काव्य को समझने के लिए एक **व्याकरण ग्रंथ है।**

तोलकाप्पियम् को तीन पुस्तकों में विभाजित किया गया है– **एलुट्टातिकारम** (तमिल लिपि और स्वर विज्ञान से संबंधित), **सोल्लातिकारम** (तमिल **व्याकरण** और **आकृति विज्ञान पर केंद्रित**), और **पोरुलातिकारम (साहित्य की** विषय वस्तु पर प्रकाश डालती है)।

एट्टुथोगई: यह शास्त्रीय तमिल काव्य संग्रह है, और **'एट्टुथोगई' का** अंग्रेजी में अनुवाद **'एट एंथोलॉजीज' (Eight Anthologies) है।** इसके **आठ संकलन**– ऐंगुरुनूरू, नारिनई, अगनानूरू, पुराणनूरू, कुरुन्थोगई, कलिथोगई, परिपादल और पदिरूप्पात्तु हैं।

पत्तुप्पात्तु या **दस लंबी कविताओं** में निम्नलिखित शामिल हैं–

कुरिन्सिप्पातु, पोरुनाररुप्पातई, सिरुपानारुप्पातई, पेरुम्पनारुप्पातई, मट्रैक्कांसी, मलाइपतुकातम, पट्टिनाप्पलाई, मुल्लाइप्पात्तु, नेतुनलवतई और तिरुमुरुकररुप्पातई।

पाथिनेन्किल्कणक्कु में अठारह ग्रंथ शामिल हैं जिनमें प्रेम, **नैतिकता,** युद्ध और प्राचीन तमिल समाज की **सामान्य जीवन शैली** सहित कई विषय शामिल हैं।

शिलप्पादिकारम: इसकी **रचना इलंगो अडिगल ने की थी।** यह प्रेम (**कोवलन** और **कन्नगी** की प्रेम कहानी), विश्वासघात और न्याय की कहानी है जो **तीन कंतम** या पुस्तकों में संकलित है।

- इस ग्रंथ में **जैन दर्शन के भाव भी शामिल हैं।**

मणिमेखलई: यह एक शास्त्रीय तमिल महाकाव्य है जिसे **तमिल साहित्य के पाँच महान महाकाव्यों में गिना जाता है।**

- इसकी रचना कवि **सत्तनार ने की थी** और यह प्रसिद्ध तमिल महाकाव्य **शिलप्पादिकारम का उत्तर ग्रंथ था।**
- इसमें **बौद्ध धर्म** से संबंधित विषयों को प्रमुखता से शामिल किया गया है।

मलयालम साहित्य

भक्ति आंदोलन के उन्नायक **एषुत्तच्छन् (Ezhuthachan)** मलयालम साहित्य के जनक हैं।

- **कोकासंदिसन** मलयालम साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण कृति है।
- **भास कौटिल्य** राजनीति और अर्थशास्त्र पर प्राचीन भारतीय ग्रंथ **'अर्थशास्त्र'** पर एक टीका है।
- **रामचरितम् की रचना 13वीं शताब्दी में प्राचीन मलयालम कवि चीरामन ने की थी। इस काव्यकृति में भगवान राम और उनके साहसिक कार्यों का वर्णन है।**

तेलुगु साहित्य

नन्नय (11वीं शताब्दी) को तेलुगु **का पहला कवि माना जाता है।** हालाँकि, **विजयनगर काल** के दौरान तेलुगु साहित्य **अपने चरम पर पहुँच गया था।**

तेलुगु साहित्य की कुछ प्रमुख रचनाएँ

- **उत्तरहरिवंशम्:** इसकी रचना **राजा बुक्का प्रथम के** प्रसिद्ध दरबारी कवि **नचना सोमनाथ ने की थी।**
- **मनु चरित्र: इसकी रचना अल्लासानि पेद्दाना** (जिसे आंध्र कविता पितामहदु के नाम से भी जाना जाता है) ने की थी।
- **पारिजातपहारनमु: इसकी रचना नंदी थिम्मन ने की थी।**

Search On TG: @apna_pdf

- **पांडुरंग महात्म्यम्: इसकी रचना तेनाली रामकृष्ण** (एक दरबारी विदूषक और कवि जिनके बारे में कहा जाता है कि उनका राजा कृष्ण देवराय के साथ घनिष्ठ संबंध था) ने की थी।
- **वसुचरित्रम् और नरसाभूपालेयमु: इसकी रचना रामराज भूषणुडु** (जिन्हें भट्टमूर्ति के नाम से भी जाना जाता है) ने की थी।
- **नलोपाख्यानमु:** इसकी रचना **हरिश्चंद्र** ने की थी।
- **राजशेखरचरित्र:** इसकी रचना **मदय्यागरी मल्लाना ने की थी। इसमें अवंती** साम्राज्य के **राजा राजशेखर** के प्रेम और युद्ध का वर्णन है।
- **रामभूदयामु:** इसकी रचना अय्यालाराजू रामभद्रुडु ने की थी।
- नन्नया, टिक्कन और प्रगदा ने मिलकर ने तेलुगु महाभारत की रचना की।

कृष्णदेवराय एक महान विद्वान और साहित्य के संरक्षक थे।

- उनके दरबार में आठ निपुण तेलुगु कवि रहते थे, जिन्हें सामूहिक रूप से '**अष्टदिग्गज**' कहा जाता था।
- उन्होंने **हरिदास** (एक तमिल कवि) और मल्लनार्य, चतु विट्ठलनाथ और थिम्मन जैसे **कन्नड़ कवियों को संरक्षण दिया।**
- अपने कलिंग अभियान के दौरान, उन्होंने **अमुक्तमाल्यद की रचना की, जिसमें** उनके सपने में आए **भगवान विष्णु** का वर्णन है।
- उन्होंने **कृष्ण देव रायण दिनाचारी** (कन्नड़ में) और **मदालसा चरित्र, सत्यवदु परिणय, रसमंजरी,** और **जाम्बवती कल्याण सहित संस्कृत ग्रंथों** की रचना भी की।

कन्नड़ साहित्य

जैन विद्वानों ने कन्नड़ साहित्य में प्रमुख भूमिका निभाई।

कन्नड़ साहित्य की कुछ प्रमुख रचनाएँ

- **धर्मनाथ पुराण:** यह **माधव द्वारा 15वें तीर्थंकर** के जीवन पर लिखा गया था।
- **धर्म परीक्षे:** इसकी रचना **उरित्त विलास** ने की थी, इसमें जैन शिक्षाओं का वर्णन है।
- **कविराजमार्ग:** इसकी रचना एक शक्तिशाली **राष्ट्रकूट राजा नृपतुंग अमोघवर्ष प्रथम** ने की थी।
- **हरिश्चंद्र काव्य** और **सोमनाथ चरित:** इनकी रचना **हरिश्वर** ने की थी।
- **हरिवंशभ्युदय** और **जीव संबोधन:** इनकी रचना **बंधुवर्मा** ने की थी।
- **जगन्नाथविजय:** इसकी रचना **रुद्र भट्ट** ने की थी।
- **मदन विजय या कब्बीगारा कावा:** इसकी रचना **अंडय्या** ने की थी। यह एक लोकप्रिय ग्रंथ था क्योंकि यह **पहला पूर्णतः कन्नड़ ग्रंथ था**, जिसमें कोई भी संस्कृत शब्द नहीं था।
- **शब्दमणिदर्पण: यह केसिरजा** द्वारा रचित एक **व्याकरण ग्रंथ है।**
- **सूक्तिसुधार्णव: यह मल्लिकार्जुन** द्वारा रचित काव्य संग्रह है।
- **तोरवे रामायण:** इसकी रचना नरहरि ने की थी और यह पूरी तरह से **कन्नड़ में लिखी गई थी।** यह **वाल्मिकी रामायण** से प्रेरित **पहली राम कथा थी।**
- **जैमिनी भरत:** इसकी रचना **लक्ष्मीशा** ने की थी और इसे **कामता-कारिकुतवन-चैत्र** (कर्नाटक आम के बगीचे का झरना) भी कहा जाता है।
- **हदिबदेय धर्म (एक धर्मपरायण पत्नी का कर्तव्य):** इसकी रचना **होनम्मा** (एक कन्नड़ कवयित्री) ने की थी।
- **कन्नड़ लेखक मस्ती वेंकटेश ने कन्नड़ लघुकथा का विकास किया।**

कन्नड़ भाषा के 'रत्नत्रय' या 'तीन रत्नों' में निम्नलिखित शामिल हैं–

- **पम्पा** (नौवीं-दसवीं शताब्दी ई.)
- पम्पा को **कन्नड़ भाषा का जनक भी कहा जाता है।**
- उनकी दो सबसे प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ **आदिपुराण** (चंपू शैली रचित) और **विक्रमार्जुन विजय हैं।**
- वह कविता में **रस की महारत के लिए जाने जाते हैं** और वह चालुक्य अरिकेसरी के दरबार में थे।
- **पोन्ना** (नौवीं-दसवीं शताब्दी ई.) ने प्रसिद्ध ग्रंथ **शांति पुराण की रचना की।**
- **रन्ना** (दसवीं-11वीं शताब्दी ई.) ने प्रसिद्ध ग्रंथ **अजित पुराण की रचना की।**

मध्यकालीन साहित्य

फारसी साहित्य	
दीवान (फारसी काव्य संग्रह), **नुह सिपिहर,** और **देवल रानी-खिज्र खाँ** (दुखद प्रेम काव्य)	इनकी रचना **अमीर खुसरो देहलवी ने की थी।**
तारीख-ए-फिरोज शाही	इसे **जियाउद्दीन बरनी ने लिखा था।**
तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा)	बाबर
हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम (हुमायूँ की सौतेली बहन)।
आईने अकबरी और अकबरनामा	दरबारी इतिहासकार अबुल फजल
पद्मावत	मलिक मुहम्मद जायसी
शाहजहाँनामा	इनायत खाँ
ताज-उल-मासिर	हसन निज़ामी (दिल्ली सल्लतनत का पहला सरकारी संकलन)
कुल्लियात (छंद संग्रह)	मीर जाफर जतल्ली
पादशाहनामा	अब्दुल हामिद लाहौरी
रज्मनामा (युद्ध की किताब)	यह सम्राट **अकबर** के आदेश पर **महाभारत** का **पहला फारसी अनुवाद था।**

सियासतनामा	निजामुलमुल्क तुसी	**इक्ता व्यवस्था का वर्णन**

योग वशिष्ठ का फारसी में अनुवाद **निजामुद्दीन पानीपती ने** अकबर के शासनकाल में किया था। **[UPSC 2022]**

उर्दू साहित्य

- उर्दू का विकास **फारसी** और **संस्कृत** के **मेल से हुआ।** अमीर खुसरो ने उर्दू के प्रारंभिक चरण में इसके विकास में योगदान दिया।
- उर्दू मुख्य रूप से **हिंदी व्याकरण** और **फारसी लिपि का अनुसरण करती है।**
- अहमदनगर, गोलकुंडा, बीजापुर और बरार के बहमनी राज्यों में इसके उपयोग के कारण इसे शुरू में **दक्कनी (दक्षिणी)** कहा जाता था।
- प्रख्यात उर्दू कवियों में **मिर्जा गालिब, सौदा, दर्द** और **मीर तकी मीर शामिल हैं।**
- 20वीं सदी में, **इकबाल** एक प्रख्यात उर्दू साहित्यकार बन गए, उन्हें '**सारे जहाँ से अच्छा**' के लिए जाना जाता है।

Search On TG: @apna_pdf

हिंदी और उसकी बोलियाँ और संबंधित साहित्य

पृथ्वीराज रासो	यह **पहली हिंदी पुस्तक थी** और इसमें पृथ्वीराज चौहान के जीवन एवं चुनौतियों का वर्णन किया गया है।
रामचरितमानस, दोहावली, गीतावली और **विनय पत्रिका**	इनकी रचना **तुलसीदास** ने की थी।
सूर सागर	इसकी रचना सूरदास ने की थी, और इसमें **कृष्ण की बाल्यावस्था** और गोपियों के साथ **किशोरावस्था के प्रसंग हैं।** (ब्रज भाषा में)

आधुनिक साहित्य

हिंदी साहित्य

अंधेर नगरी	**भारतेंदु हरिश्चंद्र** (आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक) द्वारा रचित एक राजनीतिक व्यंग्य है।
भारत दुर्दशा	**भारतेंदु हरिश्चंद्र** द्वारा रचित एक प्रसिद्ध राष्ट्रवादी कृति है।
सत्यार्थ प्रकाश (1875)	स्वामी दयानंद सरस्वती
गोदान और **बड़े भैया**	मुंशी प्रेमचंद
अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ और **पथ के साथी**	महादेवी वर्मा

बंगाली साहित्य

बंगाली में कई **प्राचीन** और **मध्यकालीन साहित्यिक कृतियाँ, जैसे मंगल काव्य**, उन्नीसवीं सदी से पहले मौजूद थीं, लेकिन यह व्यापक रूप से प्रकाशित नहीं हुई थीं।

दुर्गेश नंदिनी (1965)	इसकी रचना **बंकिम चंद्र चटर्जी** ने की थी।
आनंद मठ (1882)	**यह उपन्यास बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखा गया था, और हमारा राष्ट्रगीत (वंदे मातरम्) इसी उपन्यास से लिया गया है।**
गीतांजलि (1913)	इसकी रचना **रवींद्रनाथ टैगोर** ने की थी।

राजस्थानी साहित्य

विभिन्न बोलियाँ मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य की विशेषता हैं और काल्पनिक लेखन के दो प्राथमिक रूप हैं– **डिंगल** और **पिंगल**। राजस्थानी कहानियाँ मौखिक रूप से और **वीरकाव्य**, या विजयी काव्य गाकर सुनाने वाले भाटों द्वारा **प्रसारित की जाती थीं।**

कश्मीरी साहित्य

प्रारंभिक मध्य काल के दौरान, जब भक्ति आंदोलन का विकास हो रहा था, तब कश्मीरी भाषा की पहली महिला कवयित्री **लाल देद** (एक शैव रहस्यवादी) का उदय हुआ।

पंजाबी साहित्य

- पंजाबी साहित्य मुख्य रूप से दो प्रमुख लिपियों में रचा गया – **फारसी** और **गुरुमुखी।**
- गुरु गोबिंद सिंह ने पंजाबी में **सवैये नामक काव्य लिखा था।**
- स्थानीय पंजाबी साहित्य प्रेमकथाओं और महाकाव्यों पर केंद्रित है, जैसे फजल शाह द्वारा रचित सोहनी-महिवाल, हाशिम शाह द्वारा रचित सस्सी-पुन्नू और वारिस शाह द्वारा रचित हीर-रांझा।
- **बाबा फरीद** और **बुल्ले शाह का** सूफी काव्य, जिसे **काफीस के नाम से जाना जाता है**, लोकप्रिय गायन के माध्यम से जनता और शासकों द्वारा काफी पसंद किया गया।
- आधुनिक पंजाबी साहित्य राष्ट्रवादी लेखन से प्रभावित था, जिसका उदाहरण भगत सिंह की प्रसिद्ध कृति **रंग दे बसंती चोला** है।

मराठी साहित्य

- सबसे पुरानी ज्ञात मराठी कृति **13वीं शताब्दी की है, जिसकी रचना संत ज्ञानेश्वर** ने की थी, उन्होंने **कीर्तन की शुरुआत की थी** और **भगवत गीता पर एक विस्तृत टीका** लिखी थी।
- 13वीं-14वीं सदी की महिला लेखिका **जनाबाई सबसे पहली ज्ञात महिला मराठी लेखिका हैं।**
- 16वीं शताब्दी के प्रसिद्ध संत **एकनाथ ने भागवत पुराण** और **रामायण पर टीकाएँ लिखीं** और स्थानीय भाषा में प्रसिद्ध कृतियों की रचना की।
- राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान, **बाल गंगाधर तिलक ने मराठी में** क्षेत्रीय समाचार पत्र **केसरी** का प्रकाशन किया।
- ज्योतिबा फुले द्वारा लिखी गई **गुलामगिरी 19वी सदी की महत्त्वपूर्ण रचना है।**

भारतीय भाषाएँ एवं उनका प्रभाव

विभिन्न संस्कृतियों ने अपनी भाषाएँ और विशाल साहित्यिक परंपराएँ विकसित की हैं, जो समकालीन संस्कृति, जीवन शैली, समाज और राजनीति के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।

भारत की आधिकारिक भाषा एवं संवैधानिक प्रावधान

- **अनुच्छेद 343 (1) में** उल्लेख है, '**भारतीय संघ की राजभाषा** देवनागरी लिपि में **हिंदी** होगी।'
  - '**जब तक संसद अन्यथा निर्णय न ले**, संविधान लागू होने के 15 वर्ष बाद अर्थात् 26 जनवरी 1965 को राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का उपयोग बंद हो जाएगा।
- **1963 के राजभाषा अधिनियम ने** देवनागरी **लिपि में हिंदी को** संघ की राजभाषा घोषित किया, जबकि **अंग्रेजी** का **सहायक राजभाषा** का दर्जा बरकरार रखा गया।
- भारतीय **संविधान प्रत्येक राज्य को** राज्य-स्तरीय पत्राचार के लिए **अपनी राजभाषा** चुनने की अनुमति देता है।

हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है।

- **2011 की जनगणना** के अनुसार, **लगभग 44%** लोग अपनी मातृभाषा के रूप में हिंदी बोलते हैं।
- अंग्रेजी और मंदारिन के बाद हिंदी **दुनिया में तीसरी** सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा भी है।
- भारत की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा **बंगाली है।**

Search On TG: @apna_pdf

आठवीं अनुसूची के अंतर्गत सूचीबद्ध भाषाएँ

वर्तमान में, भारतीय संविधान की **आठवीं अनुसूची** में **22 भाषाएँ शामिल हैं।**

प्रारंभ में **14 भाषाओं को आठवीं अनुसूची** में शामिल किया गया था– असमिया, हिंदी, मलयालम, पंजाबी, तेलुगु, बंगाली, कन्नड़, मराठी, संस्कृत, उर्दू, गुजराती, कश्मीरी, उड़िया और तमिल।
21वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम 1967 द्वारा **सिंधी को जोड़ा गया।**
71वें संशोधन अधिनियम द्वारा **कोंकणी**, **मणिपुरी** और **नेपाली को जोड़ा गया।**
92वें संशोधन अधिनियम द्वारा **बोडो**, **मैथिली**, **डोगरी** और **संथाली को जोड़ा गया।**

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- न तो संविधान और न ही कोई अधिनियम **भारत की राष्ट्रभाषा को परिभाषित करता है।**
- राज्यों की राज भाषाएँ जो आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं हैं–
- **त्रिपुरा**- कोकबोरोक; **पुदुचेरी**- फ्रेंच; **मिजोरम**- मिजो; **नागालैंड और मेघालय**- अंग्रेजी।

भारत में शास्त्रीय भाषाएँ

2004 में, **भारत सरकार ने** भाषाओं को 'भारत में **शास्त्रीय** भाषाओं' के रूप में वर्गीकृत करने के लिए **मानदंड** स्थापित किए। इन मानदंडों में निम्नलिखित शामिल हैं–

- **उच्च पुरातनता:** भाषाओं में 1500-2000 वर्षों तक फैले प्रारंभिक ग्रंथ या अभिलिखित इतिहास होना चाहिए।
- **प्राचीन साहित्य:** भाषा में प्राचीन साहित्य का भंडार होना चाहिए जिसे बोलने वालों की विभिन्न पीढ़ियों द्वारा महत्त्व दिया गया हो।
- **मौलिकता:** साहित्यिक परंपरा को किसी अन्य भाषा समुदाय से **उधार नहीं लिया जाना चाहिए।**
- **विशिष्टता:शास्त्रीय** भाषा और साहित्य को आधुनिक रूपों या शाखाओं से अलग होना चाहिए , यहाँ तक कि असंततता भी प्रकट करनी चाहिए।

भारत की शास्त्रीय भाषाएँ

भारत सरकार ने साल 2004 में 'भारत की शास्त्रीय भाषाओं' का दर्जा देना शुरू किया था। वर्तमान में छ: भाषाओं को वर्ष 2004- 2014 तक शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया जो इस प्रकार हैं-

- **तमिल** (2004)
- **संस्कृत** (2005)
- **तेलुगु** (2008)
- **कन्नड़** (2008)
- **मलयालम** (2013) और
- **उड़िया** (2014)

इसके अतिरिक्त केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पाँच और भाषाओं को "शास्त्रीय" भाषा का दर्जा दिये जाने को स्वीकृति दी है, जिससे देश की सांस्कृतिक रूप से महत्त्वपूर्ण भाषाओं की सूची में विस्तार हो गया है। इस विस्तार के माध्यम से 6 भाषाओं के अलावा इसमें 5 नई भाषाएँ मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली को भी शामिल की गई हैं।

- **जनगणना 2011 और भारतीय भाषाएँ:** वर्ष 2011 में प्राप्त कुल अपरिष्कृत आँकड़े/रॉ रिटर्न (Raw Returns) के अनुसार भारतीय भाषाओं की संख्या लगभग 19,569 थे। युक्तिसंगतीकरण प्रक्रिया के माध्यम से हुए जनगणना में मातृभाषाओं के अपरिष्कृत आँकड़ें प्राप्त किए गए, युक्तिसंगत मातृभाषाओं की कुल संख्या 2,843 थी।
- मातृभाषाओं के युक्तिसंगत नामों को अन्य भाषाओं या बोलियों के साथ भाषाई संबंध या संबद्धता के उचित स्थानों पर रखा गया ताकि वर्गीकरण प्रक्रिया के माध्यम से संगठित और वर्गीकृत पैटर्न के प्रकाशन में उनकी अंतिम प्रस्तुति हो सके। वर्ष 2011 में वर्गीकृत मातृभाषाओं की कुल संख्या 1,369 थी। कुल 1474 मातृभाषाओं को 'अवर्गीकृत' (Unclassified) माना गया, जिनकी भाषाई रूप से पूर्णत: पुष्टि नहीं हो पाई थी।
- 10,000 या उससे अधिक वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत वर्गीकृत मातृभाषाओं को भाग A और भाग B में उपयुक्त भाषाओं के अंतर्गत समूहीकृत किया गया। भाग A में, भारतीय संविधान की **आठवीं अनुसूची** में शामिल भाषाओं को रखा गया। अनुसूचित भाषाओं (Scheduled Languages) की कुल संख्या 22 थी जिसमें 123 मातृभाषाएँ शामिल थी। भाग B में, उन भाषाओं को शामिल किया गया है जिन्हें आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया गया और इसमें 99 भाषाएँ शामिल हैं। जनगणना 2011 के अनुसार, 147 मातृभाषाओं को 99 गैर-अनुसूचित भाषाओं (Non-Scheduled Languages) के अंतर्गत समूहीकृत किया गया था।
- "अन्य" (Others) नामक एक और श्रेणी थी जिसमें 10,000 से कम आबादी वाली 373 वर्गीकृत मातृभाषाएँ और 1474 अवर्गीकृत मातृभाषाएँ शामिल थी जिन्हें किसी भी भाषा के अंतर्गत समूहीकृत नहीं किया गया था। द्विभाषावाद (Bilingualism) और त्रिभाषावाद (Trilingualism) के आधार पर जनसंख्या, द्विभाषावाद और त्रिभाषावाद आयु और लिंग के आधार पर जनसंख्या, द्विभाषावाद और त्रिभाषावाद, शिक्षा स्तर और लिंग के आधार पर जनसंख्या के आँकड़े क्रमशः तालिका C17, C18 और C19 में प्रकाशित किए गए।

लाभ

- **अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार: शास्त्रीय** भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठित विद्वानों को प्रतिवर्ष दो प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त होते हैं।
- **उत्कृष्टता केंद्र:** '**शास्त्रीय** भाषाओं में अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र' की स्थापना।
- **शिक्षा पीठ: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से** ऐसी भाषाओं के प्रतिष्ठित विद्वानों के लिए केंद्रीय विश्वविद्यालयों में **शास्त्रीय** भाषाओं के लिए विशिष्ट संख्या में शिक्षा पीठ बनाने का अनुरोध किया है।

भारत की प्राचीन लिपियाँ

प्राचीन लिपियाँ भारत में भाषा और पत्राचार को रिकॉर्ड करने में महत्त्वपूर्ण रही हैं। **ब्राह्मी और खरोष्ठी** दो **प्रमुख प्राचीन लिपियाँ** हैं, जिन्होंने विभिन्न आधुनिक लिपियों के विकास को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

Search On TG: @apna_pdf

प्राचीन लिपियाँ	विशेषताएँ और महत्त्व
ब्राह्मी लिपि	• इसे देवनागरी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, उड़िया, असमिया और बंगाली सहित **कई आधुनिक भारतीय लिपियों का पूर्ववर्ती माना जाता है।** • यह **बायीं से दायीं ओर** लिखी जाती है।
ग्रंथ लिपि	• **छठी शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत के तमिलनाडु और केरल में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था।** • **संस्कृत** और **मणिप्रवालम** लिखने के लिए उपयोग की गई थी। • यह एक **ब्राह्मी लिपि है,** जो तमिलनाडु में ब्राह्मी से विकसित हुई है, तथा मलयालम, तिगलारी और सिंहली लिपियों की पूर्ववर्ती है।
गुप्त लिपि	• **गुप्त साम्राज्य** से संबंधित थी और **संस्कृत** के लिए उपयोग की गई थी। • इसकी उत्पत्ति **ब्राह्मी लिपि** से हुई। • **इससे विभिन्न लिपियों** की उत्पत्ति हुई, जिनमें नागरी, शारदा, सिद्धम, देवनागरी, गुरुमुखी (पंजाबी के लिए), असमिया, बंगाली और तिब्बती लिपियाँ शामिल हैं।
गुरुमुखी लिपि	• इसे **16वीं शताब्दी** के दौरान **गुरु अंगद** द्वारा **मानकीकृत किया गया था** और इसे **शारदा लिपि से लिया गया था।** • संपूर्ण **गुरु ग्रंथ साहिब गुरुमुखी लिपि में लिखा गया है** और इसे आमतौर पर सिखों और हिंदुओं द्वारा पंजाबी भाषा के लिए उपयोग किया जाता है।
सिंधु लिपि	सिंधु घाटी सभ्यता द्वारा **बनाई गई** एक लिपि है, जिसमें **प्रतीकों का समावेश है,** लेकिन आज तक इसे नहीं पढ़ा जा सका है।
खरोष्ठी लिपि	• इसे **ब्राह्मी की सहोदरी लिपि माना जाता है** और इसका उपयोग प्राचीन गांधार में गांधारी प्राकृत और संस्कृत लिखने के लिए किया जाता था। • **जेम्स प्रिंसेप** इसे पढ़ने में सफल रहे। • इसमें **रोमन अंकों** के समान **अंक** शामिल हैं। • अधिकांशतः **दायीं से बायीं ओर लिखी जाती है,** लेकिन कुछ शिलालेख बायीं से दायीं ओर दिशा दर्शाते हैं।
मोडी लिपि	• ऐतिहासिक रूप से, इसका उपयोग **मराठी और अन्य भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता था।** • **20वीं शताब्दी** तक जब देवनागरी का प्रचार हुआ तब तक यह **मराठी की आधिकारिक लिपि थी।** • ज्ञात हो कि इसका उपयोग उर्दू, कन्नड़, गुजराती, हिंदी और तमिल के लिए किया गया था।
शारदा लिपि	• इसका विकास **आठवीं शताब्दी के आसपास हुआ** और इसे **अबीगुडा शैली में लिखा गया था।** • प्रारंभ में इसका उपयोग **संस्कृत और कश्मीरी के लिए किया गया,** लेकिन बाद में कश्मीर तक ही सीमित रही। • वर्तमान में, कश्मीरी पंडित समुदाय द्वारा **औपचारिक उद्देश्यों के अलावा** इसका **उपयोग शायद ही कभी किया जाता है।**
उर्दू लिपि	• यह **फारसी वर्णमाला को संशोधित करके** दायीं **से बायीं ओर लिखी जाती है।** • इसका फारसी-अरबी लिपि की **नास्तालिक शैली** के विकास पर काफी प्रभाव पड़ा था। • इसके विस्तारित रूप **'शाहमुखी'** को पंजाबी और सरायकी जैसी अन्य इंडो-आर्यन भाषाओं को लिखने के लिए उपयोग किया जाता है।
वट्टेलुत्तु लिपि	• इसका विकास **तमिल-ब्राह्मी से हुआ था** और **अबीगुडा शैली में लिखी जाती थी।** • इसका उपयोग ग्रंथी, पल्लव और तमिल लिपि लिखने के लिए किया जाता था।

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (National translation Mission)

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन

स्थापना: मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) द्वारा वर्ष 2008 में शुरू किया गया।

उद्देश्य: भारतीय भाषाओं के बीच साहित्यिक और विद्वत्तापूर्ण कार्यों के अनुवाद को बढ़ावा देना।

केंद्रित क्षेत्र:

- विज्ञान, साहित्य, इतिहास, दर्शन आदि के ग्रंथों का अनुवाद करना।
- भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करना और ज्ञान तक पहुँच को बढ़ाना।
- बहुभाषिकता और अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देना।

विशेष लक्षित भाषाएँ: संविधान की **आठवीं अनुसूची** में शामिल प्रमुख भारतीय भाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

कार्यान्वयन: विश्वविद्यालयों और भाषाई निकायों के सहयोग से **केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL)** द्वारा संचालित।

Search On TG: @apna_pdf

नेशनल डिक्शनरी ऑफ इंडियन लेंग्वेज (National Dictionary of Indian Languages)

स्थापना: वर्ष 2008 में **मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD)** द्वारा शुरू किया गया।

उद्देश्य: भारतीय भाषाओं के लिए व्यापक शब्दकोश संकलित करना, भाषाई विरासत को संरक्षित करना और भाषा के विकास को बढ़ावा देना।

केंद्रित:

- इसमें **आठवीं अनुसूची** में शामिल भारतीय भाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल किया गया है।
- इसमें शब्दों के अर्थ, व्युत्पत्ति और उपयोग शामिल हैं।

कार्यान्वयन: केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL), मैसूरु द्वारा प्रबंधित।

मिशन भाषिणी (Mission Bhasini)

- **स्थापना: इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY),** भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया।
- **उद्देश्य:** ऐसी **भाषा प्रौद्योगिकियों** को विकसित करना और बढ़ावा देना जो भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल समावेशन को सक्षम बनाएगी, डिजिटल अर्थव्यवस्था तक पहुँच और भागीदारी को बढ़ावा देगी।
- **प्रमुख केंद्रित क्षेत्र:**
  - **भाषा उपकरणों का विकास:** भारतीय भाषाओं में वाक् पहचान, अनुवाद और **टेक्स्ट-टू-स्पीच** के लिए उपकरणों को विकसित करना।
  - **भाषा संसाधन विकास:**भाषा प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देने के लिए भारतीय भाषाओं के लिए **कॉर्पोरा, लेक्सिकॉन और डेटासेट** निर्मित करना।
  - **बहुभाषी डिजिटल सामग्री:** सरकारी सेवाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों में बहुभाषी संचार को सुविधाजनक बनाना।
  - **AI और NLP एकीकरण:** भारतीय भाषाओं में **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)** और **प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP)** समाधानों को सक्षम करना।
- **कार्यान्वयन:** इस परियोजना का कार्यान्वयन **C-DAC (उन्नत कंप्यूटिंग विकास केंद्र)** और अन्य हितधारकों द्वारा राज्य सरकारों, अनुसंधान संगठनों और उद्योग भागीदारों के सहयोग से किया जा रहा है।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (National mission for Manuscripts)

स्थापना: संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा

आरंभ वर्ष: 2003

उद्देश्य: भारत की प्राचीन पांडुलिपियों को सूचीबद्ध, संरक्षित और डिजिटलीकृत करके उनका संरक्षण और संवर्धन करना तथा उनकी सुरक्षा और उन तक पहुँच को सुनिश्चित करना।

मुख्य केंद्रित क्षेत्र:

- **संरक्षण:** उचित संरक्षण और पुनरुद्धार/नवीनीकरण तकनीकों (Restoration Techniques) के माध्यम से पांडुलिपियों की सुरक्षा करना।
- **सूचीकरण और दस्तावेज़ीकरण:** शोध और सार्वजनिक उपयोग के लिए उन्हें अधिक सुलभ बनाने हेतु पांडुलिपियों का एक व्यापक डेटाबेस निर्मित करना।
- **डिजिटलीकरण:** क्षति को रोकने और व्यापक पहुँच हेतु उन्हें ऑनलाइन उपलब्ध कराने के लिए पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण करना।
- **क्षमता निर्माण:** संस्थानों, शोधकर्ताओं और कार्य में शामिल व्यक्तियों को पांडुलिपि संरक्षण, संरक्षण और डिजिटलीकरण में प्रशिक्षण प्रदान करना।
- **जागरूकता और अनुसंधान:** पांडुलिपियों के संरक्षण और संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा देने के महत्त्व के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना।
- **कार्यान्वयन:** पुस्तकालयों, अभिलेखागारों, संग्रहालयों और शैक्षणिक संस्थानों के सहयोग से संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA)** द्वारा प्रबंधित।

भारत के विदेशी यात्रियों का विवरण

यात्री	यात्रा की अवधि	मूल देश	यात्रा वृत्तान्त
मेगस्थनीज	302-298 ईसा पूर्व	ग्रीस	मौर्य साम्राज्य में सेल्यूकस का राजदूत; "इंडिका" का लेखक, जिसमें मौर्य प्रशासन और समाज के बारे में जानकारी दी गई
फाह्यान (फ़ैक्सियन)	399-414 ई.	चीन	एक बौद्ध भिक्षु जिसने गुप्त काल के दौरान भारत की यात्रा की; बौद्ध धर्म की स्थिति और चंद्रगुप्त द्वितीय के प्रशासन के बारे में लिखा।
ह्वेन सांग (ह्वेन सांग)	629-645 ई.	चीन	एक बौद्ध विद्वान जिसने हर्ष के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया; इसका लेख "सी-यू-की" भारतीय धर्म, राजनीति और भूगोल के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है।

Search On TG: @apna_pdf

इब्नबतूता	1333-1341 ई.	मोरक्को	मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान भारत आने वाला एक मुस्लिम यात्री; उसकी कृति "रिहला" सल्तनत काल के दौरान भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का वर्णन करती है।
अलबरूनी	1017-1030 ई.	फारस (ईरान)	एक विद्वान और यात्री जिसने भारतीय संस्कृति, धर्म और विज्ञान का अध्ययन किया, भारतीय दर्शन, खगोल विज्ञान और समाज के बारे में "किताब अल-हिंद" लिखी
मार्को पोलो	1271-1293 ई.	वेनिस (इटली)	एक वेनिस व्यापारी जिसने चीन के युआन वेनिस (इटली) राजवंश के तहत भारत की यात्रा की; उनकी पुस्तक "द ट्रैवल्स ऑफ मार्को पोलो" भारतीय उपमहाद्वीप के उस समयकाल का विवरण देती है।
निकोलो डी कोंटी	1419-1444 ई.	वेनिस (इटली)	एक वेनिस व्यापारी जिसका यात्रा वृत्तान्त भारतीय वाणिज्य और भारत में 15वीं सदी के राज्यों की स्थितियों पर केंद्रित हैं।
टैवर्नियर (जीन-बैप्टिस्ट)	1630-1660 ई.	फ्राँस	एक फ्रांसीसी यात्री और जौहरी जो मुगल साम्राज्य के दौरान भारत आया था; इसकी कृति "ट्रैवल्स इन इंडिया" भारत की संपत्ति, समाज और मुगल दरबार का विस्तृत विवरण देती है।
विलियम लोगान	1836-1877 ई.	यूनाइटेड किंगडम	एक ब्रिटिश सिविल सेवक जिसने केरल के मालाबार क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का दस्तावेजीकरण अपने "मालाबार मैनुअल" में किया।
थॉमस रो	1615-1619 ई.	यूनाइटेड किंगडम	मुगल दरबार में अंग्रेजी राजदूत; इसका लेख "द एम्बेसी ऑफ सर थॉमस रो" सम्राट जहांगीर के दरबार के बारे में जानकारी देता है
फ्रांसिस बुकानन-हैमिल्टन	1806-1814 ई.	यूनाइटेड किंगडम	एक ब्रिटिश सर्जन और यात्री जिसने मैसूर साम्राज्य का दौरा किया और भारत के भूगोल, इतिहास और संस्कृति पर विस्तार से लिखा।
रिचर्ड बर्टन	1850-1860 ई.	यूनाइटेड किंगडम	एक अंग्रेजी खोजकर्ता जिसने भारत में व्यापक रूप से यात्रा की; इसके कार्यों में "पूर्वी अफ्रीका में पहला कदम" और "द बुक ऑफ द स्वॉर्ड" शामिल हैं।
हर्मन ओल्डेनबर्ग	1860-1910 ई.	जर्मनी	एक विद्वान जिसने भारतीय बौद्ध धर्म के बारे में लिखा और "धम्मपाद" जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद किया।
जीन डे थेवेनॉट	1666-1668 ई.	फ्राँस	एक फ्रांसीसी राजनयिक और यात्री जिसने औरंगजेब के शासनकाल के दौरान मुगल भारत की स्थिति का वर्णन किया।

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH
RPP 2025 Rigorous Prelims Test-Series Program
English / हिन्दी | Online / Offline
Daily Practice & LIVE Video Solutions
G.S. & CSAT Tests (Sectional + Full Length)
Mentorship Webinar
Offline ₹ 12,999/- ₹ 4,999/-
Online ₹ 8,999/- ₹ 3,999/-
FOR EXTRA DISCOUNT
USE COUPON CODE
PWOIAS500

Search On TG: @apna_pdf

9

भारत के प्रमुख नाट्यरूप और कठपुतली कला

रंगमंच के रूप

भारत में नाट्य (रंगमंच) कला की शुरुआत एक **कथा कला (Narrative Art)** के रूप में हुई; इसके अंतर्गत **संगीत, नृत्य और अभिनय तीनों गतिविधियाँ शामिल हैं।** इसका प्रदर्शन **धार्मिक त्योहारों, मेलों, सभाओं और अनुष्ठानों** के अवसर पर किया जाता है। रंगमंच के कलाकार समाज के आम लोगों के **सामाजिक दृष्टिकोण, धारणाओं और शास्त्रीय तत्वों** को समाहित करते हैं।

भारत में नाट्य शैली की परंपरा

- **सीताबेंगा** और **जोगीमारा गुफाओं (छत्तीसगढ़)** में खुदाई से प्राप्त अवशेष दुनिया की सबसे पुरानी रंगभूमि (Amphitheatres) का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **नाट्यशास्त्र** नाट्यकला पर पहला औपचारिक ग्रंथ है।
- नाट्यशास्त्र के अंतर्गत शास्त्रीय **संस्कृत साहित्य** के सभी पहलुओं को एक साथ दर्शाने के लिए **दस प्रकार के नाटक रूपों को शामिल किया गया है।**
- **ऋग्वेद काल के दौरान आयोजित किए जाने वाले यज्ञ समारोहों** के दौरान **खेले जाने वाले नाटकों** का प्रमाण मिलता है।

शास्त्रीय संस्कृत नाटक (Classical Sanskrit Theatre)

- संस्कृत शब्द '**नाटक**' की उत्पत्ति, मूल शब्द '**नट**' से हुई है, जिसका अर्थ **नर्तक** होता है।
- नाटक के लिए उपयोग किए जाने वाले अन्य शब्द– **रूपक, दृश्यकाव्य** और **प्रेक्षाकाव्य हैं।**
- प्राचीन भारत में सामान्यतः दो प्रकार के नाटक होते थे–
  - **लोकधर्मी:** इसके अंतर्गत **दैनिक जीवन के यथार्थवाद का** चित्रण प्रस्तुत किया जाता था।
  - **नाट्यधर्मी:** ये **पारंपरिक नाटक थे** जिनमें अधिक शैलीबद्ध वर्णन और प्रत्यक्ष **प्रतीकवाद को प्रदर्शित किया जाता था।**
- **शास्त्रीय संस्कृत नाटक में आनुष्ठानिक प्रगति**–
  - नाटक की शुरुआत **पूर्व-राग** (नाटक से पहले के अनुष्ठान) से होती है।
  - इसके बाद, **सफेद वस्त्र धारण किए हुए** मंच प्रबंधक और निर्देशक **देवता की पूजा** करते थे और उनका आशीर्वाद ग्रहण करते हैं।
  - उसके बाद **नायिका को** बुलाया जाता है और सूत्रधार (मंच प्रबंधक और निर्देशक) नाटक के समय और स्थान की घोषणा करता है।
  - सूत्रधार ही नाटककार के विषय में **संक्षिप्त परिचय** भी देता है।
  - इसमें मंच दो मंजिला हुआ करते थे (**ऊपरी मंजिल आकाशीय क्षेत्र** और **निचली मंजिल स्थलीय क्षेत्र का** प्रतिनिधित्व करती थी)।
  - नाटक के प्रभाव को अधिक प्रभावी बनाने के लिए **पर्दों का प्रयोग किया जाता** था।
  - **मुखौटों का प्रयोग नहीं किया जाता था।**
- **संस्कृत नाटकों में पात्र तीन प्रकार** के होते थे, जो क्रमशः **नायक, नायिका** और **विदूषक** के रूप में देखे जा सकते हैं।
- **प्रमुख संस्कृत नाटक: अश्वघोष** (सारिपुत्रप्रकरण); **विशाखदत्त** (मुद्राराक्षस); **कालिदास** (मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वषीयम् और अभिज्ञानशाकुंतलम); **भवभूति** (उत्तररामचरित्र और महावीरचरित्र); **हर्षवर्धन** (रत्नावली); **शूद्रक** (मृच्छकटिकम्)।

कूडियाट्टम

कूडियाट्टम (Koodiyattam) भारत के केरल राज्य का एक प्राचीन संस्कृत रंगमंच (Sanskrit Theater) है, जिसे यूनेस्को ने मानवता की मौखिक और अमूर्त विरासत (Oral and Intangible Heritage of Humanity) की उत्कृष्ट कृति के रूप में मान्यता प्रदान की है। इसके मुख्य पहलुओं में शामिल हैं:

- **उद्भव:** केरल के मंदिरों में विकसित, प्राचीन संस्कृत नाटकों पर आधारित।
- **प्रदर्शन:** इसमें विस्तृत हाव-भाव, चेहरे के भाव और गायन शामिल हैं।
- **भाषा:** मलयालम के तत्वों के साथ, मुख्य रूप से संस्कृत में।
- **अभिनेता/नायक:** पुरुष नायक (चाक्यार) हाथ के हाव-भाव और चेहरे के भावों के लिए कठिन कठोर प्रशिक्षण।
- **संलग्न साज:** मिझावु और कोरल गायन का समावेश किया जाता है।
- **वेशभूषा:** पूर्ण शृंगार और पारंपरिक पोशाक के साथ पात्रों को दर्शाते हुए, सुसंपन्न/अलंकृत।
- **विषय:** मुख्य रूप से धार्मिक और पौराणिक, प्रायः महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों से संबंधित।
- **यूनेस्को द्वारा मान्यता:** वर्ष 2001 में यूनेस्को ने अपने सांस्कृतिक महत्त्व के लिए कूडियाट्टम को मान्यता प्रदान की।

Search On TG: @apna_pdf

लोक नाट्य (FOLK THEATRE)

लोक नाटक सामाजिक मानदंडों, मान्यताओं और रीति-रिवाजों सहित **स्थानीय जीवनशैली** के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। इसमें **ग्रामीण जड़ें** और ग्रामीण जन-जीवन का विस्तृत वर्णन होता था। इस नाट्य शैली का विकास **15वीं-16वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान हुआ, इनका विकास भक्ति से संबंधित विषयों के साथ हुआ**, हालाँकि बाद के दौर में ये नाटक धर्मनिरपेक्ष हो गए थे।

भारत के लोकनाट्य	
भांड पाथेर (कश्मीर)	• नाटक में हँसी उत्पन्न करने के लिए **व्यंग्य, वाक्-चातुर्य** और **हास्यानुकरण का उपयोग किया जाता है।** • इसमें संगीत के लिए सुरनई, नगाड़ा और ढोल जैसे वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है। • अभिनेता मुख्य रूप से **कृषक समुदाय से संबंधित होते हैं**, ये अपनी जीवन शैली, आदर्शों और संवेदनशीलता को दर्शाने का प्रयास करते हैं।
भाओना (असम)	• **यह असम के अंकिया नाट** की प्रस्तुति है, जिसमें **असम, बंगाल, उड़ीसा, मथुरा और बृंदावन** की सांस्कृतिक झलक दिखाई देती है। • सूत्रधार कहानी को **संस्कृत में आरंभ करता है**, जो ब्रजबोली या असमिया भाषा के रूप में परिवर्तित की गई होती है।
भवाई (गुजरात)	• यह मुख्यतः **कच्छ और काठियावाड़** क्षेत्रों में प्रचलित है। • इसमें भक्ति और प्रेम भावनाओं का मिश्रण दिखाई देता है, जो एक विशिष्ट सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का निर्माण करता है।
बुर्रा कथा (आंध्र प्रदेश)	• यह एक मौखिक कथावाचन है जिसमें एक **मुख्य कलाकार या कथावाचक** और दो **वंथा** या सह-कलाकार शामिल होते हैं जो **लय** और **कोरस की अभिव्यक्ति के लिए मुख्य कलाकार का साथ देते हैं।** • **बुर्रा** प्रदर्शन के दौरान इस्तेमाल किया जाने वाला **एक प्रकार का ताल वाद्ययंत्र होता** है।
चवित्तु नाटकम् (केरल)	• यह केरल में एक लोकप्रिय ईसाई कला रूप है। • इसका विकास 17वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान हुई थी। • इसे **स्टैम्पिंग ड्रामा के नाम से भी जाना जाता है।** • इसमें कलाकार फर्श पर पैर से थाप लगाता है।
दशावतार (कोंकण और गोवा)	• कलाकार **भगवान विष्णु के दस अवतारों का चित्रण करते हैं।** • ये उन्नत व आकर्षक **मेकअप का उपयोग करते हैं और लकड़ी** एवं **कागज की लुगदी** से बने मुखौटे पहनते हैं।
दसकठिया (ओडिशा)	• इसके अंतर्गत दो कथावाचक होते हैं– **गायक** (मुख्य गायक) और **पालिया** (सह-कथावाचक) होते हैं, जो मुख्य रूप से शिव और अन्य देवताओं की कथा सुनाते हैं। • कथा के साथ-साथ **कठिया नामक लकड़ी के वाद्ययंत्र का इस्तेमाल धुन उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।**
गरोडास (गुजरात)	• **यह 'गरोड़ा' समुदाय** का एक लोकप्रिय कला-रूप है। • इसमें **रोमांस और वीरता** की कहानियाँ प्रस्तुत करने के लिए **पेंटेड चित्रों का उपयोग किया जाता है।**
करियिला (हिमाचल प्रदेश)	• यह एक खुला रंगमंच है। • इसका प्रदर्शन रात्रि के समय पर **किया जाता है** और इसमें **छोटे नाटकों** और प्रहसनों की एक शृंखला को शामिल किया जाता है।
कुटियाट्टम (केरल)	• इसकी जड़ें **संस्कृत नाट्य** परंपराओं में हैं। • इसमें अलग-अलग पात्र शामिल होते हैं, जिनमें **चाक्यार** (अभिनेता), **नांबियार** (वाद्यवादक), **नांग्यार** (महिला भूमिकाएँ), **सूत्रधार** (कथावाचक) और **विदूषक** हैं। • इसे यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में सूचीबद्ध किया गया है।
कृष्णअट्टम (केरल)	• इसकी उत्पत्ति **17वीं शताब्दी के दौरान** कालीकट के **राजा मानवदा के संरक्षण** में हुई थी। • इसका प्रदर्शन **लगातार आठ दिनों** तक किया जाता है, इसमें **आठ नाटक शामिल हैं।**
कुरुवंजी (तमिलनाडु)	• प्रथम कुरुवंजी की रचना **तिरुकुटराजप्पा कवियार द्वारा की गई थी।** • इसका मूल **विषय** एक **प्रेम में पड़ी हुई नायिका के इर्द-गिर्द घूमता है।** • इसे **भरतनाट्यम के साथ नृत्य बैलेट (Dance Ballet) के** रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
मुदियेट्टु (केरल)	• इसका प्रदर्शन **वृश्चिकम** (नवंबर-दिसंबर) के दौरान और मुख्य रूप से **काली मंदिरों में किया जाता है।** • यह **देवी के चढ़ावे के रूप में कार्य करता है** और **असुर दारिका** पर **देवी भद्रकाली** की **विजय को चित्रित करता है।** • प्रदर्शन में **सात पात्र शामिल होते हैं**, जिनमें- शिव, नारद, दारिका, दानवेंद्र, भद्रकाली, कुली और कोइम्बिदार इत्यादि हैं, जो सभी शृंगार से सुसज्जित होते हैं।

Search on TG: @apna_pdf

ओजा-पाली (असम)	• यह **मनसा** या नाग देवी के त्योहार से जुड़ा हुआ है। • **ओजा मुख्य कथावाचक** है, और **पाली गायक-वृंद** (**chorus**) के सदस्य हैं।
पोवाड़ा (महाराष्ट्र)	• इसमें **अफजल खाँ के खिलाफ शिवाजी** के साहसिक कारनामों को दर्शाया जाता है। • **इसे गोंडाली और शाहिर** नाम से जाने-जाने वाले लोक गायकों द्वारा गाया जाता है।
रासलीला (उत्तर प्रदेश)	• यह **भगवान कृष्ण की** कथाओं पर आधारित है। • ऐसा माना जाता है कि शुरुआती नाटक **नंद दास ने लिखे थे।** • इसमें **गद्य संवादों को गीतों** और दृश्यों के साथ जोड़ा जाता है।
स्वांग (पंजाब और हरियाणा)	• प्रारंभ में, यह **संगीत-आधारित था** लेकिन धीरे-धीरे इसके संवादों में **गद्य को भी शामिल कर लिया गया।** • स्वांग की **दो शैलियाँ रोहतक** और **हाथरस में मौजूद हैं**, जिनमें क्रमशः हरियाणवी (बांगरू) और ब्रज भाषाएँ शामिल हैं।
तमाशा (महाराष्ट्र)	• अन्य रंगमंच रूपों के विपरीत, इसमें **नायिका (मुर्की) द्वारा नृत्य का प्रदर्शन किया जाता** है। • इसके अंतर्गत विभिन्न भावनाओं को चित्रित करने के लिए शास्त्रीय संगीत, पैरों की चपल गति और **सुस्पष्ट भाव-भंगिमाओं को शामिल किया गया है।**
थेरुकुथु (तमिलनाडु)	• यह भरपूर फसल पैदावार को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। • इसके मूल में **द्रौपदी** के जीवन पर आधारित **आठ नाटकों के चक्र को शामिल किया जाता है।**
विल्लू पट्टू (डेक्कन)	• यह **संगीत नाटक का एक रूप है।** • इसके अंतर्गत **रामायण की कथाएँ** सुनाई जाती हैं।
यक्षगान (कर्नाटक)	• **यह एक खुला रंगमंच है।** • **इसके अंतर्गत महाभारत** और **रामायण** के प्रमुख प्रसंगों को प्रस्तुत किया जाता है।

अन्य नाट्य शैलियाँ: माच (मध्य प्रदेश)**; नकल/भांड** (पंजाब)**; नौटंकी** (उत्तर प्रदेश); **पगति वेशालु** (तेलंगाना और आंध्र प्रदेश)**; पढ़यनि** (केरल)**; ताल-मद्दले** (कर्नाटक)**; बयालता** (कर्नाटक)।

भारत की कठपुतली कला

भारत को कठपुतली कला का उद्गम स्थल माना जाता है, देश के विभिन्न हिस्सों में कठपुतली कला के कई रूपों, विषयों और शैलियों को प्रदर्शित किया जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- **हड़प्पा और मोहनजोदड़ो** के उत्खनन स्थलों से कठपुतलियाँ मिली हैं जिनमें कोटर जड़े हुए थे।
- इसका उल्लेख **शिलप्पादिगारम** (पहली-दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास रचित) में मिलता है।
- **नाट्यशास्त्र में** मानव रंगमंच के निर्माता-सह-निर्देशक के रूप में **सूत्रधार (सूत्रधारक)** का उल्लेख है।

वर्गीकरण: भारत में कठपुतली कला को मोटे तौर पर **चार** श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

धागा पुतली (मैरियोनेट्स) (String Puppets (Marionettes)

कठपुतली का प्रदर्शन करने वाला कठपुतली के **हाथ, सिर और शरीर के पिछले** हिस्से में छोटे-छोटे छिद्रों में **धागा बाँधकर उन्हें चलाता है।** उनके **जोड़युक्त अंग होते हैं** जिसकी वजह से कठपुतलियाँ काफी लचीली होती हैं और अधिक मुखर दिखाई पड़ती हैं।

- कठपुतलियाँ **लकड़ी से बनाई जाती हैं,** और उन्हें जीवंत दिखाने के लिए **तेल के रंग लगाए जाते हैं।**
- **अंगों को** लकड़ी के छोटे पाइपों से बनाया जाता है, शरीर को रंग-विरंगे और चमकीलें **पोशाकों से सजाया जाता है** और इन कठपुतलियों को जिवंत रूप देने के लिए **छोटे-छोटे आभूषणों से सजाया जाता है।**

कठपुतली (राजस्थान)

- कठपुतली शब्द **'काठ'** यानी **लकड़ी** और **'पुतली'** यानी **गुड़िया से मिलकर बना है।**
- **लकड़ी के एक ही टुकड़े** से बनाई गई ये कठपुतलियाँ **बड़ी गुड़िया की तरह दिखाई देती हैं, इन कठपुतलियों को** मध्यकालीन राजस्थानी शैली के पोशाक पहनाए जाते **हैं।**
- इन कठपुतलियों को **लंबा लहँगा पहनाया जाता है और इनके पैर नहीं होते हैं।**
- चेहरे की विशिष्ट विशेषताओं में **अंडाकार चेहरा, बड़ी आँखें, धनुषाकार भौहें और बड़े होंठ हैं।**
- कठपुतली कला का प्रदर्शन करते समय **अत्यधिक नाटकीय क्षेत्रीय संगीत प्रस्तुत किया जाता है।**

Search on TG: @apna_pdf

कुंडेही (ओडिशा)

- ओडिशा की कठपुतलियाँ हल्की लकड़ी से बनाई गई होती हैं और उनके **पैर नहीं होते हैं,** लेकिन वे लंबी **स्कर्ट पहनती हैं।**
- उनमें **अधिक जोड़ होते** हैं और इसलिए **वे अधिक बहुमुखी** और स्पष्ट होती हैं और इन कठपुतलियों को चलाने में आसानी होती है।
- कठपुतली चलाने वाले सामान्यतः **त्रिकोणीय आकार की एक लकड़ी का सहारा (Prop) लेते हैं**, जिसमें ऊपर-नीचे करने के लिए धागे जुड़े होते हैं।
- इन कठपुतलियों की वेशभूषा, **जात्रा जो कि एक पारंपरिक नाटक है के अभिनेताओं द्वारा पहनी जाने वाली वेशभूषा से मिलती-जुलती है।**
- कठपुतलियों के प्रदर्शन के दौरान साथ में दिया जाने वाला संगीत क्षेत्रीय होता है और यह **ओडिसी से प्रेरित होता है।**

गोम्बयेट्टा (कर्नाटक)

- गोम्बयेट्टा कठपुतली की आकृतियाँ **अत्यधिक शैलीबद्ध होती हैं।**
- इन कठपुतलियों के पैरों, कंधों, कोहनी, कूल्हों और घुटनों पर जोड़ होता है। इन कठपुतलियों को एक प्रोप से बँधे **पाँच से सात धागों द्वारा संचालित किया जाता है।**
- इन कठपुतलियों को क्षेत्र के पारंपरिक **नाट्यरूप यक्षगान** के पात्रों की तरह शैलीबद्ध और **डिजाइन किया गया है। गोम्बयेट्टा कठपुतली कला का प्रदर्शन यक्षगान नाटकों के प्रसंगों** पर आधारित होता है।
- कठपुतली की कुछ अधिक जटिल गतिविधियों को **एक समय में दो से तीन कठपुतली कलाकारों द्वारा संचालित किया जाता है।**

बोम्मलट्टम (तमिलनाडु)

- बोम्मालट्टम कठपुतलियाँ सभी पारंपरिक भारतीय कठपुतलियों में **सबसे बड़ी, सबसे भारी और सबसे मुखर हैं, जिनकी लंबाई 4.5 फीट और वजन तकरीबन 10 किलोग्राम** तक होता है।
- बोम्मालट्टम **में छड़ पुतली और धागा पुतली दोनों** का मिश्रण होता है।
- ये कठपुतलियाँ **लकड़ी की बनी हुई होती हैं,** और इनका संचालन धागों के माध्यम से किया जाता है।
- ये धागे **लोहे के छल्ले से बँधे हुए होते हैं। यह छल्ला कठपुतली** के सिर पर **मुकुट** की तरह पहनाया जाता है। कुछ कठपुतलियों के हाथ जोड़युक्त होते हैं, जिन्हें छड़ों के माध्यम से संचालित किया जाता है।
- बोम्मालट्टम, नाटक में **विस्तृत प्रारंभिक कार्यक्रम होते हैं** जिन्हें **चार भागों में विभाजित किया गया है–**
  - **विनायक पूजा**
  - **कोमली**
  - **अमणट्टम**
  - **पुसेनकणट्टम**

छाया कठपुतली (Shadow Puppet)

छाया कठपुतलियाँ **चपटी आकृतियाँ की होती हैं, जो चमड़े से काटकर बनाई जाती हैं। चमड़े का शोधन करके उन्हें पारभासी बनाया जाता है।** इन कठपुतलियों को प्रकाश के एक तीव्र स्रोत के सामने लाया जाता है।

प्रकाश और पर्दे के मध्य हेरफेर से छायाकृतियाँ बनती हैं।

तोगलु गोम्बयेट्टा (कर्नाटक)

- तोगलु गोम्बयेट्टा कठपुतलियाँ **अधिकांशतः** आकार में छोटी होती हैं।
- तोगलु गोम्बयेट्टा कठपुतलियों की एक अनूठी विशेषता सामाजिक स्थिति के आधार पर कठपुतली के आकार में भिन्नता है, उदाहरण के लिए– **राजाओं और धार्मिक पात्रों के लिए बड़े आकार** और **आम लोगों** या नौकरों के लिए छोटे आकार की कठपुतलियाँ होती हैं।

थोलु या तोलु बोम्मालट्टा (आंध्र प्रदेश)

- तोलु बोम्मालट्टा कठपुतलियाँ **आकार में बड़ी होती हैं** और **उनकी कमर, कंधे, कोहनी और घुटने जोड़युक्त होते हैं।**
- वे **दोनों तरफ रंगीन होती हैं।** इसलिए, इन कठपुतलियों की पर्दे पर रंगीन छायाकृतियाँ बनती हैं।
- इस कठपुतली कला के प्रदर्शन के दौरान उपयोग की जाने वाली धुन क्षेत्रीय शास्त्रीय संगीत से प्रभावित होता है।
- इस कठपुतली नाटक का विषय **रामायण, महाभारत और पुराणों** से लिया जाता है।

रावणछाया (ओडिशा)

- रावणछाया कठपुतलियाँ एक टुकड़े में होती हैं और इनमें **कोई जोड़ नहीं होता।** इसीलिए इनके संचालन के लिए **बड़ी निपुणता की आवश्यकता होती है।**
- ये कठपुतलियाँ **हिरण की खाल से बनाई गई होती हैं** और इन कठपुतलियों के निर्माण **साहसिक नाटकीय मुद्राओं में की जाती है।**
- रावणछाया कठपुतलियाँ हालाँकि आकार में छोटी **(<2 फीट)** होती हैं, लेकिन ये बहुत ही संवेदनशील और लयबद्ध छायाकृतियाँ बनाती हैं।
- ये कठपुतालियाँ रंगीन नहीं होती हैं, इसलिए पर्दे पर **अपारदर्शी छायाकृतियाँ बनाती हैं।**
- मानव आकृतियों के साथ-साथ **पेड़, पहाड़, रथ आदि जैसे प्रॉप** का भी उपयोग किया जाता है।

Search On TG: @apna_pdf

छड़ कठपुतलियाँ (Rod Puppets)

छड़ कठपुतलियाँ वैसे तो **दस्ताना-कठपुतलियों (Glove-puppets) का ही अगला चरण हैं**, लेकिन सामान्यतः ये आकार में **बहुत बड़ी होती हैं** और आधार पर स्थित **छड़ों पर आधारित होती हैं और उन्हीं के माध्यम से इनका संचालन भी किया जाता है। कठ**पुतली कला का यह रूप अब **अधिकांशतः पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में प्रचलित है। उड़ीसा** की कठपुतलियाँ बंगाल की कठ**पुतलियों** की अपेक्षा आकार में **छोटी होती** हैं।

पुतुल नाच (पश्चिम बंगाल)

- बंगाल की छड़ कठपुतलियाँ **लगभग 3 से 4 फीट** ऊँची होती हैं। वे **लकड़ी से बनाई जाती हैं** और एक विशेष क्षेत्र की विभिन्न कलात्मक शैलियों का पालन करती हैं।
- संगीत, वेशभूषा और मौखिक पाठ **जात्रा नाट्य शैली का बारीकी से अनुसरण करते हैं।**
- पश्चिम बंगाल के नादिया **जिले में छड़ कठपुतलियाँ** जापान की बनराकू (Bunraku) कठपुतलियों की तरह **आदमकद होती थीं।** यह रूप अब **लगभग विलुप्त हो चुका है।**

- इन कठपुतलियों में **अधिकतर तीन जोड़ होते हैं।** मुख्य छड़ पर लगा सिर **गर्दन से जुड़ा होता है, और अन्य छड़ों पर लगे दोनों हाथ कंधों** से जुड़े हुए होते हैं।
- एक बाँस से बना हब कठपुतली कला को प्रदर्शित करने वाले **कलाकार की कमर पर** मजबूती से बाँधा जाता है, जिस पर **कठपुतली को आधार देने वाली छड़ रखी जाती है।**
- **गायक कठपुतली कलाकार** का साथ देने के लिए नगाड़ा, हरमोनियम और झाँझ के साथ संगीतकारों का एक समूह होता है।

यमपुरी (बिहार)

- पश्चिम बंगाल और उड़ीसा की पारंपरिक छड़ कठपुतलियों के विपरीत, ये कठपुतलियाँ एक टुकड़े में होती हैं और इनमें कोई जोड़ नहीं होता है।
- इसलिए इनके संचालन के लिए अधिक निपुणता की आवश्यकता होती है।

उड़ीसा की छड़ कठपुतलियाँ

- ये आकार में बहुत छोटी होती हैं।
- कठपुतली के इस रूप में छड़ और धागा कठपुतलियों के तत्वों को संयोजित किया जाता है।

दस्ताना कठपुतलियाँ (Glove Puppets)

दस्ताना कठपुतली को **आस्तीन, हाथ या हथेली की कठपुतली के रूप में भी जाना जाता है।** इनका सिर या तो कागज की लुगदी, कपड़े या लकड़ी से बना हुआ होता है, गर्दन के ठीक नीचे से दो हाथ निकले होते हैं। इस कठपुतली के शेष आकृति में एक लंबी स्कर्ट होती है।

- इसके संचालन हेतु पहली उँगली मस्तक पर रखी जाती है **तथा मध्यमा उँगली** और **अँगूठा** कठपुतली की **दोनों भुजाओं** को संचालित करते हैं।
- भारत में दस्ताना कठपुतलियों की परंपरा **उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल** और **केरल में लोकप्रिय है।**
- **उत्तर प्रदेश** में, दस्ताना कठपुतली नाटक आमतौर पर **सामाजिक विषयों को प्रस्तुत करते हैं,** जबकि **उड़ीसा में ऐसे नाटक राधा** और **कृष्ण** की कथाओं पर आधारित होते हैं।
- उड़ीसा में कठपुतली कलाकार एक हाथ से **ढोलक बजाता है** और दूसरे हाथ से **कठपुतली को** संचालित करता है। **संवादों** के साथ-साथ अदाएँ, **कठपुतली की चाल** और **ढोलक की थाप** एक ही समय में प्रस्तुत की जाती है, जिससे एक सजीव माहौल बन जाता है।

पावाकुथु (केरल)

- इसकी उत्पत्ति **18वीं शताब्दी** में केरल के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य-नाटक **कथकली से प्रभावित होकर हुई।**
- इस कठपुतली की ऊँचाई **एक से दो फीट तक होती है**, इसका **सिर लकड़ी का** और **भुजाएँ** मोटे कपड़े से जुड़ी होती हैं।
- **चेहरा** पेंट, गिल्डेड टिन, मोर पंख आदि से सजा हुआ होता है।
- **कठपुतली को प्रदर्शित करने वाला कलाकार बैग के अंदर हाथ डालकर**, सिर और हाथों को हिलाकर कठपुतली को संचालित करता है।
- प्रयुक्त संगीत वाद्ययंत्रों में **चेंडा, चेंगिलोआ, इलाथलम** और **शंख शामिल हैं।**
- इसके विषय **रामायण** या **महाभारत** के प्रसंगों पर आधारित होते हैं।

❖ ❖ ❖

Search on TG: @apna_pdf

10 भारतीय हस्तशिल्प

काँच से निर्मित वस्तुएँ

- काँच के मोतियों के प्रारंभिक साक्ष्य गंगा घाटी के **चित्रित धूसर मृद्भांड (लगभग 1000 ईसा पूर्व) से प्राप्त होते हैं।** काँच के लिए वैदिक शब्द '**कंच**' या '**कच**' था।
- **ब्रह्मपुरी** और **कोल्हापुर में काँच उद्योग के पुरातात्विक साक्ष्य** मिले हैं, यह उद्योग **दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी तक सक्रिय था**, जो **मसूर के दाने के आकार के मोतियों (Lenticular Beads) का उत्पादन करता था।**
  - इसके अलावा **मास्की** (दक्कन), **अहार** (राजस्थान), **हस्तिनापुर**, **अहिच्छत्र** (उत्तर प्रदेश), **एरण** और **उज्जैन** (मध्य प्रदेश) में भी काँच के साक्ष्य मिले हैं।
- **चश्मे** का उल्लेख संस्कृत ग्रंथ '**व्यासयोगचरित्र**' में मिलता है।
- मुगलों ने **शीश महल** जैसे अपने स्मारकों में सजावट के रूप में काँच के उपयोग को प्रोत्साहित किया।
- काँच निर्माण के वर्तमान क्षेत्रों में **हैदराबाद** (चूड़ी का जोड़ा), **फिरोजाबाद (काँच की चूड़ियों का नगर) और सहारनपुर** (**पंचकोरा** काँच के खिलौने) शामिल हैं।

कपड़े पर हस्तशिल्प

कपड़े पर बुनाई, छपाई, बँधाई और रंगाई सहित विभिन्न हस्तशिल्प विधियों का उपयोग किया जाता है।

शैली	क्षेत्र	विशेषताएँ
बंधनी या बँधेज	**राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु**	यह **छोटी गाँठें बाँधने** और सुंदर पैटर्न बनाने के लिए उन्हें अलग-अलग रंगों में रंगने की एक विधि है।
लहरिया	**राजस्थान**	इसमें **लहर** या **लहर जैसे** पैटर्न बनाए जाते हैं।
इकत	**तेलंगाना, ओडिशा, गुजरात और आंध्र प्रदेश**	इसमें बुनाई से पहले सूत पर **प्रतिरोधी रंग लगाया जाता है।**
कलमकारी	**आंध्र प्रदेश**	यह **वनस्पति रंगों का** उपयोग करके कपड़ों पर **हाथ से पेंटिंग करने की एक विधि है।** [UPSC-2015]
बाटिक कला	**मध्य प्रदेश** और **पश्चिम बंगाल**	इसमें कपड़े के **एक सिरे को पिघले हुए मोम** और **रंगों से भिगोकर** बहुरंगी साड़ियाँ और दुपट्टे बनाए जाते हैं।
तनचोई बुनाई	**गुजरात**	चीनी तकनीक से प्रभावित एक सूक्ष्म **लघु चित्रकला (Miniature Painting) है।**
जमदानी	**पश्चिम बंगाल**	इसमें पारदर्शी पृष्ठभूमि पर अपारदर्शी पैटर्न के साथ **विभिन्न शैलियों में मलमल की बुनाई की जाती है।** [UPSC-2018]
तेलिया रूमाल	**आंध्र प्रदेश**	**सूत पर तेल उपचार** की एक विधि है।
भवानी जमक्कलम	**तमिलनाडु**	यह तमिलनाडु क्षेत्र में निर्मित **कंबल और कालीन से संबंधित कला है।** इसे जीआई टैग प्रदान किया गया है।

भारत की पारंपरिक क्षेत्रीय साड़ियाँ

साड़ी	क्षेत्र	विशेषताएँ
पोचमपल्ली साड़ी	**आंध्र प्रदेश**	यह अपने जटिल रूपांकनों और **रंगाई की एक अनूठी इकत शैली** के लिए जानी जाती है, इसमें **रेशम और सूत का मिश्रण** होता है।
कोसा साड़ी	**छत्तीसगढ़**	इसे इस क्षेत्र में उत्पादित **विशेष रेशम से तैयार किया जाता है।**
इलकल	**कर्नाटक**	**इसमें कसूती (Kasuti) कढ़ाई का** उपयोग **रथ और हाथी युक्त** सामान्य रूपांकनों के लिए किया जाता है।

Search On TG: @apna_pdf

कसावु साड़ी	**केरल**	इस साड़ी की प्रमुख विशेषता **सुनहरे बॉर्डर** युक्त **क्रीम रंग के कपड़े से है।**
चंदेरी साड़ी	**मध्य प्रदेश**	ये अपनी **स्पष्ट बनावट** और **सुंदर कपड़े के लिए जानी जाती हैं। [UPSC-2014]**
नौवारी साड़ी	**महाराष्ट्र**	यह एक नौ गज की साड़ी है, जिसे **कस्ता (Kaashtha) साड़ी के नाम से भी जाना जाता है।**
पैठानी	**महाराष्ट्र**	यह अपने **विस्तृत जरी के काम** और चमकीले रंगों के लिए प्रसिद्ध है।
बोमकाई साड़ी	**ओडिशा**	**इकत** कढ़ाई और सूक्ष्म धागे के काम वाली रेशम और सूती की साड़ियाँ।
दाबू तकनीक	**राजस्थान**	यह सूती कपड़े पर **मिट्टी प्रतिरोधी हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग है।**
कोनराड साड़ी	**तमिलनाडु**	यह अपने **चमकीले रंगों** और पारंपरिक रूपांकनों के लिए प्रसिद्ध है।
तंचोई जरी साड़ी	**वाराणसी**	यह एक **बनारसी साड़ी है जिसमें** एक या दो ताने और **दो से पाँच रंगों के साथ बुनाई की विधि** शामिल होती है।
बालूचरी मुर्शिदाबाद साड़ी	**पश्चिम बंगाल**	इसमें बॉर्डर और पल्लू पर **प्राचीन कहानियों को दर्शाया जाता है।**
ताँत	**पश्चिम बंगाल**	यह खरी सूती और प्रिंटेड साड़ी है।

हाथी दाँत शिल्प (Ivory Crafting)

भारत में हाथी दाँत शिल्प **वैदिक काल से चला आ रहा है**, जिसे '**दंत**' कहा जाता है, जो यह दर्शाता है कि इसका स्रोत **हाथी दाँत है।**

हड़प्पा काल के दौरान, हाथी दाँत और उससे बने पासे जैसी वस्तुओं को तुर्कमेनिस्तान, अफगानिस्तान और फारस की खाड़ी के कुछ हिस्सों में निर्यात किया जाता था।

- **पारंपरिक हाथी दाँत शिल्प केंद्रों** में दिल्ली, जयपुर और पश्चिम बंगाल के कुछ भाग शामिल हैं, जो कलाकृतियों, सिंगारदान जैसी वस्तुओं और **प्रसिद्ध अंबारी हाथी का निर्माण करते हैं।**
- **केरल हाथी दाँत पर चित्रकारी** के लिए प्रसिद्ध है।
- **जोधपुर हाथी दाँत की चूड़ियों** के लिए प्रसिद्ध है।
- **जयपुर अपने हाथी दाँत के आकर्षक जालीदार के काम** के लिए प्रसिद्ध है।

टेराकोटा शिल्प

- टेराकोटा एक **अर्ध-पकी हुई सिरेमिक** मिट्टी है जो अपने **जलरोधक** और टिकाऊ गुणों के लिए जानी जाती है, जो इसे **मूर्तिकला और वास्तुकला के लिए आदर्श बनाती है।**
- प्राचीन पाल काल में बौद्ध **विहारों में उत्कृष्ट टेराकोटा कला का प्रदर्शन किया जाता था।**
- टेराकोटा शिल्प कौशल के उल्लेखनीय उदाहरणों में **बांकुरा घोड़ा, पंचमुरा घोड़ा** और पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले **में टेराकोटा मंदिर शामिल हैं।**

मिट्टी के बर्तनों की शिल्पकला

मिट्टी के बर्तन बनाने का इतिहास लगभग 6000 ईसा पूर्व का है, इसके साक्ष्य **मेहरगढ़ के नवपाषाण स्थल में पाए गए हैं**, जो अब पाकिस्तान में है।

- दक्षिण भारत में **200-100 ईसा पूर्व के** 'रूलेट पॉटरी (**Roulette Pottery**)' के अवशेष मिले हैं, जो मुख्य रूप से पुदुचेरी के पास अरिकामेडु में मिले हैं।
- **इंडो-इस्लामिक परंपराओं** के प्रभाव से चमकते हुए मिट्टी के बर्तनों को प्रमुखता मिली।
- **प्रत्येक क्षेत्र** अलग-अलग प्रकार के मिट्टी के काम में निपुण है।

रंगीन मिट्टी के बर्तन	**खुर्जा (उत्तरप्रदेश)**	यहाँ रंगीन और मजबूत मिट्टी का काम होता है, जिसका उपयोग घरेलू सामान बनाने के लिए किया जाता है।
नीले मिट्टी के बर्तन	**जयपुर**	मुल्तानी मिट्टी का उपयोग मिट्टी के बर्तन बनाने में किया जाता है।
कागजी मिट्टी के बर्तन	**अलवर**	यह एक नाजुक, पतला और थोड़ा भंगुर मिट्टी का बर्तन है।
पोखरण	**पोखरण (राजस्थान)**	यह घरेलू उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाने वाला **मजबूत और लंबे समय तक चलने वाला मिट्टी का बर्तन है।**
डलगेट	**जम्मू और कश्मीर**	यह एक **अद्वितीय चमकदार** मिट्टी का बर्तन है।
सुराई	**पश्चिम बंगाल**	इसे **पहिये पर नहीं बनाया जाता** बल्कि चार टुकड़ों को एक साथ जोड़कर आधार बनाया जाता है।
गोपीचंदन	**गुजरात**	चंदन **जैसी दिखने वाली मिट्टी का** उपयोग वस्तुएँ बनाने के लिए किया जाता है।
कारीगीरी (Karigiri)	**तमिलनाडु**	यह एक विशेष रूप से डिजाइन किया गया बर्तन है जिसका उपयोग अर्कोट के नवाब द्वारा किया जाता था।

Search On TG: @aprla_pdf

धातु शिल्प

धातु शिल्प में लोहा, ताँबा और घंटा धातु (bell metal) का उपयोग करके विभिन्न धात्विक ढलाई तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

- **मरोड़ी काम (Marori work) (राजस्थान) में** धातु पर नक्काशी करना और राल के साथ रिक्त स्थान को भरना, जटिल डिजाइन बनाना शामिल है।
- धातु के अधिकांश काम का उपयोग **बादला (Badla)** जैसे **बर्तन और तवे बनाने के लिए किया जाता** है, जो राजस्थान के **मारवाड़ क्षेत्र में जस्ता** से बने **अर्ध-गोलाकार या गोल बर्तन होते हैं।**
- **तारकशी (राजस्थान) में** धातु के आधार पर छेनी से खाँचे के पैटर्न बनाने के लिए **बारीक ताँबे या पीतल के तारों का** उपयोग किया जाता है।
- **कोफ्तागीरी**, या **दमिश्कीकरण (Damascening)**, में **गहरे रंग की सतह पर हल्के रंग की धातु जड़ना शामिल है।** इसमें जयपुर और अलवर के कारीगरों ने निपुणता प्राप्त कर ली है।
- **मुरादाबाद बारीक काम** में माहिर है। यहाँ बारीक नक्काशी वाले बर्तन बनाने के लिए **नक्काशी शैली का** उपयोग किया जाता है।
- **अरनमुला कन्नाडि** (शाब्दिक अर्थ अरनमुला दर्पण) **केरल का एक हस्तनिर्मित मिश्र धातु का दर्पण है।**

कांस्य शिल्प

कांस्य शिल्प धातु शिल्प कौशल के सबसे पुराने रूपों में से एक है, **मोहनजोदड़ो में मिली नर्तकी की मूर्ति इसका एक प्रमुख उदाहरण है।**

- **मत्स्य पुराण में प्रारंभिक कांस्य ढलाई विधियों** का **साहित्यिक साक्ष्य** मिलता है, और **नागार्जुन के रस रत्नाकर** जैसे बाद के ग्रंथों में **धातु की शुद्धता** और **जस्ता के आसवन विधि** पर चर्चा की गई है।
- **उत्तर प्रदेश के इटावा, सीतापुर, वाराणसी और मुरादाबाद** जैसे केंद्रों के साथ कांस्य शिल्प, सजावटी वस्तुओं और आनुष्ठानिक वस्तुओं का उत्पादन करने का एक महत्वपूर्ण केंद्र है।

पीतल की कारीगरी	केंद्र	विशेषताएँ
पेम्बर्थी शिल्प	वारंगल जिला, तेलंगाना	उत्तम **शीट धातु (पीतल) कला** रथों और मंदिरों को सुशोभित करती है।
ढोकरा कास्टिंग	ओडिशा और पश्चिम बंगाल	लॉस्ट मोम विधि (**lost wax method**) का उपयोग ढोकरा वस्तुओं के निर्माण के लिए किया जाता है। ढोकरा निकिल, पीतल और जस्ता की एक मिश्र धातु है।
गज तांडव	केरल	इसके अंतर्गत शिव की **तांडव** मुद्रा में नृत्य मूर्तियाँ बनाई जाती हैं।
दुर्लभ जैन मूर्तियाँ और प्रतीक	कर्नाटक	यह कर्नाटक में प्राचीन जैन तीर्थ केंद्रों की आवश्य3कता को दर्शाता है।
पहलदार लैंप	जयपुर और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से	ताँबे और पीतल के दीपक विभिन्न शैलियों और आकारों में निर्मित किए जाते हैं।

चाँदी के आभूषण

फिलीग्री का काम (Filigree Work) यह चाँदी के आभूषण बनाने की एक प्रसिद्ध विधि है।

- **ओडिशा** चाँदी की पायल, जिसे **पेनरी/पैजाम के नाम से भी जाना जाता** है और बुने हुए **चाँदी के आभूषण जिन्हें गुंची कहा जाता है को बनाने में अग्रणी है।**
- **कर्नाटक के बिदरी गाँव** से शुरू हुआ **बिदरी का काम (Bidri work)** गहरे रंग की पृष्ठभूमि पर चाँदी का उपयोग करके अपने जटिल जड़ाई के काम, जो एक अलग प्रकार का वैषम्य (Striking Contrast) पैदा करता है, के लिए प्रसिद्ध है।

चमड़े के उत्पाद

चमड़े की टैनिंग की कला लगभग 3000 ईसा पूर्व पुरानी है, जिसमें प्रारंभ में बाघ, हिरण और बाद में ऊँट जैसे जानवरों की खाल का उपयोग किया गया था।

- **राजस्थान** चमड़े, मुख्य रूप से ऊँट के चमड़े का एक प्रमुख बाजार है। चमड़े का उपयोग विभिन्न प्रकार के बैग बनाने के लिए किया जाता है।
  - **जयपुर** और **जोधपुर** विशेष प्रकार के चमड़े के जूते **'मोजड़ी'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
  - **बीकानेर में मनोती कला** का प्रयोग किया जाता है।
  - **मनोती कला:** यह एक ऐसी विधि है जिसमें ऊँट की खाल का प्रयोग कर **सजावटी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।**
- उत्तर प्रदेश में **कानपुर चमड़े** और **टैंड** उत्पादों के लिए प्रसिद्ध है।
- **महाराष्ट्र** अपनी **कोल्हापुरी चप्पलों** के लिए प्रसिद्ध है।
- **चेन्नई** और **कोलकाता चमड़े के बैग और जूते** के महत्त्वपूर्ण केंद्र हैं।
- **पंजाबी जूतियाँ** अपनी एप्लीक विधि (Applique Technique) के लिए प्रसिद्ध हैं, जो उनकी सुंदरता को बढ़ा देती है।

काष्ठ कला

लकड़ी भारत के व्यापक वन क्षेत्र से प्राप्त एक महत्त्वपूर्ण उत्पाद है, जिससे विभिन्न प्रकार के फर्नीचर निर्मित किए जाते हैं। **शीशम की लकड़ी** और **देवदार की लकड़ी** से विभिन्न प्रकार के उत्कृष्ट नक्काशीदार लकड़ी के फर्नीचर तैयार किए जाते हैं।

- **कश्मीर** लकड़ी के फर्नीचर उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र है, जिसकी परंपरा 13वीं शताब्दी से चली आ रही है। इसमें **अखरोट** और **देवदार की** लकड़ी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।
- कश्मीरी कारीगर **फर्नीचर** के अलावा, क्षेत्र की **ठंडी** और **नम जलवायु** के अनुकूल लकड़ी के घर और **हाउसबोट बनाने में भी कुशल हैं।**
- कश्मीर की जालीनुमा आकृति का कार्य, **जिनमें अच्छे-दार, खतमबंद** और **अजलिपिंजरा इत्यादि** शामिल हैं, वह अपने उत्कृष्ट शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध है।
- **गुजरात** लकड़ी की जालीनुमा आकृतियों के कार्य के लिए एक और प्रमुख केंद्र है, जिसका उपयोग आमतौर पर खिड़कियों और दरवाजों पर किया जाता है।
- हिमाचल प्रदेश, जहाँ प्रचुर मात्रा में लकड़ी के संसाधनों की उपस्थिति है उसे लकड़ी के ऊपर नक्काशी का कार्य करने में उत्कृष्टता हासिल है, जो विविध प्रकार के मंदिर से संबंधित वस्तुओं, जैसे- **नागबेल, कुथेरीफूल, जाली और डोरी** के रूप में दिखाई देती है।

Search On TG: @apna_pdf

- काष्ठ कला के अन्य प्रमुख केंद्र निम्नलिखित हैं–

राज्य	प्रयुक्त काष्ठ या लकड़ी	विशेषताएँ
आंध्र प्रदेश	**रक्तचंदन** (विशिष्ट लाल चंदन	नक्काशीदार गुड़िया और मूर्तियाँ।
कर्नाटक	चंदन	इसका उपयोग **देवी-देवताओं की मूर्तियों**, उपयोगी वस्तुओं और चंदन के बक्सों जैसी वस्तुएँ बनाने के लिए किया जाता है।
केरल	सागौन की लकड़ी	**थरवाड हाउस** बनाने के लिए उपयोग किया जाता है जो अपने **गहरे भूरे रंग** और लकड़ी के ऊपर बारीक कारीगरी संबंधी कार्यों के लिए प्रसिद्ध है।
नागालैंड	कुमिसिंग	नक्काशीदार वस्तुओं में **लकड़ी का विशाल नगाड़ा** विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
राजस्थान	रोहिल्डा (Rohilda)	राजस्थान का पाली जिला पतले कटोरे और अन्य वस्तुओं का उत्पादन करता है।
महाराष्ट्र	हेल और पैंगोरा लकड़ी	**रत्नागिरी में लकड़ी के रोगन का उपयोग कर** कृत्रिम फल बनाए जाते हैं।

विभिन्न प्रकार के खिलौने

खिलौने और गाड़ियों के प्रारंभिक साक्ष्य **हड़प्पा सभ्यता** के हैं। आलमगीरपुर, अंबखेड़ी, कालीबंगन और लोथल जैसे पुरातात्विक स्थलों ने ताँबे, कांस्य और टेराकोटा से खिलौना गाड़ियाँ तैयार करने के लिए मॉडल तैयार किए हैं। इसी तरह के गाड़ी मॉडल **अतरंजीखेड़ा, नागार्जुनकोंडा, सांभर, सोनापुर, उज्जैन और ब्रह्मपुरी** जैसे प्रारंभिक ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त किए गए हैं।

- राजस्थान **रंग-बिरंगे कपड़े की गुड़िया** और **भरवाँ खिलौनों** के लिए प्रसिद्ध है।
- असम की पारंपरिक गुड़िया **पिथ** या **इंडियन कॉर्क से बनाई जाती हैं।**
- **मैसूर** और **चन्नपटण लाख के लकड़ी के खिलौनों** के लिए जाने जाते हैं।
- आंध्र प्रदेश में **कोंडापल्ली** लोकप्रिय **अंबारी हाथी खिलौना बनाने के लिए स्थानीय कोमल लकड़ी 'पोंकी' का उपयोग करने के लिए प्रसिद्ध है।**
- **एतिकोप्पका खिलौने या एतिकोप्पका बोम्मालु:** ये **आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध लकड़ी से बने खिलौने हैं।** इसमें लकड़ी के संरक्षण के लिए उन पर **वार्निश का लेप लगाया जाता है।**
- **आंध्र प्रदेश** की प्रसिद्ध **तिरूपति गुड़िया लाल लकड़ी (रेडवुड)** से बनाई जाती थी।
- **किन्नल** (जिसे किन्हल भी कहा जाता है) खिलौने **कर्नाटक के हैं**, तथा ये 15वीं और 16वीं शताब्दी के हैं।
- किन्नर खिलौनों को **विजयनगर साम्राज्य के राजाओं** और फिर बाद में **कोप्पल के नवाब द्वारा** संरक्षण प्रदान किया गया था।
- **लाइफादिबी गुड़िया मणिपुर के मैतेई समुदाय के** लोगों की पारंपरिक **कपड़े की गुड़िया है।**

पत्थर की वस्तुएँ (Stoneware)

दक्षिण भारतीय शहर पत्थर के असाधारण काम के लिए जाने जाते हैं, जिनमें **बलुआ पत्थर, लाल पत्थर** और **ग्रेनाइट का उपयोग किया जाता है।**

- मौर्य काल की **जीवंत मूर्तियाँ** और **स्थापत्य फलक अजंता और एलोरा की चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं**, खजुराहो की कामुक मूर्तियों तथा सांची और भरहुत में बौद्ध नक्काशी जैसे स्मारकों में देखने को मिलते हैं।
- **कांगड़ा जिले के मसरूर में चट्टान को काटकर बनाया गया अखंड मंदिर पहाड़ी क्षेत्रों में** एक उल्लेखनीय उदाहरण है।
- मुगल काल में पत्थर का काम संगमरमर के काम की ओर स्थानांतरित हो गया, जिसमें **पित्रा ड्यूरा के काम पर ध्यान केंद्रित किया गया**, जिसमें **संगमरमर पर रंगीन पत्थरों को जड़ा जाता है।**
- **राजस्थान** प्रसिद्ध **'संग-ए-मरमर'** या **सफेद मकराना संगमरमर की** खरीद का एक प्रमुख केंद्र है।
- **उत्तर प्रदेश** का **झाँसी** गहरे भूरे रंग के पत्थर **संग-ए रथक** से वस्तुएँ तैयार करने के लिए प्रसिद्ध है।

कढ़ाई शिल्प (Embroidery Crafts)

कढ़ाई आकर्षक डिजाइन बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के धागों का उपयोग करके **सुई के काम से कपड़े को सजाने** की एक कला है। कढ़ाई में अन्य सामग्रियों जैसे मोती, मूँगा, सितारों आदि का भी उपयोग किया जा सकता है।

- कपड़ों को सामुदायिक कहानियों, प्राकृतिक परिवेश से उभरे रूपांकनों, धार्मिक शिलालेखों, आर्थिक स्थिति के चित्रों आदि से भी सजाया जाता है।
- भारतीय कढ़ाई में **विभिन्न क्षेत्रीय शैलियाँ शामिल हैं जो क्षेत्र** और **प्रयुक्त सामग्री** के अनुसार अलग-अलग होती हैं।
- कढ़ाई के दो मुख्य प्रकार हैं– **जरदोजी** भारी कढ़ाई है, और **कामदानी** हल्की कढ़ाई है।

जरी/जरदोजी

- जरी को **जरदोजी कढ़ाई के** नाम से भी जाना जाता है। जरदोजी दो फारसी शब्दों से मिलकर बना है– **'जरी'** का अर्थ है सोना, और **'दोजी'** का अर्थ है **कढ़ाई।**
- इस प्रकार, कढ़ाई के काम के लिए **सोने** और **चाँदी के धागे का** उपयोग करके कढ़ाई की जाती है।
- **खंडेला** (राजस्थान) और **जयपुर जरी के काम** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- भारत में जरी कढ़ाई की लोकप्रिय शैलियाँ **सलमा सितारा, कामदानी, मीनाकारी, मोकैश, गोटा आदि हैं।**
- जरी से संबंधित एक अन्य तकनीक **करचोबी है,** जिसकी उत्पत्ति राजस्थान में हुई है। इसमें जरी के समान धातु के धागों जैसा उभरा पैटर्न तैयार करने के लिए सूती भराई पर सपाट टाँके सिले जाते हैं।

Search On TG: @apna_pdf

चिकनकारी (उत्तर प्रदेश)

- चिकनकारी कढ़ाई की उत्पत्ति फारसी शब्द '**चकीन**' से हुई है, जो कपड़े पर सुरुचिपूर्ण पैटर्न को दर्शाता है।
- यह कढ़ाई **उत्तर प्रदेश में प्रमुखता से की जाती है,** विशेषकर **लखनऊ में**, जो **चिकनकारी केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।**
- इसे **छाया कार्य (Shadow Work) के रूप में भी जाना जाता** है, जो कपड़े के उलटे तरफ से हेरिंगबोन टाँके के माध्यम से किया जाता है, जो कपड़े के सीधे तरफ छाया प्रभाव पैदा करता है और रूपांकनों को दर्शाता है।
- यह परंपरागत रूप से **सफेद मलमल के कपड़े पर** सफेद धागे के साथ किया जाता है, अब इसे लिनन, जॉर्जेट, सूत इत्यादि जैसे विभिन्न प्रकार के कपड़ों पर भी किया जाने लगा है।

कांथा (बंगाल)

कांथा शब्द संस्कृत से लिया गया है जिसका अर्थ है '**चीथड़े (Rags)**', जिसमें पुरानी साड़ियों या धोती के सफेद सूती कपड़े को जोड़कर निचली सतह बनाई जाती है, जिसके ऊपर कई परत बनाई जाती हैं और सफेद धागे से साधारण सिलाई की जाती है।

कांथा कढ़ाई की **दो श्रेणियाँ हैं**–

प्रथम श्रेणी में ढेर सारी सूती साड़ियों या धोतियों की परतें बनाकर कढ़ाई की जाती है।

द्वितीय श्रेणी में **पुरानी सूती चादरों का उपयोग किया जाता है और उसके ऊपर टसर रेशम के धागों** के साथ सचित्र कढ़ाई की जाती है।

कांथा कढ़ाई में कमल, सूर्य, चंद्रमा, चक्र, स्वास्तिक, कालका और जीवन के लिए उपयोगी वृक्षों के चित्र उकेरे जाते हैं।

कसूती (कर्नाटक)

कसूती महिलाओं की एक कला है।

कसूती शब्द की उत्पत्ति **कै (kai) शब्द से हुई है** जिसका अर्थ है **हाथ** और **सूती** का अर्थ है **सूती धागा।** इस प्रकार कसूतू सूती धागे की हस्तकला है।

कसूती कढ़ाई में **एक ही धागे का उपयोग किया जाता है** और कपड़े पर धागों की सावधानीपूर्वक गिनती की आवश्यकता होती है। गांठ रहित पैटर्न बनाए जाते हैं, जिससे कपड़े के दोनों ओर समरूपता दिखाई देती है।

कसूती कढ़ाई के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कपड़ा **इरकल साड़ी है।**

गारा कढ़ाई	यह भारत में **पारसी समुदाय से उद्भूत** एक पारंपरिक कढ़ाई शैली है। यह अपने जटिल, अति सूक्ष्म, फूलों **और प्रकृति से प्रेरित डिजाइनों के लिए जानी जाती है।**
शमिलामी (मणिपुर)	यह **मणिपुर** की कढ़ाई है, और इसमें बुनाई और कढ़ाई का मिश्रण होता है।
कारचोबी (राजस्थान)	कारचोबी **राजस्थान की प्रसिद्ध कढ़ाई है, जिसमें जरी की धागे से उभरी हुई** कढ़ाई की जाती है। इसे सूती कपड़े के ऊपर समतल टाँके से कढ़ाई की जाती है।
गोटा (राजस्थान)	विस्तृत पैटर्न बनाने के लिए **कपड़े पर सुनहरे जरी रिबन** के छोटे टुकड़े लगाए जाते हैं और **किनारों को सिल दिया जाता है।**
पिछवई (राजस्थान और गुजरात)	**पिछवई कढ़ाई राजस्थान और गुजरात** राज्यों से संबंधित है। यह लटकाने के लिए एक सुंदर और **रंगीन कढ़ाई है** जिसका उपयोग **धार्मिक मूर्तियों की** पृष्ठभूमि **के रूप में किया जाता है।**
बन्नी (गुजरात)	**यह लोहाना समुदाय** द्वारा की जाने वाली कढ़ाई है। इसमें **काँच** के काम सहित **ज्यामितीय चित्रों की कढ़ाई** के लिए **रेशम के सोता का उपयोग किया जाता है।**
काथी कला (गुजरात)	यह **गुजरात** की खानाबदोश **रबारी जनजातियों द्वारा की जाने वाली** कढ़ाई की एक शैली है। इसमें छोटे दर्पणों से सुसज्जित **चेन सिलाई का काम होता है, जो अक्सर चमकीले रंगे कपड़ों पर किया जाता है।**
पटोला (गुजरात)	यह **गुजरात की दोहरी इकत शैली है**, जिसका उपयोग मुख्य रूप से **रेशम साड़ियों के लिए किया जाता है**। इसमें टाई-डाई के समान **प्रतिरोधी रंगाई प्रक्रिया को अपनाया जाता है।**
आरी (कश्मीर और गुजरात)	इसे **क्रूवेल** नामक लंबी हुक वाली सुई का उपयोग करके चेन सिलाई के **बारीक, संकेंद्रित छल्लों में बनाया जाता है** और इसमें फूलों के चित्र बनाए जाते हैं।
जमावर (कश्मीर)	जमावर कश्मीर में बने जटिल डिजाइन वाले **शॉल हैं।** इसे बेहतरीन शिल्प कौशल के लिए जाना जाता है, जिसमें आगे या पीछे का हिस्सा पता नहीं चलता है।
पश्मीना (कश्मीर)	**पश्मीना बढ़िया कश्मीरी ऊन** और उससे बने **वस्त्रों** को दिया गया नाम है। ऊन **चांगथांगी बकरियों** से प्राप्त होती है। यह महीन और पतली होती है, जो हल्के परिधान के लिए उपयुक्त होती है।
कशीदाकारी (जम्मू और कश्मीर)	इसमें वनस्पति पैटर्न बनाने के लिए सरल चेन टाँके का उपयोग किया जाता है।
फुलकारी (पंजाब और हरियाणा)	फुलकारी में हल्के रंग के कपड़े पर चमकीले रंगों के कंट्रास्ट के साथ **फूलों की आकृतियों की कढ़ाई की जाती है।** कपड़े के पिछले भाग पर टाँकेनुमा कढ़ाई की जाती है।

Search On TG: @apna_pdf

बाग (पंजाब)	यह **फुलकारी के समान है,** लेकिन कपड़े की पूरी सतह पर कढ़ाई का काम होता है।
सुजानी (बिहार)	यह महीन मलमल, आमतौर पर लाल या सफेद रंग के कपड़े पर की जाती है। मुख्य चित्रों को विभिन्न रंगों के धागों से भरे मोटे चेन टाँके से बनाया जाता है। **[UPSC 2018]**
फूल पत्ती का काम (उत्तर प्रदेश)	इस कढ़ाई में **फूलों की पंखुड़ियों** और **पत्तियों** के चित्र बनाए जाते हैं।
मुकैश/मुकेश (उत्तर प्रदेश)	इसमें पूरे कपड़े पर पैटर्न बनाने के लिए **पतले धातु के धागों को घुमाना शामिल है।**

भारत में ब्लॉक प्रिंटिंग

ब्लॉक प्रिंटिंग सुंदर डिजाइन बनाने के लिए **लकड़ी या धातु के ब्लॉकों** का उपयोग करके कपड़े को रंगने की एक कला है। कभी-कभी इसमें, **लिनोलियम ब्लॉकों का** भी उपयोग किया जाता है। भारत दुनिया में ब्लॉक-प्रिंटेड कपड़े के सबसे बड़े निर्माताओं और निर्यातकों में से एक है। भारत में ब्लॉक प्रिंटिंग के निम्नलिखित केंद्र हैं–

गुजरात

- गुजरात में, इस प्रकार की हाथ की छपाई **पेठापुर परिवारों** द्वारा की जाती रही है। वे जटिल ब्लॉक बनाते हैं और **मिट्टी प्रतिरोधी-मुद्रण विधि (Mud Resist-printing Method)** का उपयोग करके कपड़ों को प्रिंट करते हैं। इन प्रिंटों को **सौदागीरी (व्यापारी) प्रिंट** कहा जाता है।
- **गुजरात में धमड़का गाँव अजरख** नामक ब्लॉक-प्रिंटेड कपड़े के लिए प्रसिद्ध है। अजरख में प्राकृतिक रंगों जैसे कि मजीठ की जड़ से लाल, जंग लगे लोहे के घोल से काला और नील से नीले रंग का उपयोग करके **ज्यामितीय डिजाइन बनाए जाते** हैं।
- **कच्छ** में, **लोकप्रिय पैटर्न पक्षियों, जानवरों** और **नर्तकियों** के **काले** और **लाल डिजाइन** हैं।
- **अहमदाबाद** और **बड़ौदा** की साड़ियों में लाल या नीले रंग की पृष्ठभूमि पर **आम के बड़े पैटर्न होते हैं।**

राजस्थान

- भारत का छिपा समुदाय अधिकांश ब्लॉक नक्काशीदार, रंगरेज और के लिए जाना जाता है। वे पक्षियों, जानवरों, मानव आकृतियों, देवी-देवताओं के रंगीन प्रिंट बनाते हैं।
- हाथ से छपाई के महत्त्वपूर्ण केंद्र जयपुर, बागरू, सांगानेर, पाली और बाड़मेर हैं।
- **सांगानेर अपने केलिको-प्रिंटेड चादरों,** रजाई और साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। केलिको प्रिंटिंग में पहले आउटलाइन प्रिंट की जाती है और फिर रंग भरा जाता है।
- **दू-रूखी प्रिंटिंग में** कारीगर कपड़े के दोनों तरफ प्रिंट करते हैं।
- **बागरू** (राजस्थान का एक शहर) अपने **स्याही-बेगार** और **दाबू प्रिंट के लिए प्रसिद्ध है।** स्याही-बेगार काले और पीले गेरू या क्रीम रंग में डिजाइन किया जाता है। दाबू प्रिंट ऐसे प्रिंट हैं, जिनमें प्रतिरोधी पेस्ट लगाकर कुछ भागों को डाई से छिपाया जाता है।

पंजाब

- ब्लॉक प्रिंटिंग **छिम्बा नामक कपड़ा श्रमिकों के एक समूह की कला थी।**
- डिजाइन आमतौर पर फूल और ज्यामितीय होते थे।
- **आज पारंपरिक डिजाइन विलुप्त** हो गए हैं, और **रासायनिक रंगों ने वनस्पति रंगों का** स्थान ले लिया है।

पश्चिम बंगाल

- **सेरामपुर** ब्लॉक प्रिंटिंग का केंद्र है।
- यह अपने बोल्ड और चमकीले पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है।

आंध्र प्रदेश

उत्कृष्ट कलमकारी पेंटिंग बनाने के लिए ब्लॉक प्रिंटिंग विधि लागू की जाती है। जैसा कि नाम से पता चलता है, कलमकारी एक कलम (**कलाम**) से बनाई गई कलाकृति (**कारी**) **है।** यह हाथ से बनाई गई पेंटिंग और ब्लॉक प्रिंटिंग का मिश्रण है।

- कलमकारी कला के दो प्रमुख केंद्र **श्रीकालाहस्ती** और **मछलीपट्टनम हैं।**
  - **श्रीकालाहस्ती कलमकारी: इसमें हिंदू पौराणिक कथाओं** के विषयों को पैनलों में चित्रित किया जाता है, और किनारे पर एक लिपि चित्रित की जाती है।
  - इसके सबसे लोकप्रिय चित्रों में हिंदू देवी-देवताओं के चित्र हैं। यह काम पूरी तरह से **ब्रश जैसी कलम से किया जाता है।**
  - **मछलीपट्टनम:** यहाँ फारसी रूपांकनों जैसे पेड़, लताएँ, फूल और पत्तियों के डिजाइन मुख्य रूप से बिस्तर की चादरों, पर्दों और कपड़ों पर बनाए जाते हैं।

फर्श के डिज़ाइन

विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों में फर्श के अनेक डिजाइन देखने को मिलते हैं। ये डिजाइन आमतौर पर **धार्मिक** या **पारिवारिक समारोहों** के दौरान **तैयार किए जाते हैं।** वे आमतौर पर **प्राकृतिक सामग्री और रंगों का** उपयोग करके **हाथ से बनाए जाते हैं।** कला के पारंपरिक तत्व के अनुरूप सामग्री का चयन उनकी **अस्थायी प्रकृति** और **आसानी से मिटाए जाने की क्षमता के आधार पर किया जाता है।**

- **चौकपूर्ण (पंजाब, उत्तर प्रदेश)** और **ऐपण (हिमाचल प्रदेश)** डिजाइन में वर्गों, वृत्तों और त्रिभुजों को बनाया जाता है।
- **मंडाना (राजस्थान, मध्य प्रदेश) में** वर्ग, षट्कोण, त्रिभुज और वृत्त के पैटर्न बनाए जाते हैं।
  - जमीन को **गाय के गोबर से लेपित किया जाता है** और गहरे लाल रंग (रेती के मिश्रण से) से तैयार किया जाता है।
- **दक्षिण भारत** में **कोलम डिजाइन को तैयार करने के लिए,** गीली जमीन पर पिसे हुए चावल या कुचले हुए पत्थर के छोटे-छोटे बिंदु जोड़कर डिजाइन बनाए जाते हैं।
- इसे **कर्नाटक** में **हासे, आंध्र प्रदेश** में **मुग्गुलु** और **केरल** में **गोलम के नाम से भी जाना जाता है।**
  - **मंडप कोलम विशेष रूप से विवाह समारोहों के लिए गीले चावल के पेस्ट** से बनाए गए बड़े डिजाइन हैं।
  - **ग्रह कोलम** प्रत्येक सुबह घरों में पूजा के लिए स्थानों को पवित्र करने के लिए बनाए जाते हैं।

Search On TG: @apna_pdf

- **झोंटी (ओडिशा) और अरीपाना (पश्चिम बंगाल, असम) के** डिजाइनों में शंख, मछली, साँप और फूल जैसे शैलीगत चित्र बनाए जाते हैं।
    - ऐसे डिजाइन चाक पाउडर से बनाए जाते हैं और रंगीन पाउडर या चावल के पेस्ट से भरे जाते हैं। प्रत्येक **अरीपाना डिजाइन** के सामने अक्सर फूल रखे जाते हैं।

जीआई टैग (GI TAG) प्राप्त प्रमुख हथकरघा उत्पाद

आंध्र प्रदेश: उप्पादा जामदानी साड़ी, वेंकटगिरी साड़ी, मंगलागिरी साड़ी और कपड़े, धर्मावरम हैंडलूम पट्टू साड़ी और पावड़ा।
गुजरात: तंगालिया शॉल, कच्छ शॉल, पाटन पटोला, राजकोट पटोला।
हिमाचल प्रदेश: कुल्लू शॉल, किन्नौरी शॉल।
जम्मू और कश्मीर: कश्मीरी पश्मीना, कानी शॉल।
कर्नाटक: नवलगुंड दुरियाँ, इलकल साड़ी, मोलकालमुरु साड़ी, उडुपी साड़ी, मैसूर सिल्क, गुलेदगुड्ड खाना।
केरल: कन्नानोर होम फर्निशिंग्स, बलरामपुरम साड़ी, कासरगोड साड़ी, कुथमपल्ली साड़ी, चेंदमंगलम धोती और सेट, मुंडु कुथमपल्ली धोती और सेट मुंडू।
मध्य प्रदेश: चंदेरी, टीकमगढ़ का बेल मेटल वेयर,।
महाराष्ट्र: सोलापुर चादर, पैठानी साड़ी, सोलापुर टेरी टॉवल, करवाथ कटि तुसार साड़ी।
मणिपुर: शफी लांफी, वांगखेई फी, मोइरांग फी।
ओडिशा: कोटपाड हैंडलूम, उड़ीसा इकत, खंडुआ साड़ी, गोपालपुर टसर, धालापत्थर परदा, संबलपुरी बँधा साड़ी, बोमकाई साड़ी, हबसपुरी साड़ी, बेरहामपुर पट्टा (फोडा कुंभा) साड़ी।
तमिलनाडु: काँचीपुरम सिल्क, भवानी जमक्कलम, मदुरै सुंगुडी, अरनी सिल्क, कोवई कोरा कॉटन साड़ी, सेलम सिल्क (सलेम वेनपट्टू के नाम से जाना जाता है)।
तेलंगाना: पोचमपल्ली इकत, गडवाल साड़ी, सिद्दीपेट गोलाबामा, नारायणपेट हैंडलूम साड़ी।
उत्तर प्रदेश: लखनऊ की चिकनकारी, मथुरा सांझी शिल्प, बनारस ब्रोकेड्स और साड़ी, मिर्जापुर हस्तनिर्मित दरी।
पश्चिम बंगाल: शांतिपुर साड़ी, बालूचरी साड़ी, धनियाखली साड़ी।
अन्य जीआई टैग: मुगा सिल्क (असम); **भागलपुर सिल्क** (बिहार); **चंपा सिल्क साड़ी** (छत्तीसगढ़); **कोटा डोरिया** (राजस्थान); **चाखेसांग शॉल** (नागालैंड)।

भारत में मृदभांडों का क्रमिक विकास

मृदभांड के प्रकार	समय सीमा	संस्कृति/ सभ्यता	प्रमुख विशेषताएँ	महत्त्व
हस्तनिर्मित मृदभांड	पूर्व-हड़प्पा (7000-3000 ईसा पूर्व)	मेहरगढ़ संस्कृति	सरल, हस्तनिर्मित, प्रायः अलंकृत; भंडारण और भोजन पकाने के लिए उपयोग किया जाता है।	ये स्थायी जीवन और मिट्टी के साथ प्रारंभिक प्रयोग की शुरुआत के प्रतीक है।
काले मृदभांड	नवपाषाण और प्रारंभिक ताम्रपाषाण	दक्षिणी नवपाषाण संस्कृतियाँ	हस्तनिर्मित, प्रायः पॉलिशयुक्त, सरल डिजाइन; भंडारण और दैनिक उपयोग के लिए प्रयुक्त।	ये मृद्भाण्ड दक्षिण भारत में प्रारंभिक कृषि पद्धतियों और स्थायी जीवन को दर्शाते हैं।
गेरू/गैरिक वर्णिक मृदभांड (OCP)	2000–1500 ई.पू.	उत्तर हड़प्पा एवं वैदिक काल	अपरिष्कृत लाल या गेरू रंग के मृद्भाण्ड; प्रायः दाह संस्कार के स्थलों से संबंधित।	हड़प्पा और वैदिक संस्कृतियों के बीच संक्रमणकालीन चरण को इंगित करते हैं।
काले और लाल मृदभांड (BRW)	ताम्रपाषाण काल (2000-1500 ईसा पूर्व)	अहार-बनास, मालवा और जोर्वे संस्कृतियाँ	अंदर से काले तथा बहार से लाल; ज्यामितीय डिजाइन; कृषि समुदायों से संबद्ध।	विभिन्न ताम्रपाषाण संस्कृतियों के मध्य सांस्कृतिक अंतःक्रिया को दर्शाते हैं।
लाल मृदभांड	हड़प्पा सभ्यता (2600-1900 ईसा पूर्व)	सिंधु घाटी सभ्यता	चाक निर्मित, अच्छी तरह से पके हुए, लाल या गेरू रंग; प्रायः काले ज्यामितीय या पशु रूपांकनों के साथ चित्रित।	मृदभांड बनाने की उन्नत तकनीक और बड़े स्तर पर उत्पादन का संकेत।
चित्रित धूसर मृदभांड (PGW)	प्रारंभिक लौह युग (1200-600 ईसा पूर्व)	वैदिक संस्कृति	चित्रित ज्यामितीय पैटर्न के साथ समृद्ध रूपांकनों से निर्मित चित्रित धूसर मृदभांड; गंगा के मैदानों में पाए गए।	प्रारंभिक भारतीय-आर्यों और परवर्ती वैदिक बस्तियों से संबद्ध।

Search On TG: @apna_pdf

उत्तरी काले पॉलिश वाले मृद्भाण्ड (NBPW)	6वीं-दूसरी शताब्दी ई.पू.	मौर्य काल	चमकदार काली सतह; कीमती वस्तुओं के लिए उपयोग किए जाने वाले विशिष्ट मृद्भाण्ड।	शहरीकरण और मौर्य साम्राज्य के उद्भव को दर्शातें हैं।
खुरदरे मृदभांड	दूसरी शताब्दी ई.पू.-दूसरी शताब्दी ई.	भारत-रोमन व्यापार	दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले पतले, चाक द्वारा निर्मित मृद्भाण्ड जिन पर मुद्रांकित डिजाइन है।	यह भारत और रोमन साम्राज्य के मध्य होने वाले व्यापारिक संबंधों को दर्शातें हैं।
लाल पॉलिश वाले मृद्भाण्ड	प्रथम शताब्दी ई.पू.-दूसरी शताब्दी ई.	सातवाहन काल, गुप्त काल	चिकनी, लाल पट्टी/धारी युक्त पॉलिशदार सतह; प्रायः पकी हुई मिट्टी की मूर्तियों और मृद्भाण्डों का उपयोग किया जाता था।	व्यापरिक केन्द्रों में पाए गये, जो समुद्री और अंतर्देशीय व्यापार को दर्शाते हैं।
चाइना क्ले /चीनी मिट्टी के मृद्भाण्ड	पहली-छठी शताब्दी ई.	गुप्त काल	विकसित सफेद मृद्भाण्ड, कभी-कभी चित्रित; औपचारिक प्रयोजनों के लिए उपयोग किए जाते थे।	गुप्त स्वर्ण युग के दौरान मृद्भाण्ड निर्माण तकनीक में परिष्कार के संकेत प्राप्त होते हैं।
चमकीले मृद्भाण्ड	मध्यकालीन काल (13वीं-18वीं शताब्दी)	सल्तनत और मुगल काल	रंगीन ग्लेज, पुष्प पैटर्न और फारसी प्रभाव; मुख्य रूप से सजावटी।	भारतीय कला और वास्तुकला पर फारसी और मध्य एशियाई प्रभाव प्रतिबिंबित होता है।
पकी हुई मिट्टी की मूर्तियाँ/ टेराकोटा मूर्तियाँ	सभी युगों/कालों में	सिंधु घाटी से गुप्त काल तक	सांचे और हाथ से दबाकर निर्मित; देवताओं, इनपर जानवरों और दैनिक जीवन के दृश्यों को दर्शाया गया।	धार्मिक प्रथाओं, सांस्कृतिक विश्वासों और कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित करती हैं।

Search on TG: @apna_pdf

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH

UPSC OPTIONAL COURSE 2025

Hinglish / हिन्दी

Anthropology | PSIR | History | Sociology

Geography | Public Administration | Mathematics | हिन्दी साहित्य

Starts From ₹ 8,999/-

COUPON CODE PWOIAS500 FOR EXTRA DISCOUNT

9920613613 | pw.live

11 विभिन्न कालों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी

खगोल विज्ञान (ASTRONOMY)

भारतीय खगोल विज्ञान की प्रारंभिक व्याख्याएँ बड़े स्तर पर यज्ञों को व्यवस्थित करने के लिए की गई थी। इन्हें **ज्योतिष वेदांग में दर्ज किया गया है।**

- **आर्यभट्ट की** पुस्तक **आर्यभट्टीय** में चार में से दो खंड **खगोल विज्ञान को समर्पित हैं।**
  - इस पुस्तक में खगोल विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जिसमें परिभाषाएँ, **ग्रहों की स्थिति निर्धारित करने की विधियाँ, सूर्य और चंद्रमा की गति** का विवरण और **ग्रहों की गणना शामिल हैं।**
  - इस पुस्तक में बताया गया है कि **पृथ्वी गोलाकार है** और अपनी धुरी पर घूमती है। **चंद्र ग्रहण** तब होता है जब **पृथ्वी की छाया चंद्रमा** पर पड़ती है और **सूर्य ग्रहण** तब होता है जब **चंद्रमा की छाया पृथ्वी** पर पड़ती है।
  - **'खगोल' नालंदा** की प्रसिद्ध खगोलीय प्रयोगशाला थी जहाँ आर्यभट्ट ने अध्ययन किया था।
- **वराहमिहिर ने** अपने ग्रंथ **पंच सिद्धांतिका में खगोल विज्ञान के पाँच सिद्धांतों** (अर्थात **सूर्य, रोमाका, पॉलिसा, वशिष्ठ** और **पैतामह सिद्धांत)** के प्रेक्षणों का सारांश प्रस्तुत किया।
- **फिरोज शाह तुगलक ने दिल्ली** में प्रेक्षण चौकियाँ (Observation Posts) स्थापित कीं, जबकि **फिरोज शाह बहमनी ने हकीम हुसैन गिलानी** और **सैयद मुहम्मद काजिमी** के मार्गदर्शन **से दौलताबाद** में एक वेधशाला (Observatory) स्थापित की।
- **फिरोज शाह** के दरबारी खगोलशास्त्री **महेंद्र सूरी ने यंत्रराज** नामक एक अभिनव खगोलीय उपकरण का आविष्कार किया था।
- **परमेश्वर** और **महाभास्करीय** खगोलशास्त्रियों के प्रसिद्ध घराने थे।
- **नीलकंठ सोमसुत्वन ने** आर्यभट्ट की कृति पर एक टीका लिखी।
- कमलाकर ने खगोल विज्ञान पर इस्लामी विचारों का गहन अध्ययन किया। वे इस्लामी ज्ञान के विशेषज्ञ थे।
- जयपुर के महाराजा **सवाई जय सिंह द्वितीय ने** दिल्ली, उज्जैन, वाराणसी, मथुरा और जयपुर में पाँच खगोलीय वेधशालाएँ **(जंतर मंतर) स्थापित कीं।**

चिकित्सा

अथर्ववेद **में** पहली बार विभिन्न रोगों, उनके इलाज और औषधियों का उल्लेख किया गया है। वैदिक काल के दौरान, **अश्विनी कुमार वैद्य** थे और उन्हें देवतुल्य स्थान दिया गया था। **धन्वन्तरि चिकित्सा के देवता** थे।

- 800 ईसा पूर्व में **आत्रेय** और **अग्निवेश ने आयुर्वेदिक सिद्धांतों** पर विचार-विमर्श किया।
- लगभग 600 ईसा पूर्व में **तक्षशिला** और **वाराणसी**, चिकित्सा एवं शिक्षा के केंद्र के रूप में उभरे।
- इस क्षेत्र के दो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ, **चरक** द्वारा रचित **चरक संहिता** और **सुश्रुत** द्वारा रचित **सुश्रुत संहिता थे।**

- **विज्ञान के जनक चरक ने** 2500 वर्ष पहले **आयुर्वेद** का संकलन किया था।
- **चरक संहिता में** औषधीय प्रयोजनों के लिए **पौधों और जड़ी-बूटियों** के उपयोग के बारे में विस्तार से बताया गया है।
- इस ग्रंथ में **पाचन, चयापचय और प्रतिरक्षा प्रणाली के बारे में व्यापक टिप्पणी की गई है, जिसमें इलाज की तुलना में रोकथाम** पर अधिक जोर दिया गया है।
- इस ग्रंथ में आनुवंशिकी **(जेनेटिक्स) के बारे में भी बताया गया है।**
- **सुश्रुत संहिता शल्य चिकित्सा (सर्जरी)** और **प्रसूति विज्ञान (Obstetrics)** की व्यावहारिक समस्याओं से संबंधित है।
- चौथी शताब्दी ईस्वी के आस-पास **शल्य चिकित्सा का एक विशिष्ट विषय के रूप में उल्लेख किया गया था, सुश्रुत ने** इस विधा का नेतृत्व किया था।
- **सुश्रुत ने** शल्य चिकित्सा को **उपचार कला** की **सर्वोच्च उपलब्धि माना** और ऑपरेशन, अस्थि सेटिंग और मोतियाबिंद सर्जरी के तरीकों के साथ-साथ **121 सर्जिकल उपकरणों का वर्णन किया।**
- **वे राइनोप्लास्टी (प्लास्टिक सर्जरी) व नेत्र विज्ञान (मोतियाबिंद) के विशेषज्ञ थे।**

- यूनानी (180 ईसा पूर्व-10 ईस्वी में) भारत में **इंडो-ग्रीक शासन** के दौरान **भारतीय चिकित्सा पद्धति से बहुत प्रभावित थे।**
- **प्रारंभिक मध्यकाल** में **भारत में सर्जरी को असफलताओं** का सामना करना पड़ा क्योंकि **रेजर** से चीरा **लगाने का काम नाई का काम** बन गया। इस दौरान हुए कुछ घटनाक्रम इस प्रकार हैं:
- यूनानी **चिकित्सा पद्धति ग्यारहवीं शताब्दी** के आस-पास **मुसलमानों** के साथ भारत में आई। यूनानी **पद्धति, तिब्बती** चिकित्सा की एक महत्त्वपूर्ण प्रणाली है जो भारत में विकसित हुई।
- निदान उद्देश्यों के लिए **नाड़ी और मूत्र परीक्षण किए गए। सारंगधर संहिता में** दवाओं के लिए अफीम के उपयोग की सिफारिश की गई है।
- रस चिकित्सा **पद्धति मुख्य रूप से** बीमारियों को ठीक करने के लिए धात्विक दवाओं सहित **कई खनिज दवाओं** से संबंधित है।

Search On TG: @apna_pdf

- **तुहफत-उल-मोमिनीन सत्रहवीं शताब्दी** में **मुहम्मद मुनिन** द्वारा लिखा गया एक फारसी ग्रंथ था जिसमें **चिकित्सकों की राय पर चर्चा की गई है।**
- **अली-बिन-रब्बान ने फिरदौसु-हिकमत** नामक पुस्तक में संपूर्ण **यूनानी चिकित्सा पद्धति** के साथ-साथ **भारतीय चिकित्सा ज्ञान का सारांश प्रस्तुत किया।**
- **हकीम दीया मुहम्मद ने** अरबी, फारसी और आयुर्वेदिक चिकित्सा ज्ञान को शामिल करते हुए, **माजिने दीया नामक** पुस्तक संकलित की।
- औरंगजेब को समर्पित "तिब्बी **औरंगजेबी" आयुर्वेदिक स्रोतों पर आधारित** है। दारा शिकोह को समर्पित **नूरुद्दीन मुहम्मद** की **"मुसलजती-दाराशिकोही" यूनानी चिकित्सा** से संबंधित है।

- **सिद्ध** एक क्षेत्रीय आयुर्वेदिक संस्करण है जो **भारतीय तमिल संस्कृति में विकसित हुआ।** इसमें **धातुओं, खनिजों** और **रसायनों के उपयोग पर जोर दिया जाता है।**
- अभिघात विज्ञान (Traumatology) और चोटों से निपटने वाली सिद्ध चिकित्सा की एक शाखा को, **वर्मम कहा जाता है**
- **कीमिया की** उत्पत्ति सिद्ध पद्धति में हुई है।

धातुकर्म (METALLURGY)

- सिंधु घाटी की खुदाई से **उन्नत धातुकर्म प्रथाओं का पता चलता है,** जो वहाँ मिले चमकते हुए मिट्टी के बर्तनों, कांस्य और ताँबे की कलाकृतियों से स्पष्ट होता है।
- वैदिक लोगों को **अनाज के किण्वन**, फल, चमड़े की टैनिंग और रंगाई प्रक्रियाओं का ज्ञान था।
- **पहली शताब्दी ईस्वी** तक, विभिन्न **धातुओं** (लोहा, ताँबा, चाँदी, सोना) और **मिश्र धातुओं** (पीतल, कांस्य) का बड़े पैमाने पर उत्पादन हो रहा था।
- **कुतुबमीनार परिसर** में स्थापित लौह **स्तंभ,** उच्च गुणवत्ता **वाली मिश्र धातु** तकनीक का प्रमाण है।
- **कपड़ा रंगाई** एक लोकप्रिय शिल्प था, जिसमें **अजंता के भित्तिचित्र** उच्च गुणवत्ता वाले रंगों के प्रयोग को दर्शाते हैं।
- एक उल्लेखनीय खोज में **सुल्तानगंज** (भागलपुर के पास) में मिली **बुद्ध की दो मीटर ऊँची कांस्य प्रतिमा शामिल है।**

नौवहन (NAVIGATION)

- **गुजरात के लोथल में एक स्थान पर** एक डॉकयार्ड या गोदीबाड़ा (जलयान बनाने या मरम्मत करने का स्थान) के अवशेष मिले हैं, जो प्राचीन भारत में समुद्री व्यापार के फलने-फूलने का प्रमाण देते हैं।
- **"युक्ति कल्पतरु"** एक **प्राचीन संस्कृत ग्रंथ है** जो तत्कालीन जहाज निर्माण तकनीकों के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करता है।
- प्राचीन भारत में, जहाजों को मुख्य रूप से दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया था: **"सामान्य"** या साधारण वर्ग, और **"विशेष"** या विशेष वर्ग।
    - साधारण **वर्ग को समुद्री यात्राओं** के लिए डिजाइन किया गया था और इसमें दो अलग-अलग प्रकार शामिल थे: **"दीर्घ"**, जिसमें **लंबे और संकीर्ण** जहाज होते थे और **"उन्नत"** जिसमें **ऊँचे** जहाज होते थे।
    - इसके अतिरिक्त, जहाजों को उनकी लंबाई और केबिन की स्थिति के आधार पर वर्गीकृत किया गया था। **"सर्वमंदिर"** जहाजों में पूरे डेक पर फैले केबिन होते थे, जिनका उपयोग अक्सर **शाही यात्राओं** और **घोड़ों के परिवहन के लिए किया जाता था।** डेक के मध्य भाग में स्थित केबिन वाले जहाजों को **"मध्यमंदिर"** कहा जाता था, जो आमतौर पर **आरामदायक यात्राओं के लिए उपयोग किए जाते थे।**
    - अंत में, **विशेष रूप से युद्ध** के लिए डिजाइन किए गए जहाजों को **"अग्रमंदिर"** कहा जाता था।

जीव विज्ञान (BIOLOGY)

- 13वीं शताब्दी में, **हंसदेव ने "मृग-पक्षी शास्त्र"** संकलित किया, जिसमें शिकार करने वाले जानवरों और पक्षियों का एक सामान्य विवरण प्रस्तुत किया गया।
- **अकबर ने हाथियों** और **घोड़ों** सहित **उच्च गुणवत्ता वाले घरेलू जानवरों के** प्रजनन पर ध्यान केंद्रित किया।
- **जहाँगीर की भूमिका:**
    - जहाँगीर की कृति **"तुजुक-ए-जहाँगीरी", में लगभग छत्तीस पशु प्रजातियों** की चर्चा करते हुए पालन और संकरण (**Weeding and Hybridisation**) से संबंधित प्रेक्षणों और प्रयोगों का प्रलेखन किया गया है।
    - वह एक जिज्ञासु **प्रकृतिवादी भी था**, उसने अपने दरबारी कारीगरों के साथ मिलकर पुष्प चित्र बनाकर लगभग 57 पौधों की प्रजातियों का प्रलेखन किया था।
    - उसके दरबारी चित्रकार, विशेषकर **मंसूर ने, जानवरों के** विस्तृत और सुंदर **चित्र बनाए।**

रसायन विज्ञान (CHEMISTRY)

- कागज के उपयोग से पहले प्राचीन साहित्य का लेखन, आमतौर पर **दक्षिण भारत में ताड़ पत्रों** और **उत्तरी क्षेत्रों में बर्च वृक्ष की छाल** (भोज-पत्र पेड़ की छाल) पर संरक्षित किया जाता था।
- **कागज का उत्पादन** मध्यकाल में शुरू हुआ जिसके उल्लेखनीय केंद्र- कश्मीर, सियालकोट, जाफराबाद, पटना, मुर्शिदाबाद, अहमदाबाद, औरंगाबाद और मैसूर में थे।
    - **कागज बनाने की तकनीक** पूरे देश में समान थी, केवल विभिन्न प्रकार के कच्चे माल से लुगदी तैयार करने में अंतर था।
    - **मैसूर** में **टीपू के शासनकाल** में एक अलग कारखाने में **सोने की सतह** वाला एक विशेष प्रकार का **कागज तैयार किया जाता था।**
- मुगलों को **बारूद उत्पादन** और आग्नेयास्त्रों में इसके उपयोग के बारे में **ज्ञान था।**
    - आतिशबाजी में रॉकेट, फुलझड़ियाँ, रंगीन फ्लेयर और विस्फोटक उपकरण शामिल थे।
    - **तुज़ुक-ए-बाबरी में तोपों की ढलाई** की प्रक्रिया का विवरण दिया गया है, जिसमें धातु को पिघलाकर सांचों में डाला जाता था।

Search On TG: @apna_pdf

- विस्फोटकों के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं का भी निर्माण किया जाता था। **आइन-ए-अकबरी में अकबर के इत्र कार्यालय** के नियमों का उल्लेख है, जो **गुलाब-इत्र** की लोकप्रियता पर प्रकाश डालता है।
- चमकदार टाइल्स और मिट्टी के बर्तन भी इस काल के उल्लेखनीय आविष्कार थे।

प्राचीन और मध्यकालीन भारत में रसायन विज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण विकास

रसायन विज्ञान का क्षेत्र	मुख्य ग्रन्थ	समय सीमा	प्रमुख योगदानकर्ता	प्रमुख योगदान
रसायन विद्या (रसायन)	रसरत्नाकर, रसार्णव	लगभग 8वीं-12वीं शताब्दी ई.	नागार्जुन, गोविंदाचार्य	मूलभूत धातुओं को सोने में परिवर्तित करने की तकनीकी; पारा आधारित दवाओं और पारस मणि (Elixirs) का विकास।
धातुकर्म	बृहत् संहिता (वराहमिहिर)	लगभग 6वीं शताब्दी ई.	अज्ञात (प्राचीन धातुकर्मी)	प्रगलन, मिश्र धातु निर्माण और संक्षारण प्रतिरोध में उन्नत तकनीकें (जैसे, दिल्ली लौह स्तंभ)।
औषधीय रसायन विज्ञान	चरक संहिता, सुश्रुत संहिता	पहली-दूसरी शताब्दी ई.	चरक, सुश्रुत	क्षार, अम्ल और कीटाणुनाशक सहित हर्बल और खनिज आधारित दवाइओं का निर्माण।
रंगाई और वस्त्र	अर्थशास्त्र, बृहत् संहिता	लगभग 4 शताब्दी ई.पू. – 4 शताब्दी ई.	कौटिल्य, वराहमिहिर	प्राकृतिक रंगों, रंगबंधकों (Mordants) का निर्माण, तथा वस्त्रों को रंगने की तकनीकें (जैसे, नील रंगाई)।
काँच और चीनी मिट्टी	एक्स्कवेशन इन तक्षशिला, हड़प्पा	तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व	हड़प्पा के कारीगर	सिलिका, सीसा और क्षारीय पदार्थों का उपयोग करके काँच के मोती, रंगीन काँच और चमकदार मिट्टी के बर्तनों का उत्पादन करना।
साबुन और डिटर्जेंट	पारंपरिक भारतीय प्रक्रियाएँ	प्राचीन	अज्ञात	सफाई के लिए प्राकृतिक क्षार, रीठा (साबुन नट्स) और राख का उपयोग।
इत्र और सौंदर्य प्रसाधन	गंधयुक्ति (सुगंध-विज्ञान से संबंधित ग्रंथ)	लगभग 5वीं शताब्दी ई.	अज्ञात	सुगंधित तेलों के आसवन और सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण की तकनीकें।
आतिशबाज़ी बनाने की विद्या	कौटिल्य का अर्थशास्त्र	लगभग चौथी शताब्दी ई.पू.	कौटिल्य	युद्ध में विस्फोटक पदार्थों और अग्नि-आधारित संकेतन विधियों के लिए व्यंजन विधियाँ।
आसवन	रसरत्नसमुच्चय	लगभग 13वीं शताब्दी ई.	वाग्भट्ट	इत्र, तेल और औषधीय टिंचर जैसे तरल पदार्थों के आसवन की विधियाँ।
अकार्बनिक रसायन शास्त्र	रसरत्नाकर	लगभग 8वीं शताब्दी ई.	नागार्जुन	औद्योगिक और औषधीय प्रयोजनों के लिए सल्फर, पारा यौगिकों और क्षारों का निर्माण करना।

गणित (MATHEMATICS)

हड़प्पा नगर नियोजन प्राचीन भारत में माप और ज्यामिति के उन्नत ज्ञान को दर्शाता है।

ग्रंथ का नाम	लेखक	समय सीमा	प्रमुख योगदान	महत्त्व
शुल्व सूत्र	बौधायन, आपस्तम्ब, कात्यायन	लगभग 800-200 ई.पू.	ज्यामितीय निर्माण के नियम, वर्गमूल की अवधारणाएँ, और π (पाई) का सन्निकटन सूत्र।	वैदिक अनुष्ठानों में वेदिका निर्माण के लिए प्रयुक्त; ज्यामिति के प्रारंभिक सिद्धांत।
आर्यभटीय	आर्यभट्ट	लगभग 499 ई.	शून्य की अवधारणा, स्थानीय मान प्रणाली, त्रिकोणमितीय फलन और π का सन्निकटन सूत्र प्रस्तुत किया।	अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति की नींव रखी गई।
ब्रह्मस्फुट सिद्धांत	ब्रह्मगुप्त	लगभग 628 ई.	शून्य और ऋणात्मक संख्याओं की परिभाषा; द्विघात समीकरणों को हल करने के नियम।	इस्लामी और यूरोपीय गणित को प्रभावित किया।
लीलावती	भास्कर द्वितीय	लगभग 1150 ई.	अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति और संयोजन विज्ञान (कॉम्बिनेटरिक्स) के बारे में बताया; शिक्षण के लिए काव्यात्मक समस्याओं का प्रयोग किया।	शिक्षार्थियों के लिए जटिल गणितीय अवधारणाओं को सरलीकृत किया गया।

Search On TG: @apna_pdf

बीजगणित	भास्कर द्वितीय	लगभग 1150 ई.	बीजगणित पर ध्यान केंद्रित, जिसमें रैखिक और द्विघात समीकरणों के हल शामिल हैं।	पूर्व में हुए कार्यों से अलग उन्नत बीजगणितीय सिद्धांत।
गणितसारसंग्रह	महावीर	लगभग 9वीं शताब्दी ई.	अंकगणितीय संक्रियाओं, ज्यामिति और संयोजन विज्ञान पर परिचर्चा; व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर बल दिया गया।	अंकगणित और ज्यामिति में जैन गणितीय (Jain Mathematical) योगदान को लोकप्रिय बनाया।
सिद्धान्त शिरोमणि	भास्कर द्वितीय	लगभग 1150 ई.	खगोल विज्ञान और गणित सहित व्यापक कार्य; बीजगणित सहित चार खंडों में विभाजित।	खगोल विज्ञान और ब्रह्माण्ड विज्ञान के साथ एकीकृत गणितीय अनुप्रयोग।
त्रिशतिका	श्री धराचार्य	लगभग 8वीं-9वीं शताब्दी ई.	द्विघात समीकरणों को हल करने और ब्याज की गणना से संबंधित नियम शामिल किए गए।	व्यापारियों और दैनिक उपयोग के लिए व्यावहारिक गणितीय उपकरण प्रदान किए।
गणित कौमुदी	नारायण पंडित	लगभग 14वीं शताब्दी ई.	साइक्लिक प्रोब्लम्स,मैजिक स्क्वायर और क्रमचय/संयोजनों से संबंधितचर्चा की गई।	उन्नत संयोजन गणित और मनोरंजक गणित
तंत्रसंग्रह	नीलकंठ सोमयाजी	लगभग 15वीं शताब्दी ई.	ग्रहों की गणना और ज्यामिति को शामिल किया गया; आर्यभट्ट के त्रिकोणमितीय परिणामों में सुधार किया गया।	केरल की गणितीय परंपरा में खगोल विज्ञान और गणित को शामिल किया।
करणपद्धति	संगमग्राम के माधव	लगभग 14वीं शताब्दी ई.	π, साइन और कोसाइन (कोज्या) फलन (Cosine Functions) के लिए अनंत श्रृंखला की शुरुआत की गई।	यूरोप में उनकी औपचारिक खोज से सदियों पूर्व कैलकुलस/गणना की अवधारणा विकसित हुई।

कृषि (AGRICULTURE)

उल्लेखनीय **क्षेत्रीय विशिष्टताओं में** पश्चिमी घाट से **काली मिर्च**, कश्मीर से **केसर** और **फल, अदरक**, तमिलनाडु से दालचीनी, **इलायची, चंदन** और केरल से **नारियल** शामिल हैं।

- 16वीं और 17वीं शताब्दी में भारत में **तम्बाकू, मिर्च, आलू, अमरूद, कस्टर्ड सेब, काजू और अनानास** जैसे नए पौधे लगाए गए। **[UPSC-2019]**
- अन्य देशों से आए लोग नई फसलें, पेड़ और बागवानी पौधे भी अपने साथ लाए। प्रमुख फसलों में **गेहूँ, चावल, जौ, बाजरा, दालें, तिलहन, कपास, गन्ना** और **नील शामिल थे।**
- मालवा और बिहार जैसे क्षेत्र **पोस्ता** के पौधों से **अफीम उत्पादन के लिए जाने जाते थे।**
- **गोवा में जेसुइट्स** द्वारा **आम की व्यवस्थित कलम** जैसी बागवानी तकनीकें शुरू की गईं।
- सिंचाई की विधियों में **कुएँ, तालाब, नहरें, रहट, चरस (चमड़े की बाल्टियाँ) और ढेंकली** (बैलों का उपयोग कर पानी निकालने का एक उपकरण) शामिल थे।
    - **रहट (Persian Wheel) का उपयोग आगरा क्षेत्र** के आस-पास सिंचाई के लिए किया जाता था।

कृषि के विकास से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य

- नीम, राख, गोमूत्र और हर्बल मिश्रण का उपयोग करके जैविक कीट प्रबंधन विधियाँ। कृषि-पराशर (Krishi-Parashara) जैसे ग्रंथों में इन प्रक्रियाओं को उल्लेखित/ दस्तावेजीकरण किया गया है।
- अर्थशास्त्र में वर्णित वैज्ञानिक भूमि सर्वेक्षण और कराधान प्रणालियाँ। कृषि भूमि को रिकॉर्ड करने और उसका उपयोग करने के लिए कुशल तरीके।
- उन्नत वर्षा जल संचयन तकनीकें, जिनमें बावड़ियाँ, चेक डैम और टैंक शामिल हैं (जैसे, हड़प्पा युग में धोलावीरा)।
- मृदा की उर्वरता बढ़ाने हेतु गाय के गोबर, हरी खाद और कम्पोस्ट जैसी जैविक खाद का उपयोग। वृक्षायुर्वेद (Vrikshayurveda) में फलों, सब्जियों और औषधीय पौधों को उगाने की विस्तृत तकनीक।
- पौधों की उपज में सुधार के लिए ग्राफ्टिंग विधियों (Grafting Methods) की शुरुआत।
- सीढ़ीनुमा खेती हिमालयी क्षेत्रों में पहाड़ी इलाकों के अनुकूल होने और मृदा कटाव को रोकने के लिए की जाती है।

कृषि उपकरण

- कृषि दक्षता के लिए दरांती, कुदाल और उन्नत हल जैसे औजारों का विकास।
- मिश्रित कृषि को विकसित किया गया, टिकाऊ कृषि हेतु फसलों की खेती को पशुपालन के साथ एकीकृत किया गया है।

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

12 भारत में सांस्कृतिक संस्थान और महत्त्वपूर्ण पुरस्कार

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India) **संस्कृति मंत्रालय** के अंतर्गत कार्य करता है।
- यह प्राचीन स्मारकों और पुरातात्त्विक स्थलों पर उपस्थित भौतिक विरासत के संरक्षण और उसकी सुरक्षा के लिए एक समर्पित संस्थान के रूप में कार्य करता है।
- इसका संचालन प्रमुख रूप से दो कानूनों क्रमशः **प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्त्विक स्थल और अवशेष अधिनियम,1958 एवं पुरावशेष और कला निधि अधिनियम, 1972** के तहत किया जाता है।
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संग्रहालयों, उत्खनन स्थलों, पुरालेखों इत्यादि **का प्रबंधन का भी कार्य करता है।**

भारतीय शिल्प परिषद

- भारतीय शिल्प परिषद (Crafts Council of India) एक गैर-लाभकारी संगठन है।
- इसकी स्थापना वर्ष **1964 में कमला देवी चट्टोपाध्याय** द्वारा भारतीय हस्तशिल्प उद्योग को समर्थन और बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया था।
- इसका **मुख्यालय चेन्नई में स्थित है।**
- समर्थित कला और शिल्प को प्रदर्शित करने और उसे बढ़ावा देने के लिए परिषद द्वारा **'कमला क्राफ्ट शॉप' का संचालन किया जाता है।**

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

- यह एक **स्वायत्त संगठन** है।
- इसकी स्थापना वर्ष **1985 में** दिवंगत प्रधानमंत्री **राजीव गांधी द्वारा की गई थी**।
- यह दृश्य और प्रदर्शन कलाओं सहित कला के विभिन्न रूपों के अनुसंधान, संरक्षण, प्रदर्शन और प्रसार के साथ-साथ आलोचनात्मक और रचनात्मक साहित्य को बढ़ावा देने के लिए एक समर्पित संस्थान है।

ऑल इंडिया रेडियो

- ऑल इंडिया रेडियो (AIR) भारत का अग्रणी सार्वजनिक सेवा रेडियो प्रसारक है।
- इसका संचालन भारत सरकार के **सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन किया जाता है।**
- आकाशवाणी का आदर्श वाक्य, **'बहुजन हिताय:बहुजन सुखाय'** है।
- इसका आदर्श वाक्य दर्शकों की सेवा, शिक्षा और मनोरंजन के अपने प्राथमिक लक्ष्यों को दर्शाता है।

सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र

- यह एक **स्वायत्त निकाय है।**
- सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र (Centre for Cultural Resources and Training) **शिक्षा को संस्कृति के साथ एकीकृत करने का कार्य करता है।**
- यह एक **स्वायत्त निकाय** है।
- यह भारत सरकार के **संस्कृति मंत्रालय** के अधीन आता है।
- वर्ष 1979 में, इसकी स्थापना **डॉ. कपिला वात्स्यायन** और **श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय** के प्रयासों से की गई थी।
- **इसका मुख्यालय नई दिल्ली** में अवस्थित है।
- भारतीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उदयपुर, हैदराबाद और गुवाहाटी में तीन क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किए गए हैं।

भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार

- इसकी स्थापना वर्ष 1891 में कलकत्ता में इंपीरियल रिकॉर्ड्स डिपार्टमेंट (IRD) के रूप में **अंग्रेजों द्वारा की गई थी।**
- वर्ष 1911 में, जब राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का स्थानांतरण नई दिल्ली में किया गया तो इसे भी नई दिल्ली में स्थापित कर दिया गया था।
- भारत की आजादी के बाद इसका नाम बदलकर **भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives of India)** कर दिया गया, जिसके निदेशक को संगठन का प्रमुख बनाया गया।
- अभिलेखागार का दायरा सार्वजनिक अभिलेखों, निजी कागजात/संग्रह, अनुसंधान तथा संदर्भ कार्यक्रमों और संरक्षण प्रशिक्षण **के अधिग्रहण को शामिल करने के लिए विस्तारित किया गया।**
- इसके क्षेत्रीय केंद्र **जयपुर, भुवनेश्वर और पुदुचेरी में स्थित हैं।**

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

- इसकी स्थापना **मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा** की गई थी।
- इसकी स्थापना वर्ष 1950 के दौरान की गई थी।
- सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर ध्यान देने के लिए इसकी स्थापना **संस्कृति मंत्रालय के तहत** की गई थी।

Search On TG: @apna_pdf

- **उद्देश्य:**
    - अंतरराष्ट्रीय मित्रता को बढ़ावा देना।
    - सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा।
    - स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना।
    - भारतीय संस्कृति के नए एवं पारंपरिक पहलुओं के एकीकरण इत्यादि को बढ़ावा देना।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

- राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (National Film Development Corporation) **सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अधीन काम करने वाला एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम (Public Sector Undertaking) है।**
- इसकी स्थापना वर्ष 1975 में की गई थी।
- **उद्देश्य:**
    - भारतीय फिल्म उद्योग के एकीकृत विकास को बढ़ावा देना और उसे व्यवस्थित करना।
    - सिनेमा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देना।
- वर्ष 2022 में, भारत सरकार ने **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम** के साथ फिल्म डिवीजन, फिल्म समारोह निदेशालय, भारतीय राष्ट्रीय फिल्म पुरालेख और भारतीय बाल फिल्म सोसायटी सहित चार फिल्म मीडिया इकाइयों के **विलय की घोषणा की।**

भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद

- यह एक स्वायत्त संगठन है।
- इसे वर्ष **1972 में स्थापित किया गया था।**
- भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (Indian Council of Historical Research) **शिक्षा मंत्रालय के अधीन** कार्य करता है।
- यह **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** द्वारा वित्त पोषित है।
- **यह भारत के इतिहास को** बढ़ावा **देने और संरक्षित करने** के लिए समर्पित है।
- **प्रकाशन:** इस संस्थान द्वारा **इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू** (अंग्रेजी) और **'इतिहास' (हिंदी)** जैसी पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाती हैं इसे वर्ष **1972 में स्थापित किया गया था।**
    - इन पत्रिकाओं में इतिहास पर विद्वतापूर्ण शोध लेख शामिल होते हैं।

राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (NATIONAL MISSION FOR MANUSCRIPTS)

- इसे वर्ष **1972 में स्थापित किया गया था।**
- **इसका प्राथमिक उद्देश्य 'राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस'** बनाना।
    - इस डेटाबेस में तकरीबन **दस लाख भारतीय पांडुलिपियाँ उपस्थित होनी चाहिए,** ताकि यह अपनी तरह का दुनिया का सबसे बड़ा डेटाबेस बन सके।
- **राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन** का कार्य:
    - **पांडुलिपियों का संरक्षण।**
    - पांडुलिपियों के ऐतिहासिक महत्त्व को सुरक्षित रखते हुए दस्तावेजों को संरक्षित करने के लिए स्वदेशी और आधुनिक तकनीकों के मिश्रण को नियोजित करने पर भी ध्यान केंद्रित करना है।

कला और सांस्कृतिक विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट

- यह सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत एक **गैर-लाभकारी धर्मार्थ संगठन है।**
- **इसकी स्थापना वर्ष 1984 में** भारत में विरासत जागरूकता और संरक्षण की दृष्टि से **नई दिल्ली में की गई थी।**
- यह हमारी **प्राकृतिक विरासत, निर्मित विरासत** और **अमूर्त विरासत** की **संरक्षा और सुरक्षा का कार्य करता है।**
- वर्ष 2007 में, संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसे संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद के साथ एक विशेष सलाहकार का दर्जा प्रदान किया गया है।

साहित्य अकादमी

- साहित्य अकादमी की स्थापना भारतीय साहित्य के विकास और सभी भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं समन्वय करने के साथ-साथ उच्च साहित्यिक मानक स्थापित करने के लिए की गई है।
- यह **संस्कृति मंत्रालय** के अधीन एक **स्वायत्त निकाय है।**
- इसकी स्थापना भारत सरकार द्वारा वर्ष **1954 में** नई दिल्ली में की गई थी।
- इसका **मुख्यालय** नई दिल्ली में अवस्थित है।
- इसके **चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः** कोलकाता, मुंबई, बेंगलुरु एवं चेन्नई में अवस्थित हैं।
- अकादमी ने **24 भारतीय भाषाओं** (भारत के संविधान में शामिल 22 भाषाएँ, अंग्रेजी और राजस्थानी) को मान्यता दी है।
- साहित्य अकादमी द्वारा प्रदान किए जाने वाले कुछ पुरस्कार निम्न हैं:

पुरस्कार	उद्देश्य
साहित्य अकादमी पुरस्कार	• **यह साहित्य के क्षेत्र में विशेष प्रतिभा हासिल करने** वालों को दिया जाने वाला सम्मान है। • यह प्रतिवर्ष उन लोगों को दिया जाता है, जिन्होंने अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 प्रमुख भाषाओं में से किसी में साहित्यिक योग्यता हासिल की है। • इसके अलावा वह अपने कार्यों के माध्यम से नए रुझान पैदा किए हैं।
साहित्य अकादमी फेलोशिप	• यह किसी लेखक को अपना फेलो चुनकर अकादमी द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। • यह सम्मान **'साहित्य के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान (The Immortals of Literature)'** वाले लोगों के लिए आरक्षित है। • इस पुरस्कार को किसी भी समय केवल 21 लोगों को ही दिया जा सकता है।

Search On TG: @apna_pdf

भाषा सम्मान	• यह पुरस्कार उन लेखकों को दिया जाता है, जिन्होंने **24 प्रमुख भाषाओं के अलावा अन्य किसी भारतीय भाषा में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए दिया जाता है।** • यह **शास्त्रीय और मध्यकालीन साहित्य** में योगदान को भी मान्यता प्रदान करता है।
डॉ. आनंद कुमारस्वामी फेलोशिप: कला के क्षेत्र में, विशेषकर प्राचीन भारतीय कला के क्षेत्र में काम करने वालों को दी जाती है। **प्रेमचंद फेलोशिप:** हिंदी साहित्य में योगदान के लिए दी जाती है।	

संगीत नाटक अकादमी

- इसकी **स्थापना वर्ष 1952** में कला के लिए भारत की **पहली राष्ट्रीय अकादमी के रूप में की गई थी।**
- इसका मुख्य ध्यान देश में **प्रदर्शन कलाओं को बढ़ावा देना और उसे प्रदर्शित करना है।**
- यह अकादमी भारत की सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए **यूनेस्को** जैसे **अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ भी सहयोग करती है।**
- साथ ही यह वर्ष 1959 में स्थापित **राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय जैसे** विभिन्न विशिष्ट संस्थानों की देखरेख भी करता है।

ललित कला अकादमी

- सरकार ने भारत में **ललित कला को बढ़ावा देने** के प्राथमिक उद्देश्य से वर्ष 1954 में **राष्ट्रीय कला अकादमी की स्थापना की जिसे ललित कला अकादमी** के नाम से भी जाना जाता है।
- यह **संस्कृति मंत्रालय के अधीन कार्य करती है।**
- इसे वर्ष 1957 में सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत **वैधानिक अधिकार प्रदान किया गया है।**
- इसका **मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है।**
- इसके क्षेत्रीय केन्द्रों की स्थापना चेन्नई, कोलकाता, लखनऊ, शिमला, शिलांग और भुवनेश्वर में की गई हैं।

पुरस्कार एवं सम्मान

भारत सरकार द्वारा दिए गए पुरस्कार

भारत रत्न

- भारत रत्न, भारत का **सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है।**
- **पहली बार वर्ष 1954 में** प्रदान किया गया था।
- यह **मानव प्रयास के किसी भी क्षेत्र** में उच्चतम क्रम की असाधारण सेवा/प्रदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है।
  - प्रथम पुरस्कार विजेता **सी. राजगोपालाचारी, डॉ. सीवी रमन** और **डॉ. एस. राधाकृष्णन थे।**
  - एक प्राकृतिक रूप से बने भारतीय नागरिक को प्रथम पुरस्कार**: मदर टेरेसा (1980)।**
  - यह दो गैर-भारतीयों: **खान अब्दुल गफ्फार खान (1987)** और **नेल्सन मंडेला (1990)** को भी प्रदान किया गया है।
- प्रारंभ में, यह कला, विज्ञान, साहित्य और सार्वजनिक सेवा में उपलब्धियों के लिए था, लेकिन वर्ष 2011 में मानव प्रयास के किसी भी क्षेत्र को शामिल करने के लिए मानदंड का विस्तार किया गया।
- भारत रत्न के लिए **सिफारिशें प्रधानमंत्री द्वारा** राष्ट्रपति को की जाती हैं, जो सालाना **अधिकतम तीन प्राप्तकर्ताओं का चयन करते हैं।**
- इसके लिए किसी औपचारिक अनुशंसा की आवश्यकता नहीं है।
- सम्मानित व्यक्ति को एक पीपल के पत्ते के आकार का पदक और एक प्रमाण पत्र (सनद) मिलता है। इसमें कोई **मौद्रिक पुरस्कार** नहीं मिलता है।
- भारत रत्न प्राप्तकर्ताओं को भारतीय **वरीयता क्रम में सातवें (7क) स्थान पर रखा गया है।**
- भारत के संविधान के **अनुच्छेद 18(1) के प्रावधानों के तहत (सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार) भारत रत्न** पुरस्कार का **उपयोग** प्राप्तकर्ता के नाम के लिए उपसर्ग या प्रत्यय के रूप में नहीं किया जा सकता है। **[UPSC-2021]**

पद्म पुरस्कार

- पद्म पुरस्कार भारत के **सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक है जिसकी घोषणा प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस** की पूर्व संध्या पर की जाती है।
- यह पुरस्कार विशिष्ट कार्यों को मान्यता देना चाहता है और गतिविधियों/विषयों के सभी क्षेत्रों में विशिष्ट और असाधारण उपलब्धियों/सेवाओं के लिए दिया जाता है।
- पुरस्कार विजेताओं को राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक सनद (प्रमाण पत्र) और एक पदक प्रदान किया जाता है।
- पद्म पुरस्कारों की **स्थापना वर्ष 1954 में की गई थी** और ये **तीन श्रेणियों** में दिए जाते हैं। **[UPSC-2021]**
  - **पद्म विभूषण:** यह भारत का **दूसरा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार है।** पुरस्कार पाने वालों को एक प्रशस्ति पत्र और एक पदक दिया जाता है जिसके मध्य में **कमल का फूल होता है और** अग्रभाग पर **'देश सेवा' शब्द अंकित होता है।**
  - इस पुरस्कार को 'असाधारण और विशिष्ट सेवा' के लिए प्रदान किया जाता है।
  - **पद्म भूषण:** यह 'उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा' के लिए भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला **तीसरा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार है।**
  - **पद्म श्री:** यह भारत का **चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है** और कला, साहित्य, खेल, राजनीति, उद्योग, चिकित्सा, सामाजिक सेवा आदि जैसे विभिन्न विषयों में विशिष्ट योगदान के लिए दिया जाता है।
  - पुरस्कार विजेता को **एक प्रमाण पत्र और एक पदक दिया जाता** है। एक तरफ **तीन पत्तों वाला फूल और दूसरी तरफ पद्म** (कमल)।
- पद्म पुरस्कार वर्ष 1977, 1980 और वर्ष 1993-1997 **को छोड़कर प्रत्येक वर्ष दिए गए हैं।**

पद्म पुरस्कारों के बारे में नियम

- यदि प्राप्तकर्ता को **पद्म पुरस्कार** की निम्न डिग्री प्राप्त हुई हो, तो पाँच **या अधिक वर्षों के बाद उच्च डिग्री का पुरस्कार दिया जा सकता है।**
- मरणोपरांत पुरस्कार दुर्लभ है, लेकिन **अत्यधिक योग्य मामलों** के लिए अपवाद हो सकता है।

Search On TG: @apna_pdf

- व्यक्ति की उपलब्धियों में सार्वजनिक सेवा का तत्त्व होना चाहिए।
- केवल किसी क्षेत्र में उत्कृष्टता की बजाय उत्कृष्टता से कहीं अधिक पर आधारित होना चाहिए।
- **पीएसयू में कार्यरत सरकारी कर्मचारी** (डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को छोड़कर) इन पुरस्कारों के लिए पात्र नहीं हैं।

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

- राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, फिल्म-कला की उन्नति में योगदान देने वाले व्यक्तियों को दिए जाने वाले **सबसे प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक है।**
- **ये पुरस्कार वर्ष 1954 से** प्रतिवर्ष दिए जा रहे हैं।
- वर्ष 1973 में, **फिल्म समारोह निदेशालय को** इन पुरस्कारों के आयोजन के लिए जिम्मेदारी दी गई थी।
- विजेताओं का चयन सरकार द्वारा नियुक्त **राष्ट्रीय चयन समिति द्वारा किया जाता है।**
- यह पुरस्कार **भारतीय राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया जाता है** और पुरस्कार जीतने वाली फिल्मों को जनता को दिखाया जाता है।
- राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में बहुत प्रतिष्ठित **दादा साहब फाल्के लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार भी शामिल** है, जो उन लोगों को प्रदान किया जाता है जिन्होंने अपना पूरा करियर भारतीय सिनेमा के योगदान में बिताया है।
- यह पुरस्कार भारतीय बॉलीवुड सिनेमा और क्षेत्रीय श्रेणियों में से सर्वश्रेष्ठ को प्रदान किए जाते हैं।
- निम्नलिखित पाँच प्रमुख श्रेणियों को यह पुरस्कार दिया जाता है:
  - **स्वर्ण कमल पुरस्कार**।
  - **रजत कमल पुरस्कार**।
  - संविधान की **आठवीं अनुसूची में निर्दिष्ट** भाषाओं में **सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म**।
  - संविधान की आठवीं अनुसूची में निर्दिष्ट भाषाओं **के अलावा अन्य भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म: अंग्रेजी, भोजपुरी, कोकबोरोक, मोनपा और तुलु सहित पाँच श्रेणियाँ।**

अन्य साहित्यिक सम्मान

ज्ञानपीठ पुरस्कार

- इसे **असाधारण साहित्यिक उपलब्धि के लिए प्रदान किया जाता है।**
- इसे पहली बार वर्ष **1961** में **भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा शुरू किया गया था।**
- यह उन भारतीय नागरिकों को प्रदान किया जाता है, जो भारतीय संविधान की **आठवीं अनुसूची** में सूचीबद्ध **22 भाषाओं और अंग्रेजी में साहित्य लिखते हैं।**
- पुरस्कार प्राप्तकर्ता को एक पट्टिका और 11 लाख रुपये के **नकद पुरस्कार** के अलावा **देवी सरस्वती की एक कांस्य प्रतिमा भी दी जाती है।**
- यह पुरस्कार **मरणोपरांत नहीं दिया जाता है।**

सरस्वती सम्मान

- यह भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भारतीय भाषाओं में से किसी एक को उत्कृष्ट गद्य या पद्य में साहित्यिक कार्यों के लिए दिया जाने वाला एक वार्षिक पुरस्कार है।
- इस पुरस्कार की स्थापना वर्ष 1991 में **के. के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा की गई थी।**

दादा साहब फाल्के पुरस्कार

- **इस पुरस्कार को वर्ष** 1969 में शुरू किया गया।
- यह पुरस्कार **सिनेमा के क्षेत्र** में भारत का **सर्वोच्च सम्मान है।**
- यह **दादा साहेब फाल्के की याद में मनाया जाता है, जिन्होंने वर्ष** 1913 में भारत की पहली पूर्ण लंबाई वाली फीचर फिल्म, **"राजा हरिश्चंद्र" का निर्देशन किया था।**
- **इस पुरस्कार को सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अधीन** फिल्म समारोह निदेशालय द्वारा प्रदान किया जाता है।

भारत के महत्त्वपूर्ण सर्वेक्षण विभाग एवं संस्थान

संगठन का नाम	स्थापना वर्ष	मुख्यालय	केंद्रित क्षेत्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग	1767	देहरादून, उत्तराखंड	भारत का मानचित्रण, सर्वेक्षण और नक्शानवीसी।
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)	1861	नई दिल्ली	पुरातात्विक स्थलों, स्मारकों और विरासत का सर्वेक्षण और संरक्षण।
भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण (BSI)	1890	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	भारत में पादप प्रजातियों का सर्वेक्षण, अनुसंधान और उनका दस्तावेजीकरण/प्रलेखन।
भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (ASI)	1945	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	भारत के मानवविज्ञान, नृवंशविज्ञान और सांस्कृतिक विविधता पर शोध।
भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (ZSI)	1916	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	भारत में पशु प्रजातियों, जैव विविधता और संरक्षण पर अनुसंधान।
भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI)	1851	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	भारत में भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, मानचित्रण और खनिज संसाधनों से संबंधित अनुसंधान।

Search On TG: @apna_pdf

महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थान

संस्था का नाम	अवस्थिति	स्थापित	केंद्रित क्षेत्र	प्रकार	मंत्रालय/विभाग
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD)	नई दिल्ली	1959	रंगमंच और नाट्य कला के क्षेत्र में अनुसंधान और प्रशिक्षण।	सरकारी	संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान संग्रहालय संस्थान	नई दिल्ली	1989	कला इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान में अनुसंधान और शिक्षा।	सरकारी	संस्कृति मंत्रालय
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)	नई दिल्ली	1950	भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और अनुसंधान को बढ़ावा देना।	सरकारी	विदेश मंत्रालय
कलाक्षेत्र फाउंडेशन	चेन्नई, तमिलनाडु	1936	भारतीय शास्त्रीय नृत्य, संगीत और पारंपरिक कलाओं में अनुसंधान और शिक्षा।	सरकारी	संस्कृति मंत्रालय
विश्वभारती विश्वविद्यालय	शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल	1921	भारतीय संस्कृति, कला और साहित्य में अनुसंधान; रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित।	सरकारी	शिक्षा मंत्रालय (स्वायत्त विश्वविद्यालय)
रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	1938	भारतीय दर्शन, संस्कृति और अंतर-धार्मिक समझ का अनुसंधान और संवर्धन।	गैर-सरकारी	रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित
एशियाई सोसायटी	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	1784	इंडोलॉजी, मानविकी और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान और अध्ययन।	सरकारी	संस्कृति मंत्रालय
भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (BORI)	पुणे, महाराष्ट्र	1917	संस्कृत, प्राचीन भारतीय ग्रंथों एवं इंडोलॉजी में अनुसंधान।	गैर-सरकारी	स्वायत्त संस्था
खुदा बख्श ओरिएंटल लाइब्रेरी	पटना, बिहार	1891	भारतीय एवं इस्लामी संस्कृति से संबंधित दुर्लभ पांडुलिपियों एवं ग्रंथों का संरक्षण एवं अध्ययन।	सरकारी	संस्कृति मंत्रालय
भारतीय राष्ट्रीय पुस्तकालय	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	1948	भारतीय विरासत और संस्कृति पर पुस्तकों, पत्रिकाओं और दस्तावेजों का संग्रहण।	सरकारी	संस्कृति मंत्रालय
ललित कला अकादमी	नई दिल्ली	1954	चित्रकला, मूर्तिकला और ग्राफिक्स सहित ललित कलाओं के क्षेत्र में संवर्धन और अनुसंधान।	सरकारी	संस्कृति मंत्रालय
केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL)	मैसूर, कर्नाटक	1969	भारतीय भाषाओं और भाषा विज्ञान का अनुसंधान और संवर्धन।	सरकारी	शिक्षा मंत्रालय

Search On TG: @apna_pdf

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH
UPSC OPTIONAL COURSE 2025
Hinglish / हिन्दी
Anthropology
PSIR
History
Sociology
Geography
Public Administration
Mathematics
हिन्दी साहित्य

13 यूनेस्को की सूची में शामिल प्रमुख भारतीय विश्व धरोहर स्थल

वर्ष 1972 में स्थापित **यूनेस्को विश्व विरासत सम्मेलन में किए गए वर्णन के अनुसार** यूनेस्को की सूची में शामिल ये स्थल **सांस्कृतिक या प्राकृतिक विरासत** के **आवश्यक स्थान हैं।**

विश्व धरोहर स्थलों के चयन के लिए मानदंड	
सांस्कृतिक स्थलों के लिए	**प्राकृतिक स्थलों के लिए**
• **मानव की रचनात्मक** प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करता है। • समय के साथ या किसी सांस्कृतिक क्षेत्र के भीतर वास्तुकला, प्रौद्योगिकी, कला, नगर नियोजन या परिदृश्य डिजाइन में **मानवीय मूल्यों के आदान-प्रदान को** प्रदर्शित करता है। • **जीवित या लुप्त हो चुकी** सांस्कृतिक परंपरा या सभ्यता का अद्वितीय साक्ष्य प्रदान करता है। • अपनी वास्तुकला, प्रौद्योगिकी या परिदृश्य के माध्यम से मानव इतिहास में एक **महत्त्वपूर्ण चरण का उदाहरण देता है।** • **पारंपरिक मानव बस्ती, भूमि उपयोग या समुद्री उपयोग** का प्रतिनिधित्व करता है खासकर जब इसे अपरिवर्तनीय परिवर्तन से खतरा हो। • विद्यमान **परंपराओं**, मान्यताओं, **कलात्मक** और **साहित्यिक कार्यों** के सार्वभौमिक महत्त्व **से** इसका गहरा संबंध है।	• **असाधारण प्राकृतिक घटनाएँ** शामिल होती हैं या उल्लेखनीय प्राकृतिक सुंदरता प्रदर्शित होती है। • **महत्त्वपूर्ण चरणों** का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें जीवन और चल रही भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का रिकॉर्ड उपस्थित है। • स्थलीय, मीठे पानी, तटीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र में **चल रही पारिस्थितिक और जैविक प्रक्रियाओं का** प्रतिनिधित्व करता है। • सार्वभौमिक वैज्ञानिक या संरक्षण मूल्य की संकटग्रस्त प्रजातियों सहित जैविक विविधता के संरक्षण के लिए **महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक आवास** स्थित हैं।

मूर्त विश्व धरोहर स्थल

भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल - (सांस्कृतिक स्थल)

स्थल	वर्ष	विशेषताएँ
होयसल के **पवित्र** मंदिर समूह **(कर्नाटक)**	2023	इसमें दक्षिण भारत में होयसल-शैली के मंदिर परिसरों के **तीन सबसे अधिक प्रतिनिधि उदाहरण** सम्मिलित हैं, जो **12वीं से 13वीं शताब्दी** ईसवी **तक के हैं।**
अहोम साम्राज्य के मोइदम	2024	अहोम राजवंश के शाही शवाधान स्थल (टीले), अद्वितीय शवाधान प्रथाओं और वास्तुकला को प्रस्तुत करते हैं।
शांति निकेतन (पश्चिम बंगाल)	2023	यह **प्राचीन भारतीय परंपराओं** और मानवता की एकता की दृष्टि पर आधारित एक **आवासीय विद्यालय** और **कला केंद्र था।** इसकी स्थापना वर्ष 1901 में प्रसिद्ध कवि और दार्शनिक **रवीन्द्रनाथ टैगोर ने की थी।**
धोलावीरा: एक हड़प्पा सभ्यता का नगर **(गुजरात)**	2021	इसमें एक **किलेबंद शहर, कब्रिस्तान** और एक परिष्कृत **जल प्रबंधन प्रणाली शामिल है।** यह एक महत्त्वपूर्ण **व्यापारिक** और **वाणिज्यिक केंद्र भी था।**
काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर (तेलंगाना)	2021	काकतीय काल (1123-1323 ई.) के दौरान शासक **रुद्रदेव** और **रेचरला रुद्र के अधीन निर्मित** मुख्य **शिव मंदिर है।** इमारत में हल्के झरझरा ईंटों, तथाकथित **'फ्लोटिंग ईंटों' से बना** एक विशिष्ट और **पिरामिडनुमा विमान के साथ नक्काशीदार ग्रेनाइट और डोलराइट के सजाए गए बीम और स्तंभ** हैं, जो छत संरचनाओं के वजन को कम करते हैं।
जयपुर शहर (राजस्थान)	2019	**सवाई जय सिंह द्वितीय ने 1727** ई. में शहर की स्थापना की थी।
मुंबई का विक्टोरियन और आर्ट डेको एनसेंबल (महाराष्ट्र)	2018	ये समूह समय गुजरने के साथ **यूरोपीय और भारतीय मानवीय मूल्यों** के **आवश्यक आदान-प्रदान को प्रदर्शित करते हैं।**
अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर (गुजरात)	2017	**सुल्तान अहमद शाह ने 15**वीं **शताब्दी में साबरमती नदी** के पूर्वी तट पर चारदीवारी वाले शहर की स्थापना की थी।

Search On TG: @apna_pdf

ले कोर्बुज़िए का वास्तुशिल्प कार्य, आधुनिक आंदोलन में एक उत्कृष्ट योगदान (चंडीगढ़)	2016	यहाँ पर **17 स्थल** हैं **और** चंडीगढ़ में स्थित कॉम्प्लेक्स डु कैपिटोल इसका हिस्सा है।
नालंदा महाविहार का पुरातत्त्व स्थल (नालंदा विश्वविद्यालय) (बिहार)	2016	यह भारत का सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय है। इसमें **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 13वीं शताब्दी ईसवी तक** एक मठवासी और शैक्षिक संस्थान के पुरातात्विक अवशेष शामिल हैं। इसमें **स्तूप, मंदिर, विहार** (आवासीय और शैक्षिक भवन) और प्लास्टर, पत्थर और धातु से बनी महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ शामिल हैं।
रानी-की-वाव (गुजरात)	2014	**यह सरस्वती नदी** के तट पर स्थित है और इसे 11वीं शताब्दी के राजा **भीमदेव प्रथम के स्मारक के रूप में बनाया गया था।**
पहाड़ी किले (राजस्थान)	2013	इसमें चित्तौड़गढ़ के **छह राजसी किले शामिल हैं:** कुंभलगढ़, सवाई माधोपुर, झालावाड़, जयपुर और जैसलमेर।
जंतर मंतर (राजस्थान)	2010	यह 18वीं सदी की शुरुआत में बनाया गया एक **खगोलीय अवलोकन स्थल है।** इसमें लगभग 20 मुख्य स्थिर उपकरणों का एक संग्रह उपस्थित है।
लाल किला परिसर (दिल्ली)	2007	इसे **शाहजहाँ की राजधानी, शाहजहाँनाबाद** में उसके महल को एक किले के रूप में बनाया गया था।
चंपानेर-पावागढ पुरातत्त्व पार्क (गुजरात)	2004	यह बिना खुदाई किया हुआ एक पुरातात्विक, ऐतिहासिक और जीवित सांस्कृतिक विरासत है जिसमें प्रागैतिहासिक (**ताम्रपाषाणिक**) स्थल, प्रारंभिक हिंदू राजधानी का एक पहाड़ी किला और गुजरात राज्य की 16वीं शताब्दी की राजधानी के अवशेष शामिल हैं।
छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (महाराष्ट्र)	2004	यह भारत में **विक्टोरियन गोथिक पुनरुद्धार वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है और ब्रिटिश वास्तुकार एफ.डब्ल्यू. स्टीवंस द्वारा बनाया गया था।**
भीमबेटका शैलाश्रय (मध्य प्रदेश)	2003	इनका निर्माण **विंध्य पर्वत** की तलहटी में किया गया था। इसमें **प्राकृतिक शैल आश्रयों** के पाँच **समूह हैं जिनमें मध्यपाषाण काल** से लेकर ऐतिहासिक काल तक की चित्रकारी प्रदर्शित हैं।
महाबोधि मंदिर परिसर, बोधगया (बिहार)	2002	यह भगवान बुद्ध के जीवन, विशेषकर **ज्ञान प्राप्ति** से संबंधित चार पवित्र स्थलों में से एक है। पहला **मंदिर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा बनाया गया था** और वर्तमान मंदिर **5वीं या 6वीं शताब्दी का** है।
भारत की पर्वतीय रेलवे (पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश)	1999	इस साइट में **दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, नीलगिरि माउंटेन रेलवे** और **कालका-शिमला रेलवे शामिल हैं।**
हुमायूँ का मकबरा (दिल्ली)	1993	इसे 1570 ई. में बनवाया गया, जो भारतीय उपमहाद्वीप का **पहला उद्यान-मकबरा** था।
कुतुब मीनार और उसके स्मारक (दिल्ली)	1993	इसका निर्माण **13वीं शताब्दी में** सल्तनत शासन के तहत किया गया था। आस-पास के पुरातात्विक क्षेत्र में अलाई-दरवाजा गेट (1311 ई. में निर्मित) और कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद सहित दो मस्जिदें शामिल हैं।
साँची में बौद्ध स्मारक (मध्य प्रदेश)	1989	साँची की साइट में बौद्ध स्मारकों **(अखंड स्तंभ, महल, मंदिर और मठ) का एक समूह शामिल है, जिनमें से अधिकांश दूसरी और पहली शताब्दी ईसा** पूर्व के हैं।
एलीफेंटा गुफाएँ (महाराष्ट्र)	1987	ये **सात** गुफाएँ **हैं** जिनका स्थानीय नाम **घारापुरी** गुफाएँ **है।** मुंबई के नजदीक एक द्वीप पर स्थित **'गुफाओं के शहर' में स्थित ये गुफाएँ शैव धर्म** से जुड़ी शैल **कला का संग्रह हैं** ।
महान आस्तित्ववान **चोल मंदिर (तमिलनाडु)**	1987	इसमें तंजावुर में बृहदेश्वर मंदिर, गंगाईकोंडचोलिसवरम में बृहदेश्वर मंदिर (राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित, 1035 में पूरा हुआ) और दारासुरम में ऐरावतेश्वर मंदिर (राजराजा द्वितीय द्वारा निर्मित) जैसे मंदिर शामिल हैं।
पत्तदकल में स्मारकों का समूह **(कर्नाटक)**	1987	**चालुक्य राजवंश** के अन्तर्गत **7वीं और 8वीं शताब्दी ईस**वी में निर्मित, जिनमें **नौ हिंदू मंदिरों (विरुपाक्ष मंदिर** सहित) की एक शृंखला के साथ ही एक **जैन अभयारण्य भी** स्थित **है।**
चर्च और कॉन्वेंट (गोवा)	1986	इसमें **चर्च ऑफ बोम जीसस शामिल है जिसमें संेट फ्रांसिस-जेवियर** का मकबरा है।
फतेहपुर सीकरी (उत्तर प्रदेश)	1986	यह **मुगलों का पहला नियोजित शहर था** जो शानदार प्रशासनिक, आवासीय और धार्मिक इमारतों से चिह्नित था।
स्मारकों का समूह, हम्पी (कर्नाटक)	1986	इसमें मुख्य रूप से **विजयनगर साम्राज्य** की **राजधानी के अवशेष** सम्मिलित **हैं।**
खजुराहो स्मारक समूह (मध्य प्रदेश)	1986	इसके अन्तर्गत **950 और 1050 ईसवी के बीच चंदेल वंश के** शासकों के शासनकाल के दौरान निर्मित **हिंदू और जैन मंदिर** सम्मिलित **हैं।**

Search On TG: @apna_pdf

महाबलीपुरम में स्मारकों का समूह (तमिलनाडु)	1984	**पल्लव राजाओं (7वीं और 8वीं शताब्दी ईसवी में)** द्वारा स्थापित यह समूह रथों, मंडपों, प्रसिद्ध "गंगा का अवतरण" और "तट **के मंदिर"** जैसी विशाल संरचनाओं के लिए जाना जाता है।
सूर्य मंदिर, कोणार्क (ओडिशा)	1984	यह **कलिंग वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है** और इसे **13वीं शताब्दी में** राजा नरसिम्हा देव द्वारा बनाया गया था।
आगरा का किला (उत्तर प्रदेश)	1983	यह **16वीं शताब्दी का मुगल स्मारक है जिसे आगरा के लाल किले के** नाम से जाना जाता है। इसमें शाहजहाँ द्वारा निर्मित **जहाँगीर महल** और **खास महल** जैसे महल सम्मिलित हैं। दीवान-ए-खास (दर्शक कक्ष) भी इसमें सम्मिलित है।
अजंता की गुफाएँ (महाराष्ट्र)	1983	यहाँ कुल **29 चट्टानों को काटकर बनाई गई** गुफाएँ **हैं।** अजंता में पहला **बौद्ध गुफा स्मारक पहली** और दूसरी **शताब्दी** ईसा पूर्व **का है। गुप्त काल (5वीं और 6वीं शताब्दी ईस**वी) के दौरान मूल समूह में कई और पूर्णतः सजाई गई गुफाएँ जोड़ी गई।
एलोरा की गुफाएँ (महाराष्ट्र)	1983	यहाँ 34 मठ और मंदिर हैं। **बौद्ध धर्म, ब्राह्मणवाद** और **जैन धर्म** के अनुयायियों के द्वारा यहाँ उत्कृष्ट वास्तुशिल्प गतिविधियाँ की गई थी।
ताज महल (उत्तर प्रदेश)	1983	यह **शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया था, जो यमुना के तट** पर स्थित है।

भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल - (प्राकृतिक स्थल)		
स्थल	**वर्ष**	**विशेषताएँ**
ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क (हिमाचल प्रदेश)	2014	यह **हिमालय पर्वत के पश्चिमी भाग** में स्थित है और इसकी विशेषता **ऊँची अल्पाइन चोटियाँ, अल्पाइन घास के मैदान और नदी के वन हैं।**
पश्चिमी घाट (केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गोवा और गुजरात)	2012	उप-समूहों में अगस्त्यमलाई, पेरियार, अन्नामलाई, नीलगिरि, तालाकावेरी, कुद्रेमुख और सह्याद्रि शामिल हैं।
नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान (उत्तराखंड)	1988	**यह एशियाई काले भालू, हिम तेंदुआ, भूरा भालू और नीली भेड़** सहित दुर्लभ जानवरों का घर है। इसमें जांस्कर **पर्वत** शृंखला और **महान हिमालय** के बीच एक **संक्रमण क्षेत्र शामिल है।**
सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान (पश्चिम बंगाल)	1987	**यह भारत और बांग्लादेश** के बीच **गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों** के **मुहाने** पर स्थित है। इसमें **दुनिया के सबसे बड़े मैंग्रोव वन स्थित हैं।**
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (राजस्थान)	1985	**यह पुरापाषाणकालीन प्रवासी जलपक्षियों** का एक महत्त्वपूर्ण **शीतकालीन प्रवास स्थल है। यह गैर-प्रवासी** प्रजनन पक्षियों के बड़े समूह के लिए प्रसिद्ध है।
काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (असम)	1985	**यहाँ एक सींग वाले गैंडों** की विश्व की सबसे बड़ी आबादी पाई जाती है। यह **ब्रह्मपुत्र** नदी के तट पर स्थित है।
मानस वन्यजीव अभयारण्य (असम)	1985	यह एक जैव विविधता हॉटस्पॉट है जिसमें **जंगली पहाड़ियाँ, जलोढ़ घास के मैदान** और **उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन शामिल हैं।** मानस वन्यजीव अभयारण्य, मानस टाइगर रिजर्व के मुख्य क्षेत्र का हिस्सा है और मानस नदी के किनारे स्थित है।

भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल - (मिश्रित श्रेणी)		
स्थल	**वर्ष**	**विशेषताएँ**
कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान (सिक्किम)	2016	इसमें मैदानों, घाटियों, झीलों, ग्लेशियरों और प्राचीन वनों वाले एवं बर्फ से ढके शानदार पहाड़ों की एक **अनूठी विविधता शामिल** है। इसमें दुनिया की तीसरी सबसे ऊँची चोटी भी शामिल है।

यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत		
विरासत	**वर्ष**	**विशेषताएँ**
गुजरात का गरबा	2023	गरबा एक **अनुष्ठानिक और भक्तिपूर्ण नृत्य है जो हिंदू त्योहार नवरात्रि** के अवसर पर किया जाता है।
कोलकाता में दुर्गा पूजा	2021	यह देवी दुर्गा की दस दिवसीय पूजा का प्रतीक है। इस त्योहार की विशेषता शहरी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर मंडपों की स्थापना करने के साथ-साथ पारंपरिक बंगाली ढोल बजाना और देवी की पूजा करना है।
कुंभ मेला (पवित्र कलश का त्योहार)	2017	यह **पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण सम्मेलन है** जिसके दौरान श्रद्धालु पवित्र नदी में स्नान करते हैं या डुबकी लगाते हैं। यह उत्सव हर चार साल में बारी-बारी से **इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन** और **नासिक में आयोजित किया जाता है।**

Search On TG: @apna_pdf

योग	2016	एक अभ्यास जिसमें आसन, ध्यान, नियंत्रित श्वास, जाप और **आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने की तकनीकें शामिल हैं।** परंपरागत रूप से यह गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से निष्पादित होता है।
पारसी नवरोज त्योहार	2016	इसे **पारसी नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है।** इस दौरान अपनाई जाने वाली एक महत्त्वपूर्ण परंपरा प्रियजनों के साथ विशेष भोजन का आनंद लेने के लिए पवित्रता, चमक, आजीविका और धन की प्रतीक अन्य वस्तुओं से सजाई गई **'मेज' के चारों ओर इकट्ठा होना है।**
पंजाब में जंडियाला गुरु के ठठेरों के बीच बर्तन बनाने की पारंपरिक पीतल और ताँबे की शिल्पकला	2014	ठठेरा समुदाय की एक **मौखिक परंपरा** पीढ़ियों से चली आ रही है। • इसमें पीतल, ताँबा और कंसा जैसी धातुओं को गर्म करना और उन्हें कार्यात्मक और अनुष्ठानिक बर्तनों में ढालना शामिल है। • इसका वर्णन रोगनाशक उद्देश्य के लिए आयुर्वेद ग्रंथ में किया गया है। • 19वीं शताब्दी में इसे **महाराजा रणजीत सिंह** द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था।
संकीर्तन, मणिपुर का अनुष्ठान गायन, ढोल बजाना और नृत्य	2013	यह एक **मणिपुरी अनुष्ठानिक कला है जो मणिपुरी वैष्णवों** के जीवन में धार्मिक अवसरों और विभिन्न चरणों को चिह्नित करने के लिए गायन, ढोल बजाने और नृत्य का संयोजन करती है। यह मंदिरों में भगवान कृष्ण के जीवन और कार्यों का वर्णन करते हुए प्रदर्शित किया जाता है।
लद्दाख का बौद्ध मंत्रोच्चार	2012	बौद्ध लामा (पुजारी) बुद्ध की भावना, दर्शन और शिक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले पवित्र ग्रंथों का जाप करते हैं। लोगों के आध्यात्मिक और नैतिक कल्याण, मन की शुद्धि और शांति के लिए, बुरी आत्माओं के क्रोध को शांत करने या विभिन्न बुद्धों, बोधिसत्वों, देवताओं और रिनपोछे के आशीर्वाद का आह्वान करने के लिए जाप किया जाता है। लद्दाख में बौद्ध धर्म के दो रूप प्रचलित हैं - महायान और वज्रयान। यहाँ चार प्रमुख संप्रदाय विद्यमान हैं: निंग्मा, काग्यूद, शाक्य और गेलुक। प्रत्येक संप्रदाय में जाप के कई रूप होते हैं जिनका अभ्यास जीवन-चक्र अनुष्ठानों के दौरान और बौद्ध कैलेंडर के महत्त्वपूर्ण दिनों में किया जाता है।
छऊ नृत्य	2010	इस जनजातीय **मार्शल आर्ट नृत्य की** तीन उप शैलियाँ हैं: **पुरुलिया छऊ** (पश्चिम बंगाल), **सरायकेला छऊ** (झारखंड) और **मयूरभंज छऊ** (ओडिशा)। • यह मुख्य रूप से वसंत उत्सव के दौरान सामुदायिक भागीदारी के साथ 13 दिनों तक चलता है। • **इसमें रात में पुरुष नर्तकों** द्वारा प्रदर्शन किया जाता है जिसमें महाभारत और रामायण सहित कई अन्य महाकाव्यों और स्थानीय लोक कथाओं के प्रसंगों का अभिनय किया जाता है। • **मयूरभंज छऊ** को छोड़कर शेष सभी नर्तक **मुखौटे पहनते हैं।**
राजस्थान के कालबेलिया लोक गीत और नृत्य	2010	यह **राजस्थान में कालबेलिया जनजाति द्वारा किया जाता है,** जो अपने **साँप पकड़ने** और व्यापारिक व्यवसायों के लिए जानी जाती है। गीत और नृत्य कालबेलिया समुदाय की पारंपरिक जीवन शैली की अभिव्यक्ति हैं। लहराती हुई **काली स्कर्ट** में महिलाएँ नागिन की नकल करते हुए नृत्य करती हैं और घूमती हैं जबकि पुरुष उनके साथ **खंजरी** ताल वाद्य और **पूंगी** (एक लकड़ी का वाद्य यंत्र जो पारंपरिक रूप से सांपों को पकड़ने के लिए बजाया जाता है) पर उनका साथ देते हैं।
मुडियेट्टु	2010	यह **केरल** का एक **पारंपरिक अनुष्ठान है जिसमें** रंगमंच, **लोक नृत्य और नाटक शामिल हैं। इसमें देवी काली** और **राक्षस दारिका** के बीच युद्ध को दर्शाया जाता है। • फसल कटाई के बाद फरवरी से मई तक गाँव के मंदिरों (**भगवती कावुस) में इसका प्रदर्शन किया जाता है।** • कलाकार **भारी** शृंगार, भव्य पोशाक, चेहरे की पेंटिंग और सिर पर लंबी टोपी पहनते हैं, जो अलौकिकता का प्रतीक है।
चमोली का रम्माण	2009	यह एक धार्मिक त्योहार और अनुष्ठान नाटक-कला है जो उत्तराखंड **के चमोली जिले के सलूर-डुंगरा गाँवों में मनाया** जाता है। **यह गाँव के मंदिर प्रांगण में** ग्राम देवता **'भूमियाल'** का सम्मान करने के लिए मनाया जाता है। इसके मुख्य पहलुओं में **जागर का गायन** और स्थानीय दंतकथा का वर्णन शामिल है।
वैदिक मंत्रोच्चार की परंपरा	2008	यह सबसे पुरानी अखंड मौखिक परंपराओं में से एक है जिसमें **कई पाठ (पाठ)** या वैदिक मंत्रों के जाप के तरीके शामिल हैं।
रामलीला	2008	रामलीला, जिसका शाब्दिक अर्थ "राम का खेल" है दृश्यों की एक शृंखला है जिसमें महाकाव्य रामायण का प्रदर्शन किया जाता है। इसमें गीत, कथन, गायन और संवाद शामिल हैं। दशहरे के त्यौहार के दौरान पूरे उत्तर भारत में इसका आयोजन किया जाता है।
कुटियाट्टम (संस्कृत रंगमंच)	2008	कुटियाट्टम, संस्कृत शास्त्रीयता के संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करता है और केरल की स्थानीय परंपराओं को दर्शाता है। • यह पारंपरिक रूप से कुट्टमपालम नामक थिएटरों में प्रदर्शित किया जाता है, जो हिंदू मंदिरों में स्थित हैं। • इसके अंतर्गत अभिनेता की कला विशेषता, किसी स्थिति या प्रसंग को उसके संपूर्ण विस्तार से प्रस्तुत करने में निहित है। इसलिए किसी एक कार्य को निष्पादित करने में कई दिन लग सकते हैं और एक पूर्ण प्रदर्शन 40 दिनों तक भी चल सकता है।

Search On TG: @apna_pdf

यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क के बारे में

- **स्थापना:** वर्ष 2004 यूनेस्को द्वारा स्थापित।
- **उद्देश्य:** उन शहरों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना जिन्होंने रचनात्मकता को सतत् शहरी विकास के लिए एक रणनीतिक कारक के रूप में चिंहित किया है।
- **रचनात्मकता के क्षेत्र:** शिल्प और लोक कला, डिजाइन, फिल्म, गैस्ट्रोनॉमी, साहित्य, मीडिया कला और संगीत।

भारत में कई शहर हैं जो **यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (UNESCO Creative Cities Network- UCCN)** में शामिल हैं, जिन्हें विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रों में उनके योगदान के लिए मान्यता प्राप्त है। नीचे नेटवर्क में शामिल भारतीय शहरों और उनके निर्दिष्ट रचनात्मक क्षेत्रोंकी सूची दी गई है:

शहर	राज्य	रचनात्मक क्षेत्र	मनोनयन वर्ष	महत्त्व
जयपुर	राजस्थान	शिल्प और लोक कला	2015	यह स्थान जीवंत लोक परंपराओं के साथ-साथ नीली मिट्टी के बर्तन, ब्लॉक प्रिंटिंग और आभूषण जैसे पारंपरिक शिल्पों के लिए प्रसिद्ध है।
वाराणसी	उत्तर प्रदेश	संगीत	2015	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का एक सांस्कृतिक केंद्र, प्रतिष्ठित बनारस घराने का उद्भव स्थल।
चेन्नई	तमिलनाडु	संगीत	2017	अपनी समृद्ध कर्नाटक संगीत परंपरा के लिए प्रसिद्ध, विश्व प्रसिद्ध संगीत सत्र(दिसम्बर) की मेजबानी।
मुंबई	महाराष्ट्र	फिल्म	2019	भारतीय फिल्म उद्योग, बॉलीवुड का हृदय तथा सिनेमाई कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का केंद्र।
हैदराबाद	तेलंगाना	पाक-कला	2019	अपनी समृद्ध पाक विरासत, विशेषकर बिरयानी, हलीम और अन्य हैदराबादी व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध।
कोलकाता	पश्चिम बंगाल	साहित्य	2019	एक साहित्यिक केंद्र जिसमें रबींद्रनाथ टैगोर सहित प्रभावशाली लेखकों, कवियों और प्रकाशकों का इतिहास संरक्षित है।
श्रीनगर	जम्मू और कश्मीर	शिल्प और लोक कला	2021	यह स्थान अपने असाधारण पारंपरिक शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें पश्मीना शॉल, पेपर-मैचे और कश्मीरी कालीन शामिल हैं।
ग्वालियर	मध्य प्रदेश	संगीत	2023	ग्वालियर घराना, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक प्रमुख शैली है, जिसने ध्रुपद और ख्याल शैलियों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।
कोझिकोड	केरल	साहित्य	2023	जीवंत साहित्यिक विरासत और लेखकों और विद्वानों के समृद्ध समूह के साथ, इसे भारत के प्रथम यूनेस्को साहित्य शहर के रूप में मान्यता प्राप्त है।

यूनेस्को "मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड" में सम्मिलित धरोहर ग्रंथ

नाम	अभिलेख वर्ष	महत्त्व
ऋग्वेद पांडुलिपियाँ	2007	वैदिक ज्ञान और संस्कृति का आधार, सबसे प्राचीन ज्ञात ग्रंथों में से एक।
गिलगित पांडुलिपियाँ	2017	गिलगित से प्राचीन बौद्ध ग्रंथ प्राप्त हुए, जो बौद्ध धर्म के प्रसार और क्षेत्र के इतिहास को दर्शाते हैं।
शांतिनाथ चरित्र	2013	जैन तीर्थंकर शांतिनाथ के जीवन का विवरण देते हुए 14वीं शताब्दी का संस्कृत ग्रंथ जिसमें विभिन्न चित्र भी समाहित किए गए हैं।
अभिनवगुप्त पांडुलिपियाँ	2023	दार्शनिक और विद्वान अभिनवगुप्त की कृतियाँ, जो सौंदर्य, सौन्दर्यशास्त्र और तंत्र पर केंद्रित हैं।
मैत्रेयव्याकरण	2017	प्राचीन भारत का एक ग्रन्थ जो दार्शनिक और आध्यात्मिक शिक्षाओं से संबंधित है।
लघुकाल चक्रतंत्रराजटिका (विमलप्रभा)	2011	बौद्ध शिक्षाओं से संबंधित महत्त्वपूर्ण तांत्रिक ग्रंथ।
पांडिचेरी में शैव पांडुलिपियाँ	2005	पांडिचेरी में संरक्षित शैव ग्रंथ, तमिल धार्मिक साहित्य के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण हैं।
तारीख-ए-ख़ानदान-ए-तैमूरिया	2011	तैमूरी राजवंश का विस्तृत विवरण देने वाला ऐतिहासिक अभिलेख, भारत के मुगल काल को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है।
I.A.S. तमिल मेडिकल पांडुलिपि संग्रह	1997	पारंपरिक तमिल चिकित्सा से संबंधित पांडुलिपियाँ, प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी प्रदान करती हैं।

हाल ही में तीन भारतीय साहित्यिक कृतियों को **यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड कार्यक्रम (UNESCO Memory of the World Programme)** के एशिया-प्रशांत क्षेत्रीय में शामिल किया गया है, जो इस प्रकार हैं:

Search On TG: @apna_pdf

नाम	अभिलेख वर्ष	महत्त्व
रामचरितमानस	2024	भगवान राम के जीवन पर तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य, जो एक महत्त्वपूर्ण अवधी साहित्य है।
पंचतंत्र	2024	संस्कृत में प्राचीन दंतकथाओं का संग्रह, पशु कहानियों माध्यम से नैतिक शिक्षा प्रदान की गई है। से नैतिक शिक्षा प्रदान करना।
सहृदयालोक-लोकन	2024	साहित्य और सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांतों की खोज करने वाला एक शास्त्रीय भारतीय ग्रंथ है।

साहित्यिक शहरों के बारे में

यूनेस्को का साहित्य शहर कार्यक्रम व्यापक रचनात्मक शहर नेटवर्क/क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (Creative Cities Network) का भाग है जिसे वर्ष 2004 में शुरू किया गया था।

साहित्यिक शहरों (City of Literature) के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए, शहरों को यूनेस्को द्वारा निर्धारित कई मानदंडों को पूरा करना होगा। यूनेस्को द्वारा नामित साहित्य के शहरों में समान विशेषताएँ होती हैं।

- शहर में प्रकाशन की गुणवत्ता, मात्रा और विविधता।
- प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्तरों पर घरेलू या विदेशी साहित्य पर ध्यान केंद्रित करने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों की गुणवत्ता और मात्रा।
- शहर में साहित्य, नाटक एवं कविता की महत्त्वपूर्ण भूमिका।
- घरेलू और विदेशी साहित्य को बढ़ावा देने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों और उत्सवों की मेजबानी करना।
- पुस्तकालयों, किताबों की दुकानों और सार्वजनिक या निजी सांस्कृतिक केंद्रों की उपस्थिति, जो घरेलू और विदेशी साहित्य को संरक्षित, बढ़ावा और प्रसारित करते हैं।
- विभिन्न राष्ट्रीय भाषाओं और विदेशी साहित्य से साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में प्रकाशन क्षेत्र की भागीदारी।
- साहित्य को बढ़ावा देने और साहित्यिक उत्पादों के लिए बाजार को मजबूत करने में पारंपरिक और नवीन मीडिया की सक्रिय भागीदारी।

केरल के कोझिकोड (Kozhikode) को भारत का पहला यूनेस्को साहित्य शहर घोषित किया गया है। इसकी आधिकारिक घोषणा 31 अक्टूबर, 2023 को की गई थी। कोझिकोड, जिसे पहले कालीकट के नाम से जाना जाता था, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मलयालम साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र रहा है, जहाँ से कई प्रमुख मलयालम लेखक संबंधित हैं।

❖ ❖ ❖

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH
RPP 2025 Rigorous Prelims Test-Series Program
English / हिन्दी | Online / Offline
Daily Practice & LIVE Video Solutions
G.S. & CSAT Tests (Sectional + Full Length)
Mentorship Webinar
Offline ₹ 12,999/- ₹ 4,999/-
Online ₹ 8,999/- ₹ 3,999/-
FOR EXTRA DISCOUNT
USE COUPON CODE PWOIAS500
9920613613 | pwonlyias.com
Offline Centres KAROL BAGH मुख़र्जी नगर PRAYAGRAJ LUCKNOW PATNA

Search On TG: @apna_pdf

14 विविध

भारत में मार्शल आर्ट

मार्शल आर्ट	विशेषताएँ
परी-खंडा (बिहार)	इसके तत्त्व **छऊ नृत्य में देखे जाते हैं।**, जो इसकी कदम गति और तकनीकों पर निर्भर करता है। राजपूतों ने इसे **ढाल (परी)** और **तलवार (खंडा) का प्रयोग करके बनाया था।**
थोडा (हिमाचल प्रदेश)	**"थोडा"** नाम तीर की घातक क्षमता को कम करने के लिए उसके अग्र भाग पर लगाए गए गोल लकड़ी के टुकड़े से लिया गया है। यह **बैसाखी** के दौरान **देवी माशू** और **दुर्गा** के आशीर्वाद का आह्वान करने के लिए **मार्शल आर्ट, खेल और संस्कृति का संगम है।** इसमें लगभग 500 लोगों के दो समूह भाग लेते हैं, जिन्हें **पाशी और साथी कहा जाता है**, जिन्हें **पांडव** और **कौरवों** का **वंशज माना जाता है।** खेल एक **चिह्नित कोर्ट पर खेला जाता है**, और तीरंदाज अंक हासिल करने के लिए **घुटने के नीचे पैर** पर **निशाना लगाते हैं।**
कलारीपयट्टू (केरल)	इस मार्शल आर्ट का अभ्यास प्रशिक्षण हॉल या व्यायामशाला में किया जाता है जिसे **कलारी के नाम से जाना जाता है।** किंवदंतियों के अनुसार, इसकी शुरुआत **महर्षि परशुराम** ने की थी। इसमें **फुटवर्क पर जोर देने** के साथ **निहत्थे और सशस्त्र युद्धाभ्यास शामिल हैं। महिलाएँ** और **पुरुष** इसका अभ्यास करते हैं। **[UPSC 2014]** **महत्त्वपूर्ण शर्तें** **उझिचिल:** गिंग्ली तेल मालिश; **ओट्टा:** युद्ध में उपयोग की जाने वाली 'एस' आकार वाली एक छड़ी; **मयपयट्टु:** शारीरिक व्यायाम; **पुलियंकम:** तलवार से लड़ाई; **वेरुमकई:** निहत्थे मुकाबला; **अंगथारी:** धातु के हथियारों और कोलथारी लाठियों का उपयोग।
मर्दानी खेल (महाराष्ट्र)	यह **हथियार कौशल**, विशेष रूप से तलवार, तेज गतियों और पहाड़ी श्रेणियों में नीचे झुकने में उपयुक्त मुद्रा पर जोर देती है। यह **भारतीय पाटा (तलवार)** और **वीटा (रस्सीदार भाला) का उपयोग करने के लिए उल्लेखनीय है।** इसका प्रयोग **शिवाजी ने मुगलों** के विरुद्ध प्रभावी ढंग से किया था।
थांग-टा और सरित सारक (मणिपुर)	**थांग-टा** एक **सशस्त्र मार्शल आर्ट है, जिसमें तलवार (थांग)** और **भाले (टा)** का उपयोग किया जाता है। इसमें **अनुष्ठानिक प्रथाएँ शामिल हैं** और युद्ध के लिए **व्यावहारिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है। [UPSC 2014]** थांग-टा, 17वीं शताब्दी के दौरान मणिपुर में लोकप्रिय हुआ था जब राज्य पर मैतेई साम्राज्य का शासन था, जिन्होंने इसे अंग्रेजों के खिलाफ प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया । इस प्रकार, ब्रिटिश शासन के दौरान इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया लेकिन स्वतंत्रता के बाद यह फिर से सामने आया। **सरित सारक:** यह एक **युद्ध** कला है, जो अपनी आक्रामक और बचाव क्रियाओं के लिए जानी जाती है। दो घटकों थांग-टा और सरित सारक को एक साथ **हुयेन लैंगलोन (Huyen Langlon) कहा जाता है।**
चेइबी गद-गा (मणिपुर)	यह मणिपुर की प्राचीन मार्शल आर्ट में से एक है जिसमें **तलवार** और **ढाल** से लड़ाई की जाती है। इसके संशोधित संस्करणों में तलवार और चमड़े की ढाल के रूप में बंद नरम पत्ती वाली छड़ी (चेइबी) का उपयोग किया जाता है। प्रतियोगिता समतल सतह पर एक **घेरे में होती है।**
इंबुआई कुश्ती (मिजोरम)	**डुंग्टलांग** गाँव में **1750 ई.** से प्रचलित एक देशी मार्शल आर्ट है।इसके सख्त नियम हैं जिनमें **घेरे के भीतर रहना**, **लात नहीं मारना** और **घुटने नहीं मोड़ना शामिल है।** जीत में प्रतिद्वंद्वी को उसके पैरों से उठाना और प्रतिद्वंद्वी की बेल्ट को पकड़ना शामिल है।
गतका (पंजाब)	**"गतका"** नाम **स्वतंत्रता और अनुग्रह** से जुड़ा है और इसकी उत्पत्ति संस्कृत शब्द **"गदा (Mace)"** से हुई है।यह गतका में **सिखों** द्वारा अभ्यास की जाने वाली एक **सशस्त्र मार्शल आर्ट है।** इसमें **लाठी**, **कृपाण**, **तलवार** और **कटार** जैसे हथियारों का उपयोग किया जाता है।
सिलमबम (तमिलनाडु)	**शिलप्पदिकारम** में विदेशी व्यापारियों द्वारा सिलमबम की छड़ों, मोती, तलवारों और कवच का **व्यापार करने** का संदर्भ मिलता है। इसकी **उत्पत्ति दैवीय है, भगवान मुरुगन** (तमिल पौराणिक कथाओं में) और **ऋषि अगस्त्य ने** सिलमबम का निर्माण किया था। यह एक **शुद्ध रक्षा कला से** युद्ध अभ्यास में विकसित हुई। इस कला का **मलेशिया** में भी प्रसार हुआ, जहाँ यह एक प्रसिद्ध खेल और आत्मरक्षा पद्धति है।

Search On TG: @apna_pdf

कुट्टू बरसाई (तमिलनाडु)	इसका उल्लेख सबसे पहले **संगम साहित्य** में हुआ था। यह **खाली हाथ सिलमबम है,** जो एथलेटिसिस्म, फुटवर्क, स्ट्रेचिंग, योग, जिम्नास्टिक और साँस लेने जैसे व्यायाम पर केंद्रित हैं। तकनीकों में साँप, **चील**, बाघ, हाथी और बंदर जैसे **पशु आधारित सेटों** के साथ **हाथापाई, प्रहार करना** और **पाश लगाना/कसना शामिल है।**
मुष्टि युद्ध (उत्तर प्रदेश)	इसकी उत्पत्ति वाराणसी में हुई। यह **मुक्केबाजी से मिलता-जुलता मार्शल आर्ट है,** जिसमें लात, घूँसे और घुटने और कोहनी के वार शामिल हैं। इससे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास होता है।

भारत के अन्य प्रसिद्ध मार्शल आर्ट		
मार्शल आर्ट	**राज्य**	**विशेषता**
काथी सामू	**आंध्र प्रदेश**	**शाही सेनाओं** द्वारा निपुणता प्राप्त एक प्राचीन कौशल है।
स्काय	**कश्मीर**	इसमें **तलवारों और ढालों** का प्रयोग किया जाता है।
मलखंभ	**महाराष्ट्र**	जिम्नास्ट एक ऊर्ध्वाधर, स्थिर या लटकते लकड़ी के खंभे के साथ **एरियल योग आसन करता है।**
इंसु नोर	**मिजोरम**	खिलाड़ी एक घेरे के भीतर **लकड़ी की गोल छड़ी** का उपयोग करते हैं।
किरीप, साल्डू	**निकोबार**	यह **कुश्ती का खेल है,** जिसमें अखाड़े की जरूरत नहीं होती, **केवल खाली जमीन की आवश्यकता होती है।**
पाइका अखाड़ा	**ओडिशा**	इसमें **नृत्य और युद्ध का मिश्रण** है और अब इसे एक प्रदर्शन कला के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।
वर्मा अति	**तमिलनाडु**	यह **शरीर के महत्त्वपूर्ण स्थानों पर लक्षित हमलों पर केंद्रित है** ।
मल्ल युद्ध	**दक्षिण भारत**	यह अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई कुश्ती शैलियों से संबंधित एक **पारंपरिक युद्ध कुश्ती** है।
बंदेश	**सम्पूर्ण भारत में**	यह एक प्राचीन **नि:शस्त्र कला** है, जिसमें किसी सशस्त्र प्रतिद्वंद्वी को नुकसान पहुँचाए बिना विभिन्न पाश (locks) का उपयोग किया जाता है।

भारत के प्रमुख त्योहार और मेले

भारत के प्रमुख त्योहार

त्योहार	राज्य	महत्त्व
बतुकम्म	तेलंगाना	यह **फूलों का त्योहार है** और **दशहरा के भाग के रूप में मनाया जाता है।**
बोनालू	तेलंगाना	बोनालु तेलुगु महीने आषादम (जून/जुलाई) के दौरान मनाया जाता है। यह त्योहार **देवी महाकाली को समर्पित है।**
उगादी	कर्नाटक	यह त्योहार कन्नड़ नव वर्ष का प्रतीक है। यह भारतीय माह चैत्र (मार्च-अप्रैल) के पहले दिन मनाया जाता है।
डूंगरी	हिमाचल प्रदेश	**मनाली** के डूंगरी वन विहार जंगल में स्थित हिडिम्बा या **डूंगरी मंदिर में हिडिम्बा देवी (भीम की पत्नी)** के सम्मान में मनाया जाता है ।
सरहुल	झारखंड	यह **वसंत ऋतु के दौरान** मनाया जाता है, जिसमें देवताओं को **साल के फूल** चढ़ाए जाते हैं।
विशु	केरल	यह **'मलयालम नव वर्ष'** है। **यह मलयालम महीने मेडम** के पहले दिन मनाया जाता है।
मेला हेमिस गोम्पा	लद्दाख	यह तिब्बती कैलेंडर के **10वें दिन भगवान पद्मसंभव (बौद्ध धर्म के वज्रयान** संप्रदाय के संस्थापक) के जन्म का समारोह मनाने के लिए **हेमिस मठ में आयोजित किया जाता है, जो लद्दाख** में सर्दियों के मौसम के अंत के साथ मेल खाता है।
हरि जिरोती	मध्य प्रदेश	**हरियाली** का एक महीने तक चलने वाला त्योहार है, जिसके दौरान **गोंड** और **कोरकू जनजाति** फलदार पौधे लगाते हैं। **[UPSC 2014]**
गुड़ी पड़वा	महाराष्ट्र	इसे व्यापक रूप से **मराठी नव वर्ष** के रूप में मनाया जाता है।
रथयात्रा	ओडिशा	भाई **बलभद्र** और बहन **सुभद्रा के साथ भगवान जगन्नाथ की जगन्नाथ मंदिर** से **गुंडिचा मंदिर** तक की पवित्र यात्रा।
बैसाखी	पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश	यह **वैशाख** महीने (अप्रैल-मई) के पहले दिन मनाया जाता है, जब **फसल की कटाई होती है।** इसे **खालसा पंथ के स्थापना दिवस के रूप में भी जाना जाता है।**
गणगौर	राजस्थान	यह भगवान शिव की पत्नी **देवी पार्वती** या **गौरी** के सम्मान में मनाया जाने वाला एक **वसंत पर्व** है।

Search On TG: @apna_pdf

रेगिस्तान महोत्सव	राजस्थान	यह **जैसलमेर** में मनाया जाता है, जिसमें ऊँट दौड़ सहित राजस्थान की परंपरा का प्रदर्शन किया जाता है।
पुष्कर मेला	राजस्थान	इसे **पुष्कर ऊँट मेले** के रूप में भी जाना जाता है, जहाँ लाखों लोग अपने **ऊँटों** और **मवेशियों** के साथ **पशुधन व्यापार** और **तीर्थयात्रा** के लिए कई दिनों तक **पुष्कर** आते हैं।
पोंगल	तमिलनाडु	यह एक प्रमुख **फसल उत्सव** है।
तेप्पम	तमिलनाडु	यह 12 दिवसीय त्योहार है, जिसे **फ्लोट फेस्टिवल** के नाम से भी जाना जाता है।
पुथंडू	तमिलनाडु	इसे **तमिल नव वर्ष** दिवस के रूप में मनाया जाता है।
मीनाक्षीकलायनम (चिथिरई महोत्सव)	तमिलनाडु	यह त्योहार **मदुरै में भगवान सुंदरेश्वर (शिव)** के साथ **देवी मीनाक्षी (शक्ति)** के दिव्य विवाह को फिर से प्रस्तुत के लिए मनाया जाता है।
नंदा देवी राज जात यात्रा	उत्तराखंड	**गढ़वाली** और **कुमाऊँनी** लोगों का त्योहार है । **[UPSC 2017]**। यह 12 वर्षों में एक बार आयोजित होने वाली तीन सप्ताह तक चलने वाली एक तीर्थयात्रा है।
चालिहा पर्व	संपूर्ण भारत	**सिंधियों** द्वारा मनाया जाने वाला एक त्योहार है, जिसमें वे अपने भगवान **झूलेलाल से प्रार्थना करते हैं। [UPSC 2017]**
मकर संक्रांति	संपूर्ण भारत	यह सूर्य के **मकर** राशि में **प्रवेश का प्रतीक है**। इसे **अच्छी फसल** के लिए **प्रकृति को धन्यवाद देने** के रूप में भी मनाया जाता है।
वसंत पंचमी	संपूर्ण भारत	इसमें **सरस्वती** (विद्या की देवी) की पूजा की जाती है।
चेटी चंद	संपूर्ण भारत	**सिंधी नव वर्ष**, झूलेलाल के जन्म के सम्मान में मनाया जाता है।
बुद्ध पूर्णिमा	संपूर्ण भारत	**वैशाख** माह की पूर्णिमा के दिन **भगवान बुद्ध की जयंती** के रूप में मनाई जाती है।
गुरुपर्व	संपूर्ण भारत	इसे **गुरु नानक के प्रकाश उत्सव** और **गुरु नानक देव की जयंती** के रूप में भी जाना जाता है। यह पहले सिख गुरु, **गुरु नानक देव का जन्म समारोह भी होता है।**

उत्तर-पूर्वी भारत के प्रमुख त्योहार

त्योहार	राज्य	महत्त्व
सोलुंग	अरुणाचल प्रदेश	यह **आदिवासी समुदायों** का एक **सामाजिक-धार्मिक उत्सव** है ।
म्योको महोत्सव	अरुणाचल प्रदेश	यह विभिन्न **अपातानी गाँवों** के बीच मित्रता और सद्भाव के त्योहार के रूप में मनाया जाता है।
मोपिन	अरुणाचल प्रदेश	**यह गालो समुदाय** का त्योहार है और यह मुख्यतः **कृषि** से जुड़ा है । इस त्योहार का एक उद्देश्य **बुरी आत्माओं** को दूर भगाना **है।**
बुद्ध महोत्सव	अरुणाचल प्रदेश	**बौद्ध** सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और **बौद्ध पर्यटन को प्रोत्साहित करने** के लिए तवांग में मनाया जाता है।
द्री फेस्टिवल	अरुणाचल प्रदेश	**अपातानियों** द्वारा मनाया जाने वाला एक कृषि अनुष्ठान है, जिसमें **सूर्य और चंद्र देवताओं** को अंडों और जानवरों की **बलि** दी जाती है।
तोग्याँ मठ महोत्सव	अरुणाचल प्रदेश	यह स्वस्थ और समृद्ध **नव वर्ष का स्वागत करने के लिए मोनपा समुदाय द्वारा मनाया जाता है।**
बिहू महोत्सव	असम	यह कृषि संचालन के तीन महत्त्वपूर्ण चरणों को चिह्नित करने के लिए **वर्ष में तीन बार मनाया जाता है।** **बोहाग बिहू (इसे रोंगाली बिहू** भी कहा जाता है) बुवाई की शुरुआत का प्रतीक है। **कटि बिहू** खड़ी फसलों के लिए प्रार्थना करने के लिए मनाया जाता है। **माघ बिहू** (इसे **भोगाली बिहू** भी कहा जाता है) फसल कटाई के मौसम का प्रतीक है।
देहिंग पटकाई महोत्सव	असम	यह हर वर्ष **जनवरी** में **लेखापानी** में आयोजित किया जाता है और इसका नाम पूर्वी असम की देहिंग नदी और पटकाई पर्वत शृंखला के नाम पर रखा गया है।
अंबुबाची मेला	असम	यह कामाख्या देवी मंदिर में हर वर्ष जून महीने के मध्य में आयोजित होने वाले **देवी कामाख्या** के **वार्षिक शुद्धिकरण संस्कार** से जुड़ा है। इसे **पूर्व का महाकुंभ** भी कहा जाता है।
कांग चिंगबा	मणिपुर	यह **10 दिनों तक चलने वाला त्योहार है,** जो हर वर्ष **जुलाई में वैष्णव धर्म का** पालन करने वाले **मैतेई समुदाय** द्वारा मनाया जाता है।
चीरोबा महोत्सव	मणिपुर	यह मणिपुरी नव वर्ष है, जो **मणिपुरी महीने साजिबू** (मार्च/अप्रैल) के दौरान मनाया जाता है।
नोंगक्रेम नृत्य महोत्सव	मेघालय	यह मेघालय के लोगों द्वारा भरपूर **फसल** और **समृद्धि के लिए देवी "का ब्लेई सिंशर"** को प्रसन्न करने के लिए प्रतिवर्ष मनाया जाता है।
वंगाला महोत्सव	मेघालय	यह **सूर्य देवता 'मिसी सालजोंग'**और **अनाज की देवी 'मिनी-मा किरी रोकिमे' को** धन्यवाद देने के लिए **गारो** समुदाय का एक **फसल उत्सव है।**

Search on TG: @apna_pdf

चापचर कुट	मिजोरम	**झूम खेती** के लिए **जंगलों को साफ करने** के बाद मनाया जाने वाला एक धन्यवाद उत्सव है। इसे **वसंत उत्सव** के रूप में भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। **[UPSC 2018]**
लोसूंग महोत्सव	सिक्किम	**फसल की कटाई** का त्योहार है। **बुराई पर अच्छाई की जीत की याद में मनाए जाने वाले इस त्योहार पर ब्लैक हैट नृत्य** होता है, जिसमें लोसूंग से दो दिन पहले कई मठों में **'चाम' का आयोजन** किया जाता है।
सागा दावा	सिक्किम	यह सिक्किम के **बौद्ध समुदायों** द्वारा मनाया जाता है।
खर्ची पूजा	त्रिपुरा	इसे **'14 देवताओं का त्योहार'** भी कहा जाता है और यह हर वर्ष जुलाई या अगस्त में अमावस्या के **आठवें दिन** मनाया जाता है।
माजुली महोत्सव	असम	यह नवंबर में असम राज्य मंत्रालय द्वारा **माजुली द्वीप** पर मनाया जाता है, जिसमें उद्घाटन और समापन समारोह के दौरान स्थानीय संरक्षक देवता का आह्वान किया जाता है।

भारत के प्रमुख मेले		
मेले	**राज्य**	**महत्त्व**
सोनपुर पशु मेला (एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला)	बिहार	यह **गंगा और गंडक नदियों** के संगम पर **सोनपुर के हरिहरनाथ मंदिर** से जुड़ा है। यह मेला हाथियों के व्यापार के लिए, **चंद्रगुप्त मौर्य के समय से नवंबर में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगता है।**
गोवा कार्निवल	गोवा	यह **पुर्तगालियों द्वारा शुरू किया गया था** और इसमें **दावत** एवं **मौज-मस्ती** शामिल थी।
सूरजकुंड शिल्प मेला	हरियाणा	यह एक **अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला है, जो क्षेत्रीय और साथ ही अंतरराष्ट्रीय शिल्प** तथा सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए हर वर्ष 1 फरवरी से एक पखवाड़े के लिए फरीदाबाद के पास आयोजित किया जाता है।
चित्र-विचित्र मेला	गुजरात	यह गुजरात का **सबसे बड़ा आदिवासी मेला है, जो मुख्य रूप से** होली के बाद **'अमावस्या' के दिन 'गरासिया'** और **'भील'** जनजातियों द्वारा आयोजित किया जाता है।
शामलाजी मेला	गुजरात	यह आदिवासी समुदाय द्वारा **मेशनो नदी** में पवित्र स्नान करके **कृष्ण या विष्णु के अवतार** माने जाने वाले **भगवान शामला** जी की पूजा करने के लिए आयोजित किया जाता है।
कोलायत मेला (कपिल मुनि मेला)	राजस्थान	लोग अपने सभी पापों का प्रायश्चित करने के लिए **कार्तिक पूर्णिमा** के दिन **बीकानेर की पवित्र कोलायत झील** में डुबकी लगाते हैं।

Search On TG: @apna_pdf

प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय सिक्कों का एक अवलोकन

प्राचीन सिक्के

सिक्के **पहली बार** लगभग **700 ईसा पूर्व चीन, ग्रीस** और **भारत** में दिखाई दिए।

- इसका सबसे पहला उल्लेख **वेदों** में मिलता है, जिनमें धातु के सिक्कों के लिए **"निष्क"** शब्द का प्रयोग किया गया है।
- सिक्कों और पदकों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (Numismatics)** के नाम से जाना जाता है।

आहत सिक्के (पंचमार्क सिक्के) (500BC-100BC)

पाणिनि के अष्टाध्यायी में "रत्ती" का उल्लेख है। इन सिक्कों को हाथ से ढाला जाता था और उन पर 1 से 5 अंकित चिह्नों की मुहर (छाप) लगाई जाती थी।

वर्गीकरण

- **महाजनपद काल (500 ईसा पूर्व)** के दौरान ढाले गए पहले भारतीय आहत सिक्कों को **पुराण, कार्षापण या पण कहा जाता था।**
  - इन सिक्कों का अनियमित आकार और एक मानक वजन था और ये चाँदी के बने थे, जिन पर विभिन्न प्रकार के चिह्न अंकित होते थे।
  - **सौराष्ट्र के सिक्कों** पर एक **कूबड़ वाला बैल, दक्षिणी पांचाल के सिक्कों पर स्वास्तिक** और मगध **के सिक्कों पर पाँच प्रतीक** अंकित थे।
  - इनका उल्लेख **मनुस्मृति** और बौद्ध **जातक कथाओं** में मिलता है।
- **मौर्य काल (322-185 ईसा पूर्व)** के दौरान इन सिक्कों को **कार्षापण** कहा जाता था
  - चाणक्य ने **अर्थशास्त्र** ग्रंथ में **रूपयेरूपा** (चाँदी का सिक्का), **सुवर्णरूपा** (सोने का सिक्का), **ताम्ररूपा** (ताँबे का सिक्का), और **सीसारूपा** (सीसे का सिक्का) जैसे आहत सिक्कों की ढलाई का उल्लेख किया है।
  - **सूर्य** और छह भुजाओं वाले पहिये के प्रतीक सबसे अधिक दिखाई दिए।

सातवाहनों के सिक्के

- सातवाहन राजा (232 ईसा पूर्व-227 ईसवी) अपने सिक्कों में सामग्री के रूप में **सीसा** तथा **चाँदी** और **ताँबे** की एक **मिश्र धातु "पोटिन" का उपयोग करते थे।**
- **छवि-अंकन (Iconography):** एक तरफ **हाथी, घोड़े, शेर** या **चैत्य** जैसी आकृतियाँ थीं और दूसरी तरफ एक **उज्जैन प्रतीक** जिसमें एक क्रॉस होता था और दो क्रॉसिंग लाइनों के अंत में चार वृत्त होते थे।
- **कौड़ी** छोटे पैमाने के आर्थिक लेनदेन के लिए आम लोगों द्वारा विनिमय के एक अन्य प्रमुख माध्यम के रूप में कार्य करती थी।

पश्चिमी क्षत्रपों के सिक्के (इंडो-सीथियन)

- इन सिक्कों में एक तरफ **राजा** का चित्र है और दूसरी तरफ **बौद्ध चैत्य** या **स्तूप** का चित्र है जो शायद सातवाहनों से लिया गया है।
- उन्होंने **प्राकृत** भाषा का विभिन्न लिपियों में प्रयोग किया।

गुप्त काल में जारी सिक्के (319-550 ई.)

गुप्तकालीन सिक्के मुख्य रूप से **सोने** के बने होते थे, हालाँकि **चाँदी** और **ताँबे के** सिक्के भी जारी किए गए थे।

- **सिक्कों पर चित्र**:
  - गुप्त सिक्कों में एक तरफ राजा को विभिन्न गतिविधियों जैसे- वीणा बजाते **(समुद्रगुप्त)**, **अनुष्ठान करते**, जानवरों का **शिकार करते हुए** दर्शाया गया है।
  - दूसरी **तरफ** प्रायः **देवी लक्ष्मी को** सिंहासन पर बैठे हुए या **कमल की मुहर** या स्वयं **रानी को दर्शाया गया है।** अन्य देवताओं में **दुर्गा, गंगा, गरुड़** और **कार्तिकेय** के चित्र शामिल हैं।
- पहली **बार** सिक्कों पर **संस्कृत** (ब्राह्मी लिपि) अंकित किए गए।

गुप्त शासन के बाद बदलाव का दौर

- उत्तर-गुप्त काल के सिक्कों की विशेषता **'धातु की कम मात्रा** और **कम कलात्मक डिजाइन' थी** ।
- **उत्तरवर्ती राजवंशों ने कुषाण-गुप्त पैटर्न के साथ-साथ विदेशी डिजाइनों** से उधार लिए गए डिजाइनों का मिश्रण किया था।
- **दक्षिण भारत का स्वर्ण मानक:** दक्षिण भारत में, एक अलग सिक्का प्रणाली का विकास हुआ, जो **रोमन** सोने के सिक्कों से **प्रभावित होकर स्वर्ण मानक की ओर बढ़ रही थी।**

चालुक्य राजाओं के सिक्के (छठी-सातवीं शताब्दी ईसवी): पश्चिमी **चालुक्यों के सिक्कों में एक तरफ मंदिर या शेर अंकित** होता था और दूसरी तरफ सपाट होता था। पूर्वी **चालुक्यों के सिक्कों में** एक तरफ केंद्र में **सूअर होता था, जिसमें राजा के नाम का प्रत्येक अक्षर** एक अलग छाप में होता था। दूसरी तरफ सपाट होता था।

वर्द्धन वंश के सिक्के (सातवीं शताब्दी ईसवी): वर्द्धन वंश के **चाँदी के सिक्कों पर एक तरफ राजा का चित्र** और **दूसरी तरफ एक मोर** चित्रित था। हर्षवर्द्धन के सिक्कों में **नए युग की तारीख निर्धारण प्रणाली का उपयोग किया गया था**, जिसकी शुरुआत संभवतः 606 ईसवी में हुई थी।

राजपूत राजवंशों के सिक्के (11वीं-12वीं शताब्दी)

सिक्के मुख्य रूप से **सोने, ताँबे** या **बिलोन (चाँदी और ताँबे की मिश्रधातु)** से बने होते थे, चाँदी का उपयोग शायद ही कभी किया जाता था। राजपूत सिक्के **दो प्रकार के** थे:

- **एक तरफ संस्कृत में राजा का नाम** और **दूसरी तरफ देवी का** चित्र होता था।
- चाँदी के सिक्कों पर एक तरफ **बैठे हुए बैल का चित्र** और दूसरी तरफ **एक घुड़सवार का चित्र होता था।**

पांड्य, चोल और पल्लव राजवंश के सिक्के

पांड्य राजवंश : प्रारंभिक पांडियन सिक्के **चौकोर आकार के होते थे, जिन पर हाथी की छवि** अंकित होती थी। **बाद में, मछली** एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक बन गई। **सोने** और **चाँदी के सिक्कों पर उत्कीर्ण लेख संस्कृत में** थे, जबकि **ताँबे के सिक्कों पर** उत्कीर्ण लेख **तमिल** में थे।

चोल राजवंश : राज राज-प्रथम के सिक्कों **पर एक तरफ खड़े राजा** और **दूसरी तरफ बैठी हुई देवी को चित्रित किया गया था**, आमतौर पर संस्कृत में उत्कीर्ण लेख भी थे। **राजेंद्र-प्रथम के सिक्कों पर बाघ और मछली** के प्रतीक के साथ **'श्री राजेंद्र'** या **'गंगईकोंडा चोल'** जैसे शब्द अंकित थे।

पल्लव राजवंश के सिक्कों पर शेर की आकृति अंकित थी।

मध्यकालीन सिक्के

दिल्ली सल्तनत के सिक्के (1206-1526): दिल्ली के सुल्तानों ने सोने, चाँदी, ताँबे और बिलोन के सिक्के जारी किए, जिन पर **राजा का नाम, उपाधि, टकसाल का नाम** और **हिजरी संवत् की** तारीख अंकित थी।

- इस्लाम में मूर्ति पूजा के निषेध के कारण सिक्के जारी करने वाले **राजाओं की कोई छवि अंकित नहीं होती थी।**
- **इल्तुतमिश ने चाँदी का टंका** और **ताँबे का जीतल** शुरू किया।
- **अलाउद्दीन खिलजी ने** खलीफा के नाम के स्थान पर **आत्म-प्रशंसा वाली उपाधियाँ अंकित करवाई।**
- **मुहम्मद बिन तुगलक ने कांस्य, ताँबे के सिक्कों** और **सांकेतिक कागजी** मुद्रा की शुरुआत की।
- **शेरशाह सूरी** ने भार मानक, **रुपया (चाँदी), और दाम (ताँबा) स्थापित किया** और रुपया **की शुरुआत की।**

विजयनगर साम्राज्य के सिक्के (14वीं-17वीं शताब्दी)

- विजयनगर साम्राज्य द्वारा **सोने, शुद्ध चाँदी** और **ताँबे के सिक्के जारी किए गए थे।**
- **विभिन्न प्रयोजनों के लिए अलग-अलग सिक्के**: **पैगोडा** (उच्च मूल्य वर्ग के सिक्के), **सोने के फैनम** (आंशिक इकाइयाँ) **[UPSC 2022], चाँदी के तारे (Taras)** (आंशिक इकाइयाँ), **और ताँबे के सिक्के** (दैनिक लेनदेन)।
- सिक्कों **पर कन्नड़ या संस्कृत में उत्कीर्ण लेख होते थे।**
- सिक्के **बरकुर गद्याना** और **भटकल गद्याना नामक स्थानों में ढाले गए थे।**
- सिक्कों पर दो सिर वाले बाज, एक बैल, एक हाथी और हिंदू देवी-देवता के चित्र अंकित होते थे।
- **कृष्णदेव राय द्वारा निर्मित स्वर्ण वर्द्धन (Gold Vardhan)** सिक्के के एक तरफ **बैठी मुद्रा में विष्णु** दूसरी तरफ संस्कृत में **तीन पंक्तियों में श्री प्रताप कृष्ण राय** अंकित था।

मुगल सिक्के (1526-1707)

- मुगल काल के मानक **सोने के सिक्के को मुहर** (170-175 ग्रेन) कहा जाता था। **'आईन-ए-अकबरी'** में अबुल फजल ने संकेत दिया है कि एक मुहर नौ रुपये के बराबर थी।
- **मुगल ताँबे का सिक्का शेरशाह के दाम से अपनाया गया** था, जबकि **चाँदी का रुपया** शेरशाह की मुद्रा से अपनाया गया था।
- **अकबर ने** गोल और चौकोर सिक्के जारी किए। उसके "इलाही सिक्कों" ने उसके धार्मिक पंथ को बढ़ावा दिया।
  - **शहंशाह सबसे बड़ा सोने का सिक्का था** और इसपर फारसी सौर महीनों के नाम अंकित थे।

Search On TG: @apna_pdf

- **जहाँगीर के** सिक्कों में **दोहे**, उसकी पत्नी **नूरजहाँ का नाम** और राशि चिह्न अंकित थे।

अन्य सिक्के

- छत्रपति शिवाजी ने नागरी लिपि में शीर्षक के साथ सोने के "होन" और ताँबे के "शिवराई" जारी किए।
- **वाड्यार** राजवंश (मैसूर) के सिक्कों पर **विष्णु का नरसिंह अवतार अंकित था।**
- **हैदर अली और टीपू** सुल्तान ने **शिव, पार्वती की आकृतियों के साथ सिक्का निर्माण जारी रखा।**

ब्रिटिश कालीन और आधुनिक सिक्के

ब्रिटिश काल

- **बंगाल** के सिक्कों का निर्माण **मुगल पैटर्न** पर हुआ था।
- पश्चिमी भारत के अंग्रेजी सिक्कों का निर्माण **मुगल पैटर्न के साथ-साथ अंग्रेजी पैटर्न पर भी हुआ।**
  - अंग्रेजी पैटर्न के सिक्के बॉम्बे टकसाल में बनाए गए थे।
  - **सोने के सिक्कों को कैरोलिना, चाँदी के सिक्कों को एंग्लिना, ताँबे के सिक्कों** को **क्यूपरून** और **टिन** के सिक्कों को **टिनी कहा** जाता था।
- **ब्रिटिश ताज के तहत** पहला सिक्का वर्ष **1862** में जारी किया गया था और 1877 ई. में रानी विक्टोरिया ने भारत की महारानी की उपाधि धारण की थी।

वर्तमान में, **भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड (Security Printing and Minting Corporation of India Ltd., SPMCIL)** के स्वामित्व वाली चार टकसालों में सिक्का निर्माण होता है। ये टकसालें मुंबई, हैदराबाद, कोलकाता और नोएडा में स्थित हैं।

- सिक्के **आरबीआई अधिनियम की धारा 38** के तहत केवल रिजर्व बैंक के माध्यम से चलन के लिए जारी किए जाते हैं।

महत्त्वपूर्ण भारतीय संग्रहालय

संग्रहालय का नाम	स्थान	स्थापना वर्ष	केंद्रीय क्षेत्र	प्रकार	प्रशासनिक निकाय
राष्ट्रीय संग्रहालय	नई दिल्ली	1949	भारत की कला, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्व।	शासकीय	संस्कृति मंत्रालय
भारतीय संग्रहालय	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	1814	भारत का सबसे पुराना संग्रहालय; कला, पुरातत्व, नृविज्ञान और भूविज्ञान पर केंद्रित है।	शासकीय	संस्कृति मंत्रालय
छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय	मुंबई, महाराष्ट्र	1922	कला, पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास।	शासकीय	महाराष्ट्र सरकार
सालार जंग संग्रहालय	हैदराबाद, तेलंगाना	1951	भारत, एशिया और यूरोप की कलाकृतियों का सबसे बड़ा संग्रह।	शासकीय	संस्कृति मंत्रालय
विक्टोरिया मेमोरियल	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	1921	ब्रिटिश भारत से संबंधित कला और ऐतिहासिक कलाकृतियाँ।	शासकीय	संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी (NGMA)	नई दिल्ली	1954	आधुनिक भारतीय कला और मूर्तियाँ।	शासकीय	संस्कृति मंत्रालय
भारत कला भवन	वाराणसी, उत्तर प्रदेश	1920	भारतीय कला, संस्कृति, पुरातत्व और पांडुलिपियाँ।	शासकीय	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
शासकीय संग्रहालय (एग्मोर)	चेन्नई, तमिलनाडु	1851	कला, पुरातत्व, मुद्राशास्त्र और प्राणीशास्त्र।	शासकीय	तमिलनाडु सरकार
अल्बर्ट हॉल संग्रहालय	जयपुर, राजस्थान	1887	कला, शिल्प और पारंपरिक राजस्थानी कलाकृतियाँ।	शासकीय	राजस्थान सरकार
वस्त्रों का केलिको संग्रहालय	अहमदाबाद, गुजरात	1949	भारतीय वस्त्र, वेशभूषा और कपड़े।	गैर शासकीय	साराभाई फाउंडेशन
पटना संग्रहालय	पटना, बिहार	1917	मौर्य और गुप्त काल सहित प्राचीन भारत की कलाकृतियाँ।	शासकीय	बिहार सरकार
डॉ. भाऊ दाजी लाद संग्रहालय	मुंबई, महाराष्ट्र	1872	सौंदर्य कला, औद्योगिक इतिहास और पुरातत्व।	शासकीय	ग्रेटर मुंबई नगर निगम

Search On TG: @apna_pdf

राजा दिनकर केलकर संग्रहालय	पुणे, महाराष्ट्र	1962	भारतीय जीवन और संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाली दैनिक कलाकृतियों का संग्रह।	गैर शासकीय	स्वायत्त
नेपियर संग्रहालय	तिरुवनंतपुरम, केरल	1855	कला, पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास।	शासकीय	केरल सरकार
शंकर का अंतर्राष्ट्रीय 'डॉल म्यूजियम'	नई दिल्ली	1965	दुनिया भर से गुड़ियों का संग्रह।	गैर शासकीय	चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट
इंदिरा गांधी मेमोरियल संग्रहालय	नई दिल्ली	1985	इंदिरा गांधी के जीवन और विरासत से संबंधित कलाकृतियाँ और प्रदर्शनियाँ।	शासकीय	संस्कृति मंत्रालय
जनजातीय संग्रहालय	भोपाल, मध्य प्रदेश	2013	मध्य प्रदेश की जनजातीय कला, संस्कृति और कलाकृतियाँ।	शासकीय	मध्य प्रदेश सरकार

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

15 परिशिष्ट

नवीन संग्रहालय

संग्रहालय का नाम	स्थान	स्थापित वर्ष	क्षेत्र
भारतीय संगीत अनुभव संग्रहालय	बेंगलुरु, कर्नाटक	2019	शास्त्रीय परंपराओं से लेकर आधुनिक शैलियों तक, भारतीय संगीत के विकास को प्रदर्शित करने वाली संवादात्मक प्रदर्शनियाँ।
कला एवं फोटोग्राफी संग्रहालय (MAP)	बेंगलुरु, कर्नाटक	2023	दक्षिण एशियाई कला, वस्त्र, फोटोग्राफी और डिजाइन, कला को जनता के लिए सुलभ बनाता है।
स्मृतिवन भूकंप संग्रहालय	भुज, गुजरात	2022	वर्ष 2001 के भूकंप के बाद की स्थिति की याद दिलाता है, इसमें सीढ़ीदार गैलरी और एक वन स्थित है।
मंद्रो जीवाश्म पार्क	राजमहल पहाड़ियाँ, झारखंड	2022	145 से 200 मिलियन वर्ष पुराने जीवाश्मों को प्रदर्शित करता है, जिसमें 140 मिलियन वर्ष पुराने पौधे का जीवाश्म भी शामिल है।
राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC)	लोथल, गुजरात	निर्माणरत (2024 अपेक्षित)	विश्व का सबसे बड़ा समुद्री संग्रहालय, जिसमें भारत की नौसैनिक और समुद्री विरासत का इतिहास दर्शाया गया है।
राष्ट्रीय युद्ध स्मारक	नई दिल्ली	2019	सैन्य इतिहास पर ध्यान केंद्रित करते हुए, सभी युद्धों और संघर्षों में भारतीय सैनिकों के बलिदान का सम्मान करता है।
कपड़ा संग्रहालय	अहमदाबाद, गुजरात	2023	पारंपरिक बुनाई, कपड़ा तकनीक और डिजाइन पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारतीय वस्त्रों की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करता है।

भारत के प्रमुख पुरातत्व स्थल, जिन्हें प्रतिष्ठित स्थलों के रूप में विकसित किया जाएगा

पुरातात्विक स्थल	स्थान	विशेषताएँ
राखीगढ़ी	हरियाणा	एक प्रमुख हड़प्पा स्थल, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे बड़े स्थलों में से एक माना जाता है। इसमें प्राचीन शहर के खंडहर, कब्रिस्तान और कलाकृतियाँ शामिल हैं।
हस्तिनापुर	उत्तर प्रदेश	महाभारत काल का प्राचीन शहर, जो अपने ऐतिहासिक और पौराणिक महत्त्व के लिए जाना जाता है। उत्खनन से प्राचीन संरचनाओं, मृदभांडों और कलाकृतियों का पता चलता है।
शिवसागर	असम	यह अहोम राजवंश के साथ अपने संबंध के लिए जाना जाता है, इसमें महल, मंदिर और ऐतिहासिक जलाशय स्थित हैं। मुख्य विशेषता: शिवसागर जलाशय और रंग घर, एक प्राचीन रंगभूमि।
धोलावीरा	गुजरात	हड़प्पा सभ्यता का एक प्रमुख स्थल, जो अपनी उन्नत शहरी योजना, बड़े जलाशयों और उल्लेखनीय जल प्रबंधन प्रणालियों के लिए जाना जाता है।
आदिचनल्लूर	तमिलनाडु	लौह युग का एक प्राचीन शवाधान स्थल, जो अपने कलश शवाधान, प्राचीन मिट्टी के बर्तनों और लोहे के औजारों जैसी कलाकृतियों के लिए जाना जाता है।

महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं लेखक

लेखक/विद्वान	पुस्तकें
वाल्मीकि	रामायण
वेदव्यास	महाभारत
पाणिनि	अष्टाध्यायी

Search On TG: @apna_pdf

पतंजलि	महाभाष्य
नागार्जुन	माध्यमिका कारिका, प्रजनापरमिता कारिका
वसुमित्र	महाविभाषाशास्त्र
अश्वघोष	बुद्धचरित, वज्रसूची, सौंदरानंद
चरक	चरक संहिता (चिकित्सा पर पुस्तक)
कालिदास	मालविकाग्निमित्रम् (अग्निमित्र शुंग और मालविका की प्रेम कहानी), मेघदूत, ऋतुसंहार, अभिज्ञानशाकुंतलम्, रघुवंशम और कुमारसंभवम्
सुश्रुत	सुश्रुत संहिता (शल्य चिकित्सा पर पुस्तक)
विशाखदत्त	मुद्राराक्षस (चंद्रगुप्त मौर्य ने नंदों को हराया), देवीचंद्रगुप्तम
शूद्रक	मृच्छकटिकम् (नाटक) से
भरत मुनि	नाट्यशास्त्र
भास्कराचार्य	सिद्धांत शिरोमणि (4 भाग - लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित और खगोल विज्ञान पर गोलाध्याय)
दण्डी	दशकुमारचरित और काव्यदर्शन
भवभूति	उत्तररामचरित (वाल्मीकि रामायण की निरंतरता), मालती माधव
देवचन्द्र	शांतिनाथचरित्र (जैन कथा)
हेमचन्द्र	द्वाश्रय महाकाव्य, सप्त साधना
विल्हण	विक्रमांकदेवचरित (चालुक्य राजा विक्रमादित्य) और कर्णसुन्दरी
श्रीजयानक	पृथ्वीराज विजय
जयसिंह	कुमारपालचरित
लगधाचार्य	ज्योतिष पर पुस्तक
कामंदक	नीतिशास्त्र (राजनीति पर)
न्यायचंद्र	हम्मीरकाव्य
पद्मगुप्त	नवसाहसांकचरित्र
राजशेखर	कर्पूरमंजरी, बाल रामायण, बाला भारत, काव्यमीमांसा, भुवन कोश, हरविलास
विज्ञानेश्वर	मिताक्षरा
जयदेव	प्रसन्नराघव और गीत गोविंद
जीमूतवाहन	दयाभाग
वाग्भट्ट	अष्टांग-संग्रह, अष्टांग-हृदय-संहिता
वाक्पति	गौडवहो/गड़वाहों (कन्नौज का यशोवर्मन)
वराहमिहिर	पंचसिद्धांतिका (ज्योतिष पर पुस्तक), सूर्यसिद्धांत, बृहदसंहिता
वर्धमान	आदिनाथचरित्र (जैन कथा)
विशालदेव	हरिकेली नाटक
चंदबरदाई	पृथ्वीराज रासो

Search On TG: @apna_pdf

विदेशी यात्री और उनके अवलोकन/विवरण

नाम	राष्ट्रीयता	अवधि	शासक का शासनकाल	उल्लेखनीय कार्य/टिप्पणियाँ
मेगस्थनीज	सेल्यूकस निकेटर के यूनानी राजदूत	302-298 ईसा पूर्व	चन्द्रगुप्त मौर्य	"इंडिका" नामक पुस्तक लिखी।
डाइमेकस	यूनानी राजदूत	320-273 ईसा-पूर्व	बिंदुसार	
फाह्यान	चीनी यात्री	405-411 ई.	चन्द्रगुप्त द्वितीय	अपने यात्रा वृतांत द 'रिकॉर्ड्स ऑफ बुद्धिस्ट किंगडम्स' ("फो-क्यो-की") में उसने अपनी यात्रा का वर्णन किया है। उसने पाटलिपुत्र की अपनी यात्रा से यह निष्कर्ष निकाला कि हीनयान और महायान दोनों संप्रदायों के अलग-अलग संघ थे जो पूरे भारत के छात्रों को शिक्षा देते थे।

ह्वेन त्सांग	चीनी यात्री	630-645 ई.	हर्षवर्धन	एक यात्रा वृत्तांत "सी-यू-की" (पश्चिमी विश्व की यात्रा) लिखा। इसने लगभग पाँच वर्षों तक नालंदा में अध्ययन किया। हर्ष के शासनकाल के बारे में भी बताया गया है।
इत्सिंग	चीनी यात्री	671-695 ई.		श्रीविजय और रास्ते में आने वाले राज्यों के ज्ञान में योगदान करते हुए, अपनी 25 वर्ष की यात्राओं के वृत्तान्त लिखा।
अल मसूदी	अरब यात्री	957 ई.		"मुरुज-उल-ज़हाब" में भारत का विस्तृत विवरण दिया है।
अलबरूनी	फारसी विद्वान	1024-1030 ई.		"तहकीक-ए-हिंद/किताब-उल-हिन्द" लिखा। उसने जाति व्यवस्था को समझाने का प्रयास किया।
मार्को पोलो	इतालवी यात्री	1292-1294 ई	काकतीय वंश की रुद्रम्मादेवी के शासनकाल के दौरान दक्षिण भारत का दौरा किया।	भारत के आर्थिक इतिहास पर "द बुक ऑफ सर मार्को पोलो" लिखा।
इब्नबतूता	मोरक्को यात्री	1333-1347 ई	मुहम्मद-बिन-तुगलक	एक यात्रा वृतांत "रिहला" लिखा। मुहम्मद-बिन-तुगलक ने इसे दिल्ली का काजी/न्यायाधीश नियुक्त किया। मुहम्मद-बिन-तुगलक शासनकाल (उलूक-घोड़े की चौकी और दावा-पैदल डाक) के दौरान डाक प्रणाली के बारे में बताता है। यह बताता है कि यात्रा करना असुरक्षित था और यात्रा के दौरान डकैती का भी उल्लेख किया गया है। उन्होंने नारियल और पान का भी जिक्र किया है।
निकोलो कोंटी	इतालवी व्यापारी	1420-1421 ई.	विजयनगर साम्राज्य के देवराय प्रथम	विजयनगर का चित्रित विवरण दिया। "तेलुगु" को "पूर्व का इतालवी" कहा गया।
अब्दुर रज्जाक समरकंदी	फ़ारसी विद्वान, तिमुरिड राजवंश के शाहरुख का राजदूत	1443-1444 ई	विजयनगर साम्राज्य के देवराय द्वितीय	कालीकट के जमोरिन के दरबार में रहे। अपने "मतला उस सद्दीन वा मजूमा उल बहरीन" में कालीकट और विजयनगर का संक्षिप्त विवरण दिया है।

अथानासियस निकितिन	रूसी व्यापारी	1470-1474 ई.		1470 में दक्षिण भारत का दौरा किया और मुहम्मद तृतीय के अधीन बहमनी साम्राज्य की स्थिति का वर्णन किया। उसके कार्यों में "3 समुद्रों से परे की यात्रा" शामिल है।
डुआर्टे बारबोसा	पुर्तगाली यात्री	1500-1516 ई.		विजयनगर साम्राज्य के सरकार और जनता का संक्षिप्त विवरण दिया
डोमिंगो पायस	पुर्तगाली यात्री	1520-1522 ई.	कृष्णदेव राय (विजयनगर साम्राज्य)	
फर्नाओ नुनिज़	पुर्तगाली व्यापारी	1535-1537 ई.	तुलुव वंश के अच्युतदेव राय	अच्युत राय के शासनकाल के दौरान विजयनगर साम्राज्य का इतिहास लिखा
विलियम हॉकिन्स	ब्रिटिश राजा जेम्स प्रथम के राजदूत	1608-1611 ई.	जहाँगीर	
सर या टॉमस रो	ब्रिटिश राजा जेम्स प्रथम के राजदूत	1615-1619 ई.	जहाँगीर	
एडवर्ड टेरी	सर थॉमस रो के राजदूत	1616 ई.		"ए वॉयेज टू ईस्ट-इंडिया" लिखा
फ्रांसिस्को पेल्सर्ट	डच यात्री	1620-1627 ई.		मुगल साम्राज्य में सामान्य लोगों के जीवन स्तर के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी। बर्नियर की तरह यह भी व्यापक गरीबी देखकर हैरान था।
पीटर मुंडी	इतालवी यात्री	1628-1634 ई.	शाहजहाँ	6 बार भारत भ्रमण किया। अपने लेख में इन्होंने शाहजहाँ और औरंगजेब के शासनकाल को शामिल किया गया है।

Search On TG: @apna_pdf

जीन बैप्टिस्ट टैवर्नियर	फ्रांसीसी यात्री (जौहरी)	1638-1663 ई.	शाहजहाँ	इसने "ट्रैवल्स इन इंडिया" लिखा। ओटोमन साम्राज्य के साथ व्यापार के बारे में बताता है। उन्होंने छह बार भारत का दौरा किया।
निकोलो मनूची	इतालवी चिकित्सक और दार्शनिक	1653-1708 ई.	मुगल साम्राज्य	इसकी पुस्तक "स्टोरिया-डो-मोगोर" है जिसे मुगल दरबार का सबसे विस्तृत विवरण माना जाता है।
फ्रेंकोइस बर्नियर	फ्रांसीसी चिकित्सक और दार्शनिक	1656-1668 ई.	मुगल साम्राज्य	यह राजकुमार दाराशिकोह के चिकित्सक के रूप में मुगल दरबार से निकटता से जुड़ा था और इसे औरंगजेब के दरबार में एक चिकित्सक के रूप में रखा गया था।
जीन डे थेवेनॉट	फ्रांसीसी यात्री	1666 ई.	मुगल साम्राज्य	अहमदाबाद, कैम्बे, औरंगाबाद और गोलकुंडा जैसे शहरों का विवरण दिया

भारत में महत्त्वपूर्ण भक्ति आंदोलन

भक्ति आंदोलन	संस्थापक/प्रमुख संत	प्रमुख शिक्षाएँ	क्षेत्र/अवधि	महत्त्व	प्रमुख ग्रंथ
अलवार और नयनार	अलवार (वैष्णव) और नयनार (शैव)	कविता और संगीत के माध्यम से विष्णु या शिव की भक्ति। व्यक्तिगत श्रद्धा एवं भक्ति पर बल।	तमिलनाडु, छठी-नौवीं शताब्दी ई.	दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन की नींव।	तिरुवाय्मोली (नम्मालवार द्वारा), तेवरम (नयनमार द्वारा)
संत एकनाथ	संत एकनाथ, तुकाराम, ज्ञानेश्वर	विठोबा (भगवान विष्णु का एक रूप) की भक्ति, कविता, गायन और सेवा के माध्यम से भक्ति पर ध्यान केंद्रित करना।	महाराष्ट्र, 15वीं-17वीं शताब्दी	पूजा में समुदाय, समानता और सादगी पर जोर।	अभंग (तुकाराम द्वारा), ज्ञानेश्वरी (ज्ञानेश्वर द्वारा)
रामानुज	रामानुज (12वीं शताब्दी ई.)	विष्णु, विशेषकर भगवान रंगनाथ की भक्ति की वकालत की। समर्पण (शरणागति) और व्यक्तिगत सेवा के माध्यम से भक्ति पर ध्यान केंद्रित किया।	तमिलनाडु, 12वीं शताब्दी ई.	विशिष्टाद्वैत वेदांत दर्शन का विकास।	श्री भाष्य, भगवद गीता (टीका), वेदांत
कबीर	कबीर (15वीं शताब्दी ई.)	निराकार ईश्वर के प्रति समर्पण और सामाजिक समानता को बढ़ावा देते हुए, औपचारिक धार्मिक सीमाओं को पार करने का प्रयास किया गया।	उत्तर भारत, 15वीं शताब्दी ई.पू	इस्लामी और हिंदू तत्वों का मिश्रण करने वाला एक समन्वित आंदोलन।	बीजक, साखी
भास्कराचार्य	भास्कराचार्य (12वीं शताब्दी ई.)	भजनों और गीतों के माध्यम से भक्ति पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें भगवान के साथ व्यक्तिगत संबंध पर जोर दिया गया।	गुजरात, 12वीं शताब्दी ई.पू.	ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध के विचार पर जोर देने के लिए जाने जाते हैं।	संस्कृत भजन
गुरु नानक	गुरु नानक (16वीं शताब्दी ई.)	एक अद्वितीय, निराकार ईश्वर की भक्ति। समानता, सामाजिक न्याय और निस्वार्थ सेवा पर जोर।	पंजाब, 15वीं शताब्दी ई.	सिख धर्म के संस्थापक, सभी धर्मों की एकता को बढ़ावा देने वाले।	गुरु ग्रंथ साहिब

Search On TG: @apna_pdf

मीराबाई	मीराबाई (16वीं शताब्दी ई.)	कृष्ण के प्रति भक्ति, अक्सर उनके प्रेम और समर्पण के भावपूर्ण गीतों में व्यक्त होती है।	राजस्थान, 16वीं शताब्दी ई.	राधा-कृष्ण भक्ति की समर्थक, सामाजिक मानदंडों को चुनौती	भजन, पदावली
रविदास	रविदास (15वीं शताब्दी ई.)	जातिगत ऊंच-नीच को खारिज करते हुए भगवान राम की भक्ति और सामाजिक समानता पर ध्यान केंद्रित किया।	उत्तर भारत, 15वीं शताब्दी ई.	जातिगत समानता और कर्मकांड के स्थान पर भक्ति की वकालत।	शब्द (Shabads), रविदास के भजन
तुलसीदास	तुलसीदास (16वीं शताब्दी ई.)	भगवान राम के प्रति भक्ति, रामचरितमानस के लेखक जिसने उत्तर भारत में राम पूजा को लोकप्रिय बनाया।	उत्तर भारत, 16वीं शताब्दी ई.	उनके कार्य ने भारत में भक्ति आंदोलन के केंद्र में राम के प्रति समर्पण को मजबूत किया।	रामचरितमानस, हनुमान चालीसा
लिंगायत आंदोलन	बसव, अल्लामा प्रभु, चन्नाबसव	सर्वोच्च देवता के रूप में शिव की भक्ति, पारंपरिक जाति व्यवस्था को अस्वीकार करना और व्यक्तिगत पूजा पर बल देना।	कर्नाटक, 12वीं शताब्दी ई.	संपूर्ण कर्नाटक में शिव को इष्टलिंग (व्यक्तिगत देवता) के रूप में केंद्रित करना।	वचन (बसव, अल्लामा प्रभु द्वारा) शून्य संपदाने

भारत के महत्त्वपूर्ण सूफी संप्रदाय

सिलसिले का नाम	संस्थापक	प्रमुख विशेषताएँ	प्रसिद्ध केंद्र/स्थान
चिश्तिया सिलसिला	ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती	प्रेम, सहिष्णुता और मानवता की सेवा पर ध्यान केंद्रित करता है। अपनी सरल और सुलभ प्रथाओं के लिए जाना जाता है।	अजमेर (राजस्थान), दिल्ली, फतेहपुर सीकरी
कादरिया सिलसिला	शेख अब्दुल कादिर जिलानी	भक्ति, आध्यात्मिक शुद्धि और ध्यान पर जोर देता है। ईश्वर और समुदाय दोनों के साथ अपने संबंध के लिए जाना जाता है।	बगदाद, दिल्ली, लाहौर
सुहरावर्दिया सिलसिला	शेख अबू अल-नजीब अल-सुहरावर्दी	आंतरिक अनुशासन और आध्यात्मिक प्रशिक्षण पर ध्यान देना। दिव्य प्रकाश (नूर) की अवधारणा को बढ़ावा देता है।	बंगाल, दिल्ली, पटना
नक्शबंदिया सिलसिला	बहाउद्दीन नक्शबंदी	एक मौन ध्यान अभ्यास, दैनिक जीवन में ईश्वर का स्मरण (ज़िक्र) पर बल देता है।	कश्मीर, दिल्ली, बुखारा
मेवलिया सिलसिला	जलालुद्दीन रूमी (तुर्की में जन्मे)	आध्यात्मिक परमानंद और ईश्वर के साथ मिलन तक पहुंचने के तरीके के रूप में चक्रीय नृत्य (सेमा) पर ध्यान केंद्रित करना।	इस्तांबुल, दिल्ली, अजमेर
अशरफिया सिलसिला	शेख अशरफ जहाँगीर सेमनानी	सुहरावर्दिया की एक शाखा, यह सिलसिला प्रेम, ज्ञान और धार्मिक सद्भाव पर बल देता है।	दिल्ली, बाराबंकी (उत्तर प्रदेश), बदायूँ (उत्तर प्रदेश)
फैयाजिया सिलसिला	शेख फैयाजुद्दीन शाह कादरी	कादरिया और चिश्तिया परंपराओं का मिश्रण, व्यक्तिगत धर्मपरायणता के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।	बंगाल, उत्तर प्रदेश, देवबंद
कादरिया सिलसिला	शेख इब्राहिम अल-कादरी	आंतरिक शुद्धि, ईश्वर की याद और पैगंबर मुहम्मद (PBUH) के प्रेम भाव पर ध्यान केंद्रित करता है।	गुजरात, आंध्र प्रदेश, असम
रिफैया सिलसिला	शेख अहमद अल-रिफ़ाई	यह ध्यान की अपनी प्रथाओं और ईश्वर के रहस्यमय ज्ञान प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जाना जाता है।	बंगाल, उत्तर प्रदेश

Search On TG: @apna_pdf

दिल्ली के सात शहर

नाम	अवधि	महत्त्व	उल्लेखनीय विशेषताएँ
किला राय पिथौरा	10वीं सदी	पृथ्वीराज चौहान द्वारा स्थापित।	वर्तमान समय का पुराना किला। पृथ्वीराज के पूर्वजों ने तोमर राजपूत को हराकर दिल्ली पर अधिकार कर किया था जिन्हें दिल्ली की स्थापना का श्रेय दिया जाता है। पृथ्वीराज ने लाल कोट से जोड़कर किले का विस्तार किया।
महरौली	12वीं सदी	गुलाम वंश	कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित
सिरी	14 वीं शताब्दी	अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित।	संक्षिप्त और सुदृढ शहर। विशेषताओं में अलाई दरवाजा और हौज खास (एक जलाशय) शामिल हैं।
तुगलकाबाद	14 वीं शताब्दी	गयासुद्दीन तुगलक द्वारा निर्मित।	महत्त्वपूर्ण लेकिन अंततः जल की कमी के कारण छोड़ दिया गया। अपनी विशाल किलेबंदी के लिए जाना जाता है।
फिरोजाबाद	14 वीं शताब्दी	फ़िरोज़ शाह तुगलक द्वारा निर्मित।	दिल्ली के दक्षिण में स्थित है। अपनी व्यापक सिंचाई और जलकार्यों के लिए जाना जाता है।
शेरगढ़/दीन पनाह/पुराना किला	16वीं सदी	शेर शाह सूरी	1540 में शेरशाह ने हुमायूँ से दिल्ली छीनने के बाद इसका निर्माण कराया था
शाहजहाँबाद	17वीं सदी	शाहजहाँ द्वारा निर्मित।	वर्तमान पुरानी दिल्ली। इसमें लाल किला, जामा मस्जिद और चाँदनी चौक जैसी प्रतिष्ठित संरचनाएँ शामिल हैं।

Search On TG: @apna_pdf

महत्त्वपूर्ण जी आई टैग्स (GI TAGS) की सूची

उत्पाद का नाम	श्रेणी	राज्य/क्षेत्र	विवरण
दुर्गी पत्थर की नक्काशी	हस्तशिल्प	आंध्र प्रदेश	मूर्तियों और सजावटी वस्तुओं के लिए अद्वितीय मुलायम चूना पत्थर की नक्काशी का उपयोग किया जाता है।
एटिकोप्पका खिलौने	हस्तशिल्प	आंध्र प्रदेश	मुलायम लकड़ी और प्राकृतिक रंगों से निर्मित; इन्हें “लाख खिलौने" (Lac Toys) भी कहा जाता है।
चक्षेसंग शाल	हस्तशिल्प	नगालैंड	पारंपरिक हस्तनिर्मित शॉल, जिसमें ज्यामितीय पैटर्न और सांस्कृतिक रूपांकनों का समावेश है।
तवल्लोहपुआन	हस्तशिल्प	मिजोरम	मिज़ो पारंपरिक वेशभूषा के लिए उपयोग किया जाने वाला एक भारी, टिकाऊ वस्त्र।
मिज़ो पुआंचेई	हस्तशिल्प	मिजोरम	यह एक जीवंत, हाथ से बुना हुआ कपड़ा है जिसका उपयोग मिज़ो समारोहों और त्यौहारों में किया जाता है।
सोहराई खोवर पेंटिंग	हस्तशिल्प	झारखंड	यह प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते हुए जनजातीय भित्ति चित्र कला, सांस्कृतिक विषयों को दर्शाती है।
तेलिया रुमाल	हस्तशिल्प	तेलंगाना	प्राकृतिक वनस्पति रंगों का उपयोग करके ज्यामितीय पैटर्न में रंगे गए हस्त निर्मित सूती वस्त्र।
कलमकारी पेंटिंग	हस्तशिल्प	आंध्र प्रदेश	हाथ से चित्रित वस्त्रों पर जटिल पुष्प और पौराणिक डिजाइन होते हैं।
चन्नापटना खिलौने	हस्तशिल्प	कर्नाटक	वनस्पति रंगों और लाह कोटिंग का उपयोग करके तैयार किए गए पारंपरिक लकड़ी के खिलौने।
गमोसा	हस्तशिल्प	असम	सांस्कृतिक और औपचारिक महत्त्व वाला पारंपरिक असम का हाथ से बुना तौलिया।
तंजावुर चित्रकला	हस्तशिल्प	तमिलनाडु	समृद्ध स्वर्ण परत और पौराणिक विषयों के साथ पारंपरिक चित्रकला।
चेरियल स्क्रॉल पेंटिंग	हस्तशिल्प	तेलंगाना	पौराणिक कहानियों को जीवंत रंगों में प्रदर्शित करने वाले हाथ से चित्रित स्क्रॉल।
टोडा कढ़ाई	हस्तशिल्प	तमिलनाडु	टोडा जनजातियों द्वारा जटिल रूपांकनों वाली हाथ से सिली गई कढ़ाई।
पाटन पटोला	हस्तशिल्प	गुजरात	'डबल-इकात' हाथ से बुनी रेशम साड़ियाँ, जो अपने जीवंत पैटर्न के लिए जानी जाती हैं।
निर्मल खिलौने	हस्तशिल्प	तेलंगाना	भारतीय रूपांकनों और फ़ारसी कला शैलियों के अनूठे मिश्रण के साथ लकड़ी के खिलौने।
पट्टचित्र पेंटिंग	हस्तशिल्प	ओडिशा	महाभारत जैसे महाकाव्यों को चित्रित करने वाली जटिल डिजाइन वाली पारंपरिक स्क्रॉल पेंटिंग।

फुलकारी कढ़ाई	हस्तशिल्प	पंजाब, हरियाणा और राजस्थान	रंगीन पुष्प पैटर्न वाली पारंपरिक कढ़ाई, जिसका उपयोग शॉल और दुपट्टे पर किया जाता है।
आरणमुल कनाटी	हस्तशिल्प	केरल	सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्त्व वाले अद्वितीय हस्तनिर्मित धातु दर्पण।
कपडागंडा शॉल	हस्तशिल्प	ओडिशा	कोंड जनजाति (PVTGs) की महिलाओं द्वारा बुनाई और कढ़ाई किया गया
लांजिया सौरा पेंटिंग	हस्तशिल्प	ओडिशा	घर की मिट्टी की दीवारों पर चित्रित बाह्य भित्ति चित्र।
इदु मिश्मी टेक्सटाइल्स/कपड़ा	हस्तशिल्प	अरुणाचल प्रदेश	जीवंत रंग, जटिल डिजाइन और प्रतीकात्मक पैटर्न, टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं, जानवरों की आकृतियाँ, अमूर्त प्रतीक, हीरे और ग्रिड।

Search On TG: @apna_pdf

❖ ❖ ❖

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH

अन्य पुस्तकें एवं कार्यक्रम

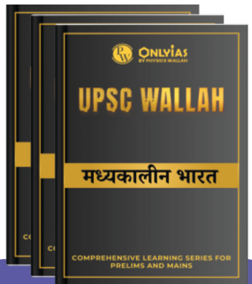

BOOKS
व्यापक कवरेज

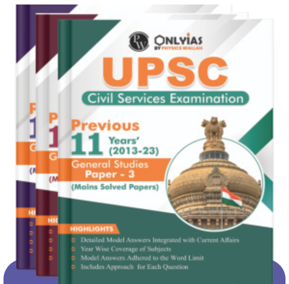

BOOKS
पिछले 11 वर्षों के हल प्रश्न-पत्र (PYQs) (प्रारंभिक+ मुख्य परीक्षा)

FREE MATERIAL
उड़ान (प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीज़न)

FREE MATERIAL
उड़ान प्लस 500 (प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीज़न)

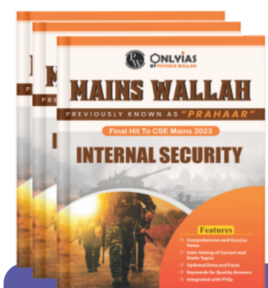

FREE MATERIAL
मेन्स रिवीज़न

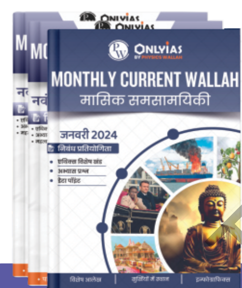

CURRENT AFFAIRS
मासिक समसामयिकी

CURRENT AFFAIRS
मासिक संपादकीय संकलन

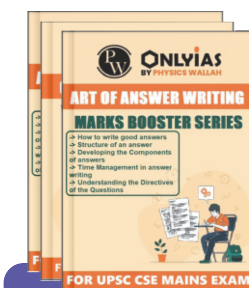

FREE MATERIAL
क्विक रिवीज़न बुकलेट

TEST SERIES
IDMP ईयर लॉन्ग टेस्ट

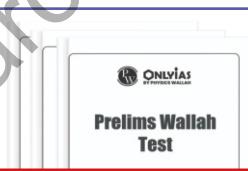

35+ प्रिलिम्स टेस्ट

25+ मेन्स टेस्ट

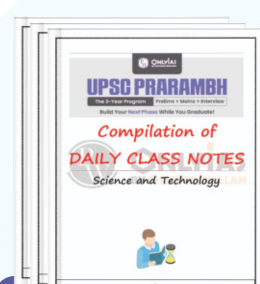

CLASSROOM CONTENT
डेली क्लास नोट्स और अभ्यास प्रश्न

These ebooks are free of cost, Join our telegram channel: @apna_pdf

Search On TG: @apna_pdf

All Content Available in Hindi and English

Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Lucknow, Patna